इस्लाही ख़ुतबात

जस्टिस मौलाना मुहम्मद तक़ी उस्मानी

इस्लाही खुतबात

(2)

जस्टिस मौलाना मुहम्मद तक़ी उस्मानी

अनुवादक
मु० इमरान क़ासमी एम०ए० (अलीग)

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा०) लिमि०
422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट जामा मस्जिद देहली 6
फ़ोन आफ़िस 3265406,3279998, आवास 3262486

☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆☆

नाम किताब	इस्लाही ख़ुतबात जिल्द (2)
ख़िताब	मौलाना मु० तक़ी उस्मानी
अनुवादक	मु० इमरान क़ासमी
संयोजक	मौ० नासिर ख़ान
तायदाद	1100
प्रकाशन वर्ष	मई 2001
कम्पोज़िंग	इमरान कम्प्यूटर्स मुज़फ़्फ़र नगर (0131-442408)

>>>>>>>>>>>>

प्रकाशक

फ़रीद बुक डिपो (प्रा०) लिमि०

422, मटिया महल, ऊर्दू मार्किट जामा मस्जिद देहली 6

फ़ोन आफ़िस, 3265406,3279998, आवास, 3262486

मुख़्तसर फ़िहरिस्त

फ़िह्रिस्ते मज़ामीन

क्र.स.	क्या?	कहां?

(11) कुर्बानी हज और जिलहिज्जा की दहाई

बीवी के हुक़ूक़

और उसकी हैसियत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْماً كَثِيْرًا كَثِيْرًا اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

"وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ" (سورة النساء: ١٩)

قال الله تعالىٰ: وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَاءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ وَاِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا. (سورة النساء: ١٩)

"وعن ابی هريرة رضی الله تعالىٰ عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم استوصوا بالنساء خيرًا فان المرأة خلقت من ضلع وان اعوج مافی الضلع اعلاه فان ذهبت تقيمه كسرته وان تركته لم يزل اعوج فاستوصوا بالنساء. (صحيح بخاری شريف)

बन्दों के हुक़ूक़ की अहमियत

इन कुरआनी आयतों और हदीसे नबवी की रोशनी में अ़ल्लामा नववी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि बन्दों के हुक़ूक़ का बयान शुरू फ़रमा रहे हैं यानी अल्लाह तआ़ला ने और उसके पैग़म्बर नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बन्दों के जो हुक़ूक़ ज़रूरी क़रार दिये हैं और जिनके तहफ़्फ़ुज़ का हुक्म दिया है, उनका बयान यहां से शुरू फ़रमा रहे हैं, जैसाकि मैं पहले भी बार बार अ़र्ज़ कर चुका हूं कि "बन्दों के हुक़ूक़" दीन का बहुत अहम शोबा हैं और यह

इतना अहम शोबा है कि "अल्लाह के हुकूक़" तो तौबा से माफ़ हो जाते हैं, यानी अगर ख़ुदा न करे अल्लाह के हुकूक़ से मुताल्लिक़ कोई कोताही सर्ज़द हो जाये (ख़ुदा न करे) तो इसका इलाज बहुत आसान है कि इन्सान को जब कभी इस पर नदामत पैदा हो तो तौबा व इस्तिग़फ़ार कर लेने से माफ़ हो जाते हैं, लेकिन बन्दों के हुकूक़ ऐसे हैं कि अगर उनमें कोताही हो जाये तो अगर इस पर कभी नदामत हो और इस पर तौबा व इस्तिग़फ़ार करे तब भी वे गुनाह माफ़ नहीं होते, जब तक कि हक़दार को उसका हक़ न पहुंचाया जाये, या जब तक हक़ वाला उसको माफ़ न करदे, इसलिये कि बन्दों के हुकूक़ का मामला बड़ा संगीन है।

बन्दों के हुकूक़ से ग़फ़लत

बन्दों के हुकूक़ का मामला जितना संगीन है हमारे मुआशरे में इससे ग़फ़्लत उतनी ही आम है। हम लोगों ने चन्द इबादतों का नाम दीन रख लिया है। यानी नामज़, रोज़ा, हज ज़कात, ज़िक्र तिलावत, तसबीह वग़ैरह इन चीज़ों को तो हम दीन समझते हैं, लेकिन बन्दों के हुकूक़ को हमने दीन से ख़ारिज किया हुआ है, और इसी तरह मुआशरती हुकूक़ को भी दीन से ख़ारिज कर रखा है, इसमें अगर कोई कोताही या ग़लती करता है, तो उसको उसकी संगीनी का एहसास भी नहीं होता।

ग़ीबत बन्दों के हुकूक़ में दाख़िल है

इसकी सादा सी मिसाल यह है कि (ख़ुदा न करे) कोई मुस–लमान शराब पीने की लत में मुब्तला हो, तो हर वह मुसलमान जिसको ज़रा सा भी दीन से लगाव है, वह उसको बुरा समझेगा, और ख़ुद वह शख़्स भी अपने फ़ेल पर नादिम होगा कि मैं एक गुनाह का काम कर रहा हूं, लेकिन एक दूसरा शख़्स है जो लोगों की ग़ीबत करता है, उस ग़ीबत करने वाले को मुआशरे में शराब पीने वाले के बराबर बुरा नहीं समझा जाता, और न ख़ुद ग़ीबत करने वाला अपने आपको गुनाहगार और मुज्रिम ख़्याल करता है,

हालांकि गुनाह के एतिबार से शराब पीना जितना बड़ा गुनाह है, ग़ीबत करन भी उतना ही बड़ा गुनाह है, बल्कि ग़ीबत इस लिहाज़ से शराब पीने से ज़्यादा संगीन है कि उसका तअ़ल्लुक़ बन्दों के हुक़ूक़ से है, और इस लिहाज़ से भी ज़्यादा संगीन है कि क़ुरआन करीम में अल्लाह तआ़ला ने इसकी ऐसी मिसाल दी है कि दूसरे गुनाहों की ऐसी मिसाल नहीं दी, चुनांचे फ़रमाया कि ग़ीबत करने वाला ऐसा है जैसे मुर्दा भाई का गोशत खाने वाला, लेकिन इतनी संगीनी के बावजूद यह गुनाह़ मुआ़शरे में आ़म हो गाया है, शायाद ही कोई मज्लिस इस गुनाह से ख़ाली होती हो, और फिर इसको बुरा भी नहीं समझा जाता, गोया कि दीन का इससे कोई तअ़ल्लुक़ नहीं है।

एहसान हर वक़्त मतलूब है

मेरे शैख़ हज़रत डा० अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि अल्लाह तआ़ला उनके दरजे बुलन्द फ़रमाये, आमीन, एक दिन फ़रमाने लगे कि एक साहिब मेरे पास आये, और आकर बड़े फ़ख़्–रिया अन्दाज़ में ख़ुशी के साथ कहने लगे कि अल्लाह का शुक्र है कि मुझे "एहसान" का दरजा हासिल हो गया है, "एहसान" एक बड़ा दरजा है जिसके बारे में हदीस में आता है कि:

"ان تعبد الله كانك تراه فان لم تكن تراه فانه يراك" (صحيح بخارى)

यानी अल्लाह तआ़ला की इबादत इस तरह कर जैसे कि तू अल्लाह तआ़ला को देख रहा है, और अगर यह न हो सके तो कम से कम इस ख़्याल के साथ इबादत कर कि अल्लाह तआ़ला तुझे देख रहे हैं, इसको दरजा "एहसान" कहा जाता है, उन साहिब ने हज़रते वाला से कहा कि मुझे "एहसान" का दरजा हासिल हो गया है, हज़रत डाक्टर साहिब फ़रमाते हैं कि मैंने उनको मुबारक बाद दी कि अल्लाह तआ़ला मुबारक फ़रमाये, यह तो बहुत बड़ी नेमत है, लेकिन मैं आपसे एक बात पूछता हू क्या आपको यह "एहसान"

का दरजा सिर्फ़ नमाज़ में हासिल होता है, और जब बीवी बच्चों के साथ मामलात करते हो उस वक़्त भी हासिल होता है कि नहीं? यानी बीवी बच्चों के साथ मामलात करते वक़्त भी आपको यह ख़्याल आता है कि अल्लाह तआ़ला मुझे देख रहे हैं? या यह ख़्याल उस वक़्त नहीं आता? वह जवाब में फ़रमाने लगे कि हदीस में तो यह आया है कि जब इबादत करे तो इस तरह इबादत करे कि जैसे वह अल्लाह को देख रहा है, या अल्लाह तआ़ला उसको देख रहे हैं, वह तो सिर्फ़ इबादत में है हम तो यह समझते थे कि "एहसान" का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ नमाज़ से है, दूसरी चीज़ों के साथ एहसान का कोई तअ़ल्लुक़ नहीं। हज़रत डा० साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि मैंने इसी लिये आपसे यह सवाल किया था, इसलिये कि आज कल आ़म तौर पर ग़लत यह फ़हमी पाई जाती है कि "एहसान" सिर्फ़ नमाज़ में ही मतलूब है या ज़िक्र व तिलावत ही में मतलूब है, हालांकि एहसान हर वक़्त मतलूब है, ज़िन्दगी के हर मर्हले और शोबे में मतलूब है, दुकान पर बैठ कर तिजारत कर रहे हों वहां पर "एहसान" मतलूब है, यानी दिल में यह इस्तिहज़ार (ख़्याल) होना चाहिये कि अल्लाह तआ़ला मुझे देख रहे हैं, जब अपने मा–तहतों के साथ मामलात कर रहे हों उस वक़्त भी "एहसान" मतलूब है, जब बीवी बच्चों और दोस्त अहबाब और पड़ोसियों से मामलात कर रहे हों, उस वक़्त भी यह इस्तिहज़ार होना चीहिये कि अल्लाह तआ़ला मुझे दख रहे हैं। हक़ीक़त में "एहसान" का मर्तबा यह है, सिर्फ़ नमाज़ तक महदूद नहीं है।

वह औ़रत जहन्नम में जायेगी

ख़ूब समझ लें कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीम हमारी ज़िन्दगी के हर शोबे के साथ है, इसी वासते रिवायत में आता है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से एक औ़रत के बारे में पूछा गया कि: या रसूलल्लाह! एक ख़ातून

है, जो दिन रात इबादत में लगी रहती है, नफ़िल नामज़ और ज़िक्र व तिलावत बहुत करती है, और हर वक़्त इसी काम में मश्गूल रहती है, उस ख़ातून के बारे में आपका क्या ख़्याल है कि उसका अन्जाम कैसा होगा? तो आपने उन सहाबा–ए–किराम से पुछा कि वह ख़ातून पड़ोसियों के साथ कैसा सुलूक करती है? तो सहाबा–ए–किराम ने जवाब दिया कि पड़ोसियों के साथ उसका सुलूक अच्छा नहीं है, पड़ोस की ख़ातून उस से ख़ुश नहीं हैं, आपने फ़रमाया कि वह औ़रत जहन्नम में जायेगी।

वह औ़रत जन्नत में जायेगी

फिर एक ख़ातुन के बारे में आपसे पुछा गया कि जो नफ़्ली इबादत तो ज़्यादा नहीं करती थी, सिर्फ़ फ़राइज़ व वाजिबात पर इक्तिफ़ा (बस) करती थी, और ज़्यादा से ज़्यादा सुन्नते मुअक्कदा अदा कर लेती, बस इस से ज़्यादा नवाफ़िल, ज़िक्र व तिलावत नहीं करती थी, मगर पड़ोसियों और दूसरे लोगों के साथ उसके माम–लात अच्छे थे, आपने फ़रमाया कि वह औ़रत जन्नत में जायेगी।

मुफ़्लिस कौन

इन हदीसों में आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बात वाज़ेह फ़रमा दी कि अगर कोई शख़्स नफ़्ली इबादत करे तो यह बड़ी अच्छी बात है, और अगर नफ़्ली इबादत न करे तो आख़िरत में सवाल नहीं होगा कि तुमने फ़लां नफ़्ली इबादत क्यों नहीं की, इसलिये कि नफ़िल का मतलब ही यह है कि अगर कोई शख़्स करे तो सवाब मिलेगा, और अगर न करे तो कोई गुनाह भी नहीं होगा। लेकिन बन्दों के हुक़ूक़ वह चीज़ है कि उसके बारे में क़ियामत के दिन सवाल होगा और उस पर जन्नत और जहन्नम का फ़ैसला मौक़ूफ़ है, चुनांचे एक हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्ल–ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुफ़्लिस वह शख़्स है जो क़ियामत के रोज़ बड़ी मिक़्दार में नामज़ रोज़े लेकर आयेगा,

लेकिन दुनिया में किसी का हक़ मार दिया, किसी को बुरा कह दिया, किसी का दिल दुखाया था और किसी को तक्लीफ़ पहुंचाई थी, अब इसका नतीजा यह हुआ कि जो कुछ आमाल लेकर आया था, वे सारे के सारे दूसरों को दे दिये, और दूसरों के गुनाह उस पर डाल दिये गये, इसलिये बन्दों के हुकूक़ का बाब शरीअ़त का बहुत अहम बाब है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

बन्दों के हुकूक़ तीन चौथाई दीन है

और यह मैं पहले भी अ़र्ज़ कर चुका हूं कि "इस्लामी फ़िक़ा" जिसमें शरीअ़त के अहकाम बयान किये जाते हैं, उसको अगर चार बराबर हिस्सों में तक़्सीम किया जाये तो उसका एक हिस्सा इबादात के बयान पर मुश्तमिल है और बाक़ी तीन हिस्से बन्दों के हुकूक़ के बयान में हैं। यानी मामलात और मुआ़शरत को बयान किया गया है, आपने "हिदाया" का नाम सुना होगा जो फ़िक़ा–ए–हनफ़ी की मश्हूर किताब है, यह चार जिल्दों पर मुश्तमिल है, इसकी पहली जिल्द में इबादात का ज़िक्र है, जिसमें तहारत,(पाकी) नामज़, रोज़ा, ज़कात और हज के अहकाम बयान किये गये हैं, बाक़ी तीन जिल्दें मामलात, मुआ़शरत और बन्दों के हुकूक़ से मुताल्लिक़ हैं, इससे अन्दाज़ा किया जा सकता है कि बन्दों के हुकूक़ तीन चौथाई दीन है, इसलिये यह बड़ा अहम बाब शुरू हो रहा है, अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से इसको अ़मल के जज़्बे से पढ़ने और सुनने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये और बन्दों के हुकूक़ की अपनी रिज़ा और खुश्नूदी के मुताबिक़ अदायगी की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

इस्लाम से पहले औ़रत की हालत

अ़ल्लामा नववी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने पहला बाब यह क़ायम किया, फ़रमया "बाबुल वस्सियति बिन्निसा" यानी उन नसीहतों के बारे में जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने औ़रतों के

हुक़ूक़ से मुताल्लिक़ बयान फ़रमाई हैं, और सबसे पहले यह बाब इसलिये क़ायम फ़रमाया कि सबसे ज़्यादा बे–एतिदालियां और सब से ज़्यादा कोताहियां इस हक़ में होती हैं। जब तक इस्लाम नहीं आया था, और जब तक नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात नहीं आई थीं, उस वक़्त तक औ़रत को ऐसी मख़्लूक़ समझा जाता थ, जो मआ़ज़ल्लाह (ख़ुदा की पनाह) गोया इन्सानियत से ख़ारिज है और उसके साथ भेड़ बकरियों जैसा सुलूक होता था, उसको इन्सानियत के हुक़ूक़ देने से लोग इन्कार करते थे, किसी भी मामले में उसके हुक़ूक़ की परवाह नहीं की जाती थी, और यह समझा जाता था जैसे किसी ने अपने घर में भेड़ बकरियां पाल लीं, बिल्कुल इसी तरीक़े से अपने घर में एक औ़रत को लाकर बिठा दिया, सुलूक के एतिबार से दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं था।

औ़रतों के साथ अच्छा सुलूक

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने पहली बार इस दुनिया को जो आसमानी हिदायात से बेख़बर थी औ़रतों के हुक़ूक़ का एहसास दिलाया, कि औ़रतों के साथ अच्छा सुलूक करो।

अ़ल्लामा नववी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने सबसे पहले क़ुरआन करीम की एक आयत नक़्ल फ़रमाई, जो इस बाब में जामे तरीन आयत है, फ़रमाया कि:

"وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ"

इसमें तमाम मुसलमानों से ख़िताब है कि तुम औ़रतों के साथ "मारूफ़" यानी नेकी के साथ, अच्छा सुलूक करके ज़िन्दगी गुज़ारो उनके साथ अच्छी मुआ़शरत बरतो, उनको तक्लीफ़ न पहुंचाओ, यह आ़म हिदायत है, यह आयत गोया इस बाब का मतन और उन्वान है, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस आयत की तश्रीह अपने अक़्वाल और अफ़्आ़ल से फ़रमाई, और

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को औरतों के साथ अच्छे सुलूक का इस दर्जा एहतिमाम था कि आपने फ़रमाया किः

"خیارکم خیارکم لنسَاء هم واناخیارکم لنسائی"

"तुम में सबसे बेहतरीन वे लोग हैं जो अपनी औ़रतों के साथ अच्छा बर्ताव करते हैं, और मैं तुम में अपनी औ़रतों के साथ बेह–तरीन बर्ताव करने वाला हूं।" (तिर्मिज़ी शरीफ़)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को औ़रतों के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त और उनके साथ अच्छे सुलूक का इतना एहतिमाम था कि बेशुमार हदीसों में इसकी तशरीह फ़रमाई, चुनांचे सब से पहली हदीस में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया किः

"استوصوا بالنساء خَیرًا"

"मैं तुमको औ़रतों के बारे में भलाई की नसीहत करता हूं, तुम मेरी इस नसीहत को क़बूल कर लो।"

क़ुरआन करीम सिर्फ़ उसूल बयान करता है

आगे बढ़ने से पहले यहां एक बात अ़र्ज़ कर दूं कि क़ुरआन करीम में आप यह देखेंगे कि आम तौर पर क़ुरआन करीम मोटे मोटे उसूल बयान कर देता है, तफ़सीलात और जुज़इयात में नहीं जाता, उन्हें बयान नहीं करता, यहां तक कि नमाज़ जैसा अहम रुक्न जो दीन का सुतून है, जिसके बारे में क़ुरआन करीम ने तिहत्तर जगहों पर हुक्म दिया कि नमाज़ क़ायम करो, लेकिन नमाज़ कैसे पढ़ी जाती है? उसका तरीक़ा क्या होता है? उसकी रक्अ़तें कितनी होती हैं? और किन चीजों से नमाज़ टूट जाती है, और किन चीज़ों से नहीं टूटती? ये तफ़सीलात क़ुरआन ने बयान नहीं कीं, ये हुज़ूरे अक़्दस नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात पर छोड़ दीं, आपने अपनी सुन्नत से बयान फ़रमायीं। इसी तरह ज़कात का हुक्म भी क़ुरआन करीम में क़रीब क़रीब

इतनी ही मर्तबा आया है, लेकिन ज़कात का निसाब क्या होता है? किस पर फ़र्ज़ होती है? कितनी फ़र्ज़ होती है? किन किन चीज़ों पर फ़र्ज़ होती है? ये तफ़्सीलात कुरआन करीम ने बयान नहीं कीं, बल्कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात पर छोड़ दीं, मालूम हुआ कि कुरआन करीम आम तौर पर उसूल बयान करता है, तफ़्सीली जुज़्इयात में नहीं जाता।

घरेलू ज़िन्दगी, पूरे तमद्दुन की बुनियाद है

लेकिन मर्द व औ़रत के तअ़ल्लुक़ात, ख़ानदानी तअ़ल्लुक़ात ऐसी चीज़ है कि कुरआन करीम ने इसके नाज़ुक नाज़ुक जुज़्वी मसाइल भी खोल कर बयान फ़रमाये हैं, एक एक चीच़ को खोल कर बयान कर दिया है, और फिर बाद में नबी-ए-पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उसकी तशरीह फ़रमाई, इसकी क्या वजह है? वजह इसकी यह है कि मर्द व औ़रत के जो तअ़ल्लुक़ात हैं, और इन्सान की जो घरेलू ज़िन्दगी है यह तमद्दुन की बुनियाद होती है, और इस पर पुरे तहज़ीब व तमद्दुन की इमारत खड़ी होती है, अगर मर्द व औ़रत के तअ़ल्लुक़ात दुरुस्त हैं, खुश्गवार हैं और दोनों एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा कर रहे हैं तो इससे घर का निज़ाम दुरुस्त होता है और घर का निज़ाम दुरुस्त होने से औलाद दुरुस्त होती है, और औलाद के दुरुस्त होने से मुआ़शरा संवरता है, और उस पर पूरे मुआ़शरे की इमारत खड़ी होती है, लेकिन अगर घर का निज़ाम ख़राब हो और मियां बीवी के दरमियान रात दिन तू तू मैं मैं होती हो, तो इस से औलाद पर बुरा असर पड़ेगा, और उसके नतीजे में जो क़ौम तैयार होगी उसके बारे में आप तसव्वुर कर सकते हैं कि किसी तहज़ीब दार क़ौम के अफ़राद बन सकते हैं या नहीं, इस वास्ते इसको "आ़यली अहकाम" यानी घर-दारी के अहकाम कहा जाता है, इसलिये कुरआन करीम ने तअ़ल्लुक़ात की छोटी छोटी बातों को भी बयान फ़रमाया है।

औरत की पैदाइश टेढ़ी पसली से होने का मतलब

उसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बहुत अच्छी मिसाल बयान फ़रमाई है और यह इतनी अ़जीब व ग़रीब और हकीमाना मिसाल है कि ऐसी मिसाल मिलना मुश्किल है, फ़रमाया कि औरत पसली से पैदा की गयी है, बाज़ लोगों ने इसकी तशरीह यह की है कि अल्लाह तआ़ला ने सब से पहले हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया, उसके बाद हज़रत हव्वा अ़लैहस्सलाम को उन्हीं की पसली से पैदा किया गया, और कुछ उलमा ने इसकी तशरीह यह भी की है कि रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम औरत की तश्बीह देते हुए फ़रमा रहे हैं कि औरत की मिसाल पसली की सी है, कि जिस तरह पसली देखने में टेढ़ी मालूम होती है, लेकिन पसली का हुस्न और उसकी सेहत उसके टेढ़ा होने में ही है, चुनांचे कोई शख़्स अगर यह चाहे कि पसली टेढ़ी है, उसको सीधा कर दूं तो जब उसे सीधा करना चाहेगा तो वह सीधी तो नहीं होगी अलबत्ता टूट जायेगी, वह फिर पसली नहीं रहेगी अब दोबारा फिर उसको टेढ़ा करके पलस्तर के ज़रिये जोड़ना पड़ेगा, इसी तरह हदीस शरीफ़ में औरत के बारे में भी यही फ़रमाया कि:

"ان ذهبت تقيمها كسرتها"

"अगर तुम पसली को सीध करना चाहोगे तो वह पसली टूट जायेगी।"

"وان استمتعت بها استمتعت بها وفيها عوج"

"और अगर इससे फ़ायदा उठाना चाहो, तो इसके टेढ़े होने के बावजूद फ़ायदा उठाओगे।"

यह बड़ी अ़जीब व ग़रीब और हकीमाना तश्बीह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बायान फ़रमाई कि उसकी सेहत ही उसके टेढ़े होने में है अगर वह सीधी होगी तो वह बीमार है सही नहीं है।

यह औ़रत की मज़म्मत (बुराई) की बात नहीं है

बाज़ लोग इस मिसाल को औ़रत की मज़म्मत (बुराई) में इस्तेमाल करते हैं कि औ़रत टेढ़ी पसली से पैदा की गयी है, इसलिये उसकी असल टेढ़ी है चुनांचे मेरे पास बहुत से लोगों के ख़त आते हैं जिनमें कई लोग यह लिखते हैं कि यह औ़रत टेढ़ी पसली की मख़्लूक़ है, गोया कि उसकी मज़म्मत और बुराई के तौर पर इस्तेमाल करते हैं, हालांकि ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस इरशाद का मन्शा यह नहीं है।

औ़रत का टेढ़ापन एक फ़ितरी तक़ाज़ा है

बात यह है कि अल्लाह तआ़ला ने मर्द को कुछ और सिफ़तें देकर पैदा फ़रमाया है, और औ़रत को कुछ और सिफ़तें देकर पैदा फ़रमाया, दोनों की फ़ित्रत में कितना फ़र्क़ है, फ़ित्रत में फ़र्क़ होने की वजह से मर्द औ़रत के बारे में यह महसूस करता है कि यह मेरी तबीयत और फ़ित्रत के ख़लाफ़ है, हालांकि औ़रत का तुम्हारी तबीयत के ख़िलाफ़ होना यह कोई ऐब नहीं है, क्योंकि यह उसकी फ़ित्रत का तक़ाज़ा है कि वह टेढ़ी हो, कोई शख़्स पसली के बारे में यह कहे कि पसली के अन्दर जो टेढ़ापन है वह उसके अन्दर ऐब है, ज़ाहिर है कि वह ऐब नहीं बल्कि उसकी फ़ित्रत का तक़ाज़ा है कि वह टेढ़ी हो, इसलिये आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह इरशाद फ़रमा रहे हैं कि अगर तुम्हें औ़रत में कोई ऐसी बात नज़र आती है जो तुम्हारी तबीयत के ख़िलाफ़ हो, और उसकी वजह से तुम उसको टेढ़ा समझ रहे हो तो उसको इस बिना पर कन्डम न करो, बल्कि यह समझो कि उसकी फ़ित्रत का तक़ाज़ा यह है, और अगर तुम उसको सीधा करना चाहोगे तो वह टूट जायेगी और अगर फ़ायदा उठाना चाहोगे तो टेढ़ा होने की हालत में भी फ़ायदा उठा सकोगे।

"ग़फ़लत" औरत के लिये हुस्न है

आज उल्टा ज़माना आ गया है, इस वासते क़दरें बदल गयीं हैं, ख़्यालात बदल गये, वर्ना बात यह है कि जो चीज़ मर्द के हक़ में ऐब है, बहुत सी बार वह औरत के हक़ में हुस्न और अच्छाई होती है, अगर हम कुरआन करीम को ग़ौर से पढ़ें तो कुरआन करीम से यह बात नज़र आती है कि जो चीज़ मर्द के हक़ में ऐब थी, वही चीज़ औरत के बारे में हुस्न क़रार दी गयी, और उसको नेकी और अच्छाई की बात कहा गया, जैसे मर्द के हक़ में यह बात ऐब है कि वह जाहिल और ग़ाफ़िल हो, और दुनिया की उसको ख़बर न हो, इसलिये कि मर्द पर अल्लाह तआ़ला ने दुनिया के कामों की ज़िम्मेदारी दी है, इसलिये उसके पास इल्म भी होना चाहिये, और उसको बा-ख़बर भी होना चाहिये, अगर बा-ख़बर नहीं है बल्कि ग़ाफ़िल है, और ग़फ़लत में मुब्तला है तो यह मर्द के हक़ में ऐब है, लेकिन कुरआन करीम ने ग़फ़लत को औरत के हक़ में हुस्न क़रार दिया, चुनांचे सूरः नूर में फ़रमायाः

"اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغَافِلَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ" (سورة نور:٢٣)

यानी वे लोग जो ऐसी औरतों पर तोहमतें लगाते हैं जो पाक दामन हैं, और ग़ाफ़िल हैं, यानी दुनिया से बेख़बर हैं, तो दुनिया से बेख़बरी को एक हुस्न की सिफ़त के तौर पर कुरआन करीम ने बयान फ़रमया, मालूम हुआ कि औरत अगर दुनिया के कामों से बेख़बर हो और अपने फ़राइज़ की हद तक वाक़िफ़ हो और दुनिया के मामलात इतने न जानती हो तो वह औरत के हक़ में ऐब नहीं, वह सिफ़ते हुस्न है, जिसको कुरआन करीम ने सिफ़ते हुस्न के तौर पर ज़िक्र फ़रमाया।

ज़बरदस्ती सीधा करने की कोशिश न करो

इसलिये जो चीज़ मर्द के हक़ में ऐब थी, वह औरत के हक़ में ऐब नहीं और जो चीज़ मर्द के हक़ में ऐब नहीं थी कभी कभी

वह औरत के हक़ में ऐब होती है। इसलिये अगर तुम्हें उनके अन्दर कोई ऐसी चीज़ नज़र आये जो तुम्हारे लिये तो ऐब है लेकिन औरत के लिये ऐब नहीं तो उसकी वजह से औरत के साथ बर्ताव में ख़राबी न करो, इसलिये कि पसली होने का तक़ाज़ा ही यह है कि वह अपनी फ़ित्रत के एतिबार से तुम्हारी तबीयत से अलग हो, तो अब उसको ज़बरदस्ती सीधा करने की कोशिश न करो।

सारे झगड़ों की जड़

यह नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है, और आपसे ज़्यादा मर्द व औरत की नफ़सियात से कौन वाक़िफ़ हो सकता है, इसलिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सारे झगड़ों की जड़ पकड़ ली कि सारे झगड़े सिर्फ़ इस बिना पर होते हैं कि मर्द यह चाहता है कि जैसा मैं ख़ुद हूं, यह भी वैसी ही बन जाये, तो भाई! यह तो वैसी बनने से रही, अगर वैसी बनाना चाहोगे तो टूट जायेगी, इसलिये इस फ़िक्र को तो छोड़ दो, हां! जो चीज़ें उसके हक़ में उसके हालात के लिहाज़ से उसकी फ़ित्रत के लिहाज़ से उसके लिये ऐब नहीं, उनकी इस्लाह की फ़िक्र करो, और उनकी इस्लाह की फ़िक्र भी मर्द की ज़िम्मेदारी है, लेकिन अगर चाहो कि वह तुम्हारे मिज़ाज और तबीयत के मुवाफ़िक़ हो जाये, यह नहीं हो सकता।

उसकी कोई आ़दत पसन्दीदा भी होगी

इस बारे की दूसरी हदीस भी हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत की गयी है।

"عن ابی هريرة رضی الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لا يفرك مؤمن مؤمنة ان كره منها خلقًا رضی منها آخر.

(صحيح مسلم شريف)

इस हदीस में नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने

एक अ़जीब व ग़रीब उसूल बयान फ़रमाया, कि कोई मोमिन मर्द किसी मोमिन औ़रत से पूरे तौर पर बुग्ज़ न रखे, यानी यह न करे कि उसको बिल्कुल ही कन्डम क़रार दे दे, और यह कहे कि इसमें तो कोई अच्छाई नहीं है, अगर उसकी कोई बात ना पसन्द है तो उसकी दूसरी कोई बात पसन्द भी होगी।

पहला उसूल नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बता दिया कि जब दो इन्सान एक साथ रहते हैं तो कोई बात दूसरे की अच्छी लगती है और कोई बात बुरी लगती है, अगर कोई बात बुरी लग रही है तो उसकी वजह से उसको बिल्कुल ही बुरा न समझो, बल्कि उस वक़्त उसके अच्छे औसाफ़ (सिफ़तों) को ख़्याल करो, उसके अन्दर आख़िर कोई अच्छाई भी तो होगी, बस उस अच्छाई का ख़्याल करके अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करो कि यह अच्छाई तो उसके अन्दर है, अगर यह अ़मल करोगे तो हो सकता है कि उसके अन्दर जो बुराइयां हैं, तुम्हारे दिल के अन्दर उनकी इतनी ज़्यादा अहमियत बाक़ी न रहे।

असल बात यह है कि आदमी ना शुकरा है, अगर दो तीन बातें ना पसन्द हुयीं और बुरी लगीं बस! उन्हीं को लेकर बैठ गया कि उसमें तो यह ख़राबी है, उसमें तो यह ख़राबी है, अब अच्छाई की तरफ़ ध्यान नहीं, इसलिये हर वक़्त रोता रहता है, और हर वक़्त उसकी बुराइयां करता रहता है, और इसके नतीजे में उसके साथ बद सुलूकी करता है।

हर चीज़ अच्छाई और बुराई से मिली जुली है

दुनिया के अन्दर कोई चीज़ ऐसी नहीं है कि जिसके अन्दर बुराई न हो और उसमें कोई न कोई अच्छाई न हो,अल्लाह तआ़ला ने यह दुनिया बनाई है इसमें हर चीज़ के अन्दर ख़ैर व शर (अच्छाई व बुराई) मिली जुली है, कोई चीज़ इस कायनात में बिल्कुल ही अच्छी नहीं और कोई बिल्कुल ही बुरी नहीं, इसमें ख़ैर

व शर मिले जुले होते हैं, कोई काफ़िर है या कोई मुश्रिक है या कोई बुरा इन्सान है, अगर उसके अन्दर भी अच्छाई तलाश करोगे तो कोई न कोई अच्छाई ज़रूर मिल जायेगी।

अंग्रेज़ी की एक कहावत

अंग्रेज़ी की एक कहावत है, और हमारे हुज़ूरे अक़्दस सल्ल-ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि "हिक्मत की बात मोमिन की गुमशुदा दौलत है, जहां वह उसको पाये, उसे लेले" इसलिये अंग्रेज़ी की कहावत होने से यह लाज़िम नहीं आता कि वह ज़रूर ग़लत ही हो। बात बड़ी हकीमाना है, किसी ने कहा कि "वह घन्टा या घड़ी जो बन्द हो गई हो, वह भी दिन में दो बार सच बोलती है" जैसे फ़र्ज़ करो कि बारह बज कर पांच मिनट पर घड़ी बन्द हो गई, अब ज़ाहिर है कि हर वक़्त तो वह सही टाईम नहीं बतायेगी, बल्कि ग़लत बतायेगी, लेकिन दिन में दो मर्तबा ज़रूर सही टाईम बतायेगी, एक दनि में बारह बज कर पांच मिनट पर, और एक रात में बारह बज कर पांच मिनट पर, तो दो मर्तबा वह ज़रूर सच बोलेगी।

अच्छाई तलाश करोगे तो मिल जायेगी

कहावत कहने वाले का मक़्सद यह है कि चाहे कितनी भी बेकार और बुरी चीज़ हो, लेकिन अगर उसमें अच्छाई तलाश करोगे तो मिल जायेगी, इसी तरह दुनिया के अन्दर कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिसके अन्दर कोई न कोई अच्छाई न हो।

कोई बुरा नहीं क़ुदरत के कारख़ाने में

हमारे वालिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि इक़बाल मरहूम का एक शेर बहुत पढ़ा करते थे कि:

नहीं है चीज़ निकम्मी कोई ज़माने में
कोई बुरा नहीं क़ुदरत के कारख़ाने में

मतलब यह है कि जो चीज़ भी अल्लाह तआ़ला ने पैदा की है,

अपनी हिक्मत और मशिय्यत से पैदा फ़रमाई है, अगर ग़ौर करोगे तो हर एक चीज़ के अन्दर हिक्मत और मसलिहत नज़र आयेगी लेकिन होता यह है कि आदमी सिर्फ़ बुराइयों को देखता रहता है, और इच्छाइयों की तरफ़ निगाह नहीं करता, इस वजह से वह बद्दिल हो कर ज़ुल्म और ना इन्साफ़ी को इख़्तियार करता है।

औरत की अच्छी सिफ़त की तरफ़ निगाह करो

चुनांचे अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

"فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسٰى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْئًا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا

(سورة النساء:١٩)

कि अगर तुम्हें वे औरतें पसन्द नहीं हैं जो तुम्हारे निकाह में आ गयीं, तो वे अगरचे तुम्हें ना पसन्द हैं लेकिन हो सकता है कि अल्लाह तआला ने उनमें बहुत ख़ैर रखी हो, इसलिये हुक्म यह है कि औरत की अच्छी सिफ़त की तरफ़ निगाह करो इस से तुम्हारे दिल को तसल्ली भी होगी, और बद सुलूकी के रास्ते भी बन्द होंगे।

एक बुज़ुर्ग का सबक़ आमोज़ वाक़िआ

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अलैहि ने एक क़िस्सा लिखा है कि एक बुज़ुर्ग की बीवी बहुत लड़ने झगड़ने वाली थी, हर वक़्त लड़ती रहती थी, जब घर में दाख़िल होते बस लानत मलामत लड़ाई झगड़ा शुरू हो जाता, किसी साहिब ने उन बुज़ुर्ग से कहा कि दिन रात की झक झक और लड़ाई आपने क्यों पाली हुई है, यह क़िस्सा ख़त्म कर दीजिये और तलाक़ दे दीजिये, तो उन बुज़ुर्ग ने जवाब दिया कि भाई! तलाक़ देना तो आसान है, जब चाहूंगा दे दूंगा, बात असल में यह है कि इस औरत में और तो बहुत सी ख़राबियां नज़र आती हैं, लेकिन इसके अन्दर एक ख़ूबी ऐसी है, जिसकी वजह से मैं इसको कभी नहीं छोडूंगा, और कभी तलाक़ नहीं दूंगा, और वह यह है कि

अल्लाह तआ़ला ने इसके अन्दर वफ़ादारी की ऐसी ख़ूबी रखी है कि अगर मान लो मैं गिरफ़्तार हो जाऊं और पचास साल तक जेल में बन्द रहूं तो मुझे यक़ीन है कि मैं इसको जिस कोने में बिठाकर जाऊंगा उसी कोने में बैठी रहेगी, और किसी और की तरफ़ निगाह उठाकर नहीं देखेगी, और यह वफ़ादारी ऐसी सिफ़त है कि इसकी कोई क़ीमत नहीं होती।

हज़रत मिर्ज़ा मज़्हर जानेजानां और नाज़ुक मिज़ाजी

हज़रत मिर्ज़ा मज़्हर जानेजानां रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का नाम सुना होगा बड़े अल्लाह वाले गुज़रे हैं, और ऐसे नफ़ीस मिज़ाज और नाज़ुक मिज़ाज बुज़ुर्ग थे कि अगर सुराही के ऊपर गिलास टेढ़ा रख दिया तो उसको देख कर सर में दर्द हो जाता था, ऐसे नाज़ुक मिज़ाज आदमी थे, ज़रा बिस्तर पर शिकनें आ जायें तो सर में दर्द हो जाता था, लेकिन उनको बीवी जो मिली वह बड़ी बद सलीक़ा, बद मिज़ाज, ज़बान की फूहड़, हर वक़्त कुछ न कुछ बोलती रहती थीं, अल्लाह तआ़ला अपने नेक बन्दों को अ़जीब अ़जीब तरीक़े से आज़माते हैं और उनके दरजात बुलन्द फ़रमाते हैं, यह अल्लाह तआ़ला की एक आज़माइश थी लेकिन उन्हों ने सारी उमर उनके साथ निभाया, और फ़रमाया करते थे कि अल्लाह तआ़ला मेरे गुनाहों को शायद इस तरह माफ़ फ़रमा दें।

हमारे मुआ़शरे की औ़रतें दुनिया की हूरें हैं

हमारे हज़रत हकीमुल उम्मत रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि हमारे हिन्दुस्तान पाकिस्तान के मुआ़शरे की ख़्वातीन (औ़रतें) दुनिया की हूरें हैं और इसकी वजह यह बयान फ़रमाते कि उनके अन्दर वफ़ादारी की सिफ़त है जब से मग़रिबी तहज़ीब व तमद्दुन का वबाल आया है उस वक़्त से रफ़्ता रफ़्ता यह सिफ़त भी ख़त्म होती जा रही है लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उनके अन्दर वफ़ादारी का ऐसा वस्फ़ रखा है कि चाहे कुछ हो जाये लेकिन यह

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को औरतों के साथ अच्छे सुलूक का इस दर्जा एहतिमाम था कि आपने फ़रमाया किः

"خیارکم خیارکم لنسَاءِ ھم وانا خیارکم لنسائی"

"तुम में सबसे बेहतरीन वे लोग हैं जो अपनी औ़रतों के साथ अच्छा बर्ताव करते हैं, और मैं तुम में अपनी औ़रतों के साथ बेह–तरीन बर्ताव करने वाला हूं।" (तिर्मिज़ी शरीफ़)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को औ़रतों के हुक़ूक़ की हिफ़ाज़त और उनके साथ अच्छे सुलूक का इतना एहतिमाम था कि बेशुमार हदीसों में इसकी तश्रीह फ़रमाई, चुनांचे सब से पहली हदीस में हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया किः

"استوصوا بالنساء خیرًا"

"मैं तुमको औ़रतों के बारे में भलाई की नसीहत करता हूं, तुम मेरी इस नसीहत को क़बूल कर लो।"

कुरआन करीम सिर्फ़ उसूल बयान करता है

आगे बढ़ने से पहले यहां एक बात अ़र्ज़ कर दूं कि कुरआन करीम में आप यह देखेंगे कि आ़म तौर पर कुरआन करीम मोटे मोटे उसूल बयान कर देता है, तफ़्सीलात और जुज़्इयात में नहीं जाता, उन्हें बयान नहीं करता, यहां तक कि नमाज़ जैसा अहम रुक्न जो दीन का सुतून है, जिसके बारे में कुरआन करीम ने तिहत्तर जगहों पर हुक्म दिया कि नमाज़ क़ायम करो, लेकिन नमाज़ कैसे पढ़ी जाती है? उसका तरीक़ा क्या होता है? उसकी रकअ़तें कितनी होती हैं? और किन चीज़ों से नमाज़ टूट जाती है, और किन चीज़ों से नहीं टूटती? ये तफ़्सीलात क़ुरआन ने बयान नहीं कीं, ये हुज़ूरे अक़्दस नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात पर छोड़ दीं, आपने अपनी सुन्नत से बयान फ़रमायीं। इसी तरह ज़कात का हुक्म भी कुरआन करीम में क़रीब क़रीब

इतनी ही मर्तबा आया है, लेकिन ज़कात का निसाब क्या होता है? किस पर फ़र्ज़ होती है? कितनी फ़र्ज़ होती है? किन किन चीज़ों पर फ़र्ज़ होती है? ये तफ़सीलात क़ुरआन करीम ने बयान नहीं कीं, बल्कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीमात पर छोड़ दीं, मालूम हुआ कि क़ुरआन करीम आम तौर पर उसूल बयान करता है, तफ़सीली जुज़्इयात में नहीं जाता।

घरेलू ज़िन्दगी, पूरे तमद्दुन की बुनियाद है

लेकिन मर्द व औरत के तअल्लुक़ात, ख़ानदानी तअल्लुक़ात ऐसी चीज़ है कि क़ुरआन करीम ने इसके नाज़ुक नाज़ुक जुज़्वी मसाइल भी खोल कर बयान फ़रमाये हैं, एक एक चीज़ को खोल कर बयान कर दिया है, और फिर बाद में नबी-ए-पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी तशरीह फ़रमाई, इसकी क्या वजह है? वजह इसकी यह है कि मर्द व औरत के जो तअल्लुक़ात हैं, और इन्सान की जो घरेलू ज़िन्दगी है यह तमद्दुन की बुनियाद होती है, और इस पर पुरे तहज़ीब व तमद्दुन की इमारत खड़ी होती है, अगर मर्द व औरत के तअल्लुक़ात दुरुस्त हैं, खुशगवार हैं और दोनों एक दूसरे के हुक़ूक़ अदा कर रहे हैं तो इससे घर का निज़ाम दुरुस्त होता है और घर का निज़ाम दुरुस्त होने से औलाद दुरुस्त होती है, और औलाद के दुरुस्त होने से मुआशरा संवरता है, और उस पर पूरे मुआशरे की इमारत खड़ी होती है, लेकिन अगर घर का निज़ाम ख़राब हो और मियां बीवी के दरमियान रात दिन तू तू मैं मैं होती हो, तो इस से औलाद पर बुरा असर पड़ेगा, और उसके नतीजे में जो क़ौम तैयार होगी उसके बारे में आप तसव्वुर कर सकते हैं कि किसी तहज़ीब दार क़ौम के अफ़राद बन सकते हैं या नहीं, इस वास्ते इसको "आयली अहकाम" यानी घर-दारी के अहकाम कहा जाता है, इसलिये क़ुरआन करीम ने तअल्लुक़ात की छोटी छोटी बातों को भी बयान फ़रमाया है।

औरत की पैदाइश टेढ़ी पसली से होने का मतलब

उसके बाद हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बहुत अच्छी मिसाल बयान फ़रमाई है और यह इतनी अ़जीब व ग़रीब और हकीमाना मिसाल है कि ऐसी मिसाल मिलना मुश्किल है, फ़रमाया कि औ़रत पसली से पैदा की गयी है, बाज़ लोगों ने इसकी तशरीह यह की है कि अल्लाह तआ़ला ने सब से पहले हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम को पैदा फ़रमाया, उसके बाद हज़रत हव्वा अ़लैहस्सलाम को उन्हीं की पसली से पैदा किया गया, और कुछ उलमा ने इसकी तशरीह यह भी की है कि रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम औ़रत की तश्बीह देते हुए फ़रमा रहे हैं कि औ़रत की मिसाल पसली की सी है, कि जिस तरह पसली देखने में टेढ़ी मालूम होती है, लेकिन पसली का हुस्न और उसकी सेहत उसके टेढ़ा होने में ही है, चुनांचे कोई शख़्स अगर यह चाहे कि पसली टेढ़ी है, उसको सीधा कर दूं तो जब उसे सीधा करना चाहेगा तो वह सीधी तो नहीं होगी अलबत्ता टूट जायेगी, वह फिर पसली नहीं रहेगी अब दोबारा फिर उसको टेढ़ा करके पलस्तर के ज़रिये जोड़ना पड़ेगा, इसी तरह हदीस शरीफ़ में औ़रत के बारे में भी यही फ़रमाया कि:

"ان ذهبت تقيمها كسرتها"

"अगर तुम पसली को सीध करना चाहोगे तो वह पसली टूट जायेगी।"

"وان استمتعت بها استمتعت بها وفيها عوج"

"और अगर इससे फ़ायदा उठाना चाहो, तो इसके टेढ़े होने के बावजूद फ़ायदा उठाओगे।"

यह बड़ी अ़जीब व ग़रीब और हकीमाना तश्बीह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बायान फ़रमाई कि उसकी सेहत ही उसके टेढ़े होने में है अग़र वह सीधी होगी तो वह बीमार है सही नहीं है।

यह औ़रत की मज़म्मत (बुराई) की बात नहीं है

बाज़ लोग इस मिसाल को औ़रत की मज़म्मत (बुराई) में इस्तेमाल करते हैं कि औ़रत टेढ़ी पसली से पैदा की गयी है, इसलिये उसकी असल टेढ़ी है चुनांचे मेरे पास बहुत से लोगों के ख़त आते हैं जिनमें कई लोग यह लिखते हैं कि यह औ़रत टेढ़ी पसली की मख़्लूक़ है, गोया कि उसकी मज़म्मत और बुराई के तौर पर इस्तेमाल करते हैं, हालांकि ख़ुद नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इस इरशाद का मन्शा यह नहीं है।

औ़रत का टेढ़ापन एक फ़ितरी तक़ाज़ा है

बात यह है कि अल्लाह तआ़ला ने मर्द को कुछ और सिफ़तें देकर पैदा फ़रमाया है, और औ़रत को कुछ और सिफ़तें देकर पैदा फ़रमाया, दोनों की फ़ित्रत में कितना फ़र्क़ है, फ़ित्रत में फ़र्क़ होने की वजह से मर्द औ़रत के बारे में यह महसूस करता है कि यह मेरी तबीयत और फ़ित्रत के ख़लाफ़ है, हालांकि औ़रत का तुम्हारी तबीयत के ख़िलाफ़ होना यह कोई ऐब नहीं है, क्योंकि यह उसकी फ़ित्रत का तक़ाज़ा है कि वह टेढ़ी हो, कोई शख़्स पसली के बारे में यह कहे कि पसली के अन्दर जो टेढ़ापन है वह उसके अन्दर ऐब है, ज़ाहिर है कि वह ऐब नहीं बल्कि उसकी फ़ित्रत का तक़ाज़ा है कि वह टेढ़ी हो, इसलिये आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह इरशाद फ़रमा रहे हैं कि अगर तुम्हें औ़रत में कोई ऐसी बात नज़र आती है जो तुम्हारी तबीयत के ख़िलाफ़ हो, और उसकी वजह से तुम उसको टेढ़ा समझ रहे हो तो उसको इस बिना पर कन्डम न करो, बल्कि यह समझो कि उसकी फ़ित्रत का तक़ाज़ा यह है, और अगर तुम उसको सीधा करना चाहोगे तो वह टूट जायेगी और अगर फ़ायदा उठाना चाहोगे तो टेढ़ा होने की हालत में भी फ़ायदा उठा सकोगे।

"ग़फ़लत" औरत के लिये हुस्न है

आज उल्टा ज़माना आ गया है, इस वासते क़दरें बदल गयीं हैं, ख़्यालात बदल गये, वर्ना बात यह है कि जो चीज़ मर्द के हक़ में ऐब है, बहुत सी बार वह औरत के हक़ में हुस्न और अच्छाई होती है, अगर हम कुरआन करीम को ग़ौर से पढ़ें तो कुरआन करीम से यह बात नज़र आती है कि जो चीज़ मर्द के हक़ में ऐब थी, वही चीज़ औरत के बारे में हुस्न क़रार दी गयी, और उसको नेकी और अच्छाई की बात कहा गया, जैसे मर्द के हक़ में यह बात ऐब है कि वह जाहिल और ग़ाफ़िल हो, और दुनिया की उसको ख़बर न हो, इसलिये कि मर्द पर अल्लाह तआ़ला ने दुनिया के कामों की ज़िम्मेदारी दी है, इसलिये उसके पास इल्म भी होना चाहिये, और उसको बा-ख़बर भी होना चाहिये, अगर बा-ख़बर नहीं है बल्कि ग़ाफ़िल है, और ग़फ़लत में मुब्तला है तो यह मर्द के हक़ में ऐब है, लेकिन कुरआन करीम ने ग़फ़लत को औरत के हक़ में हुस्न क़रार दिया, चुनांचे सूरः नूर में फ़रमाया:

"اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ" (سورة نور:٢٣)

यानी वे लोग जो ऐसी औरतों पर तोहमतें लगाते हैं जो पाक दामन हैं, और ग़ाफ़िल हैं, यानी दुनिया से बेख़बर हैं, तो दुनिया से बेख़बरी को एक हुस्न की सिफ़त के तौर पर कुरआन करीम ने बयान फ़रमया, मालूम हुआ कि औरत अगर दुनिया के कामों से बेख़बर हो और अपने फ़राइज़ की हद तक वाक़िफ़ हो और दुनिया के मामलात इतने न जानती हो तो वह औरत के हक़ में ऐब नहीं, वह सिफ़ते हुस्न है, जिसको कुरआन करीम ने सिफ़ते हुस्न के तौर पर ज़िक्र फ़रमाया।

ज़बरदस्ती सीधा करने की कोशिश न करो

इसलिये जो चीज़ मर्द के हक़ में ऐब थी, वह औरत के हक़ में ऐब नहीं और जो चीज़ मर्द के हक़ में ऐब नहीं थी कभी कभी

वह औरत के हक़ में ऐब होती है। इसलिये अगर तुम्हें उनके अन्दर कोई ऐसी चीज़ नज़र आये जो तुम्हारे लिये तो ऐब है लेकिन औरत के लिये ऐब नहीं तो उसकी वजह से औरत के साथ बर्ताव में ख़राबी न करो, इसलिये कि पसली होने का तक़ाज़ा ही यह है कि वह अपनी फ़ित्रत के एतिबार से तुम्हारी तबीयत से अलग हो, तो अब उसको ज़बरदस्ती सीधा करने की कोशिश न करो।

सारे झगड़ों की जड़

यह नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इर्शाद है, और आपसे ज़्यादा मर्द व औरत की नफ़सियात से कौन वाक़िफ़ हो सकता है, इसलिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सारे झगड़ों की जड़ पकड़ ली कि सारे झगड़े सिर्फ़ इस बिना पर होते हैं कि मर्द यह चाहता है कि जैसा मैं ख़ुद हूं, यह भी वैसी ही बन जाये, तो भाई! यह तो वैसी बनने से रही, अगर वैसी बनाना चाहोगे तो टूट जायेगी, इसलिये इस फ़िक्र को तो छोड़ दो, हां! जो चीज़ें उसके हक़ में उसके हालात के लिहाज़ से उसकी फ़ित्रत के लिहाज़ से उसके लिये ऐब नहीं, उनकी इस्लाह की फ़िक्र करो, और उनकी इस्लाह की फ़िक्र भी मर्द की ज़िम्मेदारी है, लेकिन अगर चाहो कि वह तुम्हारे मिज़ाज और तबीयत के मुवाफ़िक़ हो जाये, यह नहीं हो सकता।

उसकी कोई आ़दत पसन्दीदा भी होगी

इस बारे की दूसरी हदीस भी हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत की गयी है।

"عن ابی هريرة رضی الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لا يفرك مؤمن مؤمنة ان كره منها خلقًا رضی منها آخر.

(صحيح مسلم شريف)

इस हदीस में नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने

एक अ़जीब व ग़रीब उसूल बयान फ़रमाया, कि कोई मोमिन मर्द किसी मोमिन औ़रत से पूरे तौर पर बुग्ज़ न रखे, यानी यह न करे कि उसको बिल्कुल ही कन्डम क़रार दे दे, और यह कहे कि इसमें तो कोई अच्छाई नहीं है, अगर उसकी कोई बात ना पसन्द है तो उसकी दूसरी कोई बात पसन्द भी होगी।

पहला उसूल नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बता दिया कि जब दो इन्सान एक साथ रहते हैं तो कोई बात दूसरे की अच्छी लगती है और कोई बात बुरी लगती है, अगर कोई बात बुरी लग रही है तो उसकी वजह से उसको बिल्कुल ही बुरा न समझो, बल्कि उस वक़्त उसके अच्छे औसाफ़ (सिफ़तों) को ख़्याल करो, उसके अन्दर आख़िर कोई अच्छाई भी तो होगी, बस उस अच्छाई का ख़्याल करके अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करो कि यह अच्छाई तो उसके अन्दर है, अगर यह अ़मल करोगे तो हो सकता है कि उसके अन्दर जो बुराइयां हैं, तुम्हारे दिल के अन्दर उनकी इतनी ज़्यादा अहमियत बाक़ी न रहे।

असल बात यह है कि आदमी ना शुकरा है, अगर दो तीन बातें ना पसन्द हुयीं और बुरी लगीं बस! उन्हीं को लेकर बैठ गया कि उसमें तो यह ख़राबी है, उसमें तो यह ख़राबी है, अब अच्छाई की तरफ़ ध्यान नहीं, इसलिये हर वक़्त रोता रहता है, और हर वक़्त उसकी बुरांइयां करता रहता है, और इसके नतीजे में उसके साथ बद सुलूकी करता है।

हर चीज़ अच्छाई और बुराई से मिली जुली है

दुनिया के अन्दर कोई चीज़ ऐसी नहीं है कि जिसके अन्दर बुराई न हो और उसमें कोई न कोई अच्छाई न हो,अल्लाह तआ़ला ने यह दुनिया बनाई है इसमें हर चीज़ के अन्दर ख़ैर व शर (अच्छाई व बुराई) मिली जुली है, कोई चीज़ इस कायनात में बिल्कुल ही अच्छी नहीं और कोई बिल्कुल ही बुरी नहीं, इसमें ख़ैर

व शर मिले जुले होते हैं, कोई काफ़िर है या कोई मुश्रिक है या कोई बुरा इन्सान है, अगर उसके अन्दर भी अच्छाई तलाश करोगे तो कोई न कोई अच्छाई ज़रूर मिल जायेगी।

अंग्रेज़ी की एक कहावत

अंग्रेज़ी की एक कहावत है, और हमारे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि "हिक्मत की बात मोमिन की गुमशुदा दौलत है, जहां वह उसको पाये, उसे लेले" इसलिये अंग्रेज़ी की कहावत होने से यह लाज़िम नहीं आता कि वह ज़रूर ग़लत ही हो। बात बड़ी हकीमाना है, किसी ने कहा कि "वह घन्टा या घड़ी जो बन्द हो गई हो, वह भी दिन में दो बार सच बोलती है" जैसे फ़र्ज़ करो कि बारह बज कर पांच मिनट पर घड़ी बन्द हो गई, अब ज़ाहिर है कि हर वक़्त तो वह सही टाईम नहीं बतायेगी, बल्कि ग़लत बतायेगी, लेकिन दिन में दो मर्तबा ज़रूर सही टाईम बतायेगी, एक दनि में बारह बज कर पांच मिनट पर, और एक रात में बारह बज कर पांच मिनट पर, तो दो मर्तबा वह ज़रूर सच बोलेगी।

अच्छाई तलाश करोगे तो मिल जायेगी

कहावत कहने वाले का मक़्सद यह है कि चाहे कितनी भी बेकार और बुरी चीज़ हो, लेकिन अगर उसमें अच्छाई तलाश करोगे तो मिल जायेगी, इसी तरह दुनिया के अन्दर कोई चीज़ ऐसी नहीं है जिसके अन्दर कोई न कोई अच्छाई न हो।

कोई बुरा नहीं कुदरत के कारख़ाने में

हमारे वालिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि इक़बाल मरहूम का एक शेर बहुत पढ़ा करते थे कि:

नहीं है चीज़ निकम्मी कोई ज़माने में
कोई बुरा नहीं कुदरत के कारख़ाने में

मतलब यह है कि जो चीज़ भी अल्लाह तआ़ला ने पैदा की है,

अपनी हिक्मत और मशिय्यत से पैदा फ़रमाई है, अगर ग़ौर करोगे तो हर एक चीज़ के अन्दर हिक्मत और मसलिहत नज़र आयेगी लेकिन होता यह है कि आदमी सिर्फ़ बुराइयों को देखता रहता है, और इच्छाइयों की तरफ़ निगाह नहीं करता, इस वजह से वह बद्दिल हो कर ज़ुल्म और ना इन्साफ़ी को इख़्तियार करता है।

औरत की अच्छी सिफ़त की तरफ़ निगाह करो

चुनांचे अल्लाह तआला ने फ़रमाया:

"فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسٰى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْئًا وَّيَجْعَلَ اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا

(سورة النساء:١٩)

कि अगर तुम्हें वे औरतें पसन्द नहीं हैं जो तुम्हारे निकाह में आ गयीं, तो वे अगरचे तुम्हें ना पसन्द हैं लेकिन हो सकता है कि अल्लाह तआला ने उनमें बहुत ख़ैर रखी हो, इसलिये हुक्म यह है कि औरत की अच्छी सिफ़त की तरफ़ निगाह करो इस से तुम्हारे दिल को तसल्ली भी होगी, और बद सुलूकी के रास्ते भी बन्द होंगे।

एक बुज़ुर्ग का सबक़ आमोज़ वाक़िआ

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अलैहि ने एक क़िस्सा लिखा है कि एक बुज़ुर्ग की बीवी बहुत लड़ने झगड़ने वाली थी, हर वक़्त लड़ती रहती थी, जब घर में दाख़िल होते बस लानत मलामत लड़ाई झगड़ा शुरू हो जाता, किसी साहिब ने उन बुज़ुर्ग से कहा कि दिन रात की झक झक और लड़ाई आपने क्यों पाली हुई है, यह क़िस्सा ख़त्म कर दीजिये और तलाक़ दे दीजिये, तो उन बुज़ुर्ग ने जवाब दिया कि भाई! तलाक़ देना तो आसान है, जब चाहूंगा दे दूंगा, बात असल में यह है कि इस औरत में और तो बहुत सी ख़राबियां नज़र आती हैं, लेकिन इसके अन्दर एक ख़ूबी ऐसी है, जिसकी वजह से मैं इसको कभी नहीं छोडूंगा, और कभी तलाक़ नहीं दूंगा, और वह यह है कि

खाना पकाना औरत की शरई ज़िम्मेदारी नहीं

इसी बुनियाद पर फ़ुक़हा–ए–किराम ने यह मस्अला बयान किया जो बड़ा नाज़ुक मस्अला है, जिसके बयान करने से बहुत से लोग नाराज़ हो जाते हैं, वह मस्अला यह है कि घर का खाना पकाना औरत की शरई ज़िम्मेदारी नहीं है, यानी शर्अन यह फ़रीज़ा उन पर लागू नहीं होता कि वे ज़रूर खाना पकायें, बल्कि फ़ुक़हा–ए–किराम ने यहां तक लिखा है कि औरतों की दो किस्में हैं, पहली क़िस्म उन औरतों की है जो अपने घर में अपने मैके में भी घर का काम किया करती थीं, और दूसरी क़िस्म की औरतें वे हैं, जो अपने घर में खाना नहीं पकाती थीं, बल्कि नौकर चाकर थे, वे खाना पकाते थे, अगर दूसरी क़िस्म की औरत शादी के बाद शौहर के घर आ जाये तो उसके ज़िम्मे खाना पकाना किसी तरह भी वाजिब नहीं, न अख़्लाक़न, न क़ानूनन, न शर्अन, बल्कि वह औरत शौहर से कह सकती है कि मेरा ख़र्च तो तुम्हारे ज़िम्मे वाजिब है बजाये इसके कि मैं खाना पकाऊं तुम मेरे लिये पका पकाया खाना लाकर दो, चुनांचे फ़ुक़हा–ए–किराम लिखते हैं किः

"يأتها بطعام مهيئا"

इस सूरत में पका पकाया खाना लाकर औरत को देना यह शौहर की ज़िम्मेदारी है, और उस औरत से न क़ानूनन खाना पकाने का मुतालबा किया जा सकता है और न दियानतन्, इसलिये कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने साफ़ और वाज़ेह (स्पष्ट) अल्फ़ाज़ में यह फ़रमायाः

"ليس تملكون منهن شيئا غير ذالك"

यानी तुम्हें यह हक़ हासिल है कि उनको अपने घर पर रखो और तुम्हारी इजाज़त के बग़ैर उनको घर से बाहर जाना जायज़ नहीं, लेकिन इसके अलावा उन पर कोई ज़िम्मेदारी शर्अन नहीं है।

और अगर वह पहली क़िस्म की औरत है यानी जो अपने घर में खाना पकाती थी, और खाना पकाती हुई शौहर के घर आई है तो उसके ज़िम्मे खाना पकाना क़ानूनन वाजिब नहीं है, लेकिन अख़्लाक़न वाजिब है, यानी अदालत के ज़ोर से तो उस से खाना पकाने का मुतालबा नहीं किया जा सकता, हां! अलबत्ता उसकी अख़्लाक़ी ज़िम्मेदारी है कि वह अपना खाना ख़ुद पकाये, इस सूरत में शौहर के ज़िम्मे यह है कि वह खाना पकाने का सामान लाकर देदे, बाक़ी शौहर या बच्चों के लिये खाना पकाना, यह उसकी ज़िम्मेदारी भी नहीं है, और यह औरत शौहर से यह मुतालबा नहीं कर सकती कि तुम मेरे लिये पका पकाया खाना लाकर दो, लेकिन अगर वह शौहर और बच्चों के लिये खाना पकाने से इन्कार कर दे तो उस से अदालत के ज़ोर पर खाना पकाने का मुतालबा नहीं किया जा सकता, फुक़हा–ए–किराम ने इतनी तफ़सील के साथ ये मसाइल बयान फ़रमाये हैं।

सास ससुर की ख़िदमत वाजिब नहीं

एक बात और समझ लीजिये जिसमें बड़ी कोताही होती है, वह यह कि जब औरत के ज़िम्मे शौहर का और उसकी औलाद का खाना पकाना वाजिब नहीं तो शौहर के जो मां बाप और बहन भाई हैं उनके लिये खाना पकाना और उनकी ख़िदमत करना भी वाजिब नहीं, हमारे यहां यह दस्तूर चल पड़ा है कि जब बेटे की शादी हुई तो उस बेटे के मां बाप यह समझते हैं कि बहू पर बेटे का हक़ बाद में है, और हमारा हक़ पहले है, इसलिये यह बहू हमारी ख़िदमत ज़रूर करे, चाहे बेटे की ख़िदमत करे या न करे, और फिर इसके नतीजे में सास बहू भावज और नंदों के झगड़े खड़े हो जाते हैं, और उन झगड़ों के नतीजे में जो कुछ हो रहा है वह आप के सामने है।

सास ससुर की ख़िदमत उसकी सआदत मन्दी है

ख़ूब समझ लीजिये! अगर मां बाप को ख़िदमत की ज़रूरत है तो लड़के के ज़िम्मे वाजिब है कि वह ख़ुद उनकी ख़िदमत करे, अलबत्ता उस लड़के की बीवी की सआदत मन्दी है कि वह अपने शौहर के मां बाप की ख़िदमत भी ख़ुश–दिली से अपनी सआदत और अज्र का सबब समझ कर अन्जाम दे, लेकिन लड़के को यह हक़ नहीं पहुंचता कि वह अपनी बीवी को अपने मां बाप की ख़िदमत करने पर मजबूर करे, जबकि वह ख़ुश–दिली से उनकी ख़िदमत पर राज़ी न हो, और न मां बाप के लिये जायज़ है कि वे अपनी बहू को इस बात पर मजबूर करें कि वह हमारी ख़िदमत करे, लेकिन अगर वह बहू ख़ुश–दिली से अपनी सआदत मन्दी समझ कर अपने शौहर के मां बाप की जितनी ख़िदमत करेगी, इन्शा अल्लाह उसके अज्र में बहुत इज़ाफ़ा होगा, उस बहू को ऐसा करना भी चाहिये, ताकि घर की फ़िज़ा ख़ुशगवार रहे।

बहू की ख़िदमत की क़द्र करें

लेकिन साथ ही दूसरी जानिब सास, ससुर और शौहर को भी यह समझना चाहिये कि अगर यह ख़िदमत अन्जाम दे रही है तो यह इसका अच्छा सुलूक है इसका अच्छा अख़्लाक़ है, इसके ज़िम्मे यह ख़िदमत फ़र्ज़ नहीं है, इसलिये उनको चाहिये कि वे बहू की इस ख़िदमत की क़द्र करें, और उसका बदला देने की कोशिश करें, इन हुक़ूक़ और मसाइल को न समझने के नतीजे में आज घर बर्बाद हो रहे हैं, सास बहू की और भावज और नंदों की लड़ाइयों ने घर के घर उजाड़ दिये, यह सब कुछ इसलिये हो रहा है कि इन हुक़ूक़ की वे हदें जो नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाई हैं वे ज़ेहनों में मौजूद नहीं हैं।

एक अ़जीब वाक़िआ

मेरे हज़रत डाक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने

एक दिन बड़ा अ़जीब वाक़िआ़ सुनाया कि मेरे तअ़ल्लुक़ वालों में एक साहिब थे, वह और उनकी बीवी दोनों मेरी मज्लिस में आया करते थे और कुछ इस्लाही तअ़ल्लुक़ भी क़ायम किया हुआ था, दोनों ने एक मर्तबा अपने घर मेरी दावत की, चुनांचे मैं उनके घर गया, और जाकर खाना खाया और खाना बड़ा अच्छा बना हुआ था, हमारे हज़रत रह्मतुल्लाहि अ़लैहि की हमेशा ही आ़दत थी कि जब खाना खाते तो खाने के बाद खाना बनाने वाली ख़ातून की तारीफ़ करते कि तुमने बहुत अच्छा खाना पकाया, ताकि उसका हौसला बढ़े, उसका दिल बढ़े, चुनांचे हज़रते वाला खाना खाकर फ़ारिग़ हुए तो वह ख़ातून पर्दे के पीछे आयीं और आकर हज़रते वाला को सलाम किया तो हज़रते वाला ने फ़रमाया तुमने बड़ा मज़ेदार खाना बनाया, खाना खाने में बड़ा मज़ा आया। हज़रते वाला फ़रमाते हैं कि जब मैंने यह जुम्ला कहा तो पर्दे के पीछे से उस ख़ातून की सिस्कियां लेने और रोने की आवाज़ आई, मैं हैरान हो गया कि मालूम नहीं मेरी किस बात से उनको तक्लीफ़ पहुंची और उनका दिल टूटा, मैंने पूछा किः क्या बात है? आप क्यों रो रही हैं? उन ख़ातून ने अपने रोने पर मुश्किल से काबू पाते हुए यह कहा कि हज़रतः आज मुझे इन शौहर के साथ रहते हुए चालीस साल हो गये हैं लेकिन इस पूरे अरसे में कभी मैंने इनकी ज़बान से यह जुम्ला नहीं सुना कि "आज खाना अच्छा बना है" आज जब आपके मुंह से यह जुम्ला सुना तो मुझे रोना आ गया।

ऐसा शख़्स खाने की तारीफ़ नहीं करेगा

हज़रते वाला कसरत से यह वाक़िआ़ सुना कर फ़रमाते थे कि वह शख़्स यह काम हरगिज़ नहीं कर सकता जिसके दिल में यह एहसास हो कि यह बीवी खाने पकाने की जो ख़िदमत अन्जाम दे रही है, यह उसका हुस्ने सुलूक और हुस्ने मामला है जो वह मेरे साथ कर रही है, लेकिन जो शख़्स अपनी बीवी को नौकर और

ख़ादिम समझता हो कि यह मेरी ख़ादिमा है, उसको यह काम ज़रूर अन्जाम देना है, खाना पकाना उसका फ़र्ज़ है, अगर खाना अच्छा पका रही है तो इस पर उसकी तारीफ़ करने की क्या ज़रूरत है? ऐसा शख़्स कभी बीवी की तारीफ़ नहीं करेगा।

शौहर अपने मां बाप की ख़िदमत ख़ुद करे

एक मस्अला यह पैदा होता है कि मां बाप बूढ़े हैं, या बीमार हैं, और उनको ख़िदमत की ज़रूरत है, घर में सिर्फ़ बेटा और बहू हैं, अब क्या किया जाये? इस सूरत में भी शरई मस्अला यह है कि बहू के ज़िम्मे वाजिब नहीं कि वह शौहर के मां बाप की ख़िदमत करे, अलबत्ता उसकी सआदत और ख़ुशनसीबी है, और अज्र व सवाब का मूजिब है, अगर ख़िदमत करेगी तो इन्शा अल्लाह बड़ा सवाब हासिल होगा, लेकिन बेटे को यह समझना चाहिये कि अपने मां बाप की ख़िदमत करूं, अब चाहे वह ख़िदमत ख़ुद करे या कोई नौकर और ख़ादिमा रखे, लेकिन अगर बीवी ख़िदमत कर रही है तो यह उसका हुस्ने सुलूक और एहसान समझना चाहिये।

औरत को इजाज़त के बग़ैर बाहर जाना जायज़ नहीं

लेकिन एक क़ानून इसके साथ और भी सुन लें, वर्ना मामला उल्टा हो जायेगा, इसलिये कि लोग जब एक तरफ़ की बात सुन लेते हैं तो उससे ना जायज़ फ़ायदा उठाते हैं, जैसा कि मैंने तफ़्सील के साथ अर्ज़ किया कि खाना पकाना औरत के ज़िम्मे शरअन वाजिब नहीं, लेकिन हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह जो फ़रमाया कि ये तुम्हारे घरों में मुक़य्यद रहती हैं, इसका मतलब यह है कि तुम्हारी इजाज़त के बग़ैर उनके लिये कहीं जाना जायज़ नहीं, इसलिये जिस तरह फ़ुक़हा–ए–किराम ने खाना पकाने का मस्अला तफ़्सील के साथ लिखा है, इसी तरह फ़ुक़हा–ए–किराम ने यह क़ानून भी लिखा है कि अगर शौहर औरत से यह कह दे कि तुम घर से बाहर नहीं जा सकतीं, और

अपने अज़ीज़ों और रिश्तेदारों से मिलने नहीं जा सकतीं, यहां तक कि उसके मां बाप से भी मिलने के लिये जाने से मना कर दे तो औरत के लिये उनसे मुलाक़ात के लिये घर से बाहर जाना जायज़ नहीं, अलबत्ता मां बाप अपनी बेटी से मिलने के लिये उसके घर आ जायें तो अब शौहर उन मां बाप को मुलाक़ात करने से नहीं रोक सकता, लेकिन फ़ुक़हा–ए–किराम ने उसकी हद मुक़र्रर कर दी है कि उसके मां बाप हफ़्ते में एक बार आयें और मुलाक़ात करके चले जायें, यह उस औरत का हक़ है, शौहर इससे नहीं रोक सकता लेकिन इजाज़त के बग़ैर उसके लिये जाना जायज़ नहीं, तो अल्लाह तआ़ला ने दोनों के दरमियान इस तरह तवाज़ुन (संतुलन) बराबर किया है कि औरत के ज़िम्मे क़ानूनी एतिबार से खाना पकाना वाजिब नहीं, तो दूसरी तरफ़ क़ानूनी एतिबार से उसका घर से बाहर निकलना शौहर की इजाज़त के बग़ैर जायज़ नहीं।

दोनों मिल कर ज़िन्दगी की गाड़ी को चलायें

यह क़ानून की बात थी, लेकिन हुस्ने सुलूक की बात यह है कि वह उसकी ख़ुशी का ख़्याल रखे, और यह उसकी ख़ुशी का ख़्याल रखे। हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने भी अपने दरमियान यह कामों की तक़्सीम फ़रमा रखी थी कि हज़रत अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु घर के बाहर के तमाम काम अन्जाम देते थे, और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा घर के अन्दर के तमाम काम अन्जाम देती थीं, यही नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत है और इसी पर अ़मल होना चाहिये, दोनों मियां बीवी क़ानुन की बारीकियों में हर वक़्त न पड़े रहें, बल्कि शौहर बीवी के साथ और बीवी शौहर के साथ अच्छे बर्ताव का मामला करे, और यह फ़ितरी तक़्सीम भी है कि घर के काम बीवी के ज़िम्मे और बाहर के काम शौहर के ज़िम्मे हों, इस तरह दोनों मिल कर ज़िन्दगी की गाड़ी को चलायें।

अगर बे–हयाई को इख़्तियार करें तो?

"الا أن يـأتيـن بـفـاحشة مبيـنـه فان فعلن فاهجروهن فى المضاجع واضربوهن ضربًا غيرمبرح، فان اطعن فلا تبغوا عليهن سَبيلا"

हां! अगर वे औरतें घर में किसी खुली बे–हयाई को इख़्तियार करें तो वह बे–हयाई किसी क़ीमत पर भी बर्दाश्त नहीं, उस सूरत में कुरआन करीम के बताये हुए नुसख़े के मुताबिक़ पहले उनको नसीहत करो, और उसके बाद अगर वे बाज़ न आयें तो उनका बिस्तर अलग कर दो, और फिर भी अगर बाज़ न आयें तो मजबूरी के दर्जे में उस बे–हयाई पर मारने की भी इजाज़त है बशर्ते कि वह मार तक्लीफ़ देने वाली न हो, और उसके बाद अगर वे तुम्हारी इताअ़त कर लें, और बाज़ आ जायें तो अब उसके बाद कोई रास्ता उनके ख़िलाफ़ तलाश न करो, यानी उनको और तक्लीफ़ पहुंचाने की गुंजायश नहीं।

"الاوحقهن عليكم ان تحسنوا اليهن فى كسوتهن وطعامهن"

ख़बरदार! उन औ़रतों का तुम पर यह हक़ है कि तुम उनके साथ अच्छा बर्ताव करो, उनके लिबास में और उनके खाने में और उनकी दूसरी ज़रूरतों में जो तुम्हारे ज़िम्मे वाजिब हैं तुम उनमें एहसान से काम लो, सिर्फ़ यह नहीं कि इन्तिहाई मजबूरी में ज़रूरत पूरा कर दी, बल्कि एहसान, फ़राख़ दिली और खुलेपन से काम लो, और उनके लिबास और खाने पर ख़र्च करो।

बीवी को जेब ख़र्च अलग दिया जाये

यहां दो तीन बातें इस सिलसिले में अ़र्ज़ करनी हैं, जिन पर हकीमुल उम्मत हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने अपने मवाइज़ में जगह जगह ज़ोर दिया है, और आ़म तौर पर इन बातों की तरफ़ से ग़फ़्लत पाई जाती है। पहली बात जो हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने बयान फ़रमाई, वह यह कि नफ़्क़ा (ख़र्च) सिर्फ़ यह नहीं कि बस खाने का इन्तिज़ाम कर दिया, और कपड़े

का इन्तिज़ाम कर दिया, बल्कि नफ़्क़े का एक हिस्सा यह भी है कि खाने और कपड़े के अलावा भी कुछ रक़म बतौर जेब ख़र्च के बीवी को दी जाये, जिसको वह आज़ादी के साथ अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ ख़र्च कर सके, बाज़ लोग खाने और कपड़े का इन्तिज़ाम तो कर देते हैं, लेकिन जेब ख़र्च का एहतिमाम नहीं करते, हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अलैहि फ़र्माते हैं कि जेब ख़र्च देना भी ज़रूरी है, इसलिये कि इन्सान की बहुत सी ज़रूरतें ऐसी होती हैं कि जिसको बयान करते हुए भी इन्सान शरमाता है, या उसको बयान करते हुए उसको उलझन महसूस होती है, इसलिये कुछ रक़म बीवी के पास ऐसी ज़रूरतों के लिये भी होनी चाहिये, ताकि वह दूसरे की मुहताज न हो, यह भी नफ़्क़े का एक हिस्सा है, हज़रते वाला ने फ़रमाया कि जो लोग यह जेब ख़र्च नहीं देते, वे अच्छा नहीं करते।

ख़र्चे में खुले दिल से काम लेना चाहिये

दूसरी बात यह है कि खाने पीने में अच्छा सुलूक करो, यह न हो कि सिर्फ़ "कूते ला यमूत" दे दी, यानी इतना खाना दे दिया जिससे मौत न आये, बल्कि एहसान करो, और एहसान का मतलब यह है कि इन्सान अपनी आमदनी के मेयार के मुताबिक़ खुले दिल और कुशादगी के साथ घर का ख़र्च उसको दे, बाज़ लोगों के दिलों में यह ख़लजान रहता है कि शरीअत में एक तरफ़ तो फ़ुज़ूल ख़र्ची और इस्राफ़ की मनाही आई है, और दूसरी तरफ़ यह हुक्म दिया जा रहा है कि घर के ख़र्च में तंगी मत करो, बल्कि कुशादगी से काम लो, अब सवाल यह है कि दोनों में हद्दे फ़ासिल क्या है? कौन सा ख़र्चा फ़ुज़ूल ख़र्ची में दाख़िल है और कौन सा ख़र्चा फ़ुज़ूल ख़ची में दाख़िल नहीं?

रिहाइश जायज़, राहत व आराम जायज़

इस उलझन के जवाब में हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अलैहि

ने घर के बारे में फ़रमाया कि एक "घर" वह होता है जो रहने के क़ाबिल हो, जैसे झोंपड़ी डाल दी, या छप्पर डाल दिया, उसमें भी आदमी रिहाइश इख़्तियार कर सकता है, यह तो पहला दर्जा है, जो बिल्कुल जायज़ है, दूसरा दर्जा यह है कि रिहाइश भी हो, और साथ में राहत व आराम भी हो, जैसे पुख़्ता मकान है, जिसमें इन्सान आराम के साथ रह सकता है, और घर में राहत व आराम के लिये कोई काम किया जाये तो उसकी मनाही नहीं है और यह भी फ़ुज़ूल ख़र्ची में दाख़िल नहीं, जैसे एक शख़्स है वह झोंपड़ी में भी ज़िन्दगी बसर कर सकता है, और दूसरा शख़्स झोंपड़ी में नहीं रह सकता, उसको तो रहने के लिये पुख़्ता मकान चाहिये, और उस मकान में भी उसको पंखा और बिजली चाहिये, अब अगर वह शख़्स अपने घर में पंखा और बिजली इसलिये लगाता है कि उस को आराम हासिल हो, तो यह फ़ुज़ूल ख़र्ची में दाख़िल नहीं।

सजाना संवारना भी जायज़

तीसरा दर्जा यह है कि मकान में राहत व आराम के साथ सजाना संवारना भी हो, जैसे एक शख़्स का पुख़्ता मकान बना हुआ है, पलास्तर किया हुआ है, बिजली भी है, पंखा भी है, लेकिन उस मकान पर रंग नहीं किया हुआ है, अब ज़ाहिर है कि रिहाइश तो ऐसे मकान में भी हो सकती है लेकिन रंग व रोग़न के बग़ैर सजावट नहीं हो सकती, अब अगर कोई शख़्स सजावट के हासिल करने के लिये मकान पर रंग व रोग़न कराये तो शरीअ़त में वह भी जायज़ है।

ख़ुलासा यह है कि रिहाइश जायज़, आसाइश (राहत व आराम) जायज़, आराइश (सजावट) जायज़, और आराइश का मतलब यह है कि कोई इन्सान अपने दिल को ख़ुश करने के लिये कोई काम कर ले, ताकि देखने में अच्छा मालूम हो, देख कर दिल ख़ुश हो जाये, तो इसमें कोई हरज नहीं, शरीअ़त में यह भी जायज़ है।

नुमाइश जायज़ नहीं

उसके बाद चौथा दर्जा है "नुमाइश" अब जो काम कर रहा है उससे न तो आराम मक़्सूद है, न आराइश मक़्सूद है, बल्कि उस काम का मक़्सद सिर्फ़ यह है कि लोग मुझे बड़ा दौलत मन्द समझें, और लोग यह समझें कि इसके पास बहुत पैसा है, और ताकि उसके ज़रिये दूसरों पर अपनी बर्तरी जताऊं, और अपने आपको बुलन्द ज़ाहिर करूं, ये सब "नुमाइश" के अन्दर दाख़िल है और यह शरीअ़त में ना जायज़ है, और फ़ुज़ूल ख़र्ची में दाख़िल है।

फ़ुज़ूल ख़र्ची की हद

यही चार दरजे लिबास और खाने में भी हैं। हर चीज़ में हैं। एक शख़्स अच्छा और क़ीमती कपड़ा इसलिये पहनता है ताकि मुझे आराम मिले और मुझे अच्छा लेगे, और मेरे घर वालों को अच्छा लगे, और मेरे मिलने जुलने वाले उसको देख कर ख़ुश हों, तो इसमें कोई हरज नहीं, लेकिन अगर कोई शख़्स अच्छा और क़ीमती लिबास इस नियत से पहनता है, ताकि मुझे दौलत मन्द समझा जाये, मुझे बहुत पैसे वाला समझा जाये, और मेरा बड़ा मक़ाम समझा जाये तो यह नुमाइश है और मना है। इसलिये हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़ुज़ूल ख़र्ची के बारे में एक वाज़ेह हद्दे फ़ासिल खींच दी कि अगर ज़रूरत पूरी करने के लिये कोई ख़र्च किया जा रहा है, या राहत व आराम के हासिल करने के लिये या अपने दिल को ख़ुश करने के लिये आराइश की ख़ातिर कोई ख़र्चा किया जा रहा है वह फ़ुज़ूल ख़र्ची में दाख़िल नहीं।

यह फ़ुज़ूल ख़र्ची में दाख़िल नहीं

मैं एक मर्तबा किसी दूसरे शहर में था, और वापस कराची आना था, गर्मी का मौसम था, मैंने एक साहिब से कहा कि एयर कन्डीशन कोच में मेरा टिकट बुक करा दो और मैंने उनको पैसे दे दिये, एक दूसरे साहिब पास बैठे हुए थे उन्हों ने फ़ौरन कहा कि

साहिब! यह तो आप फ़ुजूल ख़र्ची कर रहे हैं, इसलिये कि एयर कन्डीशन कोच में सफ़र करना तो फ़ुजूल ख़र्ची में दाख़िल है। बहुत से लोगों का ख़्याल है कि अगर ऊपर के दर्जे में सफ़र कर लिया तो यह फ़ुजूल ख़र्ची में दाख़िल है, ख़ूब समझ लीजिये अगर ऊपर के दर्जे में सफ़र करने का मक़्सद राहत हासिल करना है, जैसे गर्मी का मौसम है, गर्मी बर्दाश्त नहीं होती, अल्लाह तआला ने पैसे दियो हैं तो फिर उस दर्जे में सफ़र करना कोई गुनाह और फ़ुजूल ख़र्ची नहीं है, लेकिन अगर ऊपर के दर्जे में सफ़र करने का मक़्सद यह है कि जब मैं एयर कन्डीशन कोच में सफ़र करूंगा तो लोग यह समझेंगे कि यह बड़ा दौलत मन्द आदमी है, तो फिर वह फ़ुजूल ख़र्ची और ना जायज़ है, और नुमाइश में दाख़िल है, यही तफ़्सील कपड़े और खाने में भी है।

हर शख़्स की वुस्अत अलग अलग है

इसलिये शौहर को चाहिये कि इन दरजों को मद्दे नज़र रखते हुए बीवी के नफ़्क़े और लिबास में वुस्अत के साथ ख़र्च करे, हर आदमी की वुस्अत अलग अलग होती है, मेरे हज़रत मौलाना मसीहुल्लाह ख़ां साहिब रहमतुल्लाहि अलैहि एक मर्तबा बयान फ़रमाते हुए कहने लगे कि: भाई! एक आदमी ऐसा है जिसको न कोई आगा न कोई पीछा, यानी कोई उसका रिशतेदार है न कोई अज़ीज़ व क़रीबी है, और न कोई दोस्त है, अगर ऐसा शख़्स अपने घर में एक बिस्तर, एक रकाबी, एक डोंगा रख ले तो बस! उसके लिये ये बर्तन काफ़ी हैं, अब अगर और ज़्यादा बर्तन जमा करेगा, तो उसका मक़्सद सिवाये नुमाइश के और कुछ न होगा, और फ़ुजूल ख़र्ची होगा, लेकिन एक दूसरा आदमी जिसके मेहमान आते हैं जिसके तअल्लुक़ात ज़्यादा हैं, जिसके अज़ीज़ व क़रीबी बहुत ज़्यादा हैं उसकी ज़रूरत और वुस्अत का मेयार और है। अब अगर ऐसे शख़्स के घर में किसी वक़्त बरतनों के सौ सेट भी हों या सौ

बिस्तर हों तब भी उनमें से एक बिस्तर और एक बर्तन और एक बिस्तर भी फ़ुज़ूल ख़र्ची में दाख़िल नहीं होगा, इसलिये कि ये सब उसकी ज़रूरत में दाख़िल हैं, इसलिये फ़रमाया कि हर आदमी की वुस्अ़त का मेयार अलग होता है।

इस महल में ख़ुदा को तलाश करने वाला अह्मक़ है

कई बार लोग हज़रत इब्राहीम बिन अधम रह्मतुल्लाहि अ़लैहि जो बड़े बादशाह थे, उनका क़िस्सा सुन कर उसी से इस्तिदलाल करते हैं, जिनका क़िस्सा यह है कि एक मर्तबा हज़रत इब्राहीम बिन अधम रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने रात के वक़्त एक आदमी को देखा कि वह महल की छत पर घूम रहा है, हज़रत इब्राहीम बिन अधम रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने उसको पकड़ कर पूछा कि रात के वक़्त यहां महल की छत पर क्या कर रहा है? उस आदमी ने कहा कि: ऊंट तलाश करने आया हूं, मेरा ऊंट गुम हो गया है, हज़रत इब्राहीम बिन अधम रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़र्माया कि अरे बेवक़ूफ़, कम अक़्ल, रात के वक़्त महल की छत पर ऊंट तलाश कर रहा है, तुझे यहां ऊंट कैसे मिलेगा? उस आदमी ने हैरत से पूछा कि यहां ऊंट नहीं मिल सकता? हज़रत इब्राहीम ने फ़रमाया कि नहीं, तुझे यहां महल की छत पर ऊंट कैसे मिलेगा? उस आदमी ने कहा कि अगर इस महल में ऊंट नहीं मिल सकता और इस महल में ऊंट तलाश करने वाला अह्मक़ है, तो यह भी समझ लो कि तुम यहां रहते हुए ख़ुदा को तलाश कर रहे हो, तुम्हें ख़ुदा भी नहीं मिल सकता, अगर मैं अह्मक़ हूं तो मुझसे ज़्यादा तुम अह्मक़ हो। बस! हज़रत इब्राहीम बिन अधम रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के दिल पर एक चोट लगी, और उसी वक़्त सारी बादशाहत छोड़ कर जंगल की तरफ़ रवाना हो गये, और रवाना होते वक़्त सोचा कि अब तो अल्लाह की याद में ज़िन्दगी बसर करनी है, इसलिये सिर्फ़ एक तकिया और एक प्याला साथ ले लिया ताकि खाने पीने की ज़रूरत

पेश आयेगी तो इस प्याले में खा पी लेंगे, और सोने की ज़रूरत पेश आयेगी तो ज़मीन पर तकिया रख कर सो जायेंगे, जब कुछ आगे चले तो देखा कि एक आदमी दरिया के किनारे बैठा है और चुल्लू बना कर पानी पी रहा है, आपने सोचा कि यह प्याला मैंने अपने साथ फ़ुज़ूल ले लिया, यह काम तो हाथों के ज़रिये भी हो सकता है, चुनांचे वह प्याला फेंक दिया और आगे रवाना हो गये, कुछ और आगे गये तो देखा कि एक आदमी सर के नीचे अपना हाथ रख कर सो रहा है, फिर सोचा कि यह तकिया भी मैंने फ़ुज़ूल लिया, तकिया तो अल्लाह तआला ने ख़ुद दे रखा है, इस से काम चलायेंगे, चुनांचे वह तकिया भी फेंक दिया।

हाल ग़ालिब होने की कैफ़ियत क़ाबिले तक़्लीद नहीं

इस क़िस्से की वजह से बाज़ लोग इस ग़लत फ़हमी में मुब्तला हो जाते हैं कि प्याला रखना भी फ़ुज़ूल ख़र्ची है, और तकिया रखना भी फ़ुज़ूल ख़र्ची है, अल्लाह तआला हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के दरजों को बुलन्द फ़रमाये, आमीन। वह दूध का दूध पानी का पानी निखार कर चले गये, वह फ़रमाते हैं कि अपने हालात को हज़रत इब्राहीम बिन अधम रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के हालात पर क़ियास न करो, एक तो इस वजह से कि जो कैफ़ियत हज़रत इब्राहीम बिन अधम रह्मतुल्लाहि अ़लैहि पर तारी हूई, वह ग़लबा–ए–हाल की कैफ़ियत थी, वह क़ाबिले तक़्लीद कैफ़ियत नहीं थी, और ग़लबा–ए–हाल का मतलब यह है कि किसी वक़्त तबीयत पर किसी बात का इतना ग़लबा हो जाता है कि आदमी उस हालत में माज़ूर हो जाता है, माज़ूर होने की वजह से उसके हालात दूसरों के लिये क़ाबिले तक़्लीद नहीं रहते, इसलिये हज़रत इब्राहीम बिन अधम रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के ये हालात हमारे और आपके लिये क़ाबिले तक़्लीद नहीं, वर्ना दिमाग़ में यह बात जम जायेगी कि तकिया भी छोड़ो, और प्याला भी छोड़ो, और घर बार भी छोड़ो,

बीवी बच्चे छोड़ो, इसलिये कि ख़ुदा इसके बग़ैर नहीं मिलेगा, हालांकि दीन का यह तक़ाज़ा नहीं, बल्कि यह ग़लबा-ए-हाल की कैफ़ियत है जो हज़रत इब्राहीम बिन अधम रहमतुल्लाहि अ़लैहि पर तारी हुई।

आमदनी के मुताबिक़ वुस्अ़त होनी चाहिये

दूसरे यह कि हर आदमी की ज़रूरत उसके हालात के लिहाज़ से अलग होती है, इसलिये वुस्अ़त का मेयार भी हर इन्सान का अलग है, अब जो शख़्स कम आमदनी वाला है, उसकी वुस्अ़त का मेयार और है, और जो दरमियानी आमदनी वाला है, उसका मेयार और है, और जो ज़्यादा आमदनी वाला है उसकी वुस्अ़त का मेयार और है, इसलिये हर शख़्स की आमदनी के मेयार के एतिबार से वुस्अ़त होनी चाहिये, यह न हो कि शौहर बेचारे की आमदनी तो कम है, और उधर बीवी साहिबा ने दौलत मन्द क़िस्म के लोगों के घर में जो चीज़ें देखीं, उनकी नक़ल उतारने की फ़िक्र लग गयी, और शौहर से उसकी फ़रमाइश होने लगी, इस क़िस्म की फ़र-माइशों का तो कोई जवाज़ नहीं, लेकिन शौहर को चाहिये कि अपनी आमदनी को मद्दे नज़र रखते हुए वुस्अ़त से काम ले, और अपनी बीवी के हक़ में बुख़्ल और कन्जूसी से काम न ले।

बीवियों का हम पर क्या हक़ है?

"عن معاوية بن حيدة رضى الله عنه قال: قلت: يارسول الله ماحق زوجة احدناعليه؟ قال: ان تطعمها إذا طعمت وتكسوها اذا كسيت ولا تضرب الوجه ولا تقبح ، ولا تهجر الا فى البيت" (ابوداؤد شريف)

हज़रत मुआ़विया बिन हैदा रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि मैंने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से पूछा कि: या रसूलल्लाह! हम लोगों की बीवियों का हम पर क्या हक़ है? हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम खाओ तो उसको भी खिलाओ, और जब तुम पहनो तो उसको भी

पहनाओ, और यह कि चेहरे पर न मारो, और बुरा भला मत कहो, "तक़्बह्" के मायने हैं कोसने देना, बुरा भला कहना और उससे दिल दुखाने वाली बातें करना, और उसको मत छोड़ मगर घर ही में।

उसका बिस्तर छोड़ दो

जैसा कि पीछे बयान किया गया कि अगर तुम औ़रत के अन्दर कोई बे-हयाई की बात देखो तो पहले उसको समझाओ, अगर समझाने से बाज़ न आये तो उसका बिस्तर छोड़ दो, और अलग बिस्तर पर सोना शुरू कर दो, इस हदीस में बिस्तर छोड़ने की तफ़्सील यह बयान फ़रमा दी कि बिस्तर छोड़ने का यह मतलब नहीं है कि तुम घर से बाहर चले जाओ, बल्कि घर के अन्दर ही रहो, अलबत्ता एहतिजाज के तौर पर, तंबीह के तौर पर और एक नफ़्सियाती मार के तौर पर, कमरा बदल दो, या बिस्तर बदल दो, और उस से अ़लाहिदगी इख़्तियार कर लो।

ऐसी अ़लाहिदगी जायज़ नहीं

उलमा ने इस हदीस के यह मायने भी बयान फ़रमाये हैं कि ऐसे मौक़े पर अगरचे बिस्तर तो अलग कर दो, लेकिन पूरी तरह बात चीत ख़त्म न करो, और ऐसी अ़लाहिदगी न हो कि एक दूसरे को सलाम भी न किया जाये, और सलाम का जवाब भी न दिया जाये, और कोई ज़रूरी बात करनी हो तो उसका जवाब भी न दिया जाये, इस तरह की अ़लाहिदगी जायज़ नहीं है।

चार महीने से ज़्यादा सफ़र में बीवी की इजाज़त

इस हदीस के तहत फ़ुक़हा-ए-किराम ने यहां तक लिखा है कि मर्द के लिये चार महीने से ज़्यादा घर से बाहर रहना बीवी की इजाज़त और उसकी ख़ुश दिली के बग़ैर जायज़ नहीं। चुनांचे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी तमाम हुकूमत में यह हुक्म जारी फ़रमा दिया था कि जो मुजाहिदीन घर से बाहर रहते हैं वे

चार महीने से ज़्यादा घर से बाहर न रहें, और इसी वजह से फ़ुक़हा–ए–किराम ने लिखा है कि अगर किसी शख़्स को चार महीने से कम का सफ़र पेश आये तो उसके लिये बीवी की इजाज़त की ज़रूरत नहीं, लेकिन अगर चार महीने से ज़्यादा का सफ़र सामने हो तो उसके लिये बीवी से इजाज़त लेनी ज़रूरी है, चाहे वह सफ़र कितना ही बरकत वाला क्यों न हो, यहां तक कि अगर हज का सफ़र हो तो उसमें भी अगर वह चार महीने के अन्दर वापस आ सकता है, तो फिर इजाज़त की ज़रूरत नहीं, अगर नफ़्ली तौर पर वहां ज़्यादा ठहरने का इरादा है तो फिर इजाज़त लेनी ज़रूरी है, यही हुक्म तबलीग़, दावत और जिहाद के सफ़र का है, इसलिये जब इन मुबारक सफ़रों में बीवी की इजाज़त ज़रूरी है तो फिर जो लोग नौकरी के लिये, पैसा कमाने के लिये लम्बे सफ़र करते हैं उनमें तो और भी ज़्यादा बीवी की इजाज़त ज़रूरी है, अगर बीवी की इजाज़त के बग़ैर जायेंगे तो यह बीवी की हक़ तल्फ़ी होगी और शरीअ़त के एतिबार से ना जायज़ होगा और गुनाह होगा।

बेहतरीन लोग कौन हैं?

"وعن ابی هریرة رضی الله عنه قال: قال رسول الله صلی الله علیه وسلم: اکمل المؤمنین ایمانا احسنهم خلقا، وخیارکم خیارکم لاهله"

(ترمذی شریف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः तमाम मोमिनों में ईमान के एतिबार से सबसे ज़्यादा कामिल वह शख़्स है, जो अख़्लाक़ के एतिबार से उनमें सबसे अच्छा हो, जो शख़्स जितना ज़्यादा अच्छे अख़्लाक़ वाला होगा वह उतना ही कामिल ईमान वाला होगा। इसलिये कामिल ईमान का तक़ाज़ा यह है कि इन्सान दूसरों के साथ अच्छे अख़्लाक़ का मामला करे, और तुम में

बेहतरीन लोग वे हैं जो अपनी बीवियों और अपनी औरतों के लिये बेहतर हों, उनके साथ अच्छा सुलूक करने वाले हों।

आज के दौर में "ख़ुश अख़्लाक़ी"

आज कल हर चीज़ के मायने बदल गये, हर चीज़ का मतलब उलट गया, हमारे हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद तय्यिब साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि: पहले ज़माने के मुक़ाबले में अब इस दौर में हर चीज़ उल्टी हो गयी, यहां तक कि पहले चिराग़ तले अंधेरा होता था, और अब बल्ब के ऊपर अंधेरा होता है, फिर फ़रमाते कि आज कल हर चीज़ की क़द्रें बदल गयीं, हर चीज़ का मतलब उलट गया, यहां तक कि अख़्लाक़ का मतलब भी बदल गया, आज सिर्फ़ चन्द ज़ाहिरी हरकतों का नाम अख़्लाक़ है। जैसे मुस्कुरा कर मिल लिये, और मुलाक़ात के वक़्त रस्मी अल्फ़ाज़ ज़बान से अदा कर दिये, जैसे यह कह दिया कि "आपसे मिल कर बड़ी ख़ुशी हुई" या "आपसे मिल कर बड़ा अच्छा मालूम हुआ" वग़ैरह, अब ज़बान से तो ये अल्फ़ाज़ अदा कर रहे हैं, लेकिन दिल के अन्दर दुश्मनी और हसद की आग सुलग रही है, दिल के अन्दर नफ़्रत करवटें ले रही है, बस आज इसी का नाम ख़ुश अख़्लाक़ी है। और आज बा-क़ायदा यह एक फ़न बन गया है, कि दूसरों के साथ किस तरह पेश आया जाये ताकि दूसरे लोग हमारे चाहने वाले हो जायें, और बा-क़ायदा इस पर किताबें लिखी जा रही हैं कि दूसरे को गरवीदा (अपने ऊपर फ़रेफ़्ता) बनाने के लिये और दूसरे को मुतास्सिर करने के लिये क्या तरीक़े इख़्तियार किये जायें? इसलिये सारा ज़ोर इस पर लगाया जा रहा है कि दूसरा गरवीदा हो जाये, दूसरा हमसे मुतास्सिर हो जाये, और हम को अच्छा समझने लगे। आज इसी का नाम "अख़्लाक़" रखा जाता है।

ख़ूब समझ लीजिये: इसका उस अख़्लाक़ से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं जिसका ज़िक्र हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं, यह अख़्लाक़ नहीं, बल्कि रियाकारी और दिखावा है, और यह

नुमाइश है, और यह दूसरे लोगों को अपना गरवीदा बनाने और अपने गिर्द इकट्ठा करने का बहाना है, यह मर्तबे की ख़्वाहिश है, यह शोहरत की तमन्ना है, जो बाज़ाते ख़ुद बीमारी और बद-अख़्लाक़ी हैं। अच्छे अख़्लाक़ से इसका कोई तअल्लुक़ नहीं।

"अच्छे अख़्लाक़" दिल की कैफ़ियत का नाम है

हक़ीक़त में अख़्लाक़ दिल की एक कैफ़ियत का नाम है जिस का मुज़ाहरा आज़ा (अंगों) और हाथ पांव वग़ैरह से होता है, और वह यह है कि दिल में सारी मख़्लूक़े ख़ुदा की ख़ैर ख़्वाही हो, और उनसे मुहब्बत हो, चाहे वह दुश्मन और काफ़िर ही क्यों न हों, और यह सोच कर कि यह मेरे मालिक की मख़्लूक़ है इसलिये मुझे इस से मुहब्बत रखनी चाहिये, उसके साथ अच्छा सुलूक करना चाहिये, पहले दिल में यह जज़्बा पैदा होता है और फिर उस जज़्बे के तहत में आमाल निकलते हैं, और उसके साथ ख़ैर ख़्वाही करता है अब उस जज़्बे के बाद चेहरे पर जो मुस्कुराहट और तबस्सुम आता है, वह बनावटी नहीं होता और वह दूसरों को अपना गरवीदा करने के लिये नहीं होता बल्कि वह अपनी दिली ख़्वाहिश और दिली जज़्बे का एक लाज़मी और मन्तिक़ी तक़ाज़ा होता है। इसलिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बयान किये हुए अख़्लाक़ में और आजके अख़्लाक़ में ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है

अख़्लाक़ पैदा करने का तरीक़ा

और उन अख़्लाक़ को हासिल करने के लिये सिर्फ़ किताब पढ़ लेना काफ़ी नहीं है, न सिर्फ़ वाज़ (तक़रीर) सुन लेना काफ़ी होता है, उसके लिये किसी तर्बियत करने वाले और किसी इस्लाह करने वाले की सोहबत में रहने की ज़रूरत होती है, तसव्वुफ़ और पीरी मुरीदी का जो सिलसिला बुज़ुर्गों से चला आ रहा है उसका असल मक़सद यह है कि इन्सान के अन्दर अच्छे अख़्लाक़ पैदा हों और बुरे अख़्लाक़ दूर हों। बहर हाल ईमान में कामिल तरीन अफ़राद वे हैं जिनके अख़्लाक़ अच्छे हों, जिनके दिल में सही दाइये (जज़्बे)

पैदा होते हों, और उन सही दाइयों का इज़हार उनके आमाल व फ़ेअ्लों से होता हो, अल्लाह तआला अपनी रहमत से हम सब को उन कामिलीन में दाख़िल फ़रमा दें, आमीन।

अल्लाह की बन्दियों को न मारो

"وعن اياس بن عبدالله بن ابی ذباب رضی الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لا تضربوا امة الله، فجاء عمر الى رسول الله صلى الله عليه وسلم، فقال: ذئرن النساء على ازواجهن ـ الخ"

(ابوداؤد شریف)

हज़रत अयास बिन अ़ब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने लोगों से ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि: अल्लाह की बन्दियों को मारो नहीं, यानी औरतों को मारना अच्छी बात नहीं है, मत मारा करो। और जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने रोक दिया कि यह काम मत करो तो जिस शख़्स ने बराहे रास्त हुज़ूरे अक़्दस सल्ल-ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़बान से सुन लिया, उसके लिये वह काम क़त्ई हराम हो गया, अब उसके लिये किसी भी हालत में मारना जायज़ नहीं।

हदीसे ज़न्नी या क़त्अ़ी

यह बात समझ लीजिये कि एक तो वह हदीस है जो हम और आप किताब में पढ़ते हैं या सुनते हैं, और जो लम्बी सनद के साथ हम तक पहुंचती है, "हद्द-सना फ़लां क़ा-ल हद्द-सना फ़लां क़ा-ल हद्द-सना फ़लां" (यानी हमसे यह हदीस फ़लां ने बयान की, उन्हों ने कहा कि मुझसे फ़लां ने कहा......) ऐसी हदीस ज़न्नी कहलाती है, इसलिये कि ज़न्नी तरीक़ों से हम तक पहुंचती है, इसलिये उस पर अ़मल करना वाजिब है, अगर अ़मल नहीं करेगा तो वह गुनाहगार होगा, लेकिन सहाबा-ए-किराम ने जो बात हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से बराहे रास्त सुन ली, वह

हदीस ज़न्नी नहीं है, बल्कि क़त्ई है, इसलिये अगर कोई उसकी ख़िलाफ़ वर्ज़ी (उल्लंघन) करेगा तो सिर्फ़ गुनाहगार नहीं होगा, बल्कि काफ़िर हो जायेगा, इसलिये कि उसने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इरशाद का इन्कार कर दिया, इसलिये फ़ौरन काफ़िर हो गया।

सहाबा-ए-किराम ही इस लायक़ थे

कभी कभी हमारे दिलों में यह अह्मक़ाना ख़्याल आता है कि काश! हम भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में पैदा हुए होते, और उस ज़माने की बरकतों को हासिल करते। अरे यह तो अल्लाह तआला की हिक्मत है और वही अपनी हिक्मत से फ़ैसला फ़रमाते हैं और अपनी हिक्मत से हमें इस दौर में पैदा फ़रमाया, अगर हम उस दौर में पैदा हो जाते तो ख़ुदा जाने किस निचले से निचले दर्जे में होते, अल्लाह तआला बचाये, आमीन। इसलिये कि वहां ईमान का मामला इतना नाज़ुक था कि ज़रा सी देर में इन्सान इधर से उधर हो जाता था।

सहाबा-ए-किराम ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जिस जां निसारी का मामला फ़रमाया, वह उन्हीं का ज़र्फ़ था, और उसी के नतीजे में वह इस दर्जे तक पहुंचे, अगर हम जैसा आराम और आफ़ियत पसन्द आदमी उस दौर में होता तो ख़ुदा जाने क्या हश्र बनता। यह तो अल्लाह तआला का बड़ा फ़ज़्ल व करम है कि उसने हमें इस अन्जाम से बचाया, और ऐसे दौर में पैदा फ़रमाया जिसमें हमारे लिये बहुत सी आसानियां हैं, आज एक हदीस के बारे में हम यह कह देते हैं कि यह हदीस ज़न्नी है। और ज़न्नी होने की वजह से अगर कोई इन्कार कर दे तो काफ़िर न होगा, सिर्फ़ गुनाहगार ही होगा, लेकिन सहाबा-ए-किराम का मामला तो यह था कि अगर कोई शख़्स हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बान से कोई हुक्म सुनने के

बाद इन्कार कर दे कि मैं नहीं करता, फ़ौरन काफ़िर हो जाता, अल्लाह तआ़ला बचाये, आमीन।

ये औ़रतें शेर हो गयी हैं

इसलिये जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह फ़रमाया कि औ़रतों को न मारो, तो मारने का सिलसिला बिल्कुल बन्द हो गया, इसलिये कि सहाबा–ए–किराम तो ऐसे नहीं थे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से किसी काम के बारे में मुमानअ़त सुनें, और फिर भी वह काम जारी रखें, जब मारने का सिलसिला बन्द हो गया तो कुछ दिनों बाद हज़रत उमर रज़ि–यल्लाहु अ़न्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िद–मत में हाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि:

"ذئرن النساء على ازواجهن"

या रसूलल्लाह! ये औ़रतें तो अब अपने शौहरों पर शेर हो गयीं, इसलिये कि आपने मारने की मुमानअ़त कर दी, जिसके बाद अब कोई शख़्स अपनी बीवी को नहीं मारता, बल्कि मार के क़रीब जाने से भी डरता है, और इस न मारने के नतीजे में औ़रतें शेर हो गयी हैं, और शौहरों की हक़ तल्फ़ियां करने लगी हैं, और उनके साथ बद सुलूकी करने लगी हैं, अब आप फ़रमायें कि इन हालात में हम क्या करें?

"فرخص فى ضربهن"

चुनांचे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इजाज़त देदी कि अगर औ़रतें शौहरों की हक़ तल्फ़ी करें, और मारने के सिवा कोई चारा न हो तो तुम्हें मारने की भी इजाज़त है, अब इस इजाज़त देने के नतीजे में यह हुआ कि अभी कुछ ही दिन गुज़रे थे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में बहुत सी ख़्वातीन आनी शुरू हो गयीं। और आकर अ़र्ज़ करतीं कि या रसूलल्लाह! आपने शौहरों को मारने की इजाज़त देदी, जिस से

लोगों ने ग़लत फ़ायदा उठाया, और हमें इस तरह मारा।

ये अच्छे लोग नहीं हैं

"فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم: لقد اطاف بآل محمد نساء كثير يشكون ازواجهن ليس اولئك بخياركم"

आपने अपना नाम लेकर फ़रमाया कि: मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के घर में बहुत सी ख़्वातीन चक्कर लगाती हैं, और वे अपने शौहरों की शिकायत करती हैं कि वे शौहर उनके साथ बद सुलूकी करते हैं, उनको बुरी तरह मारते हैं। इसलिये ख़ूब अच्छी तरह सुन लो कि जो लोग यह मार पीट कर रहे हैं, वे तुममें अच्छे लोग नहीं हैं, और अच्छे मोमिन और मुसलमान का काम नहीं है कि वह मार पीट करे, इस सारे मजमे से आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह बात वाज़ेह फ़रमा दी कि अगरचे मजबूरी के हालात में, जब कोई चारा न रहे उस वक़्त शरीअ़त की तरफ़ से ऐसी मार की इजाज़त है जिस से निशान न पड़े और बहुत ज़्यादा तक्लीफ़ न हो लेकिन इसके बावजूद मुहम्मद रसूलुल्लाह की सुन्नत और आपकी असल ख़्वाहिश यह है कि कोई मर्द किसी औरत पर कभी हाथ न उठाये, चुनांचे हज़राते उम्म–हातुल मोमिनीन (हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बीवियां) रज़ि० फ़रमाती हैं कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सारी उमर कभी किसी औरत पर हाथ नहीं उठाया, इसलिये सुन्नत का तक़ाज़ा भी यही है।

दुनिया की बेहतरीन चीज़ "नेक औरत"

"وعن عبدالله بن عمرو بن العاص رضى الله عنهما ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: الدنيا متاع وخير متاعها المرأة الصالحة"

(مسلم شريف)

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़मर बिन आस रज़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम ने फ़रमाया कि: यह दुनिया सारी की सारी लुत्फ़ उठाने की चीज़ है, यानी ऐसी चीज़ है जिस से इन्सान फ़ायदा उठाता है, नफ़ा उठाता है, और लुत्फ़ उठाता है, इसलिये कि अल्लाह तआला ने यह दुनिया इन्सान के नफ़े के लिये पैदा फ़रमाई है, जैसा कि कुरआन करीम में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि:

"هُوَالَّذِیْ خَلَقَ لَكُمْ مَّافِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا"

कि अल्लाह वह ज़ात है जिसने तुम्हारे फ़ायदे के लिये पैदा किया जो कुछ ज़मीन में है, और तुम्हारे नफ़े के लिये, और तुम्हारे लुत्फ़ उठाने के लिये, तुम्हारी ज़रूरत पुरी करने के लिये पैदा किया, और दुनिया की बेहतरीन दौलत जिससे इन्सान नफ़ा उठाये, वह नेक औ़रत है। एक दूसरी हदीस में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:

"حبب الی من دنیاکم النساء والطیب وجعلت قرة عینی فی الصلٰوة"

(کنزالعمال)

मुझे तुम्हारी दुनिया में से तीन चीज़ बहुत ज़्यादा महबूब हैं, कितना ख़ूबसूरत जुम्ला इरशाद फ़रमाया कि "तुम्हारी दुनिया" में से, यह इसलिये फ़रमाया कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दूसरी जगह पर यह इरशाद फ़रमा चुके थे कि:

"مالی وللدنیا ما انا والدنیا الا کراکب استظل تحت شجرة، ثم راح وترکھا"

(ترمذی شریف)

मेरा दुनिया से क्या तअ़ल्लुक़! मैं तो एक ऐसे सवार की तरह हूं जो किसी पेड़ के साये में ज़रा सी देर के लिये ठहरता है, और फिर चला जाता है, और उस पेड़ को छोड़ देता है। इसलिये आपने फ़रमाया कि तुम्हारी दुनिया में से तीन चीज़ें मुझे बहुत ज़्यादा महबूब और पसन्द हैं। वे क्या हैं? एक औ़रत दूसरी ख़ुश्बू, और मेरी आंखों की ठंडक नमाज़ में है।

बुरी औ़रत से पनाह मांगो

बहर हाल तीन पसन्दीदा चीज़ों में से एक नेक औ़रत है, इस

लिये कि अगर औरत नेक न हो तो उससे हुज़ूरे अक़्दस सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पनाह मांगी:

"اللهم انی اعوذبك عن امرأة تشيبنی قبل المشيب واعوذ بك من ولد يكون علىّ وبالا"

"ऐ अल्लाह! मैं उस औरत से पनाह मांगता हूं जो मुझे बुढ़ापे से पहले बूढ़ा कर दे, और उस औलाद से पनाह मांगता हूं जो मेरे लिये वबाल हो जाये" अल्लाह तआला बचाये, आमीन। इसलिये जब अपने लिये या अपनी औलाद के लिये तलाश करो तो ऐसी औरत तलाश करो जिसमें दीन हो, ख़ैर हो, नेकी हो। अगर ख़ुदा न करे, नेकी नहीं है तो वह फिर अज़ाब बनने का अन्देशा है। इसलिये अगर किसी शख़्स को नेक बीवी की नेमत मयस्सर आई हो तो उसको चाहिये कि वह उसकी क़द्र करे, उसकी ना क़द्री न करे, और उसकी क़द्र यही है कि उसके हुक़ूक़ अदा करे, और उसके साथ अच्छा सुलूक करे। अल्लाह तआला अपनी रहमत से इन इर्शादात पर हमें अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमायें, आमीन।

وآخردعوانا ان الحمد لله رب العالمين

शौहर के हुकूक़

और उसकी हैसियत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْماً كَثِيْرًا كَثِيْرًا اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

" اَلرِّجَالُ قَوَّامُوْنَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّبِمَا اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ فَالصَّالِحَاتُ قَانِتَاتٌ حَافِظَاتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ "

(سورة النساء: ٣٤)

آمنت بالله صدق الله مولانا العظيم وصدق رسوله النبى الكريم ونحن علىٰ ذالك من الشاهدين والشاكرين۔ والحمد لله رب العالمين۔

पिछला बाब उन हुकूक़ के बयान में था जो एक बीवी के शौहर के ज़िम्मे आयद होते हैं, उसमें यह हिदायात दी गयी थीं कि एक शौहर को अपनी बीवी के साथ किस क़िस्म का मामला इख़्तियार करना चाहिये। लेकिन शरीअ़त, जो हक़ीक़त में अल्लाह तआ़ला का मुक़र्रर किया हुआ क़ानून है, वह सिर्फ़ एक पहलू को मद्दे नज़र रखने वाला नहीं होता, बल्कि उसमें दोनों जानिबों की बराबर रियायत होती है, और दोनों के लिये दुनिया व आख़िरत की सलाह व फ़लाह की ज़मानत होती है, चुनांचे जिस तरह शौहर के ज़िम्मे बीवी के हुकूक़ आयद किये गये, इसी तरह अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने औ़रत के ज़िम्मे शौहर के हुकूक़ भी बयान फ़रमाये, और क़ुरआन व हदीस में इन दोनों क़िस्मों के हुकूक़ की अदायगी पर बड़ा ज़ोर और बड़ी

ताकीद की गयी है।

आज हर शख़्स अपना हक़ मांग रहा है

शरीअ़त में हर शख़्स को इस बात पर मुतवज्जह किया गया है कि वह अपने फ़राइज़ अदा करे, हुक़ूक़ के मुतालबे पर ज़ोर नहीं दिया गया है, आजकी दुनिया, हुक़ूक़ के मुतालबे की दुनिया है, हर शख़्स अपना हक़ मांग रहा है, और उसके लिये मुतालबा कर रहा है, तहरीकें चला रहा है, परदर्शन कर रहा है, हड़ताल कर रहा है, गोया कि अपना हक़ मांगने और अपने हक़ का मुतालबा करने के लिये दुनिया भर की कोशिशें की जा रही हैं, और उसके लिये बा–क़ायदा अन्जुमनें क़ायम की जा रही हैं, जिन का नाम "अन्जुमन तहफ़्फ़ुज़े हुक़ूक़ फ़लां" रखा जाता है, लेकिन आज "अदायगी–ए–फ़राइज़" के लिये कोई अन्जुमन मौजूद नहीं, किसी भी शख़्स को इस बात की फ़िक्र नहीं है कि जो फ़राइज़ मेरे ज़िम्मे आ़यद हैं, वे अदा कर रहा हूं या नहीं? मज़दूर कहता है कि मुझे मेरा हक़ मिलना चाहिये, सरमायादार कहता है कि मुझे मेरा हक़ मिलना चाहिये, लेकिन दोनों में से किसी को यह फ़िक्र नहीं है कि मैं अपना फ़रीज़ा कैसे अदा करूं? मर्द कहता है कि मुझे मेरे हक़ मिलने चाहियें, और औरत कहती है कि मुझे मेरे हक़ मिलने चाहियें और उसके लिये कोशिश और जद्दोजिहद जारी है, लड़ाई ठनी हुई है, जंग जारी है, लेकिन कोई ख़ुदा का बन्दा यह नहीं सोचता कि जो फ़राइज़ मेरे ज़िम्मे आ़यद हो रहो हैं, वे मैं अदा कर रहा हूं, या नहीं?

हर शख़्स अपने फ़राइज़ अदा करे

अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीम का ख़ुलासा यह है कि हर शख़्स अपने फ़राइज़ की तरफ़ तवज्जोह करे, अगर हर शख़्स अपने फ़राइज़ अदा करने लगे तो सबके हुक़ूक़ अदा हो जायें, अगर मज़दूर अपने फ़राइज़ अदा

कर दे तो सरमायादार और मालिक के हुक़ूक़ हो गए। अगर सरमायादार और मज़्दूरी पर काम कराने वाला अपने फ़राइज़ अदा कर दे तो मज़दूर के हुक़ूक़ अदा हो गये, शौहर अपने फ़राइज़ अदा करे तो बीवी का हक़ अदा हो गया, और अगर बीवी अपने फ़राइज़ अदा करे तो शौहर का हक़ अदा हो गया। शरीअ़त का असल मुतालबा यही है कि तुम अपने फ़राइज़ अदा करने की फ़िक्र करो।

पहले अपनी फ़िक्र करो

आज हमारे ज़माने में अ़जीब उल्टी गंगा बहनी शुरू हो गयी है, कि जब कोई शख़्स इस्लाह का झन्डा उठाता है, तो उसकी यह ख़्वाहिश होती है कि दूसरा शख़्स अपनी इस्लाह का आग़ाज़ करे, अपनी फ़िक्र नहीं कि मेरे अन्दर भी कुछ कोताही है, मैं ग़लती का शिकार हूं, मैं उसकी फ़िक्र करूं, हालांकि कुरआन करीम का इरशाद है कि:

"يَا اَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ لَا يَضُرُّكُمْ مَنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ"

(سورة المائدة: ١٠٥)

ऐ ईमान वालो: अपने आपकी फ़िक्र करो कि तुम्हारे ज़िम्मे क्या क्या फ़राइज़ हैं? अल्लाह और अल्लाह के रसूल के तुमसे क्या मुतालबात हैं? शरीअ़त, दियानेत, अमानत और अख़्लाक़ के तुमसे क्या मुतालबात हैं, उन मुतालबात को बजा लाओ, दूसरा शख़्स अगर गुमराही में मुब्तला है, और अपने फ़राइज़ अन्जाम नहीं दे रहा है तो उसका नुक़सान तुम्हारे ऊपर नहीं होगा बशरते कि तुम अपने फ़रायज़ सही तरीक़ से अन्जाम दे रहे हो।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीम का अन्दाज़

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तलीम की बात देखिये कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में

लोगों से ज़कात वुसूल करने के लिये आमिल जाया करते थे, जो लोगों से ज़कात वुसूल करते थे, और उस ज़माने में ज़्यादा तर माल मवेशियों यानी ऊंट, बकरियां, गाये वगैरह की शक्ल में होता था, आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब आमिलों को भेजते तो उनको एक हिदायत नामा अता फ़रमाते, कि तुम्हें वहां जाकर क्या तरीक़ा इख़्तियार करना है? उस हिदायत नामे में यह भी तहरीर फ़रमाते कि:

"لا جلب ولا جنب فی زکاۃ، ولا تؤخذزکاتھم الا فی دورھم"

(ابوداؤد شریف)

यानी तुम खुद लोगों के घरों पर जाकर ज़कात वुसूल करना, ऐसा मत करना कि तुम एक जगह पर बैठ जाओ और लोगों को इस बात की तक्लीफ़ दो कि वे ज़कात का माल तुम्हारे पास लाकर दें, और यह भी हिदायत फ़रमाते कि:

"المعتدی فی الصدقۃ کما نعھا" (ابو داؤد شریف)

यानी जो शख़्स ज़कात वुसूल करने में ज़्यादती कर रहा है, जैसे जितनी ज़ाकात वाजिब थी, मिक्दार (मात्रा) में उस से ज़्यादा वुसूल कर रहा है, या कैफ़ियत में ज़्यादा वुसूल कर रहा है, उसके बारे में फ़रमाया कि ऐसा शख़्स भी उतना ही गुनाहगार है, जितना ज़कात न देने वाला गुनाहगार है। इसलिये एक तरफ़ आमिलों को तो यह ताकीद की जा रही है कि तुम लोगों को तक्लीफ़ न पहुंचाओ, और जितनी ज़कात वाजिब होती है, उस से एक ज़र्रा भी ज़्यादा वुसूल न करो, अगर ऐसा करोगे तो क़ियामत के दिन तुम्हारी पकड़ होगी, दूसरी तरफ़ जिन लोगों के पास ज़कात वुसूल करने के लिये उन आमिलों को भेजा जा रहा था, उनसे ख़िताब करके फ़रमाया:

"اذا جاء کم المصدق فلا یفارقکم الاعن رضی" (ترمذی شریف)

यानी तुम्हारे पास ज़कात वुसूल करने वाले आयेंगे, कहीं ऐसा न हो कि वे तुमसे नाराज़ होकर जायें, तुम्हारा फ़र्ज़ है कि तुम उन

को राज़ी करो, और कोई ऐसी ग़लती न करो जिससे वे नाराज़ हो जायें, क्योंकि हक़ीक़त में वे मेरे भेजे हुए और मेरे नुमाइन्दे हैं, और उनको नाराज़ करना गोया मुझे नाराज़ करना है, इसलिये आमलीन जब तुम्हारे पास आयें तो वे तुमसे राज़ी होकर जायें, हर एक को अपने अपने फ़राइज़ की अदायगी का एहसास दिलाया जा रहा है। आपने ज़कात देने वालों को यह नहीं फ़रमाया कि तुम सब मिल कर एक तहरीक चलाओ कि यह जो आमलीन ज़कात वुसूल करने के लिये आ रहे हैं, वे हमारे हुकूक़ बर्बाद न करें। उसके लिये अन्जुमन क़ायम करो, इसलिये कि यह एक बड़ी लड़ाई का ज़रिया बन जाता है।

शरीअ़त में सारा ज़ोर इस बात पर है कि हर शख़्स अपने फ़राइज़ का ख़्याल करे, फ़राइज़ को बजा लाने की फ़िक्र करे, अल्लाह तआ़ला के सामने एक एक अ़मल का जवाब देना है। इसकी फ़िक्र करे कि मैं अल्लाह के सामने ठीक ठीक जवाब दे सकूंगा या नहीं? दीन का सारा फ़ल्सफ़ा यह है, यह नहीं है कि हर शख़्स दूसरों से अपने हुकूक़ का मुतालबा करता रहे, और अपने फ़राइज़ की अदायगी से ग़ाफ़िल रहे।

ज़िन्दगी दुरुस्त करने का तरीक़ा

मियां बीवी के आपसी तअ़ल्लुक़ात में भी अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यही तरीक़ा इख़्तियार किया कि दोनों को उनके फ़राइज़ बता दिये, शौहर को बता दिया कि तुम्हारे फ़राइज़ ये हैं, और बीवी को बता दिया कि तुम्हारे फ़राइज़ ये हैं। हर एक अपने फ़राइज़ अदा करने की फ़िक्र करे। और हक़ीक़त में ज़िन्दगी की गाड़ी इसी तरह चलती है कि दोनों अपने अपने फ़राइज़ का एहसास करें और दूसरे के हुकूक़ का पास करें। अपने हुकूक़ हासिल करने की इतनी फ़िक्र न हो, जितनी दूसरे के हुकूक़ की अदायगी की फ़िक्र हो। अगर यह जज़्बा पैदा

हो जाये तो फिर यह ज़िन्दगी दुरुस्त हो जाती है, अल्लाह और अल्लाह के रसूल को हमारी ज़िन्दगी के दुरुस्त करने की इतनी ज़्यादा फ़िक्र है कि कुरआन व हदीस इन हिदायतों से भरे हुए हैं कि तुम्हारे फ़राइज़ ये हैं और तुम्हारे फ़राइज़ ये हैं। और अगर इन फ़राइज़ और तअ़ल्लुक़ात में ख़लल पड़ जाये तो अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को इस दुनिया में कोई बात इतनी ना पसन्द नहीं जितने मियां बीवी के आपसी झगड़े ना पसन्द हैं।

शैतान का दरबार

एक हदीस में आता है कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमया कि यह शैतान कभी कभी समुन्दर में पानी के ऊपर अपना तख़्त बिछाता है, और अपना दर्बार मुन्अ़क़िद (आयोजित) करता है, इस वक़्त दुनिया में उसके जितने चेले हैं जो उसकी स्कीमों पर और उसकी हिदायतों पर अ़मल कर रहे हैं। वे सब उसके दरबार में हाज़िर होते हैं और उन तमाम चेलों से उनकी कारगुज़ारी की रिपोर्टें तलब की जाती हैं कि तुमने क्या फ़राइज़ अन्जाम दिये? उस वक़्त हर एक चेला अपनी कारगुज़ारी बयान करता है, और यह शैतान तख़्त पर बैठ कर उनकी कार–गुज़ारी सुनाता है। एक चेला आकर अपनी यह कारगुज़ारी सुनाता है कि एक शख़्स नमाज़ पढ़ने के इरादे से मस्जिद की तरफ़ जा रहा था, मैंने दरमियान में उसको एक ऐसे काम में फंसा दिया जिस से उसकी नमाज़ छूट गयी, शैतान सुन कर ख़ुश होता है, कि तुमने अच्छा काम किया, लेकिन बहुत ज़्यादा ख़ुशी का इज़हार नहीं करता। दूसरा चेला आकर बयान करता है कि फ़ंला शख़्स फ़लां इबादत की नियत से जा रहा था, मैंने उसको उस इबादत से रोक दिया, शैतान सुन कर ख़ुश होता है कि तुमने अच्छा काम किया, इसी तरह हर चेला अपनी कारगुज़ारी सुनाता है, और शैतान सुन

कर ख़ुश हो जाता है। यहां तक कि एक चेला आकर यह बयान करता है कि दो मियां बीवी आपसी इत्तिफ़ाक़ और मुहब्बत के साथ ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, बड़ी अच्छी ज़िन्दगी गुज़र रही थी, मैंने जाकर एक ऐसा काम किया जिसके नतीजे में दोनों में लड़ाई हो गयी, और लड़ाई के नतीजे में दोनों में जुदाई हो गयी, जब शैतान यह सुनता है कि इस चेले ने दोनों मियां बीवी को आपस में लड़ा दिया जो अच्छी ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे, ख़ुश होकर अपने तख़्त से खड़ा हो जाता है, और उस चेले को बांहों में भर लेता है, और उसे गले लगा लेता है, और उससे कहता है कि सही मायने में मेरा नुमाइन्दा तू है। और तूने जो कारनामा अन्जाम दिया वह और किसी ने अन्जाम नहीं दिया। (मुस्लिम शरीफ़)

इससे आप अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को मियां बीवी के आपसी झगड़े और एक दूसरे से नफ़रत और तअ़ल्लुक़ टूटना कितने ना पसन्दीदा हैं, और शैतान को ये आमाल कितने महबूब हैं, इसलिये अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कुरआन व हदीस में दोनों पर एक दूसरे के फ़राइज़ और हुक़ूक़ बड़ी तफ़सील के साथ बयान फ़रमाये हैं, अगर इन्सान उन पर अ़मल करले तो दुनिया भी दुरुस्त हो जाये, और आख़िरत भी दुरुस्त हो जाये।

मर्द औ़रत पर हाकिम है

इसलिये इमाम नववी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने यह दूसरा बाब क़ायम किया है जिसका उन्वान है: "बाब हक़्क़ुज़–ज़ौजि अ़लल् मर्अते" यानी शौहर के बीवी पर क्या हुक़ूक़ हैं, और इसके तहत कुरआनी आयतों और हदीसें ज़िक्र फ़रमाई हैं, सबसे पहले कुरआन करीम की यह आयत लाये हैं।

"اَلرِّجَالُ قَوَّامُوْنَ عَلَى النِّسَاءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ"

(سورة النساء: ٣٤)

यानी मर्द औरतों पर निगहबान और उनके मुन्तज़िम हैं। बाज़ हज़रात ने इसका यह तर्जुमा भी किया है कि मर्द औरतों पर हाकिम हैं, "क़व्वाम" उस शख़्स को कहा जाता है जो किसी काम का इन्तिज़ाम करने का ज़िम्मेदार हो, गोया मर्द औरतों पर क़व्वाम हैं, उनके कामों के मुन्तज़िम हैं, और उनके हाकिम हैं, यह एक उसूल बयान फ़रमा दिया, इसलिये कि उसूली बातें ज़ेहन में न होने की सूरत में जितने काम इन्सान करेगा वह ग़लत तसव्वुरात के मा-तहत करेगा, इसलिये मर्द के हुक़ूक़ बयान करते हुए औरत को पहले उसूली बात समझा दी कि वह मर्द तुम्हारी ज़िन्दगी के मामलात का निगहबान और मुन्तज़िम है।

आजकी दुनिया का प्रोपैगन्डा

आजकी दुनिया में जहां मर्द व औरत की मसावात, उनकी बराबरी और औरतों की आज़ादी का बड़ा ज़ोर व शोर है, ऐसी दुनिया में लोग यह बात करते हुए शरमाते हैं कि शरीअ़त ने मर्द को हाकिम बनाया है, और औरत को महकूम बनाया है, इसलिये कि आजकी दुनिया में यह प्रोपैगन्डा किया जा रहा है कि मर्द की औरत पर हाकिमियत क़ायम कर दी गयी है और औरत को महकूम बना कर उसके हाथ में क़ैद कर दिया गया है, और उसको छोटा क़रार दिया गया है।

सफ़र के दौरान एक को अमीर बना लो

लेकिन हक़ीक़ते हाल यह है कि मर्द और औरत ज़िन्दगी की गाड़ी के दो पहिये हैं, ज़िन्दगी का सफ़र दोनों को एक साथ तय करना है, अब ज़िन्दगी के सफ़र के तय करने में इन्तिज़ाम की ख़ातिर यह लाज़ामी बात है कि दोनों में से कोई एक शख़्स सफ़र का ज़िम्मेदार हो। हदीस में नबी-ए-करीम सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह हुक्म दिया कि जब भी दो

आदमी कोई सफ़र कर रहे हों, चाहे वह सफ़र छोटा सा क्यों न हो, उस सफ़र में अपने में से एक को अमीर बना लो, अमीर बनाये बग़ैर सफ़र नहीं करना चाहिये, ताकि सफ़र के तमाम इन्तिज़ामात और पॉलीसी उस अमीर के फ़ैसले के ताबे हो, अगर अमीर नहीं बनायेंगे तो एक बद नज़मी हो जायेगी। (अबू दाऊद शरीफ़)

इसलिये जब एक छोटे से सफ़र में अमीर बनाने की ताकीद की गयी है तो ज़िन्दगी का यह लम्बा सफ़र जो एक साथ गुज़ारना है, उसमें यह ताकीद क्यों नहीं होगी, अपने में से एक को अमीर बना लो, ताकि बद नज़मी पैदा न हो, बल्कि इन्तिज़ाम क़ायम रहे, उस इन्तिज़ाम को क़ायम करने के लिये किसी एक को अमीर बनाना ज़रूरी है।

ज़िन्दगी के सफ़र का अमीर कौन हो?

अब दो रास्ते हैं, या तो मर्द को इस ज़िन्दगी के सफ़र का अमीर बना दिया जाये या औरत को अमीर बना दिया जाये, और मर्द को उसका महकूम (मा–तहत) बना दिया जाये, तीसरा कोई रास्ता नहीं है, अब इन्सानी पैदाइश, फ़ितरत, कुव्वत और सला–हियतों के लिहाज़ से भी और अक़्ल के ज़रिये भी इन्सान ग़ौर करे, तो यही नज़र आयेगा कि अल्लाह तआ़ला ने जो कुव्वत मर्द को अ़ता की है, बड़े बड़े काम करने की जो सलाहियत मर्द को अ़ता फ़रमाई है, वह औरत को अ़ता नहीं की, इसलिये इस अमीर बनने और हाकिम बनने का काम सही तौर पर मर्द ही अन्जाम दे सकता है, और इसके लिये अपनी अ़क़्ल से फ़ैसला करने के बजाये उस ज़ात से पूछा जाये जिसने इन दोनों को बनाया और पैदा किया, कि आपने दोनों को सफ़र पर रवाना किया, अब आप ही बतायें किसको अमीर (हाकिम) बनायें और किसको मामूर (मातहत) बनायें? और सिवाये उसके फ़ैसले के किसी और का फ़ैसला कुबूल करने के क़ाबिल नहीं हो सकता, चाहे वह फ़ैसला अ़क़्ली दलीलों से

आरास्ता (सजा हुआ) हो। और अल्लाह तआ़ला ने यह फ़ैसला फ़रमा दिया कि इस ज़िन्दगी के सफ़र को तय करने के लिये मर्द "क़व्वाम, हाकिम और मुन्तज़िम" हैं, अगर तुम इस फ़ैसले को सही जानते हो और मानते हो तो इसी में तुम्हारी भलाई और कामयाबी है, और अगर नहीं मानते, बल्कि इस फ़ैसले की ख़िलाफ़ वर्ज़ी (उल्लंघन) करते हो, और उसके साथ बग़ावत करते हो, तो फिर तुम जानो और तुम्हारी ज़िन्दगी जाने, अब तुम्हारी ज़िन्दगी ख़राब होगी और हो रही है, जिन लोगों ने इस फ़ैसले के ख़िलाफ़ बग़ावत की उनका अन्जाम देख लीजिये कि क्या हुआ?

इस्लाम में अमीर का तसव्वुर

यहां तक कि अल्लाह तआ़ला ने जो लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाया, उसको समझ लीजिये, अल्लाह तआ़ला ने यहां "अमीर" "हाकिम" और "बादशाह" का लफ़्ज़ इस्तेमाल नहीं किया, बल्कि "क़व्वाम" का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया, और "क़व्वाम" के मायने वह शख़्स जो किसी काम का ज़िम्मेदार हो, और ज़िम्मेदार होने के मायने यह हैं कि कुल मिला कर ज़िन्दगी गुज़ारने की पॉलीसी वह तय करेगा, और फिर उस पॉलीसी के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारी जायेगी, लेकिन "क़व्वाम" होने के यह मायने हरगिज़ नहीं कि वह आक़ा है, और बीवी उसकी कनीज़ है, या बीवी उसकी नौकर है, बल्कि दोनों के दरमियान अमीर और मामूर, हाकिम और महकूम का रिश्ता है, और इस्लाम में "अमीर" का तसव्वुर यह नहीं है कि वह तख़्त पर बैठ कर हुक्म चलाये, बल्कि इस्लाम में अमीर का तसव्वुर वह है जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:

"سيد القوم خادمهم" (كنز العمال)

(यानी) क़ौम का सरदार उनका ख़ादिम होता है।

अमीर हो तो ऐसा

मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह०

एक वाक़िआ सुनाया करते थे कि एक मर्तबा हम देवबन्द से किसी दूसरी जगह सफ़र पर जाने लगे तो हमारे उस्ताद हज़रत मौलाना एज़ाज़ अ़ली साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि जो दारुल उलूम देवबन्द में "शैख़ुल अदब" के नाम से मशहूर थे, वह भी हमारे साथ सफ़र में थे, जब हम स्टेशन पर पहुंचे तो गाड़ी के आने में देर थी, मौलाना एज़ाज़ अ़ली साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि हदीस शरीफ़ में है कि जब तुम कहीं सफ़र पर जाओ तो किसी को अपना अमीर बना लो, इसलिये हमें भी अपना अमीर बना लेना चाहिये, हज़रत वालिद साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि चूंकि हम शागिर्द थे वह उस्ताद थे, इसलिये हमने कहा कि अमीर बनाने की क्या ज़रूरत है, अमीर तो बने बनाये मौजूद हैं, हज़रत मौलाना ने पूछा कि कौन? हमने कहा कि अमीर आप हैं, इसलिये कि आप उस्ताद हैं, हम शागिर्द हैं, हज़रत मौलाना ने कहा: अच्छा आप लोग मुझे अमीर बनाना चाहते हैं? हमने कहा कि जी हां: आपके सिवा और कौन अमीर बन सकता है? मौलाना ने फ़रमाया कि: अच्छा ठीक है, लेकिन अमीर का हर हुक्म मानना होगा, इस लिये कि अमीर के मायने यह हैं कि उसके हुक्म की इताअ़त की जाये, हमने कहा: जब अमीर बनाया है तो इन्शा अल्लाह हर हुक्म की इताअ़त भी करेंगे, मौलाना ने फ़रमाया कि: ठीक है मैं अमीर हूं, और मेरा हुक्म मानना और जब गाड़ी आई तो हज़रत मौलाना ने तमाम साथियों का कुछ सामान सर पर और कुछ हाथ में उठाया और चलना शुरू कर दिया, हमने कहा कि: हज़रत: यह आप क्या ग़ज़ब कर रहे हैं? हमें उठाने दीजिये, मौलान ने फ़रमाया कि: नहीं, जब अमीर बनाया है तो अब हुक्म मानना होगा, और यह सामान मुझे उठाने दें, चुनांचे वह सारा सामान उठा कर गाड़ी में रखा, और फिर पूरे सफ़र में जहां कहीं मशक़्क़त का काम आता तो वह काम ख़ुद करते, और जब हम कुछ कहते तो फ़ौरन मौलाना फ़रमाते कि देखो: तुमने मुझे अमीर बनाया है, और अमीर का हुक्म मानना होगा, इसलिये मेरा हुक्म मानो, उनका अमीर बनाना हमारे

लिये क़ियामत हो गया। हक़ीक़त में अमीर का तसव्वुर यह है।

अमीर वह जो ख़िदमत करे

आज ज़ेहन में जब अमीर का तसव्वुर आता है तो वह बादशाहों और बड़े सर–बराहों की सूरत में आता है, जो अपनी रिआया के साथ बात करना भी गवारा नहीं करते, लेकिन क़ुरआन व हदीस का तसव्वुर यह है कि अमीर वह शख़्स है जो ख़िदमत करे, जो ख़ादिम हो, अमीर के यह मायने नहीं है कि उसको बादशाह बनाया गया है, अब वह हुक्म चलाया करेगा, और दूसरे उसके मा–तहत नौकर और ग़ुलाम बन कर रहेंगे, बल्कि अमीर के मायने यह हैं कि बेशक फ़ैसला उसका मोतबर होगा, साथ ही वह फ़ैसला उनकी ख़िदमत के लिये होगा, उनकी राहत और ख़ैर ख़्वाही के लिये होगा।

मियां बीवी में दोस्ती का तअ़ल्लुक़ है

हकीमुल उम्मत हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़र्माते हैं, अल्लाह तआ़ला उनके दर्जे बुलन्द फ़रमाये, आमीन। कि मर्दों को यह आयत तो याद रहती है कि:

"اَلرِّجَالُ قَوَّامُوْنَ عَلَى النِّسَاءِ"

यानी मर्द औरत पर हुक्मरां और हाकिम हैं, अब बैठ कर औरतों पर हुक्म चला रहे हैं, और ज़ेहन में यह बात है कि औरत को हर हाल में ताबे और फ़रमांबरदार होना चाहिये और हमारा उनके साथ आक़ा और नौकर जैसा रिश्ता है, मआ़ज़ल्लाह, (ख़ुदा की पनाह) लेकिन क़ुरआन करीम में अल्लाह तआ़ला ने एक और आयत भी नाज़िल फ़रमाई है, वह आयत मर्दों को याद नहीं रहती, वह आयत यह है कि:

"وَمِنْ اٰيَاتِهٖ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْا اِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً" (سورة الروم: ٢١)

(और उसी की निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे लिये

तुम्हारी जिन्स की बीवियां बनायीं ताकि तुमको उनके पास आराम मिले, और तुम दोनों मियां बीवी में मुहब्बत और हमदर्दी पैदा की)

हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि बेशक मर्द औ़रत के लिये "क़व्वाम" है, लेकिन साथ में दोस्ती का तअ़ल्लुक़ भी है, इन्तिज़ामी तौर पर तो क़व्वाम है, लेकिन आपसी तअ़ल्लुक़ दोस्ती जैसा है, इसलिये ऐसा तअ़ल्लुक़ नहीं है जैसा आक़ा और बांदी के दरमियान होता है, इसकी मिसाल ऐसी है जैसे दो दोस्त कहीं सफ़र पर जा रहे हों और एक दोस्त ने दूसरे दोस्त को अमीर बनाया हो, इसलिये शौहर इस लिहाज़ से तो अमीर है कि सारी ज़िन्दगी का फ़ैसला करने का वह ज़िम्मेदार है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि वह उसके साथ ऐसा मामला करे जैसे नौकरों और ग़ुलामों के साथ किया जाता है, बल्कि इस दोस्ती के तअ़ल्लुक़ के कुछ आदाब और कुछ तक़ाज़े हैं, उन आदाब औेर तक़ाज़ों में नाज़ की बातें भी होती हैं जिनको हाकिम होने के ख़िलाफ़ नहीं कहा जा सकता।

ऐसा रोब मतलूब नहीं

हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि हमारे यहां बाज़ मर्द हज़रात यह समझते हैं कि हम हाकिम हैं, इसलिये हमारा इतना रोब होना चाहिये कि हमारा नाम सुन कर बीवी कांपने लगे, और बे-तकल्लुफ़ी के साथ बात न कर सके, मेरे एक हम सबक़ दोस्त थे उन्हों ने एक मर्तबा बड़े फ़ख़्र के साथ मुझसे यह बात कही कि जब मैं कई महीनों के बाद अपने घर जाता हूं तो मेरे बीवी बच्चों की जुर्रत नहीं होती कि वे मरे पास आ जायें और मुझसे बात करें, बड़े फ़ख़्र के साथ यह बात कह रहे थे, मैंने उनसे पूछा कि आप जब घर जाते हैं तो क्या कोई दरिन्दा या शेर चीता बन जाते हैं जिसकी वजह से बीवी बच्चे आपके पास आने से डरते हैं? उन्हों ने कहा कि यह नहीं बल्कि इसलिये कि हम हाकिम हैं,

हमारा रोब होना चाहिये, अच्छी तरह समझ लें कि हाकिम होने का हरगिज़ यह मतलब नहीं है कि बीवी बच्चे पास आने और बात करने से भी डरें बल्कि उसके साथ दोस्ती का तअ़ल्लुक़ भी है और वह दोस्ती का तअ़ल्लुक़ किस क़िस्म का होना चाहिये? सुनिये।

हुज़ूर की सुन्नत देखिये

एक मरतबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा से फ़रमाया कि जब तुम मुझसे राज़ी होती हो, और जब तुम मुझसे नाराज़ होती हो, दोनों हालतों में मुझे इल्म हो जाता है। हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने पूछा कि या रसूलल्लाह! किस तरह इल्म हो जाता है? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम मुझसे राज़ी होती हो तो रब्बे मुहम्मद (मुहम्म्द के रब की क़सम) के अल्फ़ाज़ से क़सम खाती हो और जब तुम मुझसे नाराज़ होती हो तो रब्बे इब्राहीम (इब्राहीम के रब की क़सम) के अल्फ़ाज़ से क़सम खाती हो, उस वक़्त तुम मेरा नाम नहीं लेतीं, बल्कि हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का नाम लेती हो, हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमायाः

"انی لا اهجر الا اسمك"

"या रसूलल्लाह! मैं सिर्फ़ आपका नाम छोड़ती हूं, नाम के अ़लावा और कुछ नहीं छोड़ती" (बुख़ारी शरीफ़)

अब आप अन्दाज़ा लगायें कि कौन नाराज़ हो रहा है? हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा और किस से नाराज़? हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से, जिसका मतलब यह है कि हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा नाज़ से कभी कभी ऐसी बात फ़रमा देती थीं जिस से मालूम हो जाता था कि उनके दिल में कदूरत और नाराज़गी है लेकिन उसको आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी "क़व्वामियत" के ख़िलाफ़ नहीं समझा बल्कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बड़ी दिल्लगी के साथ उसका ज़िक्र

फ़रमाया कि तुम्हारी नाराज़गी का मुझे पता चल जाता है।

बीवी के नाज़ को बर्दाश्त किया जाये

जब उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर संगीन तोहमत (इल्ज़ाम) लगायी गयी, अस्तग़्फ़िरुल्लाह, (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर उस तोहमत की वजह से क़ियामत गुज़र गयी, आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी ज़ाहिर है कि इस बात का ग़म था कि लोगों में इस क़िस्म की बातें फैल गयीं हैं, लेकिन एक मरतबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से यह फ़रमा दिया कि:

ऐ आयशा! देखो बात यह है कि तुम्हें इतना ग़मगीन होने की ज़रूरत नहीं अगर तुम बेख़ता और बेक़ुसूर हो तो अल्लाह तआला ज़रूर तुम्हारी बराअत ज़ाहिर फ़रमा देंगे, और ख़ुदा न करे तुमसे कोई क़ुसूर और ग़लती हुयी है तो अल्लाह तआला से तौबा कर लो, अल्लाह तआला माफ़ फ़रमा देंगे।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को यह बात बहुत शाक़ गुज़री कि आपने यह दो तरफ़ वाली बातें क्यों कीं कि अगर बेक़ुसूर हो तो अल्लाह तआला बराअत ज़ाहिर फ़रमा देगा, और क़ुसूर हुआ हो तो तौबा करलो, इस से मालूम हूआ कि आपके दिल में भी इस बात का हल्का सा शक है कि मुझसे कोई ग़लती हुयी होगी, चुनांचे हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को इस बात का बहुत सख़्त सदमा हुआ, और सदमे से निढाल होकर लेट गयीं, और इसी हाल में अल्लाह तआला की तरफ़ से बराअत की आयतें नाज़िल हुयीं। उस वक़्त घर में हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु भी मौजूद थे, जब ये आयतें सुनीं तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी बहुत ख़ुश हुए और हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु भी बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाया कि अब

इन्शा अल्लाह यह सारा बोहतान ख़त्म हो जायेगा। उस वक़्त हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि ख़ुश ख़बरी सुन लो, अल्लाह तआला ने तुम्हारी बराअत में आयतें नाज़िल फ़रमा दीं, और अब खड़ी हो जाओ, और आकर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम करो, हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा बिस्तर पर लेटी हुयीं हैं, और बराअत की आयतें सुन लीं, और लेटे लेटे फ़रमाया कि यह तो अल्लाह तआला का करम है कि उसने मेरी बराअत नाज़िल फ़रमा दी लेकिन मैं अल्लाह के सिवा किसी का शुक्र अदा नहीं करती, क्योंकि आप लोगों ने तो अपने दिल में यह शक पैदा कर लिया था कि शायद मुझसे ग़लती हुयी है। (बुख़ारी शरीफ़)

देखने में हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने खड़े होने से एराज़ फ़रमाया, लेकिन आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसको बुरा नहीं समझा, इसलिये कि यह नाज़ की बात थी, जो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की तरफ़ से पेश आयी।

यह नाज़ हक़ीक़त में उस दोस्ती का नाम है, इसलिये मियां बीवी के दरमियान सिर्फ़ हाकिमियत और महकूमियत का रिश्ता नहीं है बल्कि दोस्ती का भी रिश्ता है और उस दोस्ती का हक़ यह है कि इस क़िस्म के नाज़ को बर्दाश्त किया जाये, यहां तक कि जहां बात बिल्कुल ग़लत हो गयी वहां आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ना- गवारी और गुस्से का भी इज़हार फ़र्माया, लेकिन इस क़िस्म की नाज़ की बातों को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने गवारा फ़रमाया।

बीवी की दिलजोई सुन्नत है

और दोस्ती का हक़ इस तरह अदा फ़रमाया कि कहां नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मक़ामात और बुलन्द

दरजे कि हर वक़्त अल्लाह तआ़ला के साथ तअ़ल्लुक़ क़ायम है, और गुफ़्तगू हो रही है लेकिन उसके साथ साथ अज़्वाजे मुतह्हरात (पाक बीवियों) के साथ दिलदारी और दिलजोई और हुस्ने सुलूक का यह आ़लम था कि रात के वक़्त हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को ग्यारह औ़रतों का क़िस्सा सुना रहे हैं कि यमन के अन्दर ग्यारह औ़रतें थीं, उन्हों ने आपस में यह तय किया था कि वे सब एक दूसरे को अपने अपने शौहर की हक़ीक़ी और वाक़ई हालत बयान करेंगी, यानी हर औ़रत यह बतायेगी कि उसका शौहर कैसा है? उसकी सिफ़तें क्या हैं? उन ग्यारह औ़रतों ने अपने शौहरों की सिफ़तें किस वज़ाहत (तफ़्सील) और अच्छे तरीक़े के साथ बयान की हैं कि सारी अदबी लताफ़तें उस पर ख़त्म हैं। वह सारा क़िस्सा हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को सुना रहे हैं। (शमाइले तिर्मीज़ी)

बीवी के साथ हंसी मज़ाक़ सुन्नत है

एक मर्तबा आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के घर में मुक़ीम थे, और उनकी बारी का दिन था, हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के लिये एक हलवा पकाया और हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के घर पर लायीं, और लाकर हज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने रख दिया और हज़रत सौदा भी सामने बैठी हुयी थीं, उनसे कहा कि आप भी खायें, हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा को यह बात गरां गुज़री कि जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मेरे घर में थे और मेरी बारी का दिन था तो फिर यह हलवा पका कर क्यों लायीं? इसलिये हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने इन्कार कर दिया कि मैं नहीं खाती, हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया कि यह हलवा खाओ और अगर नहीं खाओगी तो फिर यह हलवा तुम्हारे मुंह पर मल दूंगी, हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने फ़रमाया कि मैं तो

नहीं खाऊंगी, चुनांचे हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने थोड़ा सा हलवा उठा कर हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा के मुंह पर मल दिया। अब हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शिकायत की कि या रसूलल्लाह! इन्हों ने मेरे मुंह पर हलवा मल दिया है, हज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि कुरआन करीम में आया है कि:

"وَجَزَاءُ سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا"

यानी कोई शख़्स अगर तुम्हारे साथ बुरा सुलूक करे तो तुम भी बदले में उसके साथ बुरा सुलूक कर सकते हो, अब अगर इन्हों ने तुम्हारे मुंह पर हलवा मल दिया है तो तुम भी इनके चेहरे पर हलवा मल दो, चुनांचे हज़रत सौदा रज़ियल्लाहु अन्हा ने थोड़ा सा हलवा उठा कर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के चेहरे पर मल दिया, अब दोनों के चेहरे पर हलवा मला हुआ है और यह सब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने हो रहा है।

इतने में दरवाज़े पर दस्तक हुई, पूछा कौन है? मालूम हुआ कि हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़िल्लाहु अन्हु तशरीफ़ लाये हैं (शायद उस वक़्त तक पर्दे के अहकाम नहीं आये थे) जब आपने यह सुना कि हज़रत उमर तशरीफ़ लाये हैं तो आपने फ़रमाया कि तुम दोनों जल्दी जाकर चेहरे धोलो, इसलिये कि उमर आ रहे हैं चुनांचे दोनों ने जाकर अपना चेहरा धोया। (मज्मउज़ ज़वाइद)

वह ज़ात जिसका हर आन अल्लाह जल्ल जलालुहू के साथ राबता क़ायम है, जिसकी हर वक़्त अल्लाह तआला के साथ गुफ़्तगू हो रही है, और "वही" आ रही है, और अल्लाह तआला की हुज़ूरी का वह मक़ाम हासिल है जो इस रूए ज़मीन पर किसी और को हासिल नहीं हो सकता, लेकिन इसके बावजूद अपनी बीवियों के साथ यह अन्दाज़ और उनकी दिलदारी का इतना ख़्याल है।

मक़ामे "हुज़ूरी"

हम और आप ज़बान से "हुज़ूरी" का लफ़्ज़ बोल देते हैं, लेकिन इसकी हक़ीक़त हमें मालूम नहीं, अगर कोई शख़्स इसका मज़ा चख ले तो उसको पता लगेगा कि यह क्या चीज़ है, हमारे हज़रत डाक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि कभी कभी अल्लाह तआ़ला के साथ हुज़ूरी का ख़्याल इस दर्जा बढ़ जाता है कि उसकी वजह से अल्लाह तआ़ला के बाज़ बन्दे ऐसे हैं कि वे पांव फैला कर नहीं सो सकते, लेट नहीं सकते, इसलिये कि हर वक़्त अल्लाह तआ़ला के सामने होने का एहसास है, और जब अपना बड़ा सामने हो तो कोई शख़्स पांव फैला कर लेटेगा? हरगिज़ नहीं लेटेगा। इसी तरह अल्लाह तआ़ला के हाज़िर होने का एहसास और ख़्याल इस दर्जा बढ़ जाता है कि इन्सान पांव फैला कर लेट नहीं सकता, इसलिये जिस ज़ात को "हुज़ूरी" का इतना बड़ा मकाम हासिल हो जो दुनिया में किसी और को नहीं हो सकता, वह पाक बीवियों के साथ किस तरह हंसी मज़ाक़ के मामलात कर लेते हैं? यह मक़ाम सिर्फ़ एक पैग़म्बर ही को हासिल हो सकता है।

वर्ना घर बर्बाद हो जायेगा

बहर हाल! चूंकि अल्लाह तआ़ला ने मर्द को "क़व्वाम" बनाया है इसलिये फ़ैसला उसी का मानना होगा, हां तुम अपनी राय और मश्विरा दे सकती हो, और हमने मर्द को यह हिदायत भी दे रखी है कि वह जहां तक मुम्किन हो तुम्हारी दिलदारी का ख़्याल भी करे लेकिन फ़ैसला उसी का होगा, इसलिये अगर यह बात ज़ेहन में न हो, और बेगम साहिबा यह चाहें कि हर मामले में फ़ैसला मेरा चले और मर्द क़व्वाम न बने, मैं क़व्वाम बन जाऊं तो यह सूरत फ़ित्रत के ख़िलाफ़ है, शरीअ़त के ख़िलाफ़ है, अ़क़्ल के ख़िलाफ़ है, और इन्साफ़ के ख़िलाफ़ है, और इसका नतीजा घर की बर्बादी

के सिवा और कुछ नहीं होगा।

औरत की ज़िम्मेदारियां

अ़ल्लामा नववी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने आगे फ़रमाया किः

"فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ"

फ़रमाया कि नेक औ़रतों का काम क्या है? नेक औ़रतों का काम यह है कि वे "क़ानितात" हैं यानी अल्लाह की इताअ़त करने वाली, अल्लाह ने जो हुक़ूक़ शौहर के आ़यद किये हैं उन हुक़ूक़ को सही तौर पर बजा लाने वाली और शौहर की ग़ैर मौजूदगी में शौहर के घर की हिफ़ाज़त करने वाली, यह अल्लाह तबारक व तआ़ला ने औ़रत का लाज़मी वस्फ़ क़रार दिया, और उसके ज़िम्मे यह फ़रीज़ा आ़यद किया कि जब शौहर घर में मौजूद न हो तो उस वक़्त वह उसके घर की हिफ़ाज़त करे, घर की हिफ़ाज़त का मतलब यह है कि अव्वल तो ख़ुद अपनी हिफ़ाज़त करे कि किसी गुनाह में मुब्तला न हो और शौहर का जो माल व सामान है, उस की हिफ़ाज़त करे, इसलिये उसकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी बीवी पर आ़यद होती है, चुनांचे हदीस शरीफ़ में है किः

"المرأة راعية فى بيت زوجها" (صحيح بخارى شريف)

औ़रत अपने शौहर के घर की निगहबान है, यानी उसके माल व दौलत की हिफ़ाज़त औ़रत की ज़िम्मेदारी है, जैसा कि मैंने अ़र्ज़ किया कि अक्सर हालात में औ़रत के ज़िम्मे खाना पकाना वाजिब नहीं होता, लेकिन शौहर के घर की हिफ़ाज़त और उसके माल व सामान की इस तरह हिफ़ाज़त कि वह माल बेजा ख़र्च न हो, क़ुरआन करीम ने यह उसकी ज़िम्मेदारी क़रार दी है।

ज़िन्दगी क़ानून के ख़ुश्क तअ़ल्लुक़ से नहीं गुज़र सकती

ये जो मैंने कहा कि औ़रत के ज़िम्मे खाना पकाने की ज़िम्मे-दारी नहीं है, वह तो एक क़ानून की बात थी, लेकिन ज़िन्दगी

क़ानून के ख़ुश्क तअ़ल्लुक़ से नहीं चला करती, इसलिये जिस तरह क़ानून में औ़रत के ज़िम्मे खाना पकाना नहीं है, इसी तरह अगर औ़रत बीमार हो जाये तो क़ानून में शौहर के ज़िम्मे उसका इलाज कराना या इलाज के लिये ख़र्चा देना भी ज़रूरी नहीं, और क़ानून में शौहर के ज़िम्मे यह भी नहीं है कि वह औ़रत को उसके मां बाप के घर मुलाक़ात के लिये लेजाया करे, और न यह ज़रूरी है कि जब औ़रत के मां बाप अपनी बेटी से मुलाक़ात के लिये आयें तो उनको घर में बिठाये, बल्कि फ़ुक़हा–ए–किराम ने यहां तक लिखा कि है कि हफ़्ते में सिर्फ़ एक दिन औ़रत के मां बाप आयें और दूर से मुलाक़ात और ज़ियारत करके चले जायें, घर में बिठा कर मुलाक़ात कराना शौहर की ज़िम्मेदारी नहीं, इसलिये अगर क़ानून के ख़ुश्क तअ़ल्लुक़ की बुनियाद पर ज़िन्दगी बसर होनी शुरू हो जाये तो दोनों का घर बर्बाद हो जाये, बात जब चलती है जब दोनों मियां बीवी क़ानून की बात से आगे बढ़ कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत की इत्तिबा करें, और बीवी अज़्वाजे मुतह्हरात (नबी–ए–पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बीवियों) की सुन्नत की इत्तिबा करे।

बीवी के दिल में शौहर के पैसे का दर्द हो

हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने तक़रीरों में ज़िक्र फ़र्माया कि औ़रत के फ़राइज़ में दाख़िल है कि उसके दिल में शौहर के पैसे का दर्द हो, शौहर का पैसा ग़लत जगह पर बिला वजह ख़र्च न हो, और फ़ुज़ूल ख़र्ची में उसका पैसा ज़ाया न हो, यह चीज़ औ़रत के फ़राइज़ में दाख़िल है। यह न हो कि शौहर का पैसा दिल खोल कर ख़र्च किया जा रहा है, या घर को नौकरानियों पर छोड़ दिया गया है, वे जिस तरह चाह रही हैं कर रही हैं, अगर कोई औ़रत ऐसा करती है तो यह क़ानूनी फ़राइज़ के ख़िलाफ़ कर रही है।

ऐसी औरत पर फ़रिश्तों की लानत

"عن أبى هريرة رضى الله عنه قال: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: اذا دعا الرجل إمرأته الى فراشه فأبت ان تجئ لعنتها الملائكة حتى تصبح" (صحيح بخارى شريف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब कोई मर्द अपनी बीवी को अपने बिस्तर की तरफ़ बुलाये और यह मियां बीवी के मख़्सूस तअल्लुक़ात की तरफ़ इशारा है, यानी शौहर अपनी बीवी को इन तअल्लुक़ात को क़ायम करने के लिये बुलाये, और वह औरत न आये, या ऐसा तरीक़ा इख़्तियार करे जिस से शौहर का वह मन्शा पूरा न हो, और उसकी वजह से शौहर नाराज़ हो जाये, सारी रात सुबह तक फ़रिश्ते उस औरत पर लानत भेजते रहते हैं कि उस औरत पर ख़ुदा की लानत हो और लानत के मायने यह हैं कि अल्लाह तआला की रहमत उसको हासिल नहीं होगी, इसका मन्शा हक़ीक़त में यह है कि तुम्हारे और तुम्हारे शौहर के दरमियान जो तअल्लुक़ है वह दुरुस्त हो जाये, और उस दुरुस्तगी का एक लाज़मी हिस्सा यह है कि तुम्हारे ज़रिये शौहर को इफ़्फ़त हासिल हो, पाक दामनी हासिल हो, निकाह का बुनियादी मक़सद यह है कि पाक दामनी हासिल हो, और निकाह के बाद शौहर को किसी और तरफ़ देखने की ज़रूरत न रहे, इसलिये तुम्हारे ज़िम्मे यह फ़रीज़ा आयद होता है कि इस मामले में तुम्हारी तरफ़ से कोई कोताही न हो, अगर कोताही होगी तो फिर फ़रिश्तों की तरफ़ से तुम पर लानत होती रहेगी।

दूसरी रिवायत के अल्फ़ाज़ ये हैं कि:

"اذا باتت المرأة مهاجرة فراش زوجها لعنتها الملائكة حتى تصبح"

(صحيح بخارى شريف)

अगर कोई औरत अपने शौहर का बिस्तर छोड़ कर रात गुज़ारे तो उसको फ़रिश्ते लानत करते रहते हैं, यहां तक कि सुबह हो जाये, अब आप अन्दाज़ा लगायें कि हदीस शरीफ़ में एक छोटी बात कही गयी है कि अगर शौहर ने बीवी को इस काम के लिये दावत दी है और वह इन्कार करे, या ऐसा तर्ज़े अमल (तरीक़ा) इख़्तियार करे जिस से शौहर का मन्शा पूरा न हो सके तो सारी रात लानत होती रहती है, और शौहर की इजाज़त और शौहर की मरज़ी के बग़ैर औरत घर से बाहर चली जाये तो जब तक वह घर से बाहर रहेगी अल्लाह तआला के फ़रिश्तों की लानत होती रहेगी, इन तमाम मामलात की नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तफ़्सील के साथ एक एक चीज़ बयान फ़रमा दी, इसलिये कि यही चीज़ें झगड़े और फ़साद का सबब होती हैं।

शौहर की इजाज़त से नफ़्ली रोज़ा रखे

"وعن ابی هریرة رضی الله عنه ان رسول الله صلی الله علیه وسلم قال: لا یحل للمرأة ان تصوم وزوجها شاهد الا باذنه، ولا تأذن فی بیته الا باذنه" (صحیح بخاری شریف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि किसी औरत के लिये हलाल नहीं कि वह अपने शौहर की मौजूदगी में रोज़ा रखे, मगर शौहर की इजाज़त से। यानी किसी औरत के लिये नफ़्ली रोज़ा रखना शौहर की इजाज़त के बग़ैर हलाल नहीं, नफ़्ली इबादत के कितने फ़ज़ाइल हदीसों में ज़िक्र हैं लेकिन औरत शौहर की इजाज़त के बग़ैर रोज़ा नहीं रख सकती, इसलिये कि हो सकता है कि दिन के वक़्त रोज़े से होने की वजह से शौहर को तक्लीफ़ हो, इसलिये पहले शौहर से इजाज़त लेले, लेकिन शौहर को चाहिये कि वह बिला वजह बीवी को नफ़्ली रोज़े से मना न करे, बल्कि रोज़े की इजाज़त देदे, कभी कभी मियां बीवी के

दरमियान इस बात पर झगड़ा हो जाता है कि बीवी कहती है कि मैं रोज़ा रखना चाहती हूं और शौहर कहता है कि मैं इजाज़त नहीं देता, इसलिये मर्द को चाहिये कि वह बिला वजह इस फ़ज़ीलत को हासिल करने से बीवी को मना न करे, लेकिन औरत के लिये बिना इजाज़त रोज़ा रखना जायज़ नहीं, अगर शौहर इजाज़त नहीं देता तो औरत वह नफ़्ली रोज़ा छोड़ दे, इसलिये कि शौहर की बात मानना ज़्यादा ज़रूरी है।

शौहर की बात मानना नफ़्ली इबादत पर मुक़द्दम है

इस से मालूम हुआ कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने शौहर की इताअत को तमाम नफ़्ली इबादतों पर फ़ौक़ियत अता फ़रमाई है, इसलिये जो सवाब उस औरत को रोज़ा रख कर मिलता है अब शौहर की इताआत करने में उस से ज़्यादा सवाब मिलेगा, और वह औरत यह न समझे कि मैं रोज़े से महरूम हो गयी, इसलिये कि वह यह सोचे कि रोज़ा किस लिये रख रही थी? रोज़ा तो इसलिये रख रही थी कि सवाब मिलेगा, और अल्लाह तआला राज़ी होगें और अल्लाह तआला यह फ़रमा रहे हैं कि मैं उस वक़्त तक राज़ी नहीं हूंगा जब तक तेरा शौहर तुझसे राज़ी नहीं होगा, इसलिये जो सवाब तुम्हें रोज़ा रख कर मिलता, वही रोज़े का सवाब खाने पीने के बाद भी मिलेगा, इन्शा अल्लाह।

घर के काम काज पर अज्र व सवाब

बाज़ मर्तबा हम लोगों के ज़ेहन में यह होता है कि यह मियां बीवी के तअल्लुक़ात एक दुनियावी क़िस्म का मामला है, और यह सिर्फ़ नफ़्सानी ख़्वाहिशात की तक्मील का मामला है, ऐसा हरगिज़ नहीं है बल्कि यह दीनी मामला भी है इसलिये कि अगर औरत यह नियत करले कि अल्लाह तआला ने मेरे ज़िम्मे यह फ़रीज़ा आयद किया है, और इस तअल्लुक़ का मक़सद शौहर का ख़ुश करना है,

और शौहर को ख़ुश करने के वास्ते से अल्लाह तआ़ला को ख़ुश करना है, तो फिर यह सारा अ़मल सवाब बन जाता है, घर का जो काम औ़रतें करती हैं, और उसमें नियत शौहर की ख़ुश करने की है, तो सुबह से शाम तक वे ज़ितना काम कर रही हैं वह सब अल्लाह तआ़ला के यहां इबादत में लिखा जात है, चाहे वह खाना पकाना हो, या बच्चों की तरबियत हो, या शौहर का ख़्याल हो, या शौहर के साथ ख़ुश दिली की बातें हों, इन सब पर अज्र लिखा जा रहा है बशर्ते कि नियत दुरुस्त हो।

जिन्सी ख़्वाहिश को पूरा करने पर अज्र व सवाब

और इस मौज़ू पर बिल्कुल स्पष्ट हदीस मौजूद है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मियां बीवी के जो आपसी तअ़ल्लुक़ात होते हैं, अल्लाह तआ़ला उन पर भी अज्र अ़ता फ़रमाते हैं, सहाबा-ए-किराम ने सवाल किया कि या रसूलल्लाह! वह तो इन्सान अपनी नफ़्सानी ख़्वाहिशात के तहत करता है, उस पर क्या अज्र? आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर वह इन्सान उन नफ़्सानी ख़्वाहिशात को ना जायज़ तरीक़े से पूरा करे तो उस पर गुनाह होता या नहीं? सहाबा-ए-किराम ने अ़र्ज़ किया: या रसूलल्लाह! गुनाह ज़रूर होता, आपने फ़रमाया कि चूंकि मियां बीवी ना जायज़ तरीक़े को छोड़ कर जायज़ तरीक़े से नफ़्सानी ख़्वाहिशात को मेरी वजह से और मेरे हुक्म के मा-तहत कर रहे हैं इसलिये उस पर भी सवाब होगा। (मुस्नदे अहमद)

अल्लाह तआ़ला दोनों को रहमत की निगाह से देखते हैं

एक हदीस जो मैंने ख़ुद तो नहीं देखी लेकिन हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के मवाइज़ में यह हदीस पढ़ी है और हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने कई जगह इस हदीस का ज़िक्र

फ़रमया। वह हदीस यह है कि शौहर बाहर से घर के अन्दर दाख़िल हुआ और उसने मुहब्बत की निगाह से बीवी को देखा और बीवी ने मुहब्बत की निगाह से शौहर को देखा तो अल्लाह तआ़ला दोनों को रहमत की निगाह से देखते हैं, इसलिये यह मियां बीवी के तअ़ल्लुक़ात सिर्फ़ दुनियावी क़िस्सा नहीं है, यह आख़िरत और जन्नत व जहन्नम बनाने का रास्ता भी है।

क़ज़ा रोज़ों में शौहर की रियायत

तिर्मिज़ी शरीफ़ में हदीस है हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि रमज़ान के महीने में तबई मजबूरी की वजह से जो रोज़े मुझसे क़ज़ा हो जाते थे, मैं आ़म तौर पर उन रोज़ों को आने वाले शाबान के महीने में रखा करती थी यानी तक़रीबन ग्यारह महीने बाद, यह मैं इसलिये करती थी कि शाबान में आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम भी कस्रत से रोज़े रखा करते थे। इसलिये अगर उस ज़माने में मैं भी रोज़े से हूंगी और आप भी रोज़े से होंगे तो यह सूरत ज़्यादा बेहतर है, बनिस्बत इसके कि मैं रोज़े से हूं और आपका रोज़ा न हो, हालांकि वे नफ़्ली रोज़े नहीं थे, बल्कि रमज़ान के क़ज़ा रोज़े थे, और क़ज़ा रोज़ों के बारे में हुक्म यह है कि उनको जितना जल्दी हो सके, अदा कर लेने चाहियें, लेकिन हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा सिर्फ़ आपकी तक्लीफ़ के ख़्याल से शाबान तक मुअख़्ख़र फ़रमाती थीं। (मुस्लिम शरीफ़)

बीवी घर में आने की इजाज़त न दे

इस हदीस का अगला जुम्ला यह इरशाद फ़रमया कि:

"ولا تأذن في بيته الا بأذنه"

यानी औ़रत के ज़िम्मे यह भी फ़र्ज़ है कि शौहर के घर में किसी को शौहर की इजाज़त के बग़ैर दाख़िल होने की इजाज़त न दे, या किसी ऐसे शख़्स को घर के अन्दर आने की इजाज़त देना जिसको शौहर ना पसन्द करता हो, यह औ़रत के लिये बिल्कुल ना

जायज़ और हराम है, एक दूसरी हदीस में इस बात को और तफ़्सील से बयान फ़रमया कि:

"الا ان لكم على نسائكم حقًا ولنسائكم عليكم حقًا فحقكم عليهن ان لا يوطين فرشكم من تكرهون ولا يأذن فى بيوتكم لمن تكرهون"

(ترمذی شریف)

याद रखो, तुम्हारा तुम्हारी बीवियों पर भी कुछ हक़ है और तुम्हारी बीवियों का तुम पर कुछ हक़ है यानी दोनों के ज़िम्मे एक दूसरे के हुकूक़ हैं और दोनों के हुकूक़ की हिफ़ाज़त और पासदारी फ़रीकैन पर लाज़िम है। वे हुकूक़ क्या हैं? वे ये हैं कि: ऐ मर्दों! तुम्हारा हक़ इन बीवियों पर यह है कि वे तुम्हारे बिस्तरों को ऐसे लोगों को इस्तेमाल न करने दें जिन्हें तुम ना पसन्द करते हो और तुम्हारे घर में ऐसे लोगों को आने की इजाज़त न दें, जिनका आना तुम ना पसन्द करते हो, यहां दो हक़ बयान फ़रमाये एक यह कि बीवी के ज़िम्मे यह फ़र्ज़ है कि वह घर के अन्दर किसी ऐसे शख़्स को आने न दे जिसके आने को शौहर ना पसन्द करता हो, यहां तक कि अगर बीवी के किसी अज़ीज़ का घर में आना शौहर को ना पसन्द हो तो इस सूरत में अपने अज़ीजों को भी घर में आने की इजाज़त देना जायज़ नहीं, और मां बाप को भी सिर्फ़ इतनी इजाज़त है कि हफ़्ते में एक मर्तबा आकर बेटी की सूरत देख लें, इस से तो शौहर उनको रोक नहीं सकता, लेकिन उनके लिये भी शौहर की इजाज़त के बग़ैर घर में ठहरना और रहना जायज़ नहीं, इसलिये कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने साफ़ लफ़्ज़ों में फ़रमाया कि जिनको तुम ना पसन्द करते हो उनको आने की इजाज़त न दो, चाहे वह कोई भी हो।

और दूसरा जुम्ला यह इरशाद फ़रमाया कि वे बीवियां तुम्हारे बिस्तरों को ऐसे लोगों को इस्तेमाल करने की इजाज़त न दें, जिनको तुम ना पसन्द करते हो, बिस्तर के इस्तेमाल में सब चीज़ें दाख़िल हैं, यानी बिस्तर पर बैठना, बिस्तर पर लेटना, बिस्तर पर

सोना ये सब इसमें दाख़िल हैं।

हज़रत उम्मे हबीबा का इस्लाम लाना

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक बीवी हैं, हज़राते सहाबा–ए–किराम के वाक़िआत के अन्दर नूर भरा हुआ है, यह हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि–यल्लाहु अ़न्हु की बेटी हैं जिन्हों ने तक़रीबन इक्कीस साल हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मुख़ालफ़त में गुज़ारे और हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ जंगें लड़ीं और मक्का मुकर्रमा के सरदारों में से थे और आख़िर में मक्का फ़तह हो जाने के मौक़े पर मुसलमान होकर सहाबी बन गये, और यह अल्लाह तआ़ला की क़ुदरते कामिला का करिश्मा था कि काफ़िरों के इतने बड़े सरदार की बेटी हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा और उनके शौहर दोनों मुसलमान हो गये, बाप मुसलमानों की मुख़ालफ़त और उनके साथ दुश्मनी में लगा हुआ है, और बेटी और दामाद दोनों के मुसलमान होने से अबू सुफ़ियान के कलेजे पर छुरी चलती थी और उनको बेटी और दामाद का मुसलमान होना बर्दाश्त नहीं होता था, चुनांचे उनको तक्लीफ़ें पहुंचाने पर लगे रहते थे, उस ज़माने में बहुत से मुसलमान काफ़िरों की तक्लीफ़ों से तंग आकर हब्शा की तरफ़ हिज्रत कर गये थे, हब्शा की तरफ़ हिज्रत करने वाले मुसलमानों में हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा और उनके शौहर भी थे, ये दोनों वहां जाकर रहने लगे, लेकिन अल्लाह तआ़ला की मशिय्यत के अ़जीब व ग़रीब अन्दाज़ हैं, जब हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने अपने शौहर के साथ हब्शा में क़ियाम किया तो कुछ दिनों के बाद उन्हों ने ख़्वाब में देखा कि मेरे शौहर की सूरत बिल्कुल बदल गयी है, और बिगड़ गयी है, जब यह बेदार हुयीं तो उनको अन्देशा हुआ कि

कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरे शौहर के दीन व ईमान पर कुछ ख़लल आ जाये, उसके बाद जब कुछ दिन गुज़रे तो उस ख़्वाब की ताबीर सामने आ गयी और यह हुआ कि उनके शौहर एक ईसाई के पास जाया करते थे उसके पास जाने के नतीजे में दिल से ईमान निकल गया, और ईसाई बन गये।

अब हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा पर तो बिजली गिर गयी इस्लाम की ख़ातिर मां बाप को छोड़ा, वतन को छोड़ा, सारे अज़ीज़ व क़रीबी लोगों को छोड़ा, और आकर इस अजनबी शहर में ठहरे, और ले देकर एक शौहर जो हमदर्द और दम साज़ हो सकता था, वह काफ़िर हो गया, अब उन पर तो क़ियामत गुज़र गयी, और कुछ दिनों के बाद उनके शौहर का उसी हालत में इन्तिक़ाल हो गया, अब यह हब्शा के अन्दर बिल्कुल अकेली रह गयीं, कोई पूछने वाला नहीं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निकाह

उधर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मदीना में इसकी इत्तिला मिली कि उनके शौहर ईसाई बन कर इन्तिक़ाल कर गये हैं, और हज़रत उम्मे हबीबा अजनबी जगह में अकेली और तन्हा हैं तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हब्शा के बादशाह नज्जाशी को पैग़ाम भेजा कि चूंकि उम्मे हबीबा अजनबी जगह में अकेली और तन्हा हैं, उनको मेरी तरफ़ से निकाह का पैग़ाम दे दो, चुनांचे नज्जाशी की मारफ़त उनको निकाह का पैग़ाम भेजा गया।

चुनांचे हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा ख़ुद अपना वाक़िआ सुनाती हैं कि एक दिन मैं इसी बेबसी के आलम में घर में बैठी थी, इतने में दरवाज़े पर दस्तक हुयी, दरवाज़ा खोला तो देखा कि बाहर एक बांदी खड़ी हुयी है, हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उस से पुछा किः कहां से आयी हो? उस बांदी ने जवाब दिया किः मुझे हब्शा के बादशाह नज्जाशी ने भेजा है, (यह वही

नज्जाशी हैं जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम पर ईमान लाकर मुसलमान हो गये थे) उन्हों ने फिर पूछा कि: क्यों भेजा है? उसने जवाब दिया कि मुझे इसलिये भेजा है कि आपको हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने निकाह का पैग़ाम भेजा है, और नज्जशी बादशाह की मारफ़त भेजा है, हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा फ़रमाती हैं कि जिस वक़्त ये अल्फ़ाज़ मेरे कान में पड़े, उस वक़्त मुझे इस क़दर ख़ुशी और हैरत हुयी कि मेरे पास उस वक़्त जो कुछ भी था, वह मैंने उठा कर बांदी को दे दिया और कहा कि तू मेरे लिये इतनी अच्छी ख़बर लाई है, इसलिये यह तेरा इनाम है, उसके बाद उस हालत में इन दोनों के दरमियान निकाह हुआ कि हज़रत उम्मे हबीबा हबशा ही में थीं, और आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मदीना मुनव्वरा में थे, और फिर कुछ वक़्त के बाद आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनको मदीना मुनव्वरा बुलवाने का इन्तिज़ाम फ़रमाया। (अल इसाबा फ़ी तमीज़िस् सहाबा)

अनेक निकाहों की वजह

वाक़िआ यह है कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जो अनेक निकाह फ़रमाये, हक़ से ना वाक़िफ़ लोग तो मालूम नहीं क्या क्या बातें करते हैं, लेकिन हर निकाह के पीछे बड़ी अ़ज़ीमुश्शान हिक्मतें हैं, इस निकाह में देख लीजिये कि उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा हब्शा में कस–मपुर्सी की हालत में ज़िंदगी गुज़ार रही थीं, कोई पूछने वाला नहीं था, अब अगर आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनकी इस तरह दिलदारी न फ़रमाते तो उनका क्या बनता, आपने इस तरीक़े से उनसे निकाह फ़रमा कर उनको मदीना पाक बुलवाया।

ग़ैर मुस्लिम की ज़बान से तारीफ़

यह भी आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का करिश्मा

और मोजिज़ा है कि जिस वक़्त उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अन्हा का आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से निकाह हो गया, तो इसकी इत्तिला मक्का मुकर्रमा में हज़रत अबू सुफ़ियान को पहुंची, और उस वक़्त हज़रत अबू सुफ़ियान हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दुश्मन और काफ़िर थे, जब उनको यह इत्तिला मिली कि मेरी बेटी का निकाह आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से हो गया है, उस वक़्त एक दम उनकी ज़बान पर जो कलिमा आया, वह यह था कि: यह ख़बर तो खुशी की ख़बर है, इसलिये कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) उन लोगों में से नहीं हैं जिनके पैग़ाम को रद्द कर दिया जाये, इसलिये यह तो ख़ुश क़िस्मती की बात है, कि उम्मे हबीबा (रज़ि०) वहां चली गयीं।

मुआहदे का तोड़ना

सुलह हुदैबिया के मौके पर आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत अबू सुफ़ियान के दरमियान जंग बन्दी का एक मुआहदा हुआ था, सीरत की किताबों में जिसकी तफ़सील मौजूद है, एक साल तक हज़रत अबू सुफ़ियान और दूसरे काफ़िरों ने इस मुआहदे की शरतों की पाबन्दी की, लेकिन एक साल के बाद उन्हों ने अहद तोड़ना शुरू कर दिया, उस अहद तोड़ने के नतीजे में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह ऐलान फ़रमा दिया कि अब हम इस मुआहदे के पाबन्द नहीं रहे, इसलिये अब हम जब चाहेंगे मक्का मुकर्रमा पर हमला कर देंगे, क्योंकि हमारे दुश्मनों ने जब अहद का पास नहीं किया तो अब हम भी उसके पाबन्द नहीं रहे, इस ऐलान के बाद हज़रत अबू सुफ़ियान को यह ख़तरा लाहिक़ हो गया कि किसी वक़्त भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मुकर्रमा पर हमला कर सकते हैं।

आप इस बिस्तर के लायक़ नहीं हैं

एक मर्तबा हज़रत अबू सुफ़ियान शाम से वापस आ रहे थे, कि

मुसलमानों ने उनको और उनके क़ाफ़िले को गिरफ़्तार कर लिया तो हज़रत अबू सुफ़ियान रातों रात छुप छुपा कर मदीना मुनव्वरा में दाख़िल हुये और यह ख़्याल हुआ कि मेरी बेटी तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के घर में हैं, इसलिये उनसे बात करूंगा तो शायद मेरी जान बख़्शी हो जाये, चुनांचे यह छुप कर हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा के घर में दाख़िल हो गये, बेटी ने उनका इस्तिक़बाल किया, जिस वक़्त यह घर में दाख़िल हुये उस वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का बिस्तर घर में बिछा हुआ था, हज़रत अबू सुफ़ियान ने घर में दाख़िल होकर उस बिस्तर पर बैठने का इरादा किया, तो उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा तेज़ी से आगे बढ़ीं और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु-अ़लैहि व सल्लम का बिस्तर एक तरफ़ हटा कर लपेट कर रख दिया, (हज़रत) अबू सुफ़ियान को बेटी का तर्ज़ बड़ा अचंभा और अ़जीब महसूस हुआ और एक जुम्ला यह कहा कि:

रमला! क्या यह बिस्तर मेरे लायक़ नहीं है, या मैं इस बिस्तर के लायक़ नहीं हूं?

हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने जवाब दिया कि:

"अब्बा जान! बात यह है कि आप इस बिस्तर के लायक़ नहीं हैं इस वास्ते कि यह मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का बिस्तर है और जो आदमी मुश्रिक हो, मैं उसको अपनी ज़िन्दगी में इस बिस्तर पर बैठने की इजाज़त नहीं दे सकती"।

इस पर (हज़रत) अबू सुफ़ियान (रज़ि०) ने कहा कि:

"रमला! मुझे नहीं मालूम था कि तुम इतनी बदल जाओगी कि अपने बाप को भी बिस्तर पर बैठने की इजाज़त नहीं दोगी"।

हज़रत उम्मे हबीबा रज़ियल्लाहु अ़न्हा का यह अ़मल कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बिस्तर पर अपने बाप को भी बैठने से मना फ़रमाया, यह हक़ीक़त में इस हदीस पर अ़मल है

कि:

"لايؤطن فرشكم من تكرهون"

जिनको तुम ना पसन्द करते हो, उन लोगों को वे बीवियां तुम्हारा बिस्तर इस्तेमाल करने की इजाज़त न दें। (अल इसाबा)

बीवी फ़ौरन आ जाये

"وعن طلق بن على رضى الله عنه ان رسول الله صلى الله عليه وسلم قال: اذادعا الرجل زوجته لحاجته فلتأته وان كانت على التنور"

(ترمذى شريف)

हज़रत तलक़ बिन अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हु रिवायत करते हैं कि हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जब मर्द अपनी बीवी को अपनी हाजत के लिये बुलाये, तो उस औ़रत पर वाजिब है कि वह आ जाये, चाहे वह तन्नूर पर भी क्यों न हो, मुराद यह है कि अगरचे वह औ़रत रोटी पकाने के काम में मश्गूल हो, उस वक़्त भी अगर शौहर अपनी हाजत पूरी करने के लिये उसको दावत दे और बुलाये तो वह इन्कार न करे।

निकाह जिन्सी सुकून हासिल करने का हलाल रास्ता

इन सारे अहकाम का मक़्सद हक़ीक़त में यह है कि अल्लाह तआ़ला ने हर मर्द व औ़रत के अन्दर फ़ितरी तौर पर जिन्सी जज़्बा और ख़्वाहिश रखी है, और उस फ़ितरी जज़्बे और ख़्वाहिश की तस्कीन के लिये एक हलाल रास्ता तजवीज़ फ़रमा दिया है, वह है निकाह का रास्ता, और शौहर बीवी के तअ़ल्लुक़ात में इस ज़रूरत को पूरा करना पहली अहमियत का हामिल है, इसलिये हलाल के सारे रास्ते खोल दिये, ताकि किसी भी मर्द को हराम तरीक़े से इस जज़्बे और ख़्वाहिश की तस्कीन का ख़्याल न हो, बीवी को शौहर से तस्कीन हो, और शौहर को बीवी से तस्कीन हो, ताकि दूसरों की तरफ़ देखने की ज़रूरत पेश न आये।

निकाह करना आसान है

इसी वास्ते अल्लाह तआ़ला ने निकाह के रिश्ते को बहुत

आसान बना दिया, कि सिर्फ़ मर्द व औरत मौजूद हों, और दो गवाह मौजूद हों, और वे मर्द औरत उन गवाहों की मौजूदगी में ईजाब व कुबूल करलें, बस निकाह हो गया, यहां तक कि ख़ुतबा-ए-निकाह पढ़ना भी ज़रूरी नहीं, लेकिन ख़ुतबा पढ़ना सुन्नत है। इसी तरह क़ाज़ी से या किसी और से निकाह पढ़ाने की ज़रूरत नहीं है, अगर दूसरे से पढ़वा ले तो यह सुन्नत है, लेकिन उसके बग़ैर भी अगर मर्द व औरत ख़ुद दो गवाहों की मौजूदगी में ईजाब व कुबूल करलें एक कहे कि मैं ने तुमसे निकाह किया और दूसरा कहे कि मैंने कुबूल किया, बस! निकाह हो गया। निकाह के लिये न तो मस्जिद में जाने की ज़रूरत है और न दरमियान में तीसरे शख़्स को डालने की ज़रूरत है, ताकि हलाल का रास्ता आसान से आसान हो जाये।

बरकत वाला निकाह

और दूसरी तरफ़ यह ताकीद फ़रमाई कि निकाह का मामला और निकाह की तक़रीब सादगी और आसानी के साथ अन्जाम दी जाये, कोई रस्म कोई शर्त, कोई लम्बी चौड़ी तक़रीब करने की ज़रूरत नहीं, हदीस शरीफ़ में फ़रमाया कि जब औलाद बालिग़ हो जाये तो उसके निकाह की फ़िक्र करो, ताकि उसको हराम की तरफ़ जाने की ख़्वाहिश और ज़रूरत पैदा न हो, और हलाल का रास्ता आसान हो जाये, एक हदीस में नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:

"أن اعظم النكاح بركة أيسره مؤنةً" (مسند احمد)

सब से ज़्यादा बरकत वाला निकाह वह है जिसमें बहुत ज़्यादा आसानी हो, और सादगी हो, निकाह को जितना फैलाया जायेगा और जितना उसके अन्दर धूम धड़ाका होगा, उसी क़दर उसमें बरकत कम होती चली जायेगी।

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ का निकाह

हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु बड़े रुतबे वाले सहाबी हैं और अश्रा--ए--मुबश्शरा में से हैं, यानी उन दस ख़ुश नसीब सहाबा में से हैं जिनको हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने दुनिया ही में ख़ुश ख़बरी सुना दी थी कि ये जन्नत में जायेंगे, एक मर्तबा जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मज्लिस में हाज़िर हुये तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने देखा कि उनकी क़मीज़ के ऊपर ज़र्द निशान और रंग लगा हुआ है, आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनसे पूछा कि तुम्हारी क़मीज़ पर यह ज़र्द निशान कैसा लगा हुआ है? उन्हों ने जवाब में अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! मैंने एक ख़ातून से निकाह कर लिया है, और निकाह के वक़्त एक ख़ुश्बू लगाई थी, और यह ख़ुश्बू का निशान है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि:

"بارك الله لك وعليك اولم بشاة" (صحيح بخاری شريف)

अल्लाह तआ़ला इसमें तुम्हारे लिये बरकत अ़ता फ़रमायें वलीमा कर लो, चाहे वह एक बकरी से क्यों न हो।

इस हदीस में ग़ौर करने की बात है कि यह हज़रत अ़ब्दुर–रहमान बिन औ़फ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु अ़श्रा–ए–मुबश्शरा में से हैं, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इन्तिहाई क़रीबी सहाबी हैं, लेकिन निकाह की तक़रीब में सिर्फ़ यह नहीं कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को बुलाया नहीं, बल्कि ज़िक्र तक नहीं किया, और फिर जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने रंग के बारे में पूछा तो उसके जवाब के तहत में निकाह की इत्तिला दी, और निकाह की ख़बर सुन कर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह शिकायत नहीं की कि तुम अकेले निकाह करके बैठ गये और हमें बुलाया तक नहीं, इसलिये

कि शरीअ़त ने निकाह की तक़रीब पर सिरे से कोई शर्त और क़ैद आयद नहीं की।

आज निकाह को मुश्किल बना दिया गया है

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु एक मरतबा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ख़िदमत में आये, और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैंने एक ख़ातून से निकाह कर लिया है। (बुख़ारी)

यह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बहुत क़रीबी सहाबा में से थे, और हर वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मिलते रहते थे, लेकिन निकाह में शिर्कत की दावत नहीं दी, इसलिये कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुबारक ज़माने में इसका आम रिवाज था कि निकाह के लिये कोई ख़ास एहतिमाम नहीं किया जाता था कि निकाह हो रहा है तो एक तूफ़ान बरपा है, महीनों से उसकी तैयारियां हो रही हैं......और पूरे ख़ानदान में इसकी धूम है इसके बग़ैर निकाह नहीं हो सकता। शरीअ़त ने निकाह को जितना आसान किया था, हमने उसको अपनी ग़लत रस्मों के ज़रीए उतना ही मुश्किल बना दिया, इसका नतीजा देख लीजिये कि लड़कियां बग़ैर निकाह के घरों में बैठी हैं, वे इसलिये घरों में बैठी हैं कि दहेज़ मुहैया करने के लिये पेसे नहीं हैं, या आ़लीशान तक़रीब करने के लिये पैसे नहीं हैं, अब इन कामों के लिये पैसे जमा करने के लिये हलाल व हराम एक हो रहा है, ये सब रस्में हमने हिन्दुओं से और ईसाइयों से लेली हैं, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने सुन्नत का जो तरीक़ा हमारे लिये फ़रमाया था वह हमने छोड़ दिया और आज उसका नतीजा है कि हलाल के रास्ते बन्द हैं, हलाल तरीक़ से ख़्वाहिश पूरी करने के लिये बहुत माल व दौलत वाला होना ज़रूरी है, लाखों रुपया हो, तब जाकर निकाह कर सकेगा, वर्ना नहीं। और दूसरी तरफ़ हराम के ज़रिए चारों तरफ़ चौपट खुले हैं, जब

चाहे जिस तरह चाहे पूरी कर ले......दिन रात घर में टी०वी० चल रहा है, फ़िल्में आ रही हैं, और उसके ज़रिये नफ़्सानी और शहवानी जज़्बात को यह उभारा जा रहा है, उनको भड़काया जा रहा है। अगर बाज़ार में निकलो तो आंखों को पनाह मिलनी मश्किल है। और उसके नतीजे में फ़ह्हाशी, नंगा पन, बेग़ैरती और बेहयाई, और बेपदर्गी की लानत मुसल्लत हो रही हैं, इसलिये इन रस्मों ने हमारे मुआशरे को तबाही के किनारे पर पहुंचा दिया है।

दहेज़ मौजूदा समाज की एक लानत

इस मामले में सब से ज़्यादा ज़िम्मेदारी उन लोगों पर आयद होती है जो खाते पीते अमीर और दौलत मन्द घराने कहलाते हैं, इस अज़ाब से नजात उस वक़्त तक नहीं हो सकती जब तक खाते पीते और अमीर कहलाने वाले लोग इस बात की शुरूआत न करें कि हम अपने ख़ानदान में शादियां और निकाह सादगी के साथ करेंगे और इन ग़लत रस्मों को ख़त्म करेंगे, उस वक़्त तक तब्दीली नहीं आयेगी, इसलिये कि एक ग़रीब आदमी तो यह सोचता है कि मुझे अपनी सफ़ेद पोशी बर्क़रार रखते हुये और अपनी नाक ऊंची रखने के लिये मुझे यह काम करना ही है, इसके बग़ैर मेरा गुज़ारा नहीं होगा, अगर लड़की को दहेज़ नहीं देंगे तो ससुराल वाले ताने दिया करेंगे कि क्या लेकर आई थी......आज दहेज़ को शादी का एक लाज़मी हिस्सा समझ लिया है, घर घरस्ती का सामान मुहैया करना जो शौहर के ज़िम्मे वाजिब था, वह आज बीवी के बाप के ज़िम्मे वाजिब है, गोया कि वह बाप अपनी बेटी और अपने जिगर का टुक्ड़ा भी शौहर को देदे, और उसके साथ लाखों रुपया भी दे, घर का फ़र्नीचर मुहैया करे और इस तरह वह दूसरे का घर आबाद करे, शारीअ़त में इसकी कोई असल मौजूद नहीं, ठीक है अगर कोई बाप अपनी बेटी को कोई चीज़ देना चाहता है, तो वह सादगी के साथ देदे, बहर हाल जो मालदार और खाते पीते घराने

कहलाते हैं, उन पर यह ज़िम्मेदारी ज़्यादा आयद होती है कि वे जब तक इस सादगी को नहीं अपनायेंगे और इसको एक तहरीक की शक्ल में नहीं चलायेंगे उस वक़्त तक इस अ़ज़ाब से नजात मिलनी मुश्किल है, अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से यह बात हमारे दिलों में डाल दे, आमीन।

अ़ौरत को हुक्म देता कि वह शौहर को सजदा करे

" وعن أبي هريرة رضى الله عنه عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: لوكنت آمر احدًا أن يسجد لاحد لأمرت المرأة أن تسجدلزوجها"

(ترمذی شریف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया किः अगर मेरे लिये किसी को यह हुक्म देना जायज़ होता कि एक शख़्स दूसरे को सज्दा करे तो मैं अ़ौरत को हुक्म देता कि वह अपने शौहर को सज्दा करे, लेकिन चूंकि अल्लाह तआ़ला के अ़लावा दूसरे के आगे सज्दा करना जायज़ नहीं, इसलिये मैं यह सज्दा करने का हुक्म नहीं देता, लेकिन अगर इस दुनिया में किसी इन्सान के लिये दूसरे इन्सान को सज्दा करना जायज़ होता तो मैं अ़ौरत को हुक्म देता कि वह अपने शौहर को सज्दा करे।

यह दो दिलों का तअ़ल्लुक़ है

ज़िन्दगी के सफ़र में जहां मर्द व अ़ौरत साथ ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं, उसमें अल्लाह तआ़ला ने मर्द को "अमीर" और "निगरां" बनाया है। इस "इमारत" (अमीर व निगरां बनने) के अ़लावा और जितनी इमारतें हैं वे सब वक़्ती और आ़रज़ी हैं, आज एक आदमी अमीर और हाकिम बन गया, या मुल्क का बादशाह बना दिया गया, लेकिन उसकी हाकिमियत और बादशाहत और इमारत एक मख़्सूस वक़्त तक के लिये है, कल तक हाकिम और अमीर बना हुआ था और आज वह जेलख़ाने में है, कल तक

बादशाह बना हुआ था, और आज दो कौड़ी के लिये पूछने को तैयार नहीं, इसलिये यह इमारतें और हुकूमतें आनी जानी चीज़ें हैं। आज है कल नहीं, लेकिन मियां बीवी का तअ़ल्लुक़ यह ज़िन्दगी भर का तअ़ल्लुक़ है, दम दम का साथ है, एक एक लम्हे का साथ है, इसलिये इस तअ़ल्लुक़ के नतीजे में मर्द को जो इमारत हासिल होती है, वह मरते दम तक बर्क़रार रहती है या जब तक निकाह का रिश्ता बर्क़रार है। इसलिये यह "इमारत" आम इमारतों से अलग है, दूसरी इमारतों में हाकिम का महकूम के साथ, अमीर का रअ़िय्यत के साथ सिर्फ़ एक ज़ाबते का दस्तूरी और क़ानूनी तअ़ल्लुक़ होता है, लेकिन मियां बीवी का तअ़ल्लुक़ सिर्फ़ ज़ाबते, क़ानून और महज़ ख़ाना पुरी का तअ़ल्लुक़ नहीं है, बल्कि यह दिलों का जोड़ है, यह दिलों का तअ़ल्लुक़ है, जिसके असरात सारी ज़िन्दगी पर फैले हुए हैं, इसी वास्ते हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर मैं किसी को सज्दा करने का हुक्म देता तो मैं औ़रत को हुक्म देता कि वह अपने शौहर को सज्दा करे, क्योंकि वह उसकी ज़िन्दगी भर के सफ़र का अमीर है।

सब से ज़्यादा मुहब्बत के क़ाबिल हस्ती

हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत यह है कि हर शख़्स को उसके फ़राइज़ की तरफ़ तवज्जोह दिलाते हैं, जब शौहर से ख़िताब था उस वक़्त सारी बातें औ़रत के हुक़ूक़ के बारे में बयान की जा रही थीं कि औ़रत के ये हुक़ूक़ हैं, औ़रत के ये हुक़ूक़ हैं, अब जब औ़रत से ख़िताब हो रहा है तो औ़रत को उसके फ़राइज़ की तरफ़ मुतवज्जह किया जा रहा है कि तुम्हें यह समझना चाहिये कि अल्लाह और अल्लाह के रसूल के बाद तुम्हारे लिये सबसे ज़्यादा क़ाबिले एहतिराम और सबसे ज़्यादा क़ाबिले मुहब्बत हस्ती इस रूए ज़मीन पर तुम्हारा शौहर है, जब तक यह बात नहीं समझोगी, शौहर के हुक़ूक़ सही तौर पर अदा नहीं कर पाओगी, लेकिन अल्लाह और अल्लाह के रसूल का हुक्म सब से

पहले है, जब अल्लाह और अल्लाह के रसूल का हुक्म आ जाये तो फिर न बाप की इताअ़त, न मां की इताअ़त और न शौहर की इताअ़त, लेकिन अल्लाह और अल्लाह के रसूल के बाद शौहर का दर्जा है, उसको ख़ुश करने की फ़िक्र करो, उसके हुकूक़ अदा करने की फ़िक्र करो, उसकी इताअ़त की फ़िक्र करो।

नई तहज़ीब की हर चीज़ उल्टी

आज हमारे दौर में हर चीज़ के अन्दर उल्टी गंगा बहने लगी है, हज़रत क़ारी मुहम्मद तयैब साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि आज की तहज़ीब में हर चीज़ उल्टी हो गयी है, यहां तक कि पहले चिराग़ तले अन्धेरा हुआ करता था, और अब बल्ब के ऊपर अन्धेर होता है और इस दर्जा उल्टी हो गयी है कि घर का काम काज अगरचे शरअ़न औरत के ज़िम्मे वाजिब न हो, लेकिन हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा की सुन्नत ज़रूर है, इसलिये कि हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा घर का सारा काम ख़ुद अपने हाथ से किया करती थीं, और दूसरी तरफ़ औरत को शौहर की इताअ़त का भी हुक्म दिया गया कि उनकी इताअ़त करो, अब अगर एक औरत घर का काम काज करती है और अपने शौहर और बच्चों के लिये खाना पकाती है तो इस पर उसके लिये बहुत बड़ा अज्र व सवाब लिखा जाता है, लेकिन आजकी उल्टी तहज़ीब का फ़ैसला यह है कि औरत का घर में बैठना और घर का काम काज तो रजअ़त पसंदी, दक़ियानूसियत और पुराना तरीक़ा है, और यह औरत का घर की चार दीवारी में क़ैद करना है, लेकिन अगर वही औरत हवाई जहाज़ में एयर होस्टस बन कर चार सौ आदमियों को खाना खिलाये, और उनके सामने टरे सजा कर ले जाये, और चार सौ आदमियों की हौलनाक निगाहों का निशाना बने, एक शख़्स उस से कोई ख़िदमत ले रहा है, दूसरा शख़्स उस से कोई ख़िदमत ले रहा है, और कभी कभी बिला वजह ख़िदमत लेते हैं,

कोई ख़ास ज़रूरत नहीं होती, किसी ने बेल बजा कर उसको बुलाया, और उसी से कहा कि यह तकिया उठा कर देदो, इस ख़िदमत का नाम आजकी तहज़ीब में आज़ादी है और अगर वही औरत घर में अपने शौहर, अपने बच्चों और अपने बहन भाईयों के लिये यह ख़िदमत अन्जाम दे तो इसका नाम "दक़ियानूसियत" है और यह तरक़्क़ी के ख़िलाफ़ है।

अगर वही औरत होटल में "वेटर्स" बनी हुयी है, और रात दिन लोगों की ख़िदमत अन्जाम दे रही है, खाना खिला रही है, तो वह "औरतों की आज़ादी" का एक हिस्सा है, या वह किसी की सैक्रेट्री बन जाये, या वह औरत किसी की इस्टेनू ग्राफ़र बन जाये, यह तो आज़ादी है और अगर यही औरत घर में रह कर अपने शौहर, अपने बच्चों और मां बाप के लिये यह काम करे तो इसको "दक़ियानूसियत" का नाम दिया गया है।

ख़िरद का नाम जुनूं रख दिया जुनूं का नाम ख़िरद
जो चाहे आपका हुसने करिशमा साज़ करे

औरत की ज़िम्मेदारी

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमा रहे हैं कि औरत के ज़िम्मे दुनिया के किसी फ़र्द की ख़िदमत वाजिब नहीं, न उसके ज़िम्मे कोई ज़िम्मेदारी है और न उसके कांधों पर किसी ज़िम्मेदारी का बोझ है, तुम हर बोझ और हर ज़िम्मेदारी से आज़ाद हो, लेकिन सिर्फ़ एक बात है कि तुम अपने घर में क़रार से रहो, और अपने शौहर की इताअत करो, और अपने बच्चों की तरबियत करो, यह तुम्हारा फ़रीज़ा है और इसके ज़रिये तुम क़ौम की तामीर कर रही हो, और इसकी मेअ़मार बन रही हो, हुज़ूरे अक़्दस सल्ल-ल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तुम्हें इज़्ज़त का यह मक़ाम दिया था, अब तुम में से जो चाहे इस इज़्ज़त के मक़ाम को इख़्तियार करे, और जो चाहे ज़िल्लत के मक़ाम को इख़्तियार करे, जो आंखों से

नज़र आ रहा है।

वह औरत सीधी जन्नत में जायेगी

"وعن أم سلمة رضى الله تعالىٰ عنها قال:قال رسول الله صلى الله عليه وسلم: أيماامرأةماتت و زوجها عنها راض دخلت الجنة" (ترمذی)

हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया किः जिस औरत का इन्तिक़ाल इस हालत में हुआ कि उसका शौहर उस से ख़ुश हो तो वह सीधी जन्नत में जायेगी।

वह तुम्हारे पास कुछ दिन का मेहमान है

"عن معاذ بن جبل رضى الله تعالىٰ عنه: عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: لا تؤذى امرأة زوجها فى الدنيا الا قالت زوجة من الحور العين لا تؤذيه قاتلك الله! فانما هو عندك دخيل يوشك أن يفارقك الينا"

(ترمذی شریف)

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबी—ए—करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमया किः जब कभी कोई बीवी अपने शौहर को तक्लीफ़ पहुंचाती है, (इसलिये कि कभी औ़रत की तबीयत सलामती की हामिल नहीं होती, और उसकी तबीयत में फ़साद और बिगाड़ होता है, और फ़साद और बिगाड़ के नतीजे में अपने शौहर को तक्लीफ़ पहुंचा रही है) तो उसके शौहर की जो बीवियां अल्लाह तबारक व तआ़ला ने जन्नत में हूरों की शक्ल में उसके लिये मुक़द्दर फ़रमाई हैं, वे हूरें जन्नत से इस दुनियावी बीवी से ख़िताब करके कहती हैं किः

"तू इसको तक्लीफ़ मत पहुंचा, इसलिये कि यह तुम्हारे पास चन्द दिन का मेहमान है, और क़रीब है कि वह तुमसे जूदा होकर हमारे पास आजाये"।

यह बात हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम तबीयत में फ़साद रखने वाली बीवी को मुतवज्जह करके फ़रमा रहे हैं कि तुम

जो अपने शौहर को तक्लीफ़ पहुंचा रही हो, इससे उसका कुछ नहीं बिगड़ता, इसलिये कि दुनिया में तो इसको जो चाहोगी तक्लीफ़ दोगी, लेकिन आख़िरत में अल्लाह तबारक व तआला इसका रिश्ता ऐसी "हूरे अ़ैन" के साथ क़ायम फ़रमायेंगे, जो उन शौहरों से इतनी मुहब्बत करती हैं कि उनके दिल को अभी से इस बात की तक्लीफ़ हो रही है कि दुनिया में हमारे शौहर के साथ यह कैसा तक्लीफ़ पहुंचाने वाला मामला किया जा रहा है।

मर्दों के लिये बहुत सख़्त आज़माइश

"وعن اسامة بن زيد رضى الله عنه عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: ماتركت بعدى فتنة هى أضرعلى الرجال من النساء" (بخارى شريف)

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अ़न्हु फ़रमाते हैं कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि: मैंने अपने बाद कोई फ़ितना ऐसा नहीं छोड़ा जो मर्दों के लिये ज़्यादा नुक़्सान देने वाला हो बनिस्बत औ़रतों के फ़ितने के। औ़रतों का फ़ितना इस दुनिया में मर्दों के लिये बहुत सख़्त फ़ितना है, इस हदीस की अगर तशरीह लिखी जाये तो एक बड़ी किताब लिखी जा सकती है कि ये औ़रतें मर्दों के लिये किस किस तरीक़े से फ़ितना हैं।

औ़रत किस तरह आज़माइश है?

फ़ितने के मायने हैं, "आज़माइश" अल्लाह तआ़ला ने औ़रतों को इस दुनिया में मर्दों की आज़माइश के लिये मुक़र्रर फ़रमाया है, और यह औ़रत किस किस तरीक़े से आज़माइश है? एक मुख़्तसर मज्लिस में इसका बयान करना मुम्किन नहीं, यह औ़रत उस तरीक़े से भी आज़माइश है जिस तरीक़े से हज़रत यूसुफ़ अ़लैहिस्सलाम के साथ पेश आई यानी मर्द की तबीयत में औ़रत की तरफ़ कशिश का एक मैलान रख दिया गया, अब उसके हलाल रास्ते भी बयान कर दिये, और हराम रास्ते भी बयान कर दिये, अब आज़माइश इस

तरह है कि यह मर्द हलाल का रास्ता इख़्तियार करता है, या हराम का रास्ता इख़्तियार करता है, यह मर्द के लिये सब से बड़ी आज़माइश है।

इसके ज़रिये दूसरी आज़माइश इस तरह है कि यह बीवी जो उसके लिये हलाल है, उसके साथ कैसा मामल करता है, अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जैसा सुलूक करने का हुक्म दिया है, वैसा सुलूक करता है या उसकी हक़ तल्फ़ी करता है।

तीसरी आज़माइश यह है कि यह शख़्स बीवी की मुहब्बत और उसके हुकूक़ की अदायगी में ऐसी ज़्यादती और मशग़ूली तो इख़्तियार नहीं करता कि उसके मुक़ाबले में दीन के अहकाम को पीठ पीछे डाल दे। यह तो उसने सुन लिया कि बीवी को ख़ुश करना चाहिये और उसके साथ अच्छा सुलूक करना चाहिये, लेकिन अब हराम और ना जायज़ कामों में भी उसकी दिलजोई कर रहा है, और उसकी सही दीनी तरबियत नहीं कर रहा है, इस तरह यह आज़माइश है, इसलिये कि मर्द को दोनों तरफ़ ख़्याल रखना है, एक तरफ़ मुहब्बत का तक़ाज़ा यह है कि बीवी पर रोक टोक न करे और दूसरी तरफ़ दीन का तक़ाज़ा यह है कि ख़िलाफ़े शरीअ़त कामों पर रोक टोक करे, ग़र्ज़ आज़माइशों का कोई ठिकाना नहीं है, और अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक़ ही से इन्सान इन तमाम आज़माइशों से कामयाबी के साथ इस तरह निकल सकता है कि उसके हुकूक़ भी अदा करे, उसकी तालीम व तर्बियत का भी ख़्याल रखे, उसके नफ़ा व नुक़्सान का भी ख़्याल रखे, और हराम की तरफ़ भी मुतवज्जह न हो, इन तमाम बातों का ख़्याल करना सिर्फ़ अल्लाह तबारक व तआ़ला की ख़ास तौफ़ीक़ ही के ज़रिये हो सकता है, इसलिये नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक दुआ़ तल्क़ीन फ़र्माई है जो आपकी मासूर दुआ़ओं में से है कि:

"اللهم انى اعوذبك من فتنة النساء"

"ऐ अल्लाह! मैं आपकी पनाह मांगता हूं औरतों के फ़ितने से" इशारा इस बात की तरफ़ कर दिया कि इस आज़माइश में खरा उतरना और कामयाब होना अल्लाह तआ़ला की ख़ास तौफ़ीक़ के बग़ैर मुम्किन नहीं, इसलिये इन्सान को अल्लाह तआ़ला से रुजू करते रहना चाहिये कि ऐ अल्लाह! मुझे इस आज़माइश में पूरा उतार दीजिये, और बहकने और फिसलने से और ग़लती का मुर्तकिब होने से बचा लीजिये, इसलिये इस मासूर दुआ़ को अपनी दुआ़ओं में शामिल कर लेना चाहिये।

हर शख़्स निगहबान है

"وعن ابن عمر رضی الله عنهما، عن النبی صلی الله علیه وسلم قال: كلكم راع، وكلكم مسئول عن رعيته" (بخاری شریف)

यह बड़ी अ़जीब व ग़रीब हदीस है और जवामिउल कलिम (जो बहुत सी बातों को अपने अन्दर लिये हुए है) में से है, और हम में से हर शख़्स इस हदीस का मुख़ातब है, चुनांचे फ़रमाया कि तुम में से हर शख़्स निगहबान है, और हर शख़्स से उसके निगरानी में आई चीज़ों और अफ़राद के बारे में सवाल होगा, यानी जिन चीज़ों की निगहबानी उसके सुपुर्द की गयी थी, उसके बारे में उस से सवाल होगा, "राई" के असल मायने होते हैं "निगहबान" और चरवाहे को भी "राई" कहते हैं, इसलिये कि वह बकरियों की निगहबानी करता है, और "राई" के मायने "हाकिम" के भी होते हैं, और हाकिम के जो मा–तहत होते हैं, उनको "रअ़िय्यत" कहा जाता है। इसलिये आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम में से हर शख़्स "राई" है। और हर शख़्स से उसकी "रअ़िय्यत" के बारे में सवाल होगा, कि उनकी निगहबानी तुमने किस तरह की?

"अमीर" रिआ़या का निगहबान है

"والامير راع"

हर अमीर अपनी निगहबानी में माजौद अफ़राद का "राई" और "निगहबान" है। और उस से सवाल होगा कि तुमने उनकी कैसी निगहबानी की। "अमीर" के बारे में इस्लाम का तसव्वुर यह नहीं है कि वह इमारत का ताज सर पर लगा कर लोगों से अलग होकर बैठ जाये, बल्कि अमीर का तसव्वुर यह है कि वह राई है, इसी वास्ते हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अगर दरिया-ए-फ़ुरात के किनारे कोई कुत्ता भी भूखा मर जाये तो मुझे यह ख़्याल होता है कि क़ियामत के रोज़ मुझसे सवाल होगा कि ऐ उमर! तेरी हुकूमत में एक कुत्ता भूखा मर गया।

"ख़िलाफ़त" ज़िम्मेदारी का एक बोझ

यही वजह है कि जब फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु शहादत से पहले ज़ख़्मी हुए तो लोगों ने कहा कि आप अपने बाद ख़लीफ़ा बनाने के लिये किसी को नामज़द कर दें। और उस वक़्त लोगों ने आपके साहिबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िय-ल्लाहु अन्हु का नाम लिया कि उनको ख़िलाफ़त के लिये नामज़द कर दें, हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बिला शुबह बड़े रुतबे वाले सहाबी थे, उनके इल्म व फ़ज़्ल, तक़्वा, इख़्लास किसी चीज़ में किसी को कोई शक नहीं हो सकता, जब लोगों ने हज़रत फ़ारूके आज़म के सामने उनके बेटे का नाम लिया तो हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु ने पहले तो एक जुम्ला इरशाद फ़रमाया किः

तुम मेरे बाद ऐसे शख़्स को मुझसे ख़लीफ़ा नामज़द कराना चाहते हो जिसको अपनी बीवी को तलाक़ देना भी नहीं आता।

जिसका वाक़िआ यह है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में एक मर्तबा अपनी बीवी को ऐसी हालत में तलाक़ देदी थी, जब उनकी बीवी माहवारी की हालत में थीं, और माहवारी की

हालत में तलाक़ देना ना जायज़ है, उनको यह मस्अला मालूम नहीं था, इसलिये तलाक़ देदी, बाद में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इस तलाक़ से रुजू करलो, चुनांचे उन्हों ने उस तलाक़ से रुजू कर लिया, इस वाक़िए की तरफ़ हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इशारा फ़रमाया कि तुम मुझसे ऐसे शख़्स को ख़लीफ़ा बनवाना चाहते हो, जिसे अपनी बीवी को तलाक़ देनी भी नहीं आती, मैं उसको ख़लीफ़ा बना दूं?

लोगों ने फिर इस्रार किया और कहा हज़रत! वह क़िस्सा आया गया हो गया, मस्अला मालूम नहीं होने की वजह से उन्हों ने ऐसा कर लिया था, इस वाक़िए की वजह से वह ख़िलाफ़त के अहल होने से तो नहीं निकले, बल्कि वह इसके अहल हैं आप उनको बना दें, इसके जवाब में जो जुम्ला हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने इरशाद फ़रमाया वह याद रखने के क़ाबिल है, फ़रमाया कि बात असल में यह है कि ख़िलाफ़त का फन्दा ख़त्ताब की औलाद में से एक ही शख़्स के गले में पड़ गया तो काफ़ी है, अब मैं अपने ख़ानदान में से किसी और फ़र्द के गले में यह फन्दा डालना नहीं चाहता, इसलिये कि यह इमारत और ख़िलाफ़त हक़ीक़त में ज़िम्मेदारी का बहुत बड़ा बोझ है, और आख़िरत में जब अल्लाह तआ़ला के सामने जाकर हिसाब किताब दूं, तो अगर बराबर सराबर भी छूट जाऊं तो बहुत ग़नीमत समझूंगा।

यह है अमीर का तसव्वुर, कि उसने इस इमारत के हक़ को कैसे अदा किया, आगे फ़रमाया किः

मर्द बीवी बच्चों का निगहबान है

"والرجل راع على أهل بيته"

यानी मर्द अपने घर वालों का राई और निगहबान है, घर वालों में बीवी और बच्चे जो उसके मा–तहत हैं जिस फ़ैमली का वह मुखिया है, वे सब आ गये। हर मर्द से इसके बारे में सवाल

होगा कि इस घराने को तुम्हारे ज़ेरे इन्तिज़ाम दिया गया था, बीवी बच्चे थे, उनके साथ तुम्हारा मामला किस तरह रहा? और उनकी कैसी निगहबानी की? उनके हुक़ूक़ को कैसे अदा किये? और क्या तुमने इस बात की निगहबानी की कि वे दीन पर चल रहे हैं या नहीं? इस काम का ख़्याल तुम्हारे दिल में आया या नहीं? क़ियामत के रोज़ मर्द से इन तमाम चीज़ों के बारे में सवाल होगा, जैसा कि क़ुरआन करीम ने फ़रमाया किः

"يَاأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا" (سورة التحريم:٦)

ऐ ईमान वालो! अपने आपको भी आग से बचाओ, और अपने घर वालों को भी आग से बचाओ, ऐसा करना दुरुस्त नहीं कि ख़ुद तो आग से बच कर बैठ गये, ख़ुद तो नमाज़ पढ़ रहे हैं और रोज़ा रख रहे हैं, फ़राइज़, वाजिबात और नवाफ़िल व तसबीहात सब अदा हो रहे हैं और दूसरी तरफ़ औलाद ग़लत रास्ते पर जा रही है, उसकी कोई फ़िक्र नहीं है, उसका कोई ख़्याल नहीं, तो फिर याद रखो, क़ियामत के रोज़ तुम सवाल से बच नहीं सकोगे, तुमसे भी सवाल होगा, और इसका अ़ज़ाब भी होगा कि तुमने अपना फ़रीज़ा क्यों अन्जाम नहीं दिया था? इसलिये फ़रमाया कि मर्द अपने घर वालों के लिये राई है। आगे फ़रमायाः

"औ़रत" शौहर के घर और उसकी औलाद की निगहबान है

"والمرأة راعية على بيت زوجها وولده"

और औ़रत अपने शौहर के घर पर और उसकी औलाद पर निगहबान है, गोया औ़रत को दो चीज़ें सुपुर्द की गयी हैं, एक शौहर का घर, दूसरे उसकी औलाद, यानी घर की हिफ़ाज़त करे, घर का इन्तिज़ाम सही रखे, घर के मामलात की देख भाल करे, और दूसरे औलाद की देख भाल सही करे, दुनियावी देख भाल भी, और दीनी देख भाल भी, यह औ़रत के फ़राइज़ में दाख़िल है, और

इस हदीस में हर एक के फ़राइज़ बयान कर दिये गये हैं।

औरतें हज़रत फ़ातिमा की सुन्नत इख़्तियार करें

हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा जन्नत की औरतों की सरदार, निकाह के बाद हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु के घर तशरीफ़ ले गयीं, तो हज़रत अली और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आपस में यह बात तय करली कि हज़रत अली घर के बाहर के काम करेंगे, और हज़रत फ़ातिमा घर के अन्दर के काम करेंगी, चुनांचे हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बड़ी मेहनत से घर का काम अन्जाम देती थीं, और बड़े शौक़ व ज़ौक़ से करती थीं, और अपने शौहर की ख़िदमत करती थीं, लेकिन मेहनत का काम बहुत ज़्यादा होता था, वह ज़माना आज कल के ज़माने की तरह तो था नहीं, आज कल तो बिजली का बटन ऑन कर दिया, और खाना तैयार हो गया, बल्कि खाना तैयार करने के लिये चक्की के ज़रिये आटा पीसतीं, तन्दूर के लिये लकड़ियां काट कर लातीं, और तन्दूर सुलगातीं, और फिर रोटी पकातीं, एक लम्बा चौड़ा अमल था, जिस में हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा को बड़ी मशक़्क़त उठानी पड़ती थी, और हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा बड़े शौक़ व ज़ौक़ से यह मशक़्क़त उठातीं थीं। लेकिन जब ग़ज़वा-ए-ख़ैबर के मौक़े पर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बहुत माले ग़नीमत आया, उस माले ग़नीमत में ग़ुलाम और बांदियां भी थीं, चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने साहाब-ए-किराम में उनको तक़्सीम करना शुरू किया, तो हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा से किसी ने जाकर कहा कि आप भी जाकर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कह दें कि एक कनीज़ और बांदी आपको भी देदें। चुनांचे हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के घर में हाज़िर हुयीं, और उनसे कहा कि आप हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से

कहें कि चक्की पीसते पीसते मेरे हाथों में गढ़े पड़ गये हैं, और पानी की मश्क उठाते उठाते सीने पर नील पड़ गये हैं, इस वक़्त चूंकि माले ग़नीमत में इतने सारे ग़ुलाम और बांदियां आई हैं, कोई ग़ुलाम या बांदी अगर मुझे मिल जाये तो मैं इस मशक़्क़्त से नजात पालूं, यह कह कर हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा वापस घर आ गयीं।

जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम घर तश्रीफ़ लाये तो हज़रत आ़यशा रज़ियल्लाहु अ़न्हा ने हुज़ूरे अक़्दस सल्ल–ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! आपकी साहिबज़ादी हज़रत फ़ातिमा तश्रीफ़ लायी थीं, और यह फ़रमा रही थीं, आख़िर आप बाप थे, और जब एक बाप के सामने चहीती बेटी यह जुम्ला कहे कि चक्की पीसते पीसते मेरे हाथों में गढ़े पड़ गये हैं, और पानी की मश्क उठाने से सीने पर नील के निशान आ गये हैं, आप अन्दाज़ा लगायें, कि उस वक़्त बाप के जज़्बात का क्या आ़लम होगा, लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उनको घर बुलाया, और फ़रमायाः फ़ातिमा! तुमने मुझसे बांदी या ग़ुलाम की दरख़्वास्त की है, लेकिन जब तक सारे मदीना वालों को ग़ुलाम और बांदी मयस्सर न आ जायें, उस वक़्त तक मैं मुहम्मद की बेटी को ग़ुलाम और बांदी देना पसन्द नहीं करता।

औ़रतों के लिये नुस्ख़ा–ए–कीमिया "तस्बीहे फ़ातमी"

लेकिन मैं तुम्हें एक नुस्ख़ा बताता हूं जो तुम्हारे लिये ग़ुलाम और बांदी से बेहतर होगा, वह नुस्ख़ा यह है कि जब तुम रात के वक़्त बिस्तर पर लेटने लगो तो उस वक़्त ३३ बार "सुब्हानल्लाह" ३३ बार "अल्हम्दु लिल्लाह" और ३४ बार "अल्लाहु अक्बर" पढ़ लिया करो, यह तुम्हारे लिये ग़ुलाम और बांदी से ज़्यादा बेहतर होगा, बेटी भी सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की बेटी थी, पलट कर कुछ नहीं कहा बल्कि जो कुछ हुज़ूर सल्ल–

ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़र्माया, उसी पर मुत्मइन हो गयीं, और वापस तशरीफ़ ले गयीं, इसी वजह से इस तसबीह् को "तसबीहे फ़ातमी" कहा जाता है। (जामिउल उसूल)

आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने अपनी बेटी को "औ़रतों के लिये एक मिसाल बना दिया कि बीवी ऐसी हो, क़ानूनी एतिबार से चाहे कुछ भी हक़ हो, सुन्नत यह है कि वह अपने शौहर के घर की निगहबान है, और इस निगहबान होने की वजह से वह उसके कामों को अपना काम समझ कर अन्जाम दे रही है।

औलाद की तरबियत मां के ज़िम्मे है

और वह औ़रत सिर्फ़ घर की निगहबान नहीं है, बल्कि उसकी औलाद की भी निगहबान है, औलाद की परवरिश, औलाद की ख़िदमत और औलाद की तरबियत और उसकी तालीम की ज़िम्मेदारी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने औ़रत पर डाली है, अगर औलाद की तरबियत सही नहीं हो रही है, उनके अन्दर इस्लामी आदाब नहीं आ रहे हैं, तो इसके बारे में पहले औ़रत से सवाल होगा, और बाद में मर्द से होगा, इसलिये कि इन चीज़ों की पहली ज़िम्मेदारी औ़रत की है, इसलिये औ़रत से सवाल होगा कि तुम्हारी गोद में पलने वाले बच्चों में दीन व ईमान क्यों पैदा नहीं हुआ? उनके दिलों में इस्लामी आदाब क्यों पैदा नहीं हुए? इसलिये हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि औ़रत से शौहर के घर और उसकी औलाद के बारे में सवाल होगा, आगे फिर दोबारा वही जुम्ला दोहराया कि:

"وكلكم راع وكلكم مسئول عن رعيته"

कि तुम में से हर शख़्स राई है और हर शख़्स से उसकी निगरानी में मौजूद चीज़ों के बारे में सवाल होगा, अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से हम सब को इन फ़राइज़ को समझने और इन पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

وآخردعوانا ان الحمد لله رب العالمين

क़ुर्बानी, हज और ज़िलहिज्जा की दहाई

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْماً كَثِيْرًا كَثِيْرًا اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ،بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالْفَجْرِ وَلَيَالٍ عَشْرٍ وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ وَالَّيْلِ اِذَا يَسْرِ هَلْ فِيْ ذَالِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ۔ (سورة الفجر)

آمنت بالله صدق الله مولانا العظيم وصدق رسوله النبى الكريم ونحن علىٰ ذالك من الشاهدين والشاكرين۔ والحمد لله رب العالمين۔

यह मक़ाम एक मिनारा–ए–नूर था

आज एक लम्बे वक़्त के बाद एक इज्तिमे की सूरत में यहां (हज़रत डॉक्टर मुहम्मद अ़ब्दुल हई आरफ़ी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के मकान पर) हाज़री की सआ़दत मिल रही है, यहां बैठते हुए कुछ कहना एक सब्र आज़मा जुर्रत मालूम होती है, क्योंकी इस मक़ाम पर हम सब लोग एक फ़ायदा हासिल करने और सुनने वाले की हैसियत से आया करते थे, और अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इस मक़ाम को हमारे लिये एक मिनारा–ए–नूर बनाया था, जहां से अल्लाह तबारक व तआ़ला के फ़ज़्ल से दीन के हक़ायक़ व मआ़रिफ़ हज़रते वाला रह्मतुल्लाहि अ़लैहि की ज़बानी सुनने और समझने का मौक़ा मिलता था, इस मक़ाम पर जहां एक सुनने वाले, फ़ैज़ हासिल करने वाले की हैंसियत से मेरी हाज़री होती थी वहां किसी वाअ़िज़ और मुक़र्रिर की हैसियत से ज़बान खोलना बड़ी ही हिम्मत की बात मालूम होती है लेकिन वाक़ीआ़ यह है कि हमारे पास जो कुछ भी है यह अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्ल व क्रम से

हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई आ़रफ़ी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ही का फ़ैज़ है और जो बात दिल में आए या ज़बान पर आये यह सब उनकी इनायत व शफ़्क़त का नतीजा है और उनका बे इन्तिहा करम था की हम जैसे लोगों को हमारी तलब के इन्तिज़ार और इसतिह्क़ाक़ के बग़ैर बार बार वे बातें सुना गये और कानों में डाल गये और दिल में बिठा गये जो इन्शा अल्लाह रहती दुनिया तक महफ़ूज़ रहेंगी, इसलिये अपने बिरादरे मुकर्रम जनाब मोह्तरम भाई हसन अब्बास साहिब दामत बरकातुहम के हुक्म की तामील में यह सबर आज़मा फ़रीज़ा अदा कर रहा हूँ माशा अल्लाह हज़रत मौलाना यूसुफ़ लुधियानवी साहिब दामत बर कातुहम, अल्लाह तआ़ला उनके फ़ैज़ में बर्कत अ़ता फ़रमाए, आमीन। वह हमेशा यहां आकर महीने के पहले जुमे में बयान फ़रमाते हैं वह माशा अल्लाह इसके अहल भी हैं, भाई हसन अब्बास साहिब ने फ़रमाया की उनके हज पर जाने की सूरत में आज तुम कुछ बातें बयान करो चुनांचे उनके हुक्म की तामील में ये गुज़ारिशात पेश करता हूँ, अल्लाह तआ़ला मुझे इख़्लास के साथ बयान करने और इख़्लास के साथ सुनने और उस पर अ़मल करने की तौफीक़ अ़ता फ़रमाऐं, आमीन।

इबादतों में तरतीब

ज़िलहिज्जा के ये दस दिन जो पहली ज़िलहिज्जा से दस ज़िलहिज्जा तक हैं अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इनको एक अ़जीब ख़ुसूसियत और फ़ज़ीलत बख़्शी है, बल्कि अगर ग़ौर से देखा जाये तो मालूम होगा की फ़ज़ीलत का यह सिलसिला रमज़ानुल मुबारक से शुरू हो रहा है, अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इबादतों के दरमियान अ़जीब व ग़रीब तरतीब रखी है कि सब से पहले रमज़ान लाये और उसमें रोज़े फ़र्ज़ फ़रमा दिये और फिर रमज़ानुल मुबारक ख़त्म होने पर फ़ौरन अगले दिन से हज की इबादत की तम्हीद शुरू हो गयी, इसलिये की हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० ने इरशाद फ़रमाया कि हज के तीन महीने हैं. शव्वाल'

जी़क़ादा और ज़िलहिज्जा, अगरचे हज के मख़्सूस अरकान तो ज़िलहिज्जा ही में अदा होते हैं लेकिन हज के लिये एहराम बांधना शव्वाल से जायज़ और मुस्तहब हो जाता है, इसलिये अगर कोई शख़्स हज को जाना चाहे तो उसके लिये शव्वाल की पहली तारीख़ से हज का एहराम बांध कर निकलना जायज़ है, इस तारीख़ से पहले हज का एहराम बांधना जायज़ नहीं। पहले ज़माने में हज पर जाने के लिये काफ़ी वक़्त लगता था और बहुत सी बार दो दो तीन तीन महीने वहां पहुंचने में लग जाते थे इसलिये शव्वाल का महीना आते ही लोग सफ़र की तय्यारी शुरू कर देते थे, गोया कि रोज़े की इबादत ख़त्म होते ही हज की इबादत शुरू हो गयी और फिर हज की इबादत इस पहली दहाई में अन्जाम पा जाती है इसलिये कि हज का सब से बड़ा रुक्न जो' वुकूफ़े अ़रफ़ा (अरफ़ात में ठहरना) है (जो इन्शा अल्लाह आज हो रहा होगा) 9 ज़िलहिज्जा को अन्जाम पा जाता है ।

''कुरबानी'' शुक्र का नज़राना है

और फिर जब अल्लाह तआ़ला ने रमज़ान के रोज़े पूरे करने की और हज के अरकान पूरे करने की तौफीक़ अ़ता फ़रमा दी और ये अ़ज़ीमुश्शान इबादतें तक्मील को पहुंच गयीं उस वक़्त अल्लाह तबारक व तआ़ला ने यह ज़रूरी क़रार दिया कि मुसल्मान इन इबादतों की अदायगी पर अल्लाह तआ़ला की बारगाह में शुक्र का नज़राना पेश करें जिसका नाम ''कुरबानी'' है इसलिये 10-11-12-तारीख़ को अल्लाह तआ़ला की बारगाह में नज़राना पेश किया जाता है कि आपने हमें ये दो अ़ज़ीम इबादतें अदा करने की तौफीक़ अ़ता फ़रमाई। यह अ़जीब बात है की अल्लाह तआ़ला ने ईदुल फ़ितर को उस वक़्त रखा जब रोज़े की इबादत की तक्मील हो रही थी और ईदुल अज़हा (बक़र ईद)को अल्लाह तआ़ला ने उस वक़्त रखा जब हज की अ़ज़ीमुश्शान इबादत की तक्मील हो रही है, लेकिन उसमें हुक्म यह दिया कि ईदुल फ़ितर में ख़ुशी की

शुरूआत सदक़तुल फ़ितर से करो और ईदुल अज़हा के मौक़े पर ख़ुशी की शुरूआत अल्लाह तआ़ला की बारगाह में क़ुर्बानी पेश करके करो।

दस रातों की क़सम

चूंकि ज़िलहिज्जा का महीना शुरू हो चुका है और अश्र–ए–ज़िलहिज्जा (ज़िलहिज्जा की दहाई) है इस लिये ख़्याल हुआ कि कुछ बातें इस अश्र–ए–ज़िलहिज्जा के मुताल्लिक़ अ़र्ज़ करदी जायें यह दहाई जो पहली ज़िलहिज्जा से शुरू हुई और दस ज़िलहिज्जा पर जिसकी इन्तिहा हो गयी यह साल के बारह महीनों में बड़ी मुम्ताज़ हैसियत रखती है और अम्म के पारे में यह जो सूर : फ़जर की इबतिदाई आयतें हैं والفجر وليال عشر इसमें अल्लाह तबारक व तआ़ला ने दस रातों की क़सम खाई है, अल्लाह तआ़ला को किसी बात का यक़ीन दिलाने के लिये क़सम खाने की ज़रूरत नहीं लेकिन किसी चीज़ पर अल्लाह तआ़ला का क़सम खाना उस चीज़ की इज़्ज़त और हुरमत पर दलालत करता है, तो अल्लाह तआ़ला ने इस सूरः फ़जर में जिन रातों की क़सम खाई है इसके बारे में मुफ़स्सिरीन की एक बड़ी जमाअ़त ने यह कहा है की इस से मुराद ज़िलहिज्जा की इबतिदाई दस रातें हैं इस से इन दस रातों की इज़्ज़त, अ़ज़मत और हुरमत की निशान दही होती है।

दस दिनों की फ़ज़ीलत

और ख़ुद नबी करीम सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने एक इरशाद में वाज़ेह तौर पर इन दस दिनों की अहमियत और फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई है यहां तक फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला को इबादत के आमाल किसी दूसरे दिन में इतने महबूब नहीं हैं जितने इन दस दिनों में महबूब हैं, चाहे वह इबादत नफ़्ली नमाज़ हो, ज़िक्र या तस्बीह हो या सदक़ा हो (सही बुख़ारी) एक हदीस में यह भी फ़रमाया कि अगर कोई शख़्स इन दिनों में

से एक दिन रोज़ा रखे तो एक रोज़ा सवाब के एतिबार से एक साल के रोज़ों के बराबर है, यानी एक रोज़े का सवाब बढ़ा कर एक साल के रोज़ों के सवाब के बराबर कर दिया जाता है। और फ़रमाया इन दस रातों में एक रात की इबादत शबे क़दर की इबादत के बराबर है, यानी अगर इन रातों में से किसी भी एक रात में इबादत की तौफ़ीक़ हो गयी तो गोया उसको शबे क़दर में इबादत की तौफ़ीक़ हो गयी इस ज़िलहिज्जा की दहाई को अल्लाह तबारक व तआला ने इतना बड़ा दर्जा अता फ़रमाया है।

इन दिनों की दो ख़ास इबादतें

और इन दिनों की इस से बड़ी और क्या फ़ज़ीलत होगी कि वे इबादतें जो साल भर के दूसरे दिनों में अन्जाम नहीं दी जा सकतीं उनको अन्जाम देने के लिये अल्लाह ने इसी ज़माने को चुना है, जैसे हज एक ऐसी इबादत है जो इन दिनों के अलावा दूसरे दिनों में अन्जाम नहीं दी जा सकती, दूसरी इबादतों का यह हाल है कि इन्सान फ़रज़ों के अलावा जब चाहे नफ़्ली इबादत कर सकता है, जैसे नमाज़ पांच वक़्त की फ़र्ज़ है लेकिन उनके अलावा जब चाहे नफ़्ली नमाज़ पढ़ने की इजाज़त है, रमज़ान में रोज़ा फ़र्ज़ है लकिन नफ़्ली रोज़ा जब चाहे रखे, ज़कात साल में एक मर्तबा फ़र्ज़ है लेकिन नफ़्ली सदक़ा जब चाहे अदा कर दे। लेकिन दो इबादतें ऐसी हैं कि उनके लिये अल्लाह तआला ने वक़्त मुक़र्रर फ़रमा दिया उन वक़्तों के अलावा दूसरे वक़्तों में अगर उन इबादतों को किया जाएगा तो वह इबादत ही नहीं शुमार होगी, उनमें से एक इबादत हज है, हज के अरकान जैसे अरफ़ात में जाकर ठहरना' मुज़दलिफ़ा में रात गुज़ारना, जमरात की रमी करना वग़ैरह, ये अरकान व आमाल ऐसे हैं कि अगर इन्हीं दिनों में अन्जाम दिया जाए तो इबादत है और दिनों में अगर कोई शख़्स अरफ़ात में दस दिन ठेहरे तो यह कोई इबादत नहीं। जमरात साल भर के बारह

महीनों तक मिना में खड़े हैं लेकिन दूसरे दिनों में कोई शख़्स जाकर उनको कंकरियां मार दे तो यह कोई इबादत नहीं। तो हज जैसी अहम इबादत के लिये अल्लाह तआ़ला ने इन्हीं दिनों को मुक़र्रर फ़रमाया कि अगर बैतुल्लाह का हज इन दिनों में अन्जाम दोगे तो इबादत होगी और उस पर सवाब मिलेगा।

दूसरी इबादत कुरबानी है कुरबानी के लिये अल्लाह तआ़ला ने ज़िलहिज्जा के तीन दिन यानी दस, ग्यारह और बारह तारीख़ें मुक़र्रर फ़रमा दी हैं, अगर इन दिनों के अ़लावा कोई शख़्स कुर्बानी की इबादत करनी चाहे तो नहीं कर सकता, अलबत्ता अगर कोई शख़्स सदक़ा करना चाहे तो बकरा ज़िबह करके उसका गोश्त सदक़ा कर सकता है लेकिन यह कुरबानी की इबादत इन तीन दिनों के सिवा और दिन में अन्जाम नहीं पा सकती, इसलिये अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इस ज़माने को यह खुसूसियत बख़्शी है, इसी वजह से उलमा–ए–किराम ने इन अहादीस की रोशनी में यह लिखा है कि रमज़ानुल मुबारक के बाद सबसे ज़्यादा फ़ज़ीलत वाले दिन वे ज़िलहिज्जा की दहाई वाले दिन हैं इनमें इबादतों का सवाब बढ़ जाता है और अल्लाह तआ़ला इन दिनों में अपनी खुसूसी रहमतें नाज़िल फ़रमाते हैं लेकिन कुछ और आमाल ख़ास तौर पर शरीअ़त की तरफ़ से इन दिनों में मुक़र्रर कर दिये गये हैं उनका ब्यान कर देना मुनासिब मालूम होता है

बाल और नाख़ुन न काटने का हुक्म

ज़िलहिज्जा का चांद देखते ही जो हुक्म सबसे पहले हमारी तरफ़ मुतवज्जह हो जाता है वह एक अ़जीब व ग़रीब हुक्म है, वह यह कि नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है कि जब तुम में से किसी को कुरबानी करनी हो तो जिस वक़्त वह ज़िलहिज्जा का चांद देखे उसके बाद उसके लिये बाल काटना और नाखुन काटना दुरुस्त नहीं, चूंकि यह हुक्म नबी करीम सल्ल–

ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मन्कूल है इस वास्ते इस अ़मल को मुस्तहब क़रार दिया गया है कि आदमी अपने नाख़ुन और बाल उस वक़्त तक न काटे जब तक कुरबानी न करले। (इबने माजह)

उनके साथ थोड़ी सी मुशाबहत इख़्तियार कर लो

बज़ाहिर यह हुक्म बड़ा अ़जीब व ग़रीब मालूम होता है कि चांद देख कर बाल और नाख़ुन काटने से मना कर दिया गया है लकिन बात दर असल यह है कि इन दिनों में अल्लाह तआ़ला ने हज की अ़ज़ीमुश्शान इबादत मुक़र्रर फ़रमाई है और मुसलमानों की एक बहुत बड़ी तादाद अल्हम्दु लिल्लाह इस वक़्त इस इबादत से नफ़ा उठा रही है इस वक़्त वहां यह हाल है कि ऐसा मालूम होता है कि बैतुल्लाह के अन्दर एक ऐसा मक़्नातीस लगा हुआ है जो चारों तरफ़ से अहले इस्लाम को अपनी तरफ़ खींच रहा है, हर लम्हे हज़ारों अफ़्राद दुनिया के कौने कौने से वहां पहुंच रहे हैं और बैतुल्लाह के इर्द गिर्द जमा हो रहे हैं, अल्लाह तआ़ला ने उन लोगों को हज्जे बैतुल्लाह की अदायगी की यह सआ़दत बख़्शी है उन हज़रात के लिये यह हुक्म है कि जब वे बैतुल्लाह शरीफ़ की तरफ़ जायें तो वे बैतुल्लाह की वर्दी यानी एहराम पहन कर जायें और फिर एहराम के अन्दर शरीअ़त ने बहुत सी पाबन्दियां लागू कर दी हैं, जैसे यह कि सिला हुआ कपड़ा नहीं पहन सकते, ख़ुश्बू नहीं लगा सकते, मुंह नहीं ढांप सकते वग़ैरह। उनमें से एक पाबंदी यह है कि बाल और नाख़ुन नहीं काट सकते।

हुज़ूर सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हम पर और उन लोगों पर जो बैतुल्लाह के पास हाज़िर नहीं हैं और हज्जे बैतुल्लाह की इबादत में शरीक नहीं हैं अल्लाह तआ़ला के करम को मुतवज्जह फ़रमाने और उनकी रहमत के नाज़िल होने का मक़ाम बनाने के लिये यह फ़रमा दिया कि उन हाजियों के साथ थोड़ी सी मुशाबहत इख़्तियार करलो, थोड़ी सी उनकी शबाहत

अपने अन्दर पैदा करो और जिस तरह वे बाल नहीं काट रहे हैं तुम भी मत काटो, जिस तरह वे नाख़ुन नहीं काट रहे हैं तुम भी मत काटो यह उन बन्दों के साथ शबाहत पैदा कर दी जो इस वक़्त हज्जे बैतुल्लाह की अ़ज़ीम सआ़दत से कामयाब हो रहे हैं।

अल्लाह की रहमत बहाने ढूंडती है

और हमारे हज़रत डॉक्टर अब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़र्माया करते थे कि अल्लाह तबारक व तआ़ला की रहमत बहाने ढूंडती है जब हमें यह हुक्म दिया कि उनकी मुशाबहत इख़्तियार कर लो तो इसके मायने यह हैं की उन पर जो रहमतें नाज़िल फ़र्माना मन्ज़ूर है उसका कुछ हिस्सा तुम्हें भी अ़ता फ़र्माना चाहते हैं ताकि जिस वक़्त अ़रफ़ात के मैदान में उन अल्लाह के बन्दों पर रहमत की बारिश बरसे उसकी बदली का कोई टुक्ड़ा हम पर भी रहमत बरसा दे, तो यह शबाहत पैदा करना भी बड़ी नेमत है और हज़रत मज्ज़ूब साहिब का यह शेर बहुत ज़्यादा पढ़ते थे :

तेरे महबूब की या रब शबाहत लेकर आया हूँ
हक़ीक़त इसको तू कर दे मैं सूरत लेकर आया हूँ

क्या बईद है कि अल्लाह इस सूरत की बरकत से हक़ीक़त में तब्दील फ़रमा दें और उस रहमत की जो घटायें वहां बरसेंगी इन्शा अल्लाह हम और आप उस से महरूम नहीं रहेंगे।

थोड़े से ध्यान और तवज्जोह की ज़रूरत है

हमारे हज़रते वाला रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का मज़ाक़ यह था, फ़रमाते थे कि क्या अल्लाह तबारक व तआ़ला इस बिना पर महरूम फ़रमा देंगे कि एक शख़्स के पास जाने के लिये पैसे नहीं हैं? क्या इस वासते उसको अ़रफ़ात की रहमतों से महरूम फ़रमा देंगे के उसको हालात ने जाने की इजाज़त नहीं दी और इस वासते वह नहीं जा सका? ऐसा नहीं है बल्कि अल्लाह तबारक व तआ़ला हमें और आपको भी उस रहमत में शामिल फ़रमाना चाहते

हैं, अलबत्ता थोड़ी सी तवज्जोह और ध्यान की बात है—बस थोड़ी सी फ़िक्र और तवज्जोह कर लो कि मैं थोड़ी से शबाहत पैदा कर रहा हूं और अपनी सूरत थोड़ी सी उस जैसी बना रहा हूं तो फिर अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने फ़ज़्ल से हमें भी उस रहमत में शामिल फरमा देंगे। इन्शा अल्लाह तआ़ला।

अ़रफ़े के दिन का रोज़ा

दूसरी चीज़ यह है कि ये दिन इतनी फ़ज़ीलत वाले हैं कि इन दिनों में एक रोज़ा सवाब के एतिबार से एक साल के रोज़ों के बराबर है, और एक रात की इबादत शबे क़दर की इबादत के बराबर—इस से इस बात की तरफ़ इशारा कर दिया कि एक मुसलमान जितना भी इन दिनों में नेक आमाल और इबादत कर सकता है वह ज़रूर करे और नौ ज़िलहिज्जा का दिन अ़रफ़े का दिन है, जिसमें अल्लाह तआ़ला ने हाजियों के लिये हज का अज़ीमुश्शान रुक्न यानी वुक़ूफ़े अ़रफ़ा तज्वीज़ फ़रमाया और हमारे लिये ख़ास इस नवीं तारीख़ को नफ़्ली रोज़ा मुक़र्रर फ़रमाया और इस रोज़े के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अ़रफ़े के दिन जो शख़्स रोज़ा रखे तो मुझे अल्लाह तबारक व तआ़ला की ज़ात से यह उम्मीद है कि उसके एक साल पहले और एक साल बाद के गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाएगा। (इबने माजह)

सिर्फ़ छोटे गुनाह माफ़ होते हैं

यहां यह बात भी अ़र्ज़ करदूं कि बाज़ लोग जो दीन का मुकम्मल इल्म नहीं रखते तो इस क़िस्म की जो हदीस आती हैं कि एक साल पहले के गुनाह माफ़ हो गये और एक साल आइन्दा के गुनाह माफ़ हो गये इस से उन लोगों के दिल में यह ख़्याल आता है कि जब अल्लाह तआ़ला ने एक साल पहले के गुनाह तो माफ़ कर ही दिये और एक साल आइन्दा के भी गुनाह माफ़ फ़रमा दिये

इसका मतलब यह है कि साल भर के लिये छुट्टी हो गयी जो चाहें करें सब गुनाह माफ़ हैं। ख़ूब समझ लीजिये जिन जिन आमाल के बारे में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह फ़रमाया कि ये गुनाहें को माफ़ करने वाले आमाल हैं, जैसे वुज़ू करने में हर अंग को धोते वक़्त उस अंग के गुनाह माफ़ हो जाते हैं, नमाज़ पढ़ने के लिये जब इन्सान मस्जिद की तरफ़ जाता है तो एक क़दम पर एक गुनाह माफ़ होता है और एक दर्जा बुलन्द होता है, रमज़ान के रोज़ों के बारे में फ़रमाया कि जिस शख़्स ने रमज़ान के रोज़े रखे उसके तमाम पिछले गुनाह माफ़ हो जाते हैं, याद रखें इस क़िस्म की तमाम हदीसों में गुनाह से मुराद छोटे गुनाह होते हैं और जहां तक 'कबीरा गुनाह' (बड़े गुनाहों) का ताल्लुक़ है इसके बारे में क़ानून यह है कि बग़ैर तौबा के माफ़ नहीं होते, वैसे अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से किसी के कबीरा गुनाह बग़ैर तौबा के बख़्श दें वो बात अलग है, लेकिन क़ानून यह है कि जब तक तौबा नहीं कर लेगा माफ़ नहीं होंगे, और फिर तौबा से भी वे गुनाह कबीरा माफ़ होते हैं जिनका ताल्लुक़ अल्लाह के हक़ों से हो, और अगर उस गुनाह का ताल्लुक़ बन्दों के हक़ों से है, जैसे किसी का हक़ दबा लिया है, किसी का हक़ मार लिया है, किसी की हक़ तल्फ़ी करली है, इसके बारे में क़ानून यह है कि जब तक हक़ वाले को उसका हक़ अदा न कर दिया या उस से माफ़ न करा लिया उस वक़्त तक माफ़ नहीं होता, इसलिये यह तमाम फ़ज़ीलत वाली हदीसें जिनमें गुनाहों की माफ़ी का ज़िक्र है वे छोटे गुनाहों की माफ़ी से मुताल्लिक़ हैं।

तक्बीरे तश्रीक़

इन दिनों में तीसरा अ़मल तक्बीरे तश्रीक़ है, जो अ़रफ़े के दिन की नमाज़े फ़जर से शुरू होकर १३ तारीख़ की असर तक जारी रहता है और यह तक्बीर हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद एक बार

पढ़ना वाजिब क़रार दिया गया है, वह तक्बीर यह है कि:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَلِلّٰهِ الْحَمْدُ

"अल्लाहु अक्बर अल्लाहु अक्बर ला इला-ह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर व लिल्लाहिल हम्दु"

मर्दों के लिये इसे दरमियानी बुलन्द आवाज़ से पढ़ना वाजिब है और आहिस्ता आवाज़ से पढ़ना सून्नत के ख़िलाफ़ है। (शामी)

गंगा उल्टी बहने लगी है

हमारे यहां हर चीज़ में ऐसी उल्टी गंगा बहने लगी है कि जिन चीज़ों के बारे में शरीअ़त ने कहा है कि आहिसता आवाज़ से कहो उन चीजों में तो लोग शोर मचा कर बुलन्द आवाज़ से पढ़ते हैं जैसे दुआ़ करना, कुरआन करीम में दुआ के बारे में फ़र्माया कि:

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً (سورة الاعراف)

यानी आहिस्ता और गिड़गिड़ाने के साथ अपने रब को पुकारो और आहिस्ता दुआ़ करो, चूनांचे आम वक़्तों में बुलन्द आवाज़ से दुआ़ करने के बजाये आहिस्ता आवाज़ से दुआ़ करना अफ़्ज़ल है (अलबत्त जहां ज़ोर से दुआ़ मांगना सुन्नत से साबित हो वहां उसी तरह मांगना अफ़्ज़ल है) और इसी दुआ़ का एक हिस्सा दुरूद शरीफ़ भी है इसको भी आहिस्ता आवाज़ से पढ़ना ज़्यादा अफ़्ज़ल है इसमें तो लोगों ने अपनी तरफ़ से शोर मचाने का तरीक़ा इख़्तियार कर लिया और जिन चीज़ों के बारे में शरीअ़त ने कहा था कि बुलन्द आवाज़ से कहो जैसे "तक्बीरे तशरीक़" जो हर नमाज़ के बाद बुलन्द आवाज़ से कहनी चाहिये लेकिन इसके पढ़ने के वक़्त आवाज़ ही नहीं निकलती और आहिस्ता से पढ़ना शुरू कर देते हैं।

शौकते इस्लाम का मुज़ाहरा

मेरे वालिद माजिद रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे कि यह तक्बीरे तशरीक़ रखी ही इसलिये गई है कि इस से शौकते इस्लाम

का मुज़ाहरा हो और इसका तक़ाज़ा यह है कि सलाम फेरने के बाद मस्जिद इस तक्बीर से गूंज उठे, इसलिये इस को बुलन्द आवाज़ से कहना ज़रूरी है।

इसी तरह ईदुल-अज़हा (बक़रा ईद) की नमाज़ के लिये जा रहे हो तो इसमें भी मसनून यह है कि रास्ते में बुलन्द आवाज़ से तक्बीर कहते जाएं, अलबत्ता ईदुल-फ़ितर में आहिस्ता आवाज़ से कहनी चाहिये।

तक्बीरे तशरीक़ औरतों पर भी वाजिब है

यह तक्बीरे तशरीक़ औरतों के लिये भी वाजिब है और इसमें आम तौर पर बड़ी कोताही होती है और औरतों को यह तक्बीर पढ़ना याद नहीं रहता, मर्द हज़रात तो चूंकि मस्जिद में जमाअत से नमाज़ अदा करते हैं और जब सलाम के बाद तक्बीरे तशरीक़ कही जाती है तो याद आ जाता है और वे कह लेते हैं लेकिन औरतों में इसका रिवाज बहुत कम है, और आम तौर पर औरतें इसको नहीं पढ़ती हैं अगरचे औरतों पर वाजिब होने के बारे में उलमा के दो क़ौल हैं, कुछ उलमा कहते हैं कि वाजिब है कुछ उलमा कहते हैं कि औरतों पर वाजिब नहीं बल्कि सिर्फ़ मुस्तहब है, मर्दों पर वाजिब है, लेकिन ज़्यादा सही क़ौल यह है कि औरतों पर भी यह तक्बीर वाजिब है, उनको भी पांच दिन तक यौमे अर्फ़ा (अर्फ़े के दिन) की फ़जर से १३ तारीख़ की असर तक हर नमाज़ के बाद यह तक्बीर कहनी चाहिये, अलबत्ता मरदों पर बुलन्द आवाज़ से कहना वाजिब है, औरतों के लिये आहिस्ता आवाज़ से कहना वाजिब है और इसलिये औरतों को भी इसकी फ़िक्र होनी चाहिये और औरतों को यह मस्अला बताना चाहिये और चूँकि औरतों को इसका पढ़ना याद नहीं रहता इसलिये मैं कहा करता हूं कि औरतें घर में जिस जगह नमाज़ पढ़ती हैं वहां यह दुआ लिख कर लगाएं ताकि उनको यह तक्बीर याद आ जाए और सलाम के

बाद कह लें और इसलिये कि सही कौल के मुताबिक़ औरतों पर भी एक़ मर्तबा इस तसबीह का पढ़ना वाजिब है (शामी जिल्द २)

कुर्बानी दूसरे दिनों में नहीं हो सकती

और फिर चौथा और सबसे अफ़ज़ल अमल जो अल्लाह तआला ने ज़िलहिज्जा के दिनों में मुकर्रर फ़रमाया है वह कुर्बानी का अमल है और जैसा कि मैंने अर्ज़ किया कि यह अमल साल के दूसरे दिनो में अन्जाम नहीं दिया जा सकता, सिर्फ़ ज़िलहिज्जा की १०, ११, १२, तारीख़ को अन्जाम दिया जा सकता हैं, इनके अलावा दूसरे वक्तों में आदमी चाहे कितने जानवर ज़िबह करले लेकिन कुर्बानी नहीं हो सक्ती।

दीन की हकीकत हुक्म की इत्तिबा

लिहाज़ा हज और कुर्बानी जो इन दीनों के बड़े आमाल हैं इनके ज़रिये अल्लाह तबारक व तआला हमें दीन की हकीकत समझाना चाहते हैं कि दीन की हकीकत यह है कि किसी भी अमल की अपनी ज़ात में कुछ नहीं रखा, न किसी जगह में कुछ रखा है न कसी अमल में, न किसी वक्त में, इन चीज़ों में जो फ़ज़ीलत आती है वह हमारे कहने की वजह से आती है, अगर हम कह दें कि फ़लां काम करो तो वह अज्र व सवाब का काम बन जाएगा और अगर हम उस काम से रोक दें तो फिर उसमें कोई अज्र व सवाब नहीं'' मैदाने अर्फ़ा'' को ले लीजिये ९ ज़िलहिज्जा के अलावा साल के सब दिन वहां गुज़ार दें ज़र्रा बराबर भी इबादत का सवाब नहीं मिलेगा हालांकि वही मैदान अर्फ़ात है वही जबले रहमत है इस वास्ते कि हमने आम दिनों में वहां वुकूफ़ करने के लिये नहीं कहा, जब हमने कहा कि ९ ज़िलहिज्जा को आओ तो अब नौ ज़िलहिज्जा को आना ही इबादत होगी और हमारी तरफ़ से अज्र व सवाब के हक़दार होंगे, असल बात यह है कि न मैदाने अर्फ़ात में कुछ रखा है और न उस वक़्त में कुछ रखा है और न उस अमल

में कुछ रखा है, लेकिन जब हम कह दें तो फिर अ़मल में भी फ़ज़ीलत पैदा हो जाती है और जगह में भी और वक़्त में फ़ज़ीलत पैदा हो जाती है।

अब मस्जिदे हराम से कूच कर जाएं

आप सब हज़रात को मालूम है कि अल्लाह तआ़ला ने मस्जिदे हराम में नमाज़ पढ़ने की इतनी फ़ज़ीलत रखी है कि एक नमाज़ एक लाख नमाज़ों का अज्र रखती है, और हज के लिये जाने घाले हज़रात हर नमाज़ पर एक लाख नमाज़ों का सवाब हासिल करते हैं, लेकिन जब आठ ज़िलहिज्जा की तारीख़ आती है तो अब अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से हुक्म हुआ कि मस्जिदे हराम को छोड़ दो और एक लाख नमाज़ों का सवाब जो अब तक मिल रहा था उसको छोड़ दो और अब मिना में जाकर पड़ाव डालो, चुनांचे आठ ज़िलहिज्जा की ज़ोहर से ले कर नौ ज़िलहिज्जा की फ़जर तक का वक़्त मिना में गुज़ारने का हुक्म दे दिया गया, और ज़रा यह देखिये कि उस वक़्त में हाजी का मिना के अन्दर कोई काम है? कुछ नहीं, न इसमें जमरात की रमी है और न इसमें वुक़ूफ़ है और न कोई और अ़मल है, बस सिर्फ़ यह हुक्म है कि पांच नमाज़ें वहाँ पढ़ो और एक लाख नमाज़ों का सवाब छोड़ कर जंगल में नमाज़ पढ़ो, इस हुक्म के ज़रिये इस बात की तरफ़ इशारा फ़रमाया कि जो सवाब है वह हमारे कहने की वजह से है अब जब हमने यह कह दिया कि जंगल में जाकर नमाज़ पढ़ो तो जंगल में नमाज़ पढ़ने का जो सवाब है वह मस्जिदे हराम में भी नमाज़ पढ़ने से हासिल नहीं होगा, अब अगर कोई शख़्स यह सोचे कि मिना में उस रोज़ कोई अ़मल तो करना नहीं है, चलो मक्का में रह कर ये पांच नमाज़ें मस्जिदे हराम में पढ़ लूं तो उस नमाज़ से एक लाख नमाज़ का सवाब तो कहां एक नमाज़ का सवाब भी नहीं मिलेगा, इसलिये कि उसने अल्लाह तआ़ला के हुक्म के ख़िलाफ़ किया है और हज के अरकान में कमी कर दी।

किसी अ़मल और किसी मक़ाम में कुछ नहीं रखा

हज की इबादत में जगह—जगह क़दम क़दम पर यह बात नज़र आती है, उन बुतों को तोड़ा गया है जो इंसान बहुत सी बार अपने सीने में बसा लेता है, वह यह कि अपनी ज़ात में किसी अ़मल में कुछ नहीं रखा, किसी मक़ाम में कुछ नहीं रखा, जो कुछ भी है वह हमारी इत्तिबा में है, जब हम किसी चीज़ का हुक्म दें तो उसमें बरकत और सवाब है, और जब हम कहें कि यह काम न करो उस वक़्त न करने में अज्र व सवाब है।

अ़क़्ल कहती है कि यह दीवानगी है

हज की पूरी इबादत में यही फ़ल्सफ़ा नज़र आता है, अब यह देखिये कि एक पत्थर मिना में खड़ा है और लाखों अफ़्राद उस पत्थर को कंकरियां मार रहे हैं, कोई शख़्स अगर यह पूछे कि इसका मक़्सद क्या है? यह तो दीवानगी है कि एक पत्थर पर कंकर बरसा रहे हैं, उस पत्थर ने क्या कुसूर किया है? लेकिन क्योंकि हमने कह दिया कि यह काम करो, इसके बाद इसमें हिक्मत, मस्लिहत और अ़क़्ली दलीलें तलाश करने का मक़ाम नहीं है, बस अब उस पर अ़मल ही में अज्र व सवाब है, इस दीवानगी ही में लुत्फ़ भी है और इसमें अल्लाह की रिज़ा भी है।

हज की इबादत में क़दम क़दम पर यह सिखाया जा रहा है कि तुम ने अपनी अ़क़्ल के सांचे में जो चीज़ें बिठा रखी हैं और सीने में जो बुत बसा रखे हैं उनको तोड़ो, और इस बात का इद्राक (शऊर) पैदा करो कि जो कुछ भी है वह हमारे हुक्म की इत्तिबा में है।

कुर्बानी क्या सबक़ देती है

यही चीज़ कुर्बानी में है, कुर्बानी की इबादत का सारा फ़ल्सफ़ा यही है, इसलिये कि कुर्बानी के मायने हैं अल्लाह का तक़र्रुब (निकट्ता) हासिल करने की चीज़ और यह लफ़्ज़ "कुर्बानी"

"क़ुर्बान" से निकला है, और लफ़्ज़ "क़ुर्बान" "क़ुर्ब" से निकला है, तो क़ुर्बान के मायने यह हैं कि वह चीज़ जिस से अल्लाह तआला का तक़र्रुब हासिल किया जाए और इस क़ुर्बानी के सारे अ़मल में यह सिखाया गया है कि हमारे हुक्म की इत्तिबा का नाम दीन है, जब हमारा हुक्म आ जाए तो उसके बाद न अ़क़्ली घोड़े दौड़ाने का मौक़ा है, न उसमें हिक्मतें और मस्लिहतें तलाश करने का मौक़ा बाक़ी रहता है और न उसमें चूं व चरा करने का मौक़ा है। एक मोमिन का काम यह है कि अल्लाह की तरफ़ से हुक्म आ जाए तो अपना सर झुका दे और उस हुक्म की पैरवी करे।

बेटे को ज़िबह करना अ़क़्ल के ख़िलाफ़ है

जब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के पास हुक्म आ गया कि बेटे को ज़िबह कर दो, और वह हुक्म भी ख़्वाब के ज़रिये से आया, अगर अल्लाह तआ़ला चाहते तो "वही" के ज़रिये हुक्म नाज़िल फ़रमा देते कि अपने बेटे को ज़िबह करो, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने ऐसा नहीं किया, बल्कि ख़्वाब में आपको यह दिखाया गया कि अपने बेटे को ज़िबह कर रहे हैं, अगर हमारे जैसा तावील करने वाला कोई शख़्स होता तो यह कह देता कि ये तो ख़्वाब की बात है, इस पर अ़मल करने की क्या ज़रूरत है, मगर यह भी दर हक़ीक़त एक इम्तिहान था, चूंकि जब अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम का ख़्वाब वही होता है तो क्या वह उस वही पर अ़मल करते हैं या नहीं? इसलिये आपको यह अ़मल ख़्वाब में दिखाया गया, और जब आपको यह मालूम हो गया कि यह अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक हुक्म है कि अपने बेटे को ज़िबह कर दो तो बाप ने पलट कर अल्लाह तआ़ला से यह नहीं पूछा कि या अल्लाह! यह हुक्म आख़िर क्यों दिया जा रहा है? इसमें क्या हिक्मत और मसलिहत है? दुनिया का कोई क़ानून और कोई ज़िन्दगी का निज़ाम इस बात को अच्छा नहीं समझता कि बाप अपने बेटे को ज़िबह करे, अ़क़्ल की

किसी तराज़ू पर इस हुक्म को उतार कर देखें तो किसी तराज़ू पर यह पूरा उतरता नज़र नहीं आता।

जैसा बाप वैसा बेटा

तो आपने अल्लाह तआला से इसकी मसलिहत नहीं पूछी, अलबत्ता बेटे से इम्तिहान और आज़माइश करने के लिये सवाल किया कि :–

يَا بُنَيَّ اِنِّیْ اَرٰی فِی الْمَنَامِ اَنِّیْ اَذْ بَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰی (سورة الصافات)

ऐ बेटे मैंने तो ख़्वाब में यह देखा है कि तुम्हें ज़िबह कर रहा हूं अब बताओ तुम्हारी क्या राये है? उनकी राये इसलिये नहीं पूछी कि अगर उनकी राये नहीं होगी तो ज़िबह नहीं करूंगा? बल्कि उनकी राये इसलिये पूछी के बेटे को आज़मायें कि बेटा कितने पानी में है, और अल्लाह तआला के हुक्म के बारे में उनका तसव्वुर क्या है? वह बेटा हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह अ़लैहिस्सलाम का बेटा था, वह बेटा जिनकी पीठ से दो जहां के सरदार सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम दुनिया में तशरीफ़ लाने वाले थे, उस बेटे ने भी पलट कर यह नहीं पूछा कि अब्बा जान! मुझसे क्या जुर्म हुआ है? मैरा क्या कुसूर है कि मुझे मौत के घाट उतारा जा रहा है, इसमें क्या हिक्मत और मसलिहत है? बल्कि बेटे की ज़बान पर एक ही जवाब था कि :–

يَا اَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِیْ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصَّابِرِيْنَ

अब्बा जान आपके पास जो हुक्म आया है उसको कर गुज़रिये और जहां तक मैरा मामला है तो आप इंशा अल्लाह मुझे सबर करने वालों में से पायेंगे, मैं आह व ज़ारी नहीं करूंगा, मैं रोऊंगा और चिल्लाऊंगा नहीं, और आपको इस काम से नहीं रोकूंगा, आप कर गुज़रिये।

चलती छुरी रुक न जाए

जब बाप भी ऐसा इरादे वाला और बेटा भी बहादुर दोनों इस

हुक्म पर अमल करने के लिये तय्यार हो गये और बाप ने बेटे को ज़मीन पर लिटा दिया, उस वक़्त हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अब्बा जान! आप मुझे माथे के बल लिटायें इसलिये कि अगर सीधा लिटायेंगे तो मेरी सूरत सामने होगी जिसकी वजह से कहीं ऐसा न हो कि आपके दिल में बेटे की मुहब्बत का जोश आ जाए और आप छूरी न चला सकें, अल्लाह तआला को यह अदाएं इतनी पसंद आयीं कि अल्लाह तआला ने इन अदाओं का ज़िक्र कुरआन करीम में भी फ़रमाया :–

चुनांचे फ़रमाया कि :–

فَلَمَّا اَسْلَمَا وَ تَلَّهٗ لِلْجَبِیْنِ (سورة صافات)

कुरआन करीम में बड़ा अजीब व गरीब लफ़्ज़ इस्तेमाल किया है, फ़रमाया "فلما اسلما" यानी जब बाप और बेटे दोनों झुक गये और इसका एक तर्जुमा यह भी हो सकता है कि जब बाप और बेटे दोनों इस्लाम ले आये, इसलिये कि इस्लाम के मायने हैं कि हुक्म के आगे झुक जाना और इसी से इस तरफ़ इशारा किया कि असल इस्लाम यह है कि हुक्म कैसा भी आ जाये और उसकी वजह से दिल पर आरे ही क्यों न चल जायें और वह हुक्म अक़्ल के ख़िलाफ़ क्यों न मालूम हो और उसकी वजह से जान व माल और इज़्ज़त व आबरू की कितनी ही कुर्बानी क्यों न देनी पड़े बस इन्सान का काम यह है कि अल्लाह के असल हुक्म के आगे अपने आपको झुका दे, यह है हकीकत में इस्लाम, इसी लिये फ़रमाया कि जब दोनों इस्लाम ले आये और अल्लाह के हुक्म के आगे झुक गये और बाप ने बेटो को पैशानी के बल लिटा दिया और कुरआन करीम ने लिटाने के इस वस्फ़ को ख़ास ज़ोर देकर बयान किया है और इस तरह इसलिये लिटाया कि बेटे की सूरत सामने होने की वजह से कहीं चलती हुई छूरी रुक न जाए, इसलिये माथे के बल लिटाया।

रिवायतों में आता है कि जब हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अपने बेटे को लिटाने लगे तो हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अब्बा जान! आप मुझे ज़िबह तो कर रहे हैं, एक काम यह कर लीजिये कि मेरे कपड़े अच्छी तरह समेट लीजिए, इसलिये कि जब मैं ज़िबह हूंगा तो फ़ितरी तौर पर तड़पूंगा और तड़पने के नतीजे में हो सकता है कि ख़ून के छींटे दूर तक जाएं और उसकी वजह से मेरे कपड़े जगह जगह से ख़ून में लत पत हो जायें और फिर मेरी वालिदा जब मेरे कपड़ों को देखेंगी तो उनको बहुत मलाल होगा इसलिये आप मेरे कपड़ों को अच्छी तरह समेट लें।

क़ुदरत का तमाशा देखिए

फिर क्या हुआ? जब इन दोनों ने अपने हिस्से का काम पूरा कर दिया तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि जब बन्दों ने अपने हिस्से का काम कर लिया तो अब मुझे अपने हिस्से का काम करना है, चुनांचे फ़रमाया कि :

وَنَا دَيْنَاهُ اَنْ يَّا اِبْرَا هِيْم قَدْ صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا (سورة الصافات)

ऐ इब्राहीम तुमने उस ख़्वाब को सच्चा कर दिया, अब हमारी क़ुदरत का तमाशा देखो, चुनांचे जब आंखें खोलीं तो देखा की हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम एक जगह बैठे हुए मुस्कुरा रहे हैं, और वहां एक दुंबा ज़िबह किया हुआ पड़ा है।

अल्लाह का हुक्म हर चीज़ पर बर्तरी रखता है

यह पूरा वक़िआ़ जो दर हक़ीक़त क़ुर्बानी के अ़मल की असल बुनियाद है, पहले दिन से यह बता रहा है कि क़ुर्बानी इसलिये मशरू की गई है ताकि इन्सानों के दिल में यह एहसास यह इल्म और यह मअ़्रिफ़त पैदा हो कि अल्लाह तआ़ला का हुक्म हर चीज़ पर बर्तरी रखता है और दीन दर हक़ीक़त इत्तिबा का नाम है, और ज़ब हुक्म आ जाए तो फिर अ़क़्ली घोड़े दौड़ाने का मौक़ा नहीं, हिक्मतें और मसलिहतें तलाश करने का मौक़ा नहीं है।

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने अ़क्ली हिक्मत तलाश नहीं की

आज हमारे समाज में जो गुमराही फैली हुई है वह यह है कि अल्लाह तआ़ला के हर हुक्म में हिक्मत तलाश करो कि इसकी हिक्मत और मस्लिहत क्या है? और इसका अ़क्ली फ़ायदा क्या है? इसका मतलब यह है कि अगर अ़क्ली फ़ायदा नज़र आयेगा तो करेंगे और अगर फ़ायदा नज़र नहीं आयेगा तो नहीं करेंगे, यह कोई दीन नहीं? क्या इसका नाम इत्तिबा है? इत्तबा तो वह है जो हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने करके दिखाया और उनके बेटे हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम ने करके दिखाया और अल्लाह तआ़ला को उनका यह अ़मल इतना पसंद आया कि क़ियामत तक के लिये इसको जारी कर दिया चुनांचे फ़रमाया कि :-

"وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ" (سورة الصافات)

यानी हमने आने वाले मुसलमानों को इस अ़मल की नक़ल उतारने का पाबंद कर दिया, यह जो हम क़ुर्बानी करने जा रहे हैं यह हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अ़लैहिमस्सलाम की उस अ़ज़ीमुश्शान क़ुर्बानी की नक़ल उतारनी है और नक़ल उतारने की असल हक़ीक़त यह है कि जैसे अल्लाह के हुक्म के आगे उन्हों ने सर झुका दिया उन्हों ने कोई अ़क्ली दलील नहीं मांगी और कोई हिक्मत और मसलिहत तलब नहीं की और अल्लाह तआ़ला के हुक्म के आगे सर झुका दिया अब हमें भी अपनी ज़िन्दगी को इसके मुताबिक़ ढालना है और क़ुर्बानी की इबादत से यही सबक़ देना मंज़ूर है।

क्या क़ुर्बानी मआ़शी (आर्थिक) तबाही का ज़रिया है?

जिस मक़सद के तहत अल्लाह तआ़ला ने यह क़ुर्बानी वाजिब फ़रमाई थी, आज उसी के बिल्कुल उलट कहने वाले यह कह रहे हैं कि साहिब! क़ुर्बानी क्या है? यह क़ुर्बानी (ख़ुदा अपनी पनाह में

रखे) ख़ाह मख़ाह रख दी गई है, लाखों रुपये ख़ून की शक्ल में नालियों में बह जाते हैं, और मआशी एतिबार से नुक़सान दह है, कितने जानवर कम हो जाते हैं, और फ़लां फ़लां मआशी नुक़सान होते हैं वग़ैरह, लिहाज़ा कुर्बानी करने के बजाए यह करना चाहिए कि वे लोग जो ग़रीब हैं, जो भूख से बिलबिला रहे हैं तो कुर्बानी करके गोश्त तक़्सीम करने के बजाए अगर वो रुपया उस ग़रीब को दे दिया जाए तो उसकी ज़रूरत पूरी हो जायेगी, यह प्रोपैगंडा इतनी कस्रत से किया जा रहा है कि पहले ज़माने में तो सिर्फ़ एक मख़्सूस हलक़ा था, जो ये बातें कहता था, लेकिन अब यह हालत हो गई है कि शायद ही कोई दिन ख़ाली जाता हो, जिसमें कम से कम दो चार अफ़्राद यह बात न पूछ लेते हों कि हमारे अज़ीज़ों में बहुत से लोग ग़रीब हैं, लिहाज़ा अगर हम लोग कुर्बानी न करें और वो रक़म उनको दे दें तो क्या हरज है?

कुर्बानी की असल रूह

बात दर असल यह है कि हर इबादत का एक मौक़ा और एक जगह होती है, जैसे कोई शख़्स यह सोचे कि मैं नमाज़ न पढ़ूं, और उसके बजाये ग़रीब की मदद कर दूं, तो इससे नमाज़ का फ़रीज़ा अदा नहीं हो सकता, ग़रीब की मदद करने का अज्र व सवाब अपनी जगह है, लेकिन जो दूसरे फ़राइज़ हैं वे अपनी जगह फ़र्ज़ व वाजिब हैं, और कुर्बानी के ख़िलाफ़ यह जो प्रोपैगंडा किया गया है कि वह अक़्ल के ख़िलाफ़ है, और यह मआशी (आर्थिक) बद हाली का सबब है, और मआशी एतिबार से इसका कोई जवाज़ नहीं है। यह दर हक़ीक़त कुर्बानी के सारे फ़ल्सफ़े और उसकी रूह का इन्कार है, अरे भाई कुर्बानी तो वाजिब ही इसलिये की गई कि यह काम तुम्हारी अक़्ल और समझ में आ रहा हो, या न आ रहा हो, फिर भी यह क़ाम करो, इसलिये कि हमने इसके करने का हुक्म दिया है, हम जो कहें उस पर अमल करके दिखाओ, यह

क़ुर्बानी की असल रूह है, याद रखो जब तक इन्सान के अन्दर इत्तिबा पैदा नहीं हो जाती उस वक़्त तक इन्सान इन्सान नहीं बन सकता, जितनी बद उन्वानियां, जितने मज़ालिम, जितनी तबाह कारियां आज इन्सानों के अन्दर फैली हुई हैं वे दर हक़ीक़त इस बुनियाद को भुला देने की वजह से हैं कि इन्सान अपनी अ़क़्ल के पीछे चलता है, अल्लाह के हुक्म की इत्तिबा की तरफ़ नहीं जाता।

तीन दिन के बाद क़ुर्बानी इबादत नहीं

तीन दिन के बाद क़ुर्बानी इबादत नहीं है और दूसरी इबादात के अन्दर यह है कि वे नफ़्ली तौर पर जिस वक़्त चाहें अदा करें, लेकिन क़ुर्बानी के अन्दर अल्लाह ने यह सिखा दिया कि गले पर छुरी यह सिर्फ़ तीन दिन तक इबादत है और तीन दिन के बाद अगर क़ुर्बानी करोगे तो कोई इबादत नहीं, क्यों? यह बताने के लिये कि इस अ़मल में कुछ नहीं रखा, बल्कि जब हमने कह दिया कि क़ुर्बानी करो उस वक़्त इबादत है और उसके अ़लावा इबादत नहीं है, काश यह नुक्ता हमारी समझ में आ जाये तो सारे दीन की सही समझ हासिल हो जाये, दीन का सारा नुक्ता और मेहवर यह है कि दीन इत्तिबा का नाम है, जिस चीज़ में अल्लाह तबारक व तआ़ला का हुक्म आ गया वो मानो और उस पर अ़मल करो और जहां हुक्म नहीं आया उसमें कुछ नहीं है।

सुन्नत और बिद्अ़त में फ़र्क़

बिद्अ़त और सुन्नत के दरमियान भी यही इमतियाज़ और फ़र्क़ है कि सुन्नत अज्र व सवाब का ज़रिया है और बिद्अ़त की अल्लाह तबारक व तआ़ला के यहां कोई क़ीमत नहीं। लोग कहते हैं कि साहिब! अगर हमने तीजा कर लिया, दसवां कर लिया, चालीसवां कर लिया तो हमने कौन सा गुनाह का काम कर लिया, बल्कि यह हुआ कि लोग जमा हुए उन्हों ने क़ुरआन शरीफ़ पढ़ा और क़ुरआन शरीफ़ पढ़ना तो बड़ी इबादत की बात है और इसमें

क्या ख़राबी की बात हुई? अरे भाई! इसमें ख़राबी यह हुई कि कुरआन शरीफ़ अपनी तरफ़ से पढ़ा और अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बताये हुए तरीक़े के मुता-बिक़ नहीं पढ़ा, कुरआन शरीफ़ पढ़ना उस वक़्त अज्र व सवाब का सबब है जब वह अल्लाह और अल्लाह के रसूल के बताये हुए तरीक़े के मुताबिक़ हो, अगर उसके ख़िलाफ़ हो तो उसमें कोई अज्र व सवाब नहीं।

मग़्रिब की चार रक्अ़त पढ़ना क्यों गुनाह है?

मैं इस की मिसाल दिया करता हूं कि मग़्रिब की तीन रक्अ़त पढ़ना फ़र्ज़ है अब एक शख़्स कहे कि "मआ़ज़ल्लाह" (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) यह तीन का अ़दद कुछ बेतुका सा है, चार रक्अ़त पूरी क्यों न पढ़ें? अब वह शख़्स तीन रक्अ़त के बजाये चार रक्अ़त पढ़ता है, बताइये उसने क्या गुनाह किया? क्या उसने शराब पी ली? क्या चोरी कर ली? या डाका डाला या किसी गुनाहे कबीरा को कर लिया? सिर्फ़ इतना ही तो किया कि एक रक्अ़त ज़्यादा पढ़ ली जिसमें कुरआन करीम ज़्यादा पढ़ा, एक रुकू ज़्यादा किया और दो सज्दे ज़्यादा किये और अल्लाह का नाम लिया, अब इसमें उसने क्या गुनाह कर लिया? लेकिन होगा यह कि चौथी रक्अ़त जो उसने ज़्यादा पढ़ी, न सिर्फ़ यह कि ज़्यादा अज्र व सवाब का ज़रिया नहीं होगी बल्कि उन पहली तीन रक्अ़तों को भी ले डूबेगी और उनको भी ख़राब कर देगी, क्यों? इसलिये कि अल्लाह तआ़ला और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बताये हुए तरीक़े के मुताबिक़ नहीं है। सुन्नत और बिद्अ़त में यही फ़र्क़ है कि जो तरीक़ा बताया हुआ है वह सुन्नत है और जो बताया हुआ नहीं है बल्कि अपनी तरफ़ से घड़ा हुआ है और देखने में बहुत अच्छा मालूम होता है वह बिद्अ़त है। उसका कोई फ़ायदा कोई अज्र व सवाब नहीं।

सुन्नत और बिद्अ़त की दिलचस्प मिसाल

मेरे वालिद साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के पास एक बुज़ुर्ग हज़रत शाह अ़ब्दुल अज़ीज़ साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि दुआ के लिये तश्रीफ़ लाया करते थे, तबलीग़ी जमाअ़त के मश्हूर अकाबिर में से थे और बड़े अ़जीब व ग़रीब बुज़ुर्ग थे, एक दिन आकर उन्हों ने वालिद साहिब से अ़जीब ख़्वाब बयान किया और ख़्वाब में मेरे वालिद माजिद को देखा कि आप एक ब्लैक बोर्ड के पास खड़े हैं और कुछ लोग उनके पास बैठे हुए हैं और आप उनको कुछ पढ़ा रहे हैं। हज़रत वालिद साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने ब्लैक बोर्ड पर चोक से एक का नम्बर (१) बनाया और लोगों से पूछा कि यह क्या है? लोगों ने जवाब दिया कि यह एक है, उसके बाद आपने उस एक के नम्बर की दायीं तरफ़ एक बिन्दी बना दी, (१०) लोगों से पूछा कि अब क्या हो गया? लोगों ने जवाब दिया कि यह दस हो गया, और फिर एक बिन्दी और लगा दी और पूछा कि अब क्या हो गया? लोगों ने कहा कि अब यह सौ (१००) हो गया, फिर एक बिन्दी और लगा दी और पूछा कि अब क्या हो गया? लोगों ने बताया कि अब एक हज़ार हो गया (१०००) फिर फ़रमाया कि मैं जितनी बिन्दी लगाता जा रहा हूं यह दस गुना बढ़ता जा रहा है, फिर उन्हों ने वे सारे नुक़्ते (बिन्दियां) मिटा दिये और अब दोबारा वही नुक़्ता (बिन्दी) उस एक नम्बर के बायीं तरफ़ (०१) लगाया फिर लोगों से पूछा कि यह क्या हुआ? लोगों ने बताया की आश–ारिया एक हो गया, यानी एक का दसवां हिस्सा और फिर एक नुक़्ता और लगा दिया (००१) और पूछा कि अब क्या हो गया? लोगों ने बताया कि अब दशम्लव शून्ये एक हो गया, यानी एक का सौवां हिस्सा, फिर एक नुक़्ता और लगा कर पूछा कि अब क्या हो गया लोगों ने बताया कि अब दशम्लव दशम्लव एक (०००१) यानी एक का हज़ारवां हिस्सा बन गया, फिर फ़रमाया कि इस से मालूम हुआ कि बायीं तरफ़ के नुक़्ते इस अ़दद को दस गुना कम कर

रहे हैं, फिर फ़रमाया कि दायीं तरफ़ जो नुक़्ते लग रहे हैं ये सुन्नत हैं और जो बायीं तरफ़ नुक़्ते लग रहे हैं वे बिद्अ़त हैं, देखने में बज़ाहिर दोनों नुक़्ते एक जैसे हैं लेकिन जब दायीं तरफ़ लगाये जा रहे हैं तो सुन्नत है, इसलिये कि हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बताये हुए तरीक़े के मुताबिक़ है, और जो बायीं तरफ़ लगाए जा रहे हैं तो वे अज्र व सवाब का मूजिब होने के बजाये और ज़्यादा उसको घटा रहे हैं और इन्सान के अ़मल को ज़ाया कर रहे हैं, बस सुन्नत और बिद्अ़त में यह फ़र्क़ है।

भाई! दीन सारा का सारा इत्तिबा का नाम है जिस वक़्त हम ने जो काम कह दिया उस वक़्त अगर करोगे तो अज्र का ज़रिया होगा और अगर उस से हट कर अपने दिमाग़ से सोच कर करोगे तो उसमें कोई अज्र व सवाब नहीं।

हज़रत अबू बक्र और हज़रत उमर रज़ि० का तहज्जुद की नमाज़ पढ़ना

हमारे हज़रते वाला रह्मतुल्लाहि अ़लैहि की एक बात याद आ गई, मशहूर वाक़िआ है आप हज़रात ने सुना होगा कि आं–हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम कभी कभी रात के वक़्त सहाबा–ए–किराम को देखने के लिये बाहर निकला करते थे, एक मर्तबा जब आप निकले तो हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को देखा कि तहज्जुद की नमाज़ में बहुत आहिस्ता आहिस्ता क़ुरआन करीम की तिलावत कर रहे हैं जब आगे बढ़े तो देखा कि हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु बहुत ज़ोर ज़ोर से क़ुरआन करीम की तिलावत कर रहे हैं, इसके बाद आप वापस घर तश्रीफ़ ले आए, सुबह फ़जर की नमाज़ के बाद जब हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु अ़न्हु तश्रीफ़ लाये तो आपने उनसे पूछा कि रात को हमने देखा कि आप नमाज़ में बहुत आहिस्ता अहिस्ता क़ुरआन

करीम की तिलावत कर रहे थे इतनी आहिस्ता आवाज़ में क्यों कर रहे थे? हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ि० ने जवाब में कितना ख़ूबसूरत जुम्ला इरशाद फ़रमाया, फ़रमाया कि या रसूलल्लाह :

اسمعت من نا جیت

मैं जिस से मुनाजात कर रहा था, उसको सुना दिया, इसलिये मुझे आवाज़ ज़्यादा बुलन्द करने की ज़रूरत नहीं, जिस ज़ात को सुनाना मक़सूद था उसने सुन लिया, उसके लिये बुलन्द आवाज़ की शर्त नहीं। इसके बाद आपने हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु से पूछा कि आप इतनी ज़ोर से क्यों पढ़ रहे थे? उन्होंने जवाब में फ़रमाया कि :

او قظ الوسنان واطرد الشیطان

मैं इसलिये ज़ोर से पढ़ रहा था ताकि जो सोने वाले हैं उनको जगाऊं और शैतान को भगाऊं, फिर आपने हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु अ़न्हु से फ़रमाया कि ارفع قلیلا तुम ज़रा बुलन्द आवाज़ से पढ़ा करो, और हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु से फ़रमाया कि اخفض قلیلا तुम अपनी आवाज़ को थोड़ा सा कम कर दो।

ऐतिदाल मतलूब है

बहर हाल! यह मश्हूर वाक़िआ है जो हदीस में मनक़ूल है और इसकी तशरीह में आम तौर पर यह कहा जाता है कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इस हदीस में ऐतिदाल की तालीम दी की न बहुत ज़्यादा ऊंची आवाज़ से पढ़ो और न बहुत ज़्यादा पस्त आवाज़ से पढ़ो, और यह कुरआन करीम के इरशाद के भी मुताबिक़ है, इसलिये कि कुरआन करीम में है कि :

وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذَالِكَ سَبِيلًا

कि नमाज़ में न बहुत ज़्यादा ज़ोर से पढ़ो और न बहुत ज़्यादा आहिस्ता पढ़ो बल्कि इन दोनों के दरमियान ऐतिदाल के

साथ पढ़ो।

अपनी तज्वीज़ फ़ना कर दो

लेकिन हज़रत डॉ० साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने हज़रत हकीमुल उम्मत रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के वासते से इस हदीस की एक अ़जीब तौजीह् इरशाद फ़रमाई है। फ़रमाया कि हज़रत सिद्दीक़े अक्बर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जवाब में जो बात फ़रमाई थी कि मैं जिसको सुना रहा हूं उसने सुन लिया। ज़्यादा ज़ोर से पढ़ने की क्या ज़रूरत है, तो यह बात ग़लत नहीं थी। और हज़रत फ़ारूक़े आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु तब्अ़ी तौर पर चूंकि तेज़ आवाज़ वाले थे, इसलिये नमाज़ में अगर उनकी आवाज़ बुलन्द हो गई तो कोई ना जायज़ बात नहीं थी, लेकिन आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अब तक तुम दोनों अपनी मरज़ी और अपनी राये से पढ़ रहे थे, और अब हमारे कहने के मुताबिक़ पढ़ो और अब हमारी तज्वीज़ के मुताबिक़ पढ़ो। तो पहले जिस तरीक़े से पढ़ रहे थे, वो चूंकि अपनी तज्वीज़ और अपनी मरज़ी के मुताबिक़ था, उसमें इतनी नूरानियत और इतनी बर्कत नहीं थी अब हमारी तज्वीज़ के मुताबिक़ जब पढ़ोगे तो इसमें नूरानियत और बर्कत होगी।

पूरी ज़िन्दगी इत्तिबा का नमूना होना चाहिए

यह है सारे दीन का ख़ुलासा, कि अपनी तज्वीज़ को दख़ल न हो, जो कोई अ़मल हो वो अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्ल–ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बताए हुए तरीक़े के मुताबिक़ हो, अगर यह बात ज़ेहन नशीन हो जाए तो सारी बिद्अ़तों की जड़ कट जाए। और इस हक़ीक़त को सिखाने के लिए क़ुर्बानी शुरू की गई है, बात दर असल यह है कि हमारे यहां हर चीज़ एक ग़फ़्लत और एक बे–तवज्जही के आ़लम में गुज़र जाती है, क़ुर्बानी करते वक़्त ज़रा सा इस हक़ीक़त को ताज़ा किया जाए कि यह क़ुर्बानी दर हक़ीक़त यह सबक़ सिखा रही है कि हमारी पूरी ज़िन्दगी अल्लाह

जल्ल शानुहू के हुक्म के ताबे होनी चाहिए, और पूरी ज़िन्दगी इत्तिबा का नमूना होनी चाहिए, चाहे हमारी समझ में आए या न आए, हमारी अक़्ल में आए या न आए, हर हालत में अल्लाह के हुक्म के आगे सर झुकाना चाहिए बस! इस कुर्बानी का सारा फ़ल्सफ़ा यह है, अल्लाह अपनी रहमत से इस फ़ल्सफ़े को समझने की भी तौफ़ीक़ अ़ता फरमाए, और इसकी बरकतें अ़ता फ़रमाये, आमीन।

कुर्बानी की फ़ज़ीलत

हदीस शरीफ़ में यह जो आता है कि जब कोई शख़्स अल्लाह की राह में जानवर कुर्बान करता है उस कुर्बानी के नतीजे में यह होगा कि उस जानवर के जिस्म पर जितने बाल हैं एक–एक बाल के बदले एक–एक गुनाह माफ़ होते हैं और अल्लाह तआ़ला को इन तीन दिनों में कोई अ़मल ख़ून बहाने से ज़्यादा महबूब नहीं है। जितना ज़्यादा कुर्बानी करेगा, उतना ही अल्लाह तआ़ला को महबूब होगा। और फ़रमाया कि जब तुम कुर्बानी करते हो तो जानवर का ख़ून अभी ज़मीन पर नहीं गिरता इससे पहले वह अल्लाह तआ़ला के यहां पहुंच जाता है और अल्लाह तबारक व तआ़ला के यहां तक़र्रुब का ज़रिया बन जाता है। यह सब इसलिये है कि जब अल्लाह तआ़ला यह देखते हैं कि मेरा बन्दा यह देखे बग़ैर कि यह बात अ़क़्ल में आ रही है या नहीं? और यह देखे बग़ैर कि उसके माल का फ़ायदा हो रहा है या नुक़सान हो रहा है, सिर्फ़ मेरे हुक्म पर जानवर के गले पर छुरी फेर रहा है, इसलिये अल्लाह तआ़ला ने इसका यह अज़ीम अज्र रखा है।

एक देहाती का क़िस्सा

बुज़ूर्गों ने फ़रमाया कि पहले ज़माने में एक क़ायदा था कि जब किसी बड़े बादशाह के दरबार में जाते तो कोई हदिया या तोहफ़ा बतौर नज़राना साथ ले जाते, और हक़ीक़त में उस बाद–

शाह को तुम्हारे नज़राने की ज़रूरत नहीं लेकिन उस नज़राने का मतलब यह होता है कि अगर बादशाह उस नज़राने को कुबूल कर लेगा तो उसकी ख़ुश्नूदी हासिल हो जायेगी, और उसके नतीजे में और कुछ हासिल होगा। मौलाना रूमी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने इस पर वाक़िआ़ लिखा है कि बग़दाद के क़रीब एक गांव था, उस गांव में एक देहाती रहता था, उस देहाती ने इरादा किया कि मैं बग़दाद जाकर बादशाह और अमीरुल मोमिनीन से मुलाक़ात करूं, और वह आज कल के बादशाह की तरह नहीं होते थे कि छोटी सी रियासत लेकर बैठ गए और बादशाह बन गए, बल्कि उस वक़्त बग़दाद के ख़लीफ़ा की आधी दुनिया से ज़्यादा पर हुकूमत थी। बहर हाल! जाते वक़्त उसने अपनी बीवी से मश्विरा किया कि मैं बादशाह के दरबार में जा रहा हूं उनके लिये कोई तोहफ़ा और नज़राना भी लेकर जाना चाहिए। अब क्या तोहफ़ा लेकर जाऊं? जो बादशाह के लायक़ हो, और बादशाह उसको देख कर ख़ुश होजाए? वह छोटे से गांव में रहने वाले देहाती लोग थे। दुनिया की ख़बर भी नहीं थी, इसलिये बीवी ने मश्विरा दिया कि हमारे घर के मटके में जो पानी है वो नेहर का ठंडा साफ़ शफ़्फ़ाफ़ मीठा पानी है। ऐसा पानी बादशाह को कहां मयस्सर होता होगा। लिहाज़ा यह पानी ले जाओ, उस देहाती की अ़क़्ल में बीवी की बात आ गई, अब उसने वह पानी का घड़ा सर पर उठाया, और बग़दाद की तरफ़ चल दिया। आज की तरह हवाई जहाज़ और रेल का सफ़र तो था नहीं पैदल या ऊंट पर सफ़र होता था। वह देहाती पैदल ही रवाना हुआ, अब रासते में हवा चल रही है, मिट्टी उड़ उड़ कर मट्के के ऊपर जम रही थी और बग़दाद पहुंचते पहुंचते मिट्टी की तह जम गई, जब बादशाह के दरबार में हाज़री हुई तो अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर मैं आपकी ख़िदमत में एक तोहफ़ा लेकर आया हूं। बादशाह ने पूछा कि क्या तोहफ़ा लाए हो? उस देहाती ने वो मटका पेश कर दिया। और कहा कि यह मेरे गांव के कुंए का साफ़ शफ़्फ़ाफ़ और मीठा

पानी है, मैंने सोचा कि इतना अच्छा पानी आपको कहां मयस्सर आता होगा इसलिये मैं यह आप के लिये लाया हूं यह आपके लिये नज़राना है, आप कुबूल फ़रमाइये।

बादशाह ने कहा कि इस मट्के का ढक्कन खोलो, जब उस देहाती ने ढक्कन खोला तो पूरे कमरे में बदबू फैल गई, इसलिए कि उसको बन्द किये हुए कई दिन हो गए थे, और उसके ऊपर मिट्टी की तह जमी हुई थी, बादशाह ने यह सोचा कि यह बेचारा एक देहाती आदमी है और अपनी सोच और अपनी समझ के मुताबिक़ यह हदिया पेश कर रहा है और अपनी मुहब्बत और अक़ीदत का इज़हार कर रहा है, इसलिये इसका दिल नहीं तोड़ना चाहिए। चुनांचे उस घड़े को बंद करा दिया। और उस देहाती से कहा कि तुम माशा अल्लाह बहुत अच्छा तोहफ़ा लाए हो, वाक़ई ऐसा पानी मुझे कहां मयस्सर आ सकता है, उस पानी की बड़ी तारीफ़ की, और फिर हुक्म जारी कर दिया कि इसके बदले इसको एक घड़ा अशरफ़ियों से भर कर दे दो, चुनांचे वह देहाती बहुत ख़ुश हुआ कि मेरा तोहफ़ा बादशाह के दरबार में कुबूल हो गया और अशरफ़ियों का भरा हुआ एक घड़ा मिल गया, जब वह देहाती वापस जाने लगा तो बादशाह ने अपने एक नौकर से कहा कि इसको दरिया–ए–दजला के किनारे से वापस ले जाना।

अब वह देहाती बड़ा ख़ुश ख़ुश वापस जा रहा था। बादशाह का नौकर उसके साथ था, जब दरिया–ए–दजला रासते में आया तो उस देहाती ने दजला को देख कर नौकर से पूछा कि यह क्या है? नौकर ने कहा कि यह दरिया है, और इसका पानी पीकर देखो, अब जब उस देहाती ने दजला का पानी पिया तो देखा कि वो तो इन्तिहाई साफ़ शफ़्फ़ाफ़ और मीठा पानी है। अब उस देहाती को ख़्याल आया कि या अल्लाह! मैं बादशाह के लिये किस क़िस्म का पानी ले गया था। उसके महल के अन्दर तो कितने साफ़ शफ़्फ़ाफ़ और आला दरजे का पानी बह रहा है। उसको तो पानी की ज़रूरत

नहीं थी, लेकिन उसने तो बड़ी करम–नवाज़ी की, मेरी ख़ातिर उस घड़े को कुबूल कर लिया वर्ना मैं तो इस लायक़ था कि उस हदिये के देने पर मुझे सज़ा दी जाती, कि तू ऐसा सड़ा हुआ गन्दा पानी लेकर आया है। लेकिन इस बादशाह की करम–नवाज़ी का क्या ठिकाना है कि उसने न सिर्फ़ यह कि मुझे सज़ा नहीं दी, बल्कि मेरे घड़े को कुबूल भी कर लिया और उसके बदले में मुझे एक अशरफ़ियों से भरा हुआ घड़ा भी दे दिया।

हमारी इबादतों की हक़ीक़त

मौलाना रूमी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि हम अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर जो इबादतें करते हैं वे पानी के घड़े की तरह हैं, जिसमें गन्दा पानी भरा हुआ है, गर्द व ग़ुबार और मिट्टी से अटा हुआ है, इसका तक़ाज़ा तो यह था कि ये इबादतें हमारे मुंह पर मार दी जायें, लेकिन यह अल्लाह तआ़ला का करम है कि वह बजाये लौटाने के उसको कुबूल फ़रमा लेते हैं, और उस पर और ज़्यादा अज्र व सवाब अ़ता फ़रमा देते हैं और यह सोचते हैं कि यह मेरा बन्दा है जो इससे ज़्यादा का तसव्वुर भी नहीं कर सकता, और इससे ज़्यादा बेहतर इबादत अन्जाम नहीं दे सकता, चूंकि इख़्लास के साथ लाया है, इसलिये इसकी इबादत कुबूल करलो, चुनांचे अल्लाह तआ़ला इसकी इबादत कुबूल फ़रमा लेते हैं, मौलाना रूमी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने जो मिसाल दी है वह हमारी तमाम इबादतों और इताअ़तों पर पूरी तरह सादिक़ (फ़िट) आती है कि हमारी इबादतें दर हक़ीक़त देहाती के पानी का मटका है।

तुम इसके ज़्यादा मोहताज हो

और अगर तुम मान लो बादशाह के दरबार में बहुत अच्छी और क़ीमती चीज़ जैसे हीरे मोती जवाहिरात बतौरे हदिया और नज़राना लेकर गये तो पहले ज़माने के बादशाहों का दस्तूर यह था कि अगर कोई बादशाह के दरबार में आला दरजे का तोहफ़ा लेकर

जाता तो वह बादशाह उस तोहफ़े पर अपना हाथ रख देता था, और हाथ रखना इस बात की निशानी थी कि तुम्हारा हदिया और तोहफ़ा कुबूल है, और फिर वो तोहफ़ा उस देने वाले को वापस कर दिया जाता था, इसलिये कि हमसे ज़्यादा तुम इस तोहफ़े के मोहताज और ज़रूरत मंद हो, लिहाज़ा तुम ही इसको रख लो।

हमें दिलों का तक़्वा चाहिए

मौलाना रूमी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि मुसलमान अल्लाह तआ़ला के हुज़ूर जो कुर्बानी पेश करते हैं यह एक ऐसा नज़राना है कि इधर उसने अल्लाह के लिये कुर्बानी और नज़राना पेश करते हुए जानवर के गले पर छुरी फेरी, उधर कुर्बानी की इबादत कुबूल हो गई, और अल्लाह तआ़ला ने वह नज़राना कुबूल कर लिया, और गोया कि अल्लाह तआ़ला ने उस पर अपना हाथ रख दिया, और अब वह जानवर भी पूरा का पूरा तुम्हारा है, और फ़रमा दिया कि यह जानवर लेजा कर खाओ, इसका गोश्त तुम्हारा है, इसकी खाल तुम्हारी है, इस जानवर की हर चीज़ तुम्हारी है, उम्मते मुहम्मदिया (अ़ला साहिबिहिस्सलातु वस्सलामु) का इक्राम देखिए कि नज़राना मांगा जा रहा है, लेकिन जब बन्दे ने ख़ून बहा दिया और नज़राना पेश कर दिया, और हमारे हुक्म की तामील कर ली तो बस काफ़ी है, हमें इतना ही चाहिये था।

चुनांचे फ़रमाया कि :

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَاۤءُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ

हमें तो उस का गोश्त नहीं चाहिये, हमें उसका ख़ून नहीं चाहिये, हमें तो तुम्हारे दिल का तक़्वा चाहिए, जब तुमने अपने दिल के तक़्वे से यह कुर्बानी पेश कर दी, वो हमारे यहां कुबूल हो गई, अब इसको तुम ही खाओ, चुनांचे अगर कोई शख़्स कुर्बानी का सारा गोश्त ख़ुद ही खाले, उस पर कोई गुनाह नहीं, अलबत्ता मुस्तहब यह है कि तीन हिस्से करले, एक हिस्सा ख़ुद खाये और

एक हिस्सा अज़ीज़ों में तक़सीम करे, और एक हिस्सा ग़रीबों में ख़ैरात करे, लेकिन अगर एक बोटी भी ख़ैरात न करे तो भी कुर्बानी के सवाब में कोई कमी नहीं आती, इसलिये कि कुर्बानी तो उस वक़्त मुकम्मल हो गई जिस वक़्त जानवर के गले पर छूरी फेर दी, जब मेरे बन्दे ने मेरे हुक्म पर अमल कर लिया, तो बस! कुर्बानी की फ़ज़ीलत उसको हासिल हो गई।

क्या ये पुल सिरात की सवारियां होंगी?

लोगों में यह बात बहुत कस्रत से कही जाती है कि ये कुर्बानी के जानवर पुल सिरात पर से गुज़रने के लिये सवारी बनेंगे और कुर्बानी करने वाला उसके ऊपर बैठ कर गुज़रेगा, यह एक ज़ईफ़ और कमज़ोर रिवायत है। जिसके अलफ़ाज़ ये आये हैं:

سمنوا ضحایاکم فانها علی الصراط مطایاکم

यानी अपनी कुर्बानी के जानवर को मोटा ताज़ा बनाओ, क्योंकि पुल सिरात पर ये तुम्हारी सवारियां बनेंगी, लेकिन यह इन्तिहाई दरजे की ज़ईफ़ हदीस है, और ज़ईफ़ हदीस को उसके ज़ोअ्फ़ की सराहत के बग़ैर बयान करना जायज़ नहीं, इसलिये इस हदीस पर ज़्यादा एतिक़ाद रखना दुरुस्त नहीं, इसलिये कि यह ज़ईफ़ हदीस है लेकिन लोगों में यह हदीस इतनी मश्हूर हो गई कि यह समझा जाता है कि अगर इसका एतिक़ाद न रखा तो कुर्बानी ही न होगी, हम इस हुक्म को न मना करते हैं और न साबित करते हैं, इसका सही इल्म अल्लाह तआ़ला ही को है, अलबत्ता यह हदीस बिल्कुल सही है कि कुर्बानी के जानवर का ख़ून ज़मीन पर गिरने से पहले वो कुर्बानी कुबूल हो जाती है।

मैंने तो अपना सब कुछ आपको सौंप दिया है

बहर हाल! यह सब इसलिये कराया जा रहा है ताकि दिल में इत्तिबा का जज़्बा पैदा हो और अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के आगे सर झुकाने का जज़्बा पैदा

हो, जैसा कि कुरआन करीम में फ़रमाया :–

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ اَمْرِهِمْ (سورة الاحزاب)

जब अल्लाह या अल्लाह का रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम किसी मोमिन मर्द या मोमिन औरत के लिये कोई फ़ैसला कर दें तो उसके बाद उसके पास कोई इख़्तियार नहीं रहता।

सपुर्दम बतो माया–ए–ख़ेश रा
तू दानी हिसाबे कमो बेश रा

(मेरे पास तो जो कुछ था वो आपको सौंप दिया, अब कमी बेशी का हिसाब आप जानें।)

तो दीन की सारी हक़ीक़त यह है। अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से इस हक़ीक़त को समझने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये और इसका अज्र व फ़ज़ीलत अ़ता फ़रमाये, और इसके अन्दर जितने अन्वार और बरकतें हैं अल्लाह तआ़ला वे सब हमें अपनी रहमत से अ़ता फ़रमाये, और अपनी ज़िन्दगी में इस सबक़ को याद रखने और इसके मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आमीन ।

وآخردعوانا ان الحمدلله رب العالمين

नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरत और हमारी ज़िन्दगी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْماً كَثِيْرًا كَثِيْرًا اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

"لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ، وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا" (سورة الاحزاب:٢١)

آمنت بالله صدق الله مولانا العظيم وصدق رسوله النبى الكريم، ونحن على ذلك من الشاهدين والشاكرين، والحمد لله رب العالمين.

आपका तज़्किरा बाइसे सआ़दत

बारह रबीउल अव्वल हमारे मुआ़शरे, हमारे मुल्क और ख़ास कर बर्रे सग़ीर में बा–क़ायदा एक जश्न और एक त्योहार की शक्ल इख़्तियार कर गयी है, जब रबीउल अव्वल का महीना का आता है तो सारे मुल्क में सीरतुन्नबी और मीलादुन्नबी का एक ग़ैर मुतनाही सिलसिला शुरू हो जाता है, ज़ाहिर है कि हुज़ूर नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मुबारक तज़्किरा इतनी बड़ी सआ़दत है कि उसके बराबर कोई और सआ़दत नहीं हो सकती, लेकिन मुश्किल यह है कि हमारे मुआ़शरे में आपके मुबारक तज़्किरे को इस रबीउल अव्वल के महीने के साथ बल्कि सिर्फ़ १२ रबीउल अव्वल के साथ मख़्सूस कर दिया गया है, और यह कहा जाता है कि चूंकि बारह रबीउल अव्वल को हुज़ूर नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम की विलादत हुई, इसलिये आपका यौमे विलादत मनाया जायेगा, और इसमें आपकी सीरत और विलादत का बयान होगा।

लेकिन यह सब कुछ करते वक़्त हम यह बात भूल जाते हैं कि जिस ज़ाते अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरत का यह बयान हो रहा है, और जिस ज़ाते अक़्दस की विलादत का यह जश्न मनाया जा रहा है, ख़ुद उस ज़ाते अक़्दस की तालीम क्या है? और उस तालीम के अन्दर इस क़िस्म का तसव्वुर मौजूद है या नहीं?

तारीख़े इन्सानियत का अ़ज़ीम वाक़िआ़

इसमें किसी मुसलमान को शुबह् नहीं हो सकता कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इस दुनिया में तशरीफ़ लाना, तारीख़े इन्सानियत का इतना अ़ज़ीम वाक़िआ़ है कि इससे ज़्यादा अ़ज़ीम, इससे ज़्यादा मसर्रत वाला, इससे ज़्यादा मुबारक और मुक़द्दस वाक़िआ़ इस रूए ज़मीन पर पेश नहीं आया। इन्सा-नियत को नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात का नूर मिला, आपकी मुक़द्दस शख़्सियत की बरकतें नसीब हुयीं, यह इतना बड़ा वाक़िआ़ है कि तारीख़ का और कोई वाक़िआ़ इतना बड़ा नहीं हो सकता, और अगर इस्लाम में किसी का यौमे पैदाइश मनाने का कोई तसव्वुर होता तो सरकारे दो आ़लम सल्ल० के यौमे पैदाइश से ज़्यादा कोई दिन इस बात का मुस्तहिक़ नहीं था कि उसको मनाया जाये, और उसको ईद क़रार दिया जाये, लेकिन नुबुव्वत के बाद आप २३ साल इस दुनिया में तशरीफ़ फ़रमा रहे, और हर साल रबीउल अव्वल का महीना आता था, लेकिन न सिर्फ़ यह कि आप ने १२ रबीउल अव्वल को यौमे पैदाइश नहीं मनाया बल्कि आपके किसी सहाबी के ख़्याल में भी यह नहीं गुज़रा कि चूंकि १२ रबीउल अव्वल आपकी पैदाइश का दिन है, इसलिये

इसको किसी ख़ास तरीक़े से मनाना चाहिये।

१२ रबीउल अव्वल और सहाबा-ए-किराम

इसके बाद सरकरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस दुनिया से तश्रीफ़ ले गये, और तक़रीबन एक लाख पच्चीस हज़ार सहाबा-ए-किराम इस दुनिया में छोड़ गये, वे सहाबा-ए-किराम ऐसे थे कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के एक सांस के बदले अपनी पूरी जान निछावर करने के लिये तैयार थे, आपके जां निसार, आप पर फ़िदा कार, आपके आ़शिक़ थे, लेकिन कोई एक सहाबी ऐसा नहीं मिलेगा जिसने एहतिमाम करके यह दिन मनाया हो, या इस दिन कोई जल्सा मुन्अक़िद (आयोजित) किया हो, या कोई जुलूस निकाला हो, या कोई चिराग़ां किया हो, या कोई झन्डियां सजाई हों, साहाबा-ए-किराम ने ऐसा क्यों नहीं किया? इसलिय कि इस्लाम कोई रस्मों का दीन नहीं है, जैसा कि दूसरे मज़हब वाले हैं कि उनके यहां चन्द रस्मों को अदा करने का नाम दीन है, जब वे रस्में अदा करलें तो बस फिर छुट्टी हो गयी, बल्कि इस्लाम अ़मल का दीन है, और यह तो जन्म रोग है, यह कि पैदाइश से लेकर मरते दम तक हर इन्सान अपनी इस्लाह की फ़िक्र में लगा रहे, और सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत की इत्तिबा में लगा रहे।

"क्रिसमिस" की इब्तिदा

यौमे पैदाइश मनाने का यह तसव्वुर हमारे यहां ईसाइयों से आया है, हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का यौमे पैदाइश क्रिसमिस के नाम से २५ दिसम्बर को मनाया जाता है, तारीख़ उठा कर देखेंगे तो मालूम होगा कि हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के आसमान पर उठाये जाने के तक़रीबन तीन सौ साल तक हज़रत ईसा अ़लैहि-स्सलाम के यौमे पैदाइश मनाने का कोई तसव्वुर नहीं था, आपके हवारियों और सहाबा- ए-किराम में से किसी ने यह दिन नहीं

मनाया, तीन सौ साल के बाद कुछ लोगों ने यह बिद्अ़त शुरू कर दी, और यह कहा कि हम हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का यौमे पैदाइश मानायेंगे, उस वक़्त भी जो लोग दीने ईसवी पर पूरी तरह अ़मल पैरा थे उन्हों ने उनसे कहा कि तुमने यह सिलसिला क्यों शुरू किया है? हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की तालीमत में तो यौमे पैदाइश मनाने का कोई ज़िक्र नहीं है, उन्हों ने जवाब दिया कि इसमें क्या हरज है? यह कोई ऐसी बुरी बात तो नहीं है, बस हम इस दिन जमा हो जायेंगे, और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का ज़िक्र करेंगे, उनकी तालीमात को याद दिलायेंगे, और उसके ज़रिये से लोगों में उनकी तालीमात पर अ़मल करने का शौक़ पैदा होगा, इसलिये हम कोई गुनाह का काम तो नहीं कर रहे हैं, चुनांचे यह कह कर यह सिलसिला शुरू कर दिया।

"क्रिसमिस"की मौजूदा सूरते हाल

चुनांचे शुरू शुरू में तो यह हुआ कि जब २५ दिसम्बर की तारीख़ आती तो चर्च में एक इज्तिमा होता, एक पादरी साहिब खड़े होकर हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की तालीम और आपकी सीरत बयान कर देते, उसके बाद इज्तिमा बरख़ास्त हो जाता, गोया कि बे ज़रर और मासूम तरीक़े पर यह सिलसिला शुरू हुआ, लेकिन कुछ अर्सा गुज़रने के बाद उन्हों ने सोचा कि हम पादरी की तक़रीर करा देते हैं, मगर वह ख़ुश्क क़िस्म की तक़रीर होती है, जिसका नतीजा यह है कि नौजवान और शौक़ीन मिज़ाज लोग तो इसमें शरीक नहीं होते, इसलिये इसको ज़रा दिलचस्प बनाना चाहिये, ताकि लोगों के लिये दिल्कश हो, और उसको दिल चस्प बनाने के लिये इसमें मौसीक़ी होनी चाहिये, चुनांचे उसके बाद मौसीक़ी पर नज़्में पढ़ी जाने लगीं, फिर उन्हों ने देखा कि मौसीक़ी से भी काम नहीं चल रहा है, इसलिये इसमें नाच गाना भी होना चाहिये, चुनांचे फिर नाच गाना भी उसमें शामिल हो गया, फिर सोचा कि इसमें

कुछ तमाशे भी होने चाहियें, चुनांचे हंसी मज़ाक़ के खेल तमाशे शामिल हो गये, चुनांचे होते होते यह हुआ कि वह क्रिसमिस जो हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की तालीमात बयान करने के नाम पर शुरू हुआ था, अब वह आ़म जश्न की तरह एक जश्न बन गया और उसका नतीजा यह है कि नाच गाना उसमें, मौसीक़ी उसमें, शराब नोशी उसमें, जुए बाज़ी उसमें, गोया कि अब दुनिया भर की सारी ख़ुराफ़ात क्रिसमिस में शामिल हो गयीं, और हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम की तालीमात पीछे रह गयीं।

"क्रिसमिस" का अन्जाम

अब देख लीजिये कि मग़रिबी मुल्कों में जब क्रिसमिस का दिन आता है, तो उसमें क्या तूफ़ान बरपा होता है, इस एक दिन में इतनी शराब पी जाती है कि पूरे साल इतनी शराब नहीं पी जाती। इस एक दिन में इतने हादसात होते हैं कि पूरे साल इतने हादसात नहीं होते, उसी एक दीन में औ़रतों के साथ बलात्कार इतना होता है कि पूरे साल इतनी वारदात नहीं होती, और यह सब कुछ हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम के यौमे पैदाइश के नाम पर हो रहा है।

मीलादुन्नबी की शुरूआत

अल्लाह तआ़ला इन्सानी नफ़सियात और उसकी कमज़ोरियों से वाक़िफ़ हैं, अल्लाह तआ़ला यह जानते थे कि अगर उसको ज़रा सा शोशा दिया गया तो यह क़हां से कहां बात पहुंचायेगा, इसलिये किसी दिन के मनाने का कोई तसव्वुर नहीं रखा, जिस तरह "क्रिसमिस" के साथ हुआ उसी तरह यहां भी हुआ कि किसी बादशाह के दिल में ख़्याल आ गया कि जब ईसाई लोग हज़रत ईसा अ़लैहिस्सलाम का यौमे पैदाइश मनाते हैं तो हम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यौमे पैदाइश क्यों न मनायें? चुनांचे यह कह कर उस बादशाह ने मीलाद का सिलसिला शुरू कर दिया, शुरू में यहां भी यही हुआ कि मीलाद हुआ जिसमें हुज़ूरे

अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरत का बयान हुआ, और कुछ नअ़तें पढ़ी गयीं, लेकिन अब आप देख लें कि कहां तक नौबत पहुंच चुकी है।

यह हिन्दुवाना जश्न है

यह तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मोजिज़ा है कि चौदह सौ साल गुज़रने के बावजूद अल्लाह का शुक्र है कि वहां तक नौबत नहीं पहुंची जिस तरह ईसाइयों के यहां पहुंच चुकी है, लेकिन अब भी देख लो कि सड़कों पर क्या हो रहा है, किस तरह रौज़ा-ए-अक़्दस की शबीहें खड़ी की हुई हैं, किस तरह काबे शरीफ़ की शबीहें खड़ी हुई हैं, किस तरह लोग उसके इर्द गिर्द तावाफ़ कर रहे हैं, किस तरह उसके चारों तरफ़ रिकार्डिंग हो रही है, किस तरह चिरागां किया जा रहा है, और किस तरह झन्डियां सजाई जा रही हैं, मआ़ज़ल्लाह (ख़ुदा अपनी पनाह में रखे) ऐसा मालूम हो रहा है कि यह सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरते तैयबा का कोई जश्न नहीं है, बल्कि जैसे हिन्दुओं और ईसाइयों के आ़म जश्न होते हैं इस तरह का कोई जश्न है और रफ़्ता रफ़्ता सारी ख़राबियां इसमें जमा हो रही हैं।

यह इस्लाम का तरीक़ा नहीं

सब से बड़ी ख़राबी यह है कि यह सब कुछ दीन के नाम पर हो रहा है, और यह सब कुछ हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुक़द्दस नाम पर हो रहा है, और सब कुछ यह सोच कर हो रहा है कि यह बड़े अज्र व सवाब का काम है, और यह ख़्याल कर रहे हैं कि आज १२ रबीउल अव्वल को चिरागां करके, और अपनी इमारतों को रौशन करके, और अपने रास्तों को सजा कर हमने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ मुहब्बत का हक़ अदा कर दिया, और अगर उनसे पूछा जाये कि आप दीन

पर अ़मल नहीं करते? तो जवाब देते हैं कि हमारे यहां तो मीलाद होता है, हमारे यहां तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के यौमे पैदाइश पर चिराग़ां होता है, इस तरह दीन का हक़ अदा हो रहा है, हालांकि यह तरीक़ा इस्लाम का तरीक़ा नहीं है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तरीक़ा नहीं है, आपके सहाबा–ए–किराम का तरीक़ा नहीं है, और अगर इस तरीक़े में ख़ैर व बरकत होती तो अबू बकर सिद्दीक़, फ़ारूक़े आज़म, उस्माने ग़नी और अ़ली मुर्तज़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु इस से चूकने वाले नहीं थे।

बनिये से सियाना सो बावला

मेरे वालिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि हिन्दी ज़बान की एक मसल और कहावत सुनाया करते थे कि उनके यहां यह कहावत बहुत मश्हूर है कि:

"बनिये से सियाना सो बावला"

यानी अगर कोई शख़्स यह दावा करे कि मैं तिजारत में बनिये से ज़्यादा सियाना और होशियार हूं, और उस से ज़्यादा तिजारत जानता हूं, तो वह पागल है, इसलिये कि हक़ीक़त में तिजारत के अन्दर कोई शख़्स बनिये से ज़्यादा सियाना नहीं हो सकता, यह कहावत सुनाने के बाद हज़रत वालिद साहिब फ़र्माते कि जो शख़्स यह दावा करे कि मैं सहाबा–ए–किराम से ज़्यादा हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का आ़शिक़ हूं और सहाबा–ए–किराम से ज़्यादा मुहब्बत रखने वाला हूं, वह हक़ीक़त में पागल है, बेवक़ूफ़ और अहमक़ है, इसलिये कि सहाबा–ए–किराम से बड़ा आ़शिक़ और मुहब्बत करने वाला कोई और नहीं हो सकता।

आपके आने का मक़्सद क्या था?

सहाबा–ए–किराम का यह हाल था कि न जुलूस है, न जल्सा है, न चिराग़ां है, न झन्डी है, और न सजावट है, लेकिन एक चीज़ है, वह यह कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की

सीरते तैयबा ज़िन्दगियों में रची हुई है, उनका हर दिन सीरते तैयबा का दिन है, उनका हर लम्हा सीरते तैयबा का लम्हा है, उनका हर काम सीरते तैयबा का काम है, कोई काम ऐसा नहीं था जो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरते तैयबा से ख़ाली हो, चूंकि वे जानते थे कि सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इसलिये दुनिया में तशरीफ़ नहीं लाये थे कि अपना जन्म दिन मनवायें और अपनी तारीफ़ करायें, अपनी शान में क़सीदे पढ़वायें, ख़ुदा न करे अगर यह मक़सूद होता तो जिस वक़्त कुफ़्फ़ारे मक्का ने आपको यह पेशकश की थी कि अगर आप सरदार बनना चाहते हैं तो हम आपको अपना सरदार बनाने के लिये तैयार हैं, अगर आप माल व दौलत के तलबगार हैं तो माल व दौलत के ढ़ेर आपके क़दमों में लगाने के लिये तैयार हैं, अगर आप हुस्न व जमाल के तलबगार हैं तो अरब का चुना हुआ हुस्न व जमाल आपकी ख़िदमत में नज़्र किया जा सकता है, बशरते कि आप अपनी तालीमात को छोड़ दें, और यह दावत का काम छोड़ दें, अगर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ये चीज़ें मतलूब होतीं तो आप उनकी पेशकश को कुबूल कर लेते, सरदारी भी मिलती, रुपया पैसा भी मिल जाता और दुनिया की सारी नेमतें हासिल हो जातीं, लेकिन सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुम मेरे एक हाथ में सूरज और एक हाथ में चांद भी लाकर रख दोगे, तब भी मैं अपनी तालीमात से हटने वाला नहीं हूं।

क्या आप दुनिया में इसलिये तशरीफ़ लाये थे कि लोग मेरे नाम पर ईद मीलादुन्नबी मनायें? बल्कि आपके आने का मन्शा वह है जो कुरआन करीम ने इस आयत में बयान फ़रमया कि:

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا.

(سورة الاحزاب:٢١)

यानी हमने नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को तुम्हारे पास बेहतरीन नमूना बनाकर भेजा है, ताकि तुम उनकी नक़ल उतारो, और उस शख़्स के लिये भेजा है जो अल्लाह पर ईमान रखता हो, और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो, और अल्लाह को कस्रत से याद करता हो।

इन्सान नमूने का मोहताज है

सवाल यह पैदा होता है कि नमूने की क्या ज़रूरत है? इस लिये कि अल्लाह तआ़ला ने अपनी किताब नाज़िल फ़रमा दी थी, हम उसको पढ़ कर उसके अहकाम पर अ़मल कर लेते? बात असल में यह है कि नमूने भेजने की ज़रूरत इसलिये पेश आई कि इन्सान की फ़ित्रत यह है कि सिर्फ़ किताब उसकी इस्लाह के लिये और उसको कोई फ़न, कोई इल्म व हुनर सिखाने के लिये काफ़ी नहीं होती, बल्कि इन्सान को सिखाने के लिये किसी मुरब्बी के अ़मली नमूने की ज़रूरत होती है, जब तक नमूना सामने नहीं होगा, उस वक़्त तक महज़ किताब पढ़ने से कोई इल्म और कोई फ़न नहीं आयेगा, यह चीज़ अल्लाह तआ़ला ने उसकी फ़ित्रत में दाख़िल फ़रमाई है।

डॉक्टर के लिये 'हाऊस जॉब'' लाज़िम क्यों?

एक इन्सान अगर यह सोचे कि मैडिकल साइंस पर किताबें लिखी हुई हैं, मैं उन किताबों को पढ़ कर दूसरों का इलाज शुरू कर दूं, वह पढ़ना भी जानता है, समझदारी भी है, ज़हीन भी है, और उसने किताबें पढ़ कर इलाज शुरू कर दिया, तो सिवाये क़ब्रिस्तान आबाद करने के कोई और ख़िदमत अन्जाम नहीं देगा।

चुनांचे दुनिया भर का क़ानून यह है कि अगर किसी शख़्स ने एम० बी० बी० एस० की डिग्री हासिल करली, उसको एक मुद्दत तक आ़म परेक्टिस करने की इजाज़त नहीं जब तक वह एक मुद्दत तक हाऊस जॉब न करे, और जब तक किसी अस्पताल में किसी

माहिर डॉक्टर की निगरानी में अ़मली नमूना नहीं देखेगा, उस वक़्त तक सही डॉक्टरी नहीं कर सकता। इसलिये कि उसने अब तक बहुत सी चीज़ों को सिर्फ़ किताब में पढ़ा है, अभी उसके अ़मली नमूने उसके सामने नहीं आये, अब मर्ज़, किताबी तफ़सील के साथ, उसकी अ़मली सूरत मरीज़ की शक्ल में देख कर उसे सही मायने में इलाज करना आयेगा उसके बाद उसको आम परेक्टिस की इजाज़त देदी जायेगी।

किताब पढ़ कर क़ोरमा नहीं बना सकते

खाने पकाने की किताबें बाज़ार में छपी हुई मौजूद हैं, और उनमें हर चीज़ की तरकीब लिखी हुई है कि बिरयानी इस तरह बनती है, पुलाव इस तरह बनता है, कबाब इस तरह बनते हैं, क़ोरमा इस तरह बनता है, अब एक आदमी है जिसने आज तक कभी खना नहीं बनाया, किताब सामने रख कर और उसमें तरकीब पढ़ कर क़ोरमा बनाले, ख़ुदा जाने वह क्या चीज़ तैयार करेगा, हां अगर किसी उस्ताद और जानने वाले ने उसको सामने बिठा कर बता दिया कि देखो क़ोरमा इस तरह बनता है, और अ़मली तर्बियत देदी, फिर वह शानदार तरीक़े से बना लेगा।

तन्हा किताब काफ़ी नहीं

मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने इन्सान की फ़ित्रत यह रखी है कि जब तक किसी मुरब्बी का अ़मली नमूना उसके सामने न हो, उस वक़्त तक वह सही रास्ते पर सही तरीक़े पर नहीं आ सकता, और कोई इल्म व फ़न सही तौर पर नहीं सीख सकता, इस वास्ते अल्लाह तआ़ला ने अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम का जो सिलसिला जारी फ़रमाया, वह हक़ीक़त में इसी मक़सद को बनाने के लिये था, हमने किताब तो भेज दी, लेकिन तन्हा किताब तुम्हारी रहनुमाई के लिये काफ़ी नहीं होगी, जब तक उस किताब पर अ़मल करने के लिये नमूना तुम्हारे सामने न हो, इसलिये क़ुरआने करीम

यह कह रहा है कि हमने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को इस गर्ज़ के लिये भेजा है कि तुम यह देखो कि यह कुरआन करीम तो हमारी तालीमात हैं, और यह नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) हमारी तालीमात पर अ़मल करने का नमूना हैं।

तालीमाते नबवी का नूर चाहिए

कुरआन करीम ने एक और जगह पर क्या ख़ूबसूरत जुम्ला इरशाद फ़रमाया किः

"قَدْ جَاءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتَابٌ مُّبِيْنٌ" (سورة مائد:١٥)

यानी तुम्हारे पास अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से एक तो खुली किताब यानी कुरआन आया है, और उसके साथ एक नूर आया है, इससे इशारा इस बात की तरफ़ कर दिया कि अगर किसी के पास किताब मौजूद है, और किताब में सब कुछ लिखा है, लेकिन उसके पास रोशनी नहीं है, न सूरज की रोशनी है, न दिन की रोशनी है, न बिजली की रोशनी है, न चिराग़ की रोशनीं, बल्कि अन्धेरा है, इसलिये अब रोशनी के बग़ैर इस किताब से फ़ायदा नहीं उठा सकता। इसी तरह अगर दिन की रोशनी मौजूद है, बिजली की रोशनी मौजूद है, लेकिन आंख की रोशनी नहीं है, तब भी किताब से फ़ायदा नहीं उठाया जा सकता, इसी तरह हमने कुरआन करीम के साथ मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात का नूर भेजा है जब तक तालीमात का यह नूर तुम्हारे पास नहीं होगा, तुम कुरआन करीम नहीं समझ सकोगे, और उस पर अ़मल करने का तरीक़ा तुम्हें नहीं आयेगा।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात सरापा नूर हैं

अब बाज़ ना अहल और क़दर न पहचानने वाले लोग इस आयत का मतलब यह निकालते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ज़ाती एतिबार से बशर नहीं थे, बल्कि "नूर" थे,

अरे यह तो देखो कि यह बिजली का नूर, यह ट्यूब लाईट का नूर, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात के नूर के आगे क्या हैसियत रखता है? हक़ीक़त में इस आयत में यह बताना है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो कुछ तालीम दे रहे हैं, यह वह नूर है जिसके ज़रिये तुम किताबे मुबीन पर सही सही अ़मल कर सकोगे और इस नमूने के बग़ैर तुम्हें सही तरह अ़मल करने में दुश्वारी होगी, अल्लाह तआ़ला ने आपको इसलिये नुबुव्वत अ़ता फ़रमा कर भेजा कि आपकी तालीमात का नूर अल्लाह की किताब की अ़मली तश्रीह करेगा, यह तुम्हें तरबियत देगा, और तुम्हारे सामने एक अ़मली नमूना पेश करके दिखायेगा कि यह देखो, अल्लाह तआ़ला की किताब पर इस तरह अ़मल किया जाता है, और अब हमने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ात को एक मुकम्मल और कामिल नमूना बना दिया, यह ऐसा नमूना है कि इन्सानियत इसकी नज़ीर पेश करने से आ़जिज़ है, और यह नमूना इसलिये भेजा कि तुम इसको देखो, और इसकी नक़ल उतारो, तुम्हारा बस यही काम है।

आपकी ज़ात ज़िन्दगी के हर शोबे का नमूना थी

अगर तुम बाप हो तो यह देखो कि फ़ातिमा के बाप (सल्ल-ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) क्या करते थे? अगर तुम शौहर हो तो यह देखो कि आ़यशा और ख़दीजा के शौहर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) क्या करते थ? अगर तुम हाकिम हो तो यह देखो कि मदीना के हाकिम (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने किस तरह हुकूमत की, अगर तुम मज़दूर हो तो यह देखो कि मक्का की पहाड़ियों पर बकरीयां चराने वाले मज़दूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) क्या करते थे? अगर तुम ताजिर हो तो यह देखो कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मुल्क शाम की तिजारत में क्या तरीक़ा इख़्तियार फ़रमाया? आपने तिजारत भी की,

खेती बाड़ी भी की, मज़दूरी भी की, सियासत भी की, मईशत भी की, ज़िन्दगी का कोई शोबा नहीं छोड़ा जिसमें हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़ात नमूने के तौर पर मौजूद न हो, बस! तुम इस नमूने को देखो और इसकी पैरवी करो, इसी मक़्सद के लिये हमने नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को भेजा है। इसलिये नहीं भेजा कि आपका यौमे पैदाइश मनाया जाये, इसलिये नहीं भेजा कि आपका जशन मना कर यह समझ लिया जाये कि हमने उनका हक़ अदा कर दिया, बल्कि उनकी ऐसी इत्तिबा करो, जैसी सहाबा-ए-किराम रिज़्वानुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अज्मईन ने इत्तिबा करके दिखाई।

मज्लिस का एक अदब

साहबा-ए-किराम को हर आन इस बात का ध्यान था कि हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इत्तिबा किस तरह हो? सहाबा-ए-किराम वैसे ही सहाबा-ए-किराम नहीं बन गये, सुनिये। एक मर्तबा हुज़ूरे अक्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मस्जिदे नबवी में ख़ुतबा दे रहे थे, ख़ुतबे के दौरान आपने देखा कि कुछ लोग मस्जिद के किनारों पर खड़े हुए हैं, जैसा कि आज कल भी आपने देखा होगा, कि जब कोई तक़रीर या जल्सा होता है तो कुछ लोग किनारों पर खड़े हो जाते हैं, वे लोग न तो बैठते हैं और न जाते हैं, इस तरह किनारों पर खड़ा होना मज्लिस के अदब के ख़िलाफ़ है, अगर तुम्हें सुनना है तो बैठ जाओ और अगर नहीं सुनना है तो जाओ, अपना रास्ता देखो, इसलिये कि इस तरह खड़े होने से बोलने वाले का ज़ेहन भी तश्वीश में मुब्तला होता है, और सुनने वालों का ज़ेहन भी इन्तिशार(तितर बितर होजाने)का शिकार रहता है।

इत्तिबा हो तो ऐसी

बहर हाल: आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने किनारों

पर खड़े हुए लोगों से ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि "बैठ जाओ" जिस वक़्त आपने यह हुक्म दिया उस वक़्त हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु बाहर सड़क पर थे और मस्जिदे नबवी की तरफ़ आ रहे थे, और अभी मस्जिद में दाख़िल नहीं हुए थे, कि उस वक़्त उनके कान में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की यह आवाज़ आई कि "बैठ जाओ" आप वहीं सड़क पर बैठ गये, ख़ुतबे के बाद जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से मुलाक़ात हुई तो आपने फ़रमाया कि मैंने तो बैठने का हुक्म उन लोगों को दिया था जो यहां मस्जिद के किनारों पर खड़े हुए थे, लेकिन तुम तो सड़क पर थे, और सड़क पर बैठने को तो मैंने नहीं कहा था, तुम वहां क्यों बैठ गये? हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने जवाब दिया कि जब हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) का यह इरशाद कान में पड़ गया कि "बैठ जाओ" तो फिर अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद की मजाल नहीं थी कि वह एक क़दम आगे बढ़ाये।

और यह बात नहीं थी कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० इस बात को जानते नहीं थे कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम मुझे सड़क पर बैठने का हुक्म नहीं दे रहे थे, बल्कि असल बात यह थी कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह इरशाद कान में पड़ गया कि "बैठ जाओ" तो अब उसके बाद क़दम नहीं उठ सकता, सहाबा-ए-किराम की इत्तिबा का यह हाल था, वैसे ही सहाबा-ए-किराम नहीं बन गये थे, इश्क़ व मुहब्बत के दावेदार तो बहुत हैं लेकिन उन साहाब-ए-किराम जैसा इश्क़ कोई लेकर तो आये।

मैदाने जंग में अदब का लिहाज़

मैदाने उहद में हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने देखा कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ तीर

बरसाये जा रहे हैं, तीरों की बारिश हो रही है, हज़रत अबू दुजाना रज़ियल्लाहु अ़न्हु यह चाहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सामने आड़ बन जायें, लेकिन अगर उन तीरों की तरफ़ सीना करके आड़ बनते हैं तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ पुश्त हो जाती है और यह गवारा नहीं कि मैदाने जंग में भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ पुश्त हो जाये, चुनांचे आपने अपना सीना हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ और पुश्त कुफ़्फ़ार के तीरों की तरफ़ कर दी, और इस तरह तीरों को अपनी पुश्त पर ले रहे थे, ताकि जंग के मैदान में भी यह बे अदबी न हो कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तरफ़ पुश्त हो जाये।

हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ि० का वाक़िआ

हज़रत फ़ारूके आज़म रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने एक मर्तबा मस्जिदे नबवी से बहुत दूर मकान ले लिया था, वहां रहने लगे थे, और दूरी की वजह से वहां से रोज़ाना मस्जिदे नबवी में हाज़री देना मुश्किल था, चुनांचे उनके क़रीब एक साहिब रहते थे, उनसे यह तय कर लिया था कि एक दिन तुम मस्जिदे नबवी में चले जाया करो, और एक दिन मैं जाया करूंगा, जिस दिन तुम जाओ उस दिन वापस आकर मुझे यह बताना कि आज हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने क्या क्या बातें इरशद फ़रमायीं, और जब मैं जाया करूंगा ते मैं वापस आकर तुम्हें बता दिया करूंगा कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने क्या क्या बातें इरशाद फ़रमायीं, ताकि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ज़बाने मुबारक से निकली हुई कोई बात छूटने न पाये, इस तरह सहाबा–ए–किराम ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की छोटी छोटी बातों और सुन्नतों पर जान दी है।

अपने आक़ा की सुन्नत नहीं छोड़ सकता

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु सुलह हुदैबिया के मौक़े पर मामलात तय करने के लिये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ऐलची बन कर मक्का मुकर्रमा तशरीफ़ ले गये, वहां जाकर अपने चचेरे भाई के घर ठहर गये, और जब सुबह के वक़्त मक्का के सरदारों से बात चीत के लिये घर से जाने लगे तो उस वक़्त हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु का पाजामा टख़्नों से ऊपर आधी पिंडली तक था, आं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमान यह था कि टख़्नों से नीचे पाजामा लटकाना तो बिल्कुल ना जायज़ है, अगर टख़्नो से ऊपर हो तो जायज़ है, लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आम मामूल और आदत यह थी कि आप आधी पिंडली तक अपना पाजामा रखते थे, इससे नीचे नहीं होता था, चुनांचे हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु के चचा ज़ाद भाई ने कहा कि जनाब! अरबों का दस्तूर यह है कि जिस शख़्स का पाजामा और तहबन्द जितना लटका हुआ हो, उतना ही उस आदमी को बड़ा समझा जाता है, और सरदार क़िस्म के लोग अपनी लुंगी (और पाजामे) को लटका कर रखते हैं, इसलिये अगर आप पाजामे को इस तरह ऊंचा पहन कर उन लोगों के सामने जायेंगे तो इस सूरत में उनकी नज़रों में आपकी वक़्अत नहीं होगी, और बात चीत में जान नहीं पड़ेगी, हज़रत उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब अपने चचाज़ाद भाई की बातें सुनीं तो एक ही जवाब दिया, फ़रमाया कि:

"لا! هكذا ازارة صاحبنا صلى الله عليه وسلم"

'नहीं मैं अपना इज़ार (पाजामा लुंगी) इससे नीचा नहीं कर सकता, मेरे आक़ा सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इज़ार ऐसा ही है', यानी अब ये लोग मुझे अच्छा समझें या बुरा समझें, मेरी इज़्ज़त करें, या बेइज़्ज़ती करें, जो चाहें करें मुझे इस

की कोई परवाह नहीं, मैं तो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इज़ार देख चुका हूं, और आपका जैसा इज़ार है, वैसा ही मेरा रहेगा, इसे मैं तब्दील नहीं कर सकता।

इन अहमक़ों की वजह से सुन्नत छोड़ दूं?

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ईरान को फ़तह करने वाले, जब ईरान में किस्रा पर हमला किया गया तो उसने बात चीत के लिये आपको अपने दर्बार में बुलाया, आप वहां तशरीफ़ ले गये, जब वहां पहुंचे तो तवाज़ो के तौर पर पहले उनके सामने खाना लाकर रखा गया, चुनांचे आपने खाना शुरू किया, खाने के दौरान आपके हाथ से एक निवाला नीचे गिर गया, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीम यह है कि अगर निवाला नीचे गिर जाये तो उसको ज़ाया न करो वह अल्लाह का रिज़्क़ है, और यह मालूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला ने रिज़्क़ के कौन से हिस्से में बरकत रखी है, इसलिये उस निवाले की ना क़दरी न करो, बल्कि उसको उठा लो, अगर उसके ऊपर कुछ मिट्टी लग गयी है तो उसको साफ़ करलो, और फिर खालो, चुनांचे जब निवाला नीचे गिरा तो हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हु को यह हदीस याद आ गयी, और आपने उस निवाले को उठाने के लिये नीचे हाथ बढ़ाया, आपके बराबर में एक साहिब बैठे थे, उन्हों ने आपको कोहनी मार कर इशारा किया कि यह क्या कर रहे हो? यह तो दुनिया की सुपर ताक़त किसरा का दरबार है, अगर तुम इस दरबार में ज़मीन पर गिरा हुआ निवाला उठा कर खाओगे तो इन लोगों के ज़ेहनो में तुम्हारी कोई वक़्अ़त नहीं रहेगी, और यह समझेंगे कि यह बड़े नदीदे क़िस्म के लोग हैं, इसलिये यह निवाला उठा कर खाने का मौक़ा नहीं है, आज इसको छोड़ दो।

जवाब में हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने क्या अ़जीब जुम्ला इरशाद फ़रमाया कि:

"أأترك سنة رسول الله صلى الله عليه و سلم لهؤلاء الحمقاء؟"

क्या मैं इन अहमक़ो की वजह से सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत छोड़ दूं? चाहे ये अच्छा समझें या बुरा समझें, इज़्ज़त करें, या ज़िल्लत करें, या मज़ाक़ उड़ायें, लेकिन मैं सराकरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत नहीं छोड़ सकता।

किस्रा के ग़ुरूर को ख़ाक में मिला दिया

अब बताइये कि उन्हों ने अपनी इज़्ज़त कराई या आज हम सुन्नतें छोड़ कर करवा रहे हैं? इज़्ज़त उन्हों ने ही कराई, और ऐसी इज़्ज़त कराई कि एक तरफ़ तो सुन्नत पर अमल करते हुए निवाला उठा कर खाया, तो दूसरी तरफ़ ईरान के घमंड़ी जो ग़ुरूर के बुत बने हुए थे, उनका ग़ुरूर ऐसा ख़ाक में मिलाया कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमा दिया कि:

"اذا هلك كسرىٰ فلا كسرىٰ بعده"

कि जिस दिन किस्रा हलाक हुआ उसके बाद कोई किस्रा नहीं है, दुनिया से उसका नाम व निशान मिट गया।

अपना लिबास नहीं छोड़ेंगे

इस वाक़िए से पहले यह हुआ कि हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान और हज़रत रबई बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु जब बात चीत के लिये जाने लगे, और किस्रा के महल में दाख़िल होने लगे, तो उस वक़्त वे अपना वही सीधा सादा लिबास पहने हुए थे, चूंकि लम्बा सफ़र करके आये थे, इसलिये हो सकता है कि वे कपड़े कुछ मैले हों, दरबार के दरवाज़े पर जो दरबान था, उसने आपको अन्दर जाने से रोक दिया, उसने कहा कि इतने बड़े बादशाह किस्रा के दरबार में ऐसे लिबास में जा रहे हो? और यह कह कर उसने एक जुब्बा दिया कि आप यह जुब्बा पहन कर जायें, हज़रत रबई बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस दरबान से कहा कि अगर किस्रा

के दरबार में जाने के लिये उसका दिया हुआ जुब्बा पहनना ज़रूरी है, तो फिर उसके दरबार में जाने की कोई ज़रूरत नहीं, अगर हम जायेंगे तो इसी लिबास में जायेंगे, और अगर उसको इस लिबास में मिलना मन्ज़ूर नहीं, तो फिर हमें भी उससे मिलने का कोई शौक़ नहीं, इसलिये हम वापस जा रहे हैं।

तलावार देख ली बाज़ू भी देख

उस दरबान ने अन्दर पैग़ाम भजा कि ये अ़जीब क़िस्म के लोग आये हैं, जो जुब्बा लेने को तैयार नहीं, इसी दौरान हज़रत रबई बिन आ़मिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु अपनी तलवार के ऊपर लिपटी हुई कतरनों को दुरुस्त करने लगे, जो तलवार के टूटे हुए हिस्से पर लिपटी हुयी थीं, उस चौकीदार ने तलवार देख कर कहाः ज़रा मुझे अपनी तलावार दिखाओ, आपने वह तलवार उसको देदी, उसने वह तलवार देख कर कहाः क्या तुम इस तलवार से ईरान को फ़तह करोगे? हज़रत रबई बिन आ़मिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि अभी तक तुमने सिर्फ़ तलवार देखी हैः तलवार चलाने वाला हाथ नहीं देखा, उसने कहा अच्छा हाथ भी दिखा दो, हज़रत रबई बिन आ़मिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने फ़रमाया कि हाथ देखना चाहते हो तो ऐसा करो कि तुम्हारे पास तलवार रोकने वाली जो सबसे ज़्यादा मज़बूत ढाल हो वह मंगवा लो, और फिर मेरा हाथ देखो, चुनांचे वहां जो सबसे ज़्यादा मज़बूत लोहे की ढाल थी, जिसके बारे में ख़्याल किया जाता था कि कोई तलवार उसको नहीं काट सकती, वह मंगवाई गयी, हज़रत रबई बिन आ़मिर ने फ़रमया कि कोई शख़्स इसको मेरे सामने लेकर खड़ा हो जाये, चुनांचे एक आदमी उस ढाल को लेकर खड़ा हो गया, तो हज़रत रबई बिन आ़मिर ने वह तलवार जिस पर कतरनें लिपटी हुयी थीं, उसका एक वार जो किया तो उस ढाल के दो टुक्ड़े हो गये, सब यह नज़ारा देख कर हैरान रह गये कि ख़ुदा जाने यह कैसी मख़्लूक़

आ गयी है।

ये हैं ईरान को फ़तह करने वाले

बहर हाल! उसके बाद दरबान ने अन्दर यह पैग़ाम भेजा कि यह एक अ़जीब व ग़रीब मख़्लूक़ आई है, जो न तुम्हारा दिया हुआ लिबास पहनती है, और उनकी तलवार तो बज़ाहिर टूटी फूटी नज़र आती है, लेकिन उसने ढाल के दो टुक्ड़े कर दिये, चुनांचे थोड़ी देर बाद उनको अन्दर बुलवाया गया, किस्रा के दरबार का दस्तूर यह था कि वह ख़ुद तो कुर्सी पर बैठा रहता था और सारे दरबारी सामने खड़े रहते थे, हज़रत रबई बिन आ़मिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने किस्रा से कहा कि हम मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात के पैरोकार हैं, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने हमें इस बात से मना किया है कि एक आदमी बैठा रहे और सारे आदमी उसके सामने खड़े रहें, इसलिये हम इस तरह से बात चीत करने के लिये तैयार नहीं, या तो हमारे लिये भी कुर्सियां मंगवाई जायें, या किस्रा भी हमारे सामने खड़ा हो, किस्रा ने जब देखा कि ये लोग तो हमारी तौहीन करने के लिये आ गये, चुनांचे उसने हुक्म दिया कि एक मिट्टी का टोकरा भर कर इनके सर पर रख कर इनको वापस रवाना कर दो, मैं इनसे बात नहीं करता, चुनांचे एक मिट्टी का टोकरा उनको दे दिया गया, हज़रत रबई बिन आ़मिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु जब दरबार से निकलने लगे तो जाते हुए यह कहा कि: ऐ किस्रा! यह बात याद रखना कि तुमने ईरान की मिट्टी हमें देदी, यह कह कर रवाना हो गये, ईरानी लोग बड़े वहम परस्त क़िस्म के लोग थे, उन्हों ने सोचा कि यह जो कहा कि "ईरान की मिट्टी हमें देदी" यह तो बड़ी बद फ़ाली हो गयी, अब किस्रा ने फ़ौरन एक आदमी पीछे दौड़ाया कि जाओ जल्दी से वह मिट्टी का टोकरा वापस ले आओ, अब हज़रत रबई बिन आ़मिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु कहां हाथ आने वाले थे, चुनांचे वह लेजाने में

कामयाब हो गये, इसलिये कि अल्लाह तआला ने लिख दिया था कि ईरान की मिट्टी इन्हीं टूटी हुई तलवार वालों के हाथ में है।

आज मुसलमान ज़लील क्यों?

हुज़ूर नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नतों की इत्तिबा में, आपकी सुन्नतों की तामील में, उन हज़रात सहाबा ने दुनिया भर में लोहा मनवाया, और हम पर यह ख़ौफ़ मुसल्लत है कि फ़लां सुन्नत पर अ़मल कर लिया, तो लोग क्या कहेंगे, अगर फ़लां सुन्नत पर अ़मल कर लिया तो दुनिया वाले मज़ाक़ उड़ायेंगे, इसका नतीजा यह है कि सारी दुनिया में आज ज़लील हो रहे हैं, आज दुनिया की एक तिहाई आबादी मुसलमानों की है, आज दुनिया में जितने मुसलमान हैं इतने मुसलमान इससे पहले कभी नहीं हुए, और आज मुसलमानों के पास जितने वसायल हैं इतने वसायल इस से पहले कभी नहीं हुए, लेकिन हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमा दिया था कि एक ज़माना ऐसा आयेगा कि तुम्हारी तायदाद तो बहुत होगी लेकिन तुम ऐसे होगे जैसे सैलाब में बहते हुए तिन्के होते हैं, जिनका अपना कोई इख़्तियार नहीं होता, आज हमारा यह हाल है, कि अपने दुश्मनों को राज़ी करने के लिये अपना सब कुछ कुरबान कर दिया, अपने अख़्लाक़ छोड़े, अपने आमाल छोड़े, अपनी सीरतें छोड़ीं, अपने किर्दार छोड़े, और अपनी सूरत तक बदल डाली, सर से लेकर पांव तक उनकी नक़ल उतार कर यह दिखा दिया कि हम तुम्हारे ग़ुलाम हैं, लेकिन वे फिर भी ख़ुश नहीं हैं, और रोज़ाना पिटाई करते हैं, कभी इसराईल पिटाई कर रहा है, कभी कोई दूसरा मुल्क पिटाई कर रहा है, इस लिये एक मुसलमान जब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत छोड़ देगा तो याद रखो उसके लिये ज़िल्लत के सिवा कुछ नहीं है।

हंसे जाने से जब तक डरोगे

एक शायर गुज़रे हैं असद मुल्तानी मरहूम, उन्हों ने बड़े अच्छे हकीमाना शेर कहे हैं। फ़रमाते हैं किः

किसी का आस्ताना ऊंचा है इतना
कि सर झुक कर भी ऊंचा ही रहेगा
हंसे जाने से जब तक तुम डरोगे
ज़माना तुम पर हंसता ही रहेगा

जब तक तुम इस बात से डरोगे कि फ़लां हंसेगा, फ़लां मज़ाक़ उड़ायेगा तो ज़माना हंसता ही रहेगा, और देख लो कि हंस रहा है। और अगर तुमने नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के क़दमे मुबारक पर अपना सर रख दिया और आपकी सुन्नतों की इत्तिबा करली तो फिर देखो कि दुनिया तुम्हारी कैसी इज़्ज़त करती है।

ईमान वाले के लिये सुन्नत की इत्तिबा लाज़िम है

यहां एक बात और अ़र्ज़ कर दूं, वह यह कि एक सवाल पैदा होता है कि आप कहते हैं कि सुन्नतें छोड़ने से ज़िल्लत होती है, लेकिन हम देखते हैं कि सारे कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन, अमरीका और दूसरे यूरपी मुल्कों वाले, सबने सुन्नतें छोड़ रखी हैं, और इसके बावजूद ख़ूब तरक़्क़ी कर रहे हैं, और ख़ूब उनकी इज़्ज़त हो रही है, उनको क्यों तरक़्क़ी हो रही है?

बात असल यह है कि तुम ईमान वाले हो, तुमने मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का कलिमा पढ़ा है, तुम जब तक उनके क़दमों पर सर नहीं रखोगे, उस वक़्त तक इस दुनिया में तुम्हारी पिटाई होती रहेगी, और तुम्हें इज़्ज़त हासिल नहीं होगी। काफ़िरों के लिये तो सिर्फ़ दुनिया ही दुनिया है, वे इस दुनिया में तरक़्क़ी करें, इज़्ज़त करायें, जो चाहें करायें, तुम अपने आपको उनपर क़ियास मत करो, चौदह सौ साल की तारीख़ उठा कर देख

लें, जब तक मुसलमानें ने नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नतों पर अ़मल किया, उस वक़्त तक इ़ज़्ज़त भी पाई, शौकत भी हासिल की, सत्ता भी हासिल की, लेकिन जब से सुन्नतें छोड़ दी हैं, उस वक़्त से देख लो, क्या हालत है।

अपनी ज़िन्दगी का जायज़ा लें

बहर हाल! तक़रीरें तो होती रहती हैं, जल्से भी होते रहते हैं, लेकिन इस तक़रीर के नतीजे में हमारे अन्दर क्या फ़र्क़ वाक़ेअ़ हुआ? इसलिये आज एक काम का अ़हद करें कि हम इस बात का जायज़ा लेंगे कि हम हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की कौन सी सुन्नत पर अ़मल कर रहे हैं, और कौन सी सुन्नत पर अ़मल नहीं कर रहे हैं, और कौन सी सुन्नत ऐसी है जिस पर हम फ़ौरन अ़मल शुरू कर सकते हैं, और कौन सी सुन्नत ऐसी है जिसमें थोड़ी सी तवज्जोह की ज़रूरत है? इसलिये जो सुन्नत ऐसी है जिस पर हम फ़ौरन अ़मल शुरू कर सकते हैं, वह आज से शुरू कर दें, और उसका एहतिमाम करें।

अल्लाह के महबूब बन जाओ

हमारे हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते थे, कि बैतुल ख़ला (शौचालय) या ग़ुस्ल ख़ाने में दाख़िल हो रहे हो, बायां पांव पहले दाख़िल कर दो, और दाख़िल होने से पहले यह दुआ़ पढ़ लो कि:

"اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِكَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ"

"अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बि–क मिनल ख़ुबुसि वल ख़बाइसि"

और यह नियत कर लो कि यह काम मैं हुज़ूरे अक़्दस सल्ल–ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इत्तिबा में कर रहा हूं, बस जिस वक़्त यह काम करोगे अल्लाह तआ़ला की महबूबियत हासिल हो जायेगी, इसलिये कि अल्लाह तआ़ला ने कुरआन करीम में फ़रमाया कि:

"فَاتَّبِعُوْنِیْ یُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ" (سورة آل عمران:٣١)

"अगर तुम मेरी इत्तिबा करोगे तो अल्लाह तआला तुम्हें अपना महबूब बनालेंगे" इसलिये अगर छोटे छोटे काम, सुन्नत का लिहाज़ करते हुए कर लिये जायें, बस महबूबियत हासिल होने लगेगी, और सरापा इत्तिबा बन जाओगे तो कामिल महबूब हो जाओगे, हमारे हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रहमतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे कि मैंने मुद्दतों इस बात की मेहनत और मश्क़ की है कि घर में दाख़िल हुआ, खाना सामने चुना हुआ है, भूख शिद्दत की लगी हुई है, और खाने का दिल चाह रहा है, लेकिन एक लम्हे के लिये रुक गये कि खाना नहीं खायेंगे, फिर दूसरे लम्हे दिल में यह ख़्याल लाये कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत थी कि जब आपके सामने अच्छा खाना आता था तो आप अल्लाह तबारक व तआ़ला का शुक्र अदा करके खा लेते थे, अब हम भी हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इत्तिबा में खाना खायेंगे, इसलिये अब जो खाना खाया, वह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इत्तिबा में खाया, और उस पर अल्लाह तआ़ला की महबूबियत भी हासिल हो गयी, और तबीयत भी सैर हो गयी।

यह अ़मल कर लें

घर में दाख़िल हुए और बच्चा खेलता हुआ अच्छा मालूम हुआ, और दिल चाहा कि उसको गोद में उठालें, लेकिन एक लम्हे को रुक गये कि नहीं उठायेंगे, फिर दूसरे लम्हे दिल में यह ख़्याल लाये कि हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्ल० बच्चों पर शफ़्क़त फ़रमाते हुए उनको गोद में उठा लिया करते थे, मैं भी आपकी इत्तिबा में बच्चे को गोद में उठाऊंगा, चुनांचे हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की इत्तिबा में जब बच्चे को उठाया तो यह अ़मल अल्लाह तआ़ला की महबूबियत का ज़रिया बन गया, दुनिया का कोई ऐसा काम नहीं है जिसमें सुन्नत की इत्तिबा की नियत न कर

सकते हों, आपकी सुन्नतों पर किताब छपी हुई है "उसवा–ए–रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम" वह किताब सामने रख लें, एक एक सुन्नत देखते जायें और अपनी ज़िन्दगी में दाख़िल करते जायें, फिर देखोगे इन्शा अल्लाह इन सुन्नतों का कैसा नूर हासिल होता है, और फिर तुम्हारा हर दिन सीरतुन्नबी सल्ल० का दिन होगा, और हर लम्हा सीरतुन्नबी सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का लम्हा होगा, अल्लाह तआ़ला मुझे और आप सबको इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये।

وآخردعوانا ان الحمد لله رب العالمين

सीरतुन्नबी के जल्से और जुलूस

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْمًا كَثِيْرًا كَثِيْرًا اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا. (سورة الاحزاب: ٢١)

آمنت بالله صدق الله مولانا العظيم، وصدق رسوله النبى الكريم، ونحن على ذلك من الشاهدين والشاكرين، والحمد لله رب العلمين.

आपका ज़िक्रे मुबारक

बुज़ुर्गाने मुह्तरम व बिरादराने अज़ीज़! नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़िक्र इन्सान की अ़ज़ीम तरीन सआ़दत है, और इस रूए ज़मीन पर किसी भी हस्ती का तज़्किरा इतना बाइसे अज्र व सवाब ख़ैर व बरकत नहीं हो सकता, जितना सरवरे कायनात हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का तज़्किरा हो सकता है, लेकिन तज़्किरे के साथ साथ इन सीरते तैयबा की महफ़िलों में हमने बहुत सी ऐसी ग़लत बातें शुरू कर दी हैं, जिनकी वजह से ज़िक्रे मुबारक का सही फ़ायदा और सही नतीजा हमें हासिल नहीं हो रहा है।

सीरते तैयबा और सहाबा—ए—किराम

उन ग़लतियों में से एक ग़लती यह है कि हमने सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़िक्रे मुबारक सिर्फ़ एक महीने यानी रबीउल अव्वल के साथ ख़ास कर दिया है, और

रबीउल अव्वल के भी सिर्फ़ एक दिन और एक दिन में भी सिर्फ़ चन्द घन्टे नबी–ए–करीम का ज़िक्र करके हम यह समझते हैं कि हमने नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हक़ अदा कर दिया है, यह हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरते तैयबा के साथ इतना बड़ा ज़ुल्म है कि इस से बड़ा ज़ुल्म सीरते तैयबा के साथ कोई और नहीं हो सकता।

सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हु की पूरी ज़िन्दगी में कहीं यह बात आपको नज़र नहीं आयेगी, और न आपको इसकी एक मिसाल मिलेगी कि उन्हों ने १२ रबीउल अव्वल को ख़ास जश्न मनाया हो, ईद मीलादुन्नबी का एहतिमाम किया हो, या इस महीने के अन्दर सीरते तैयबा की महफ़िलें मुन्अ़क़िद (आयोजित) की हों, इसके बजाये सहाबा–ए–किराम का तरीक़ा यह था कि उनकी ज़िन्दगी का एक एक लम्हा सरवरे कायनात सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तज़्किरे की हैसियत रखता था, जहां दो सहाबा मिले उन्हों ने आपकी हदीसों और आपके इरशादात, आपकी दी हुयी तालीमात का, आपकी मुबारक ज़िन्दगी के मुख़्तलिफ़ वाक़िआत का तज़्किरा शुरू कर दिया, इसलिये उनकी हर महफ़िल सीरते तैयबा की महफ़िल थी, उनकी हर बैठक सीरते तैयबा की बैठक थी, इसका नतीजा यह था कि उनको नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ मुहब्बत और तअ़ल्लुक़ के इज़हार के लिये रस्मी मुज़ाहरों की ज़रूरत न थी, कि ईद मीलादुन्नबी मनाई जा रही है और जलूस निकाले जा रहे हैं, जल्से हो रहे हैं, चिरागां किया जा रहा है, इस क़िस्म के कामों की सहाबा–ए–किराम, ताबईन और तबए ताबईन के ज़माने में एक मिसाल भी पेश नहीं की जा सकती।

इस्लाम रस्मी मुज़ाहरों का दीन नहीं

बात हक़ीक़त में यह थी कि रस्मी मुज़ाहरे करना सहाबा–ए–किराम की आ़दत नहीं थी, वे इसकी रूह को अपनाये हुये थे,

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इस दुनिया में क्यों तश्रीफ़ लाये थ? आपका क्या पैग़ाम था? आपकी क्या तालीम थी? आप दुनिया से क्या चाहते थे? इस काम के लिये उन्हों ने अपनी सारी ज़िन्दगी को वक़्फ़ कर दिया, लेकिन इस क़िस्म के रसमी मुज़ाहरे नहीं किये, और यह तरीक़ा हमने ग़ैर मुस्लिमों से लिया है, हमने दिखा कि ग़ैर मुस्लिम क़ौमें अपने बड़े बड़े लीडरों के दिन मनाया करती हैं, और उन दिनों में जश्न और ख़ास महफ़िल मुन्अ़क़िद (आयोजित) करती हैं, और उनकी देखा देखी हमने सोचा कि हम भी नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के तज़्किरे के लिये ईद मीलादुन्नबी मनायेंगे, और यह नहीं देखा कि जिन लोगों के नाम पर कोई दिन मनाया जाता है, हक़ीक़त में ये वे लोग होते हैं जिनकी ज़िन्दगी के तमाम लम्हात को क़ाबिले इक़्तिदा और क़ाबिले तक़्लीद नहीं समझा जाता, बल्कि या तो वह सियासी लीडर होता है, या किसी और दुनियावी मामले में लोगों का रहनुमा होता है। तो सिर्फ़ उसकी याद ताज़ा करने के लिये उसका दिन मनाया गया लेकिन उस रहनुमा के बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि उसकी ज़िन्दगी का एक एक लम्हा क़ाबिले तक़्लीद है, और इस दुनिया में जो कुछ किया वह सही किया है, वह मासूम और ग़लतियों से पाक था, इसलिये उसकी हर चीज़ को अपनाया जाये, उनमें से किसी के बारे में भी यह नहीं कहा जा सकता।

आपकी ज़िन्दगी हमारे लिये नमूना है

लेकिन यहां तो सरकारे दो जहां सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के बारे में अल्लाह तआ़ला इरशाद फ़रमाते हैं कि हमने आपको भेजा ही इस मक़्सद लिये था कि आप इन्सानियत के सामने एक मुकम्मल और बेहतरीन नमूना पेश करें, ऐसा नमूना बन जायें, जिस को देख कर लोग नक़ल उतारें, उसकी तक़्लीद करें, उस पर अ़मल पैरा हों, और अपनी ज़िन्दगी को उसके मुताबिक़ ढालने की

कोशिश करें, इस ग़र्ज़ के लिये नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को इस दुनिया में भेजा गया था, आपकी ज़िन्दगी का हर एक लम्हा हमारे लिये एक मिसाल है, एक नमूना है और एक क़ाबिले तक़्लीद अ़मल है, और हमें आपकी ज़िन्दगी के एक एक लम्हे की नक़ल उतारनी है, और एक मुसलमान की हैसियत से हमारा यह फ़रीज़ा है। इसलिये हम नबी-ए-करीम सल्ल० को दुनिया के दूसरे लीडरों पर क़ियास नहीं कर सकते, कि उनका एक दिन मना लिया और बात ख़त्म हो गयी बल्कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पाक ज़िन्दगी को हमारी ज़िन्दगी के एक एक शोबे के लिये अल्लाह तआ़ला ने नमूना बना दिया है, और सब चीज़ों में हमें उनकी इक़्तिदा करनी है, हमारा ज़िन्दगी का हर दिन उनकी याद मनाने का दिन है,।

हमारी नियत दुरुस्त नहीं

दूसरी बात यह है कि सीरत की महफ़िलें और जल्से जगह जगह आयोजित होते हैं, और उनमें नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरते तैयबा को बयान किया जाता है लेकिन बात असल में यह है कि काम कितना ही अच्छे से अच्छा क्यों न हो, मगर जब तक काम करने वाले की नियत सही नहीं होगी, जब तक उसके दिल में दाईया और जज़्बा सही नहीं होगा, उस वक़्त तक वह काम बेकार, बेफ़ायदा, बे मस्रफ़, बल्कि कभी कभी मुज़िर, नुक़सान-दह और गुनाह का सबब बन जाता है, देखिये नमाज़ कितना अच्छा अ़मल है और अल्लाह तआ़ला की इबादत है और कुरआन व हदीस नमाज़ के फ़ज़ाइल से भरे हुए हैं, लेकिन अगर कोई शख़्स नमाज़ इसलिये पढ़ रहा है ताकि लोग मुझे नेक,मुत्तक़ी और पारसा समझें, ज़ाहिर है कि वह सारी नमाज़ अकारत है, बे-फ़ायदा है, बल्कि ऐसी नमाज़ पढ़ने से सवाब के बजाये उल्टा गुनाह होगा, हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम ने इरशाद फ़रमाया किः

"من صلى يرائى فقد اشرك بالله" (مسند احمد)

"जो शख़्स लोगों के दिखाने के लिये नमाज़ पढ़े तो गोया कि उसने अल्लाह के साथ दूसरे को शरीक ठहराया"।

इसलिये कि वह नमाज़ अल्लाह को राज़ी करने के लिये नहीं पढ़ रहा है, बल्कि मख़्लूक़ को राज़ी करने के लिये और मख़्लूक़ में अपना तक़्वा और नेकी का रोब जमाने के लिये पढ़ रहा है, इस लिये वह ऐसा है जैसे उसने अल्लाह के साथ मख़्लूक़ को शरीक ठहराया, इतना अच्छा काम था, लेकिन सिर्फ़ नियत की ख़राबी की वजह से बेकारे हो गया, और उल्टा गुनाह का सबब बन गया।

यही मामला सीरते तैयबा के सुनने और सुनाने का है, अगर कोई शख़्स सीरते तैयबा को सही मक़्सद, सही नियत और सही जज़्बे से सुनता और सुनाता है तो यह काम बिला शुबह् अज़ीमुश्शान सवाब का काम है और बाइसे ख़ैर व बरकत है, और ज़िन्दगी में इन्क़िलाब लाने का मूजिब है, लेकिन अगर कोई श्ख़्स सीरते तैयबा को सही नियत से नहीं सुनता, और सही नियत से नहीं सुनाता, बल्कि उसके ज़रिये कुछ और ग़र्ज़ें व मक़ासिद दिल में में छुपे हुए हैं, और जिनके तहत सीरते तैयबा के जल्से और महफ़िलें आयोजित की जा रही हैं, तो भाईयो! यह बड़े घाटे का सौदा है, इसलिये कि ज़ाहिर में तो नज़र आ रहा है कि आप बहुत नेक काम कर रहे हैं, लेकिन हक़ीक़त में वह उल्टा गुनाह का सबब बन रहा है, और अल्लाह तआला के अज़ाब और नाराज़गी का सबब बन रहा है।

नियत कुछ और है

इस नुक़ता-ए-नज़र से अगर हम अपना जायज़ा लेकर देखें, और सच्चे दिल से नेक नियती के साथ अपने गरेबान में मुंह डाल कर देखें कि उन तमाम महफ़िलों में जो कराची से पिशावर तक

मुन्अ़क़िद (आयोजित) हो रही हैं, क्या उनके मुन्तज़िमीन इस बिना पर महफ़िल मुंअ़क़िद कर रहे हैं, कि हमारा मक़सद अल्लाह तआ़ला को राज़ी करना है? और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की पैरवी मक़्सूद है? क्या इसलिये महफ़िल मुन्अ़क़िद कर रहे हैं कि नबी—ए—करीम सल्ल० की जो तालीमात उन महफ़िलों में सुनेंगे उनको अपनी ज़िन्दगी में ढालने की कोशिश करेंगे? कुछ अल्लाह के नेक बन्दे ऐसे भी होंगे जिनकी यह नियत होगी, लेकिन एक आ़म तर्ज़े अ़मल देखिये तो यह नज़र आयेगा कि महफ़िल मुन्अ़क़िद करने के मक़ासिद ही कुछ और हैं, नियतें ही कुछ और हैं, यह नियत नहीं है कि इस जल्से में शिर्कत के बाद हम नबी—ए—करीम की सुन्नतों पर अ़मल पैरा होने की कोशिश करेंगे, बल्कि नियत यह है कि मौहल्ले की कोई अन्जुमन है, जो अपना असर रुसूख़ बढ़ाने के लिये जल्सा मुन्अ़क़िद कर रही है, और यह ख़्याल है कि जल्सा सीरतुन्नबी करने से हमारी अन्जुमन की शोहरत हो जायेगी, कोई जमाअ़त इसलिये जल्सा—ए—सीरतुन्नबी मुन्अक़िद कर रही है कि इस जल्से के ज़रिये हमारी तारीफ़ होगी कि बड़ा शान—दार जल्सा किया, बड़े आला दर्जे के मुक़र्रिरीन बुलाये, और बड़े मजमे ने इसमें शिर्कत की और मजमे ने उनकी बड़ी तारीफ़ की, कहीं जल्से इसलिये मुनअ़क़िद हो रहे हैं कि अपनी बात कहने का कोई और मौक़ा तो मिलता नहीं है, कोई सियासी बात है या कोई फ़िर्क़े वाराना (साम्परदायक) बात है जिसको किसी और पलेट फ़ार्म पर ज़ाहिर नहीं किया जा सकता, इसलिये सीरतुन्नबी का एक जल्सा मुनअ़क़िद करलें, और उसमें अपने दिल की भड़ास निकाल लें, चुनांचे उस जल्से में पहले हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तारीफ़ और तौसीफ़ के दो चार जुम्ले बयान हो गये और उसके बाद पूरी तक़्रीर में अपने मक़ासिद बयान हो रहे हैं, और फ़रीक़े मुख़लिफ़ पर बमबारी हो रही है, इस ग़र्ज़ के लिये

जल्से मुनअ़क़िद हो रहे हैं।

दोस्त की नाराज़गी के डर से शिर्कत

फिर देखने की बात यह है कि अगर वाक़िअ़तन सच्चे दिल से सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात पर अ़मल करने की नियत से हमने यह महफ़िलें मुन्अ़क़िद की होतीं तो फिर हमारा तरीक़ा कुछ और होता, एक घर में एक महफ़िले मीलाद मुन्अ़क़िद हो रही है, अब अगर उस महफ़िल में उसका कोई दोस्त या रिश्तेदार शरीक नहीं हुआ तो उसको ताना दिया जा रहा है और उस पर मलामत की जा रही है, और उस से शिकायतें हो रही हैं, उस महफ़िल में शिर्कत करने वालों की नियत यह नहीं कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरत सुननी है, और उस पर अ़मल करना है बल्कि नियत यह है कि कहीं महफ़िल मुन्अक़िद करने वाले हम से नाराज़ न हो जायें, और उनके दिल में शिकायत पैदा न हो जाये, अल्लाह को राज़ी करने की फ़िक्र नहीं है, महफ़िल मुन्अक़िद करने वालों को राज़ी करने की फ़िक्र है।

मुक़र्रिर का जोश देखना मक़्सूद है

कोई शख़्स इसलिये जल्से में शिर्कत कर रहा है कि उसमें फ़लां मुक़र्रिर साहिब तक़्रीर करेंगे, ज़रा जाकर देखें कि वह कैसी तक़्रीर करते हैं, सुना है कि बड़े जोशीले और शानदार मुक़र्रिर हैं, गोया कि तक़्रीर का मज़ा लेने के लिये जा रहे हैं, तक़्रीर के जोश व ख़रोश का अन्दाज़ा करने के लिये जा रहे हैं, और यह देखने के लिये जा रहे हैं कि फ़लां मुक़र्रिर कैसे गा गा कर शेर पढ़ता है कितने वाक़िआ़त सुनाता है।

वक़्त गुज़ारी की नियत है

कुछ लोग इसलिये सीरतुन्नबी के जल्से में शिर्कत कर रहे हैं

कि चलो आज कोई और काम नहीं है, और वक़्त गुज़ारी करनी है, चलो किसी जल्से में जाकर बैठ जाओ तो वक़्त गुज़र जायेगा। और बे शुमार अफ़्राद इसलिये शरीक हो रहे हैं कि घर में तो दिल नहीं लग रहा है और मौहल्ले में एक जल्सा हो रहा है, चलो उसमें थोड़ी देर जाकर बैठ जायें, और जितनी देर दिल लगेगा, वहां बैठे रहेंगे, और जब दिल घबरायेगा, उठ कर चले आयेंगे, इस लिये मक़्सद यह नहीं कि सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरते तैयबा को हासिल किया जाये, बल्कि मक़्सद यह है कि कुछ वक़्त गुज़ारी का सामान हो जाये, अगरचे कभी कभी इस तरह वक़्त गुज़ारी के लिये जाना भी फ़ायदे मन्द हो जाता है, अल्लाह के रसूल की कोई बात कान में पड़ जाती है, और उस से इन्सान की ज़िन्दगी बदल जाती है, ऐसे वाक़िआ़त भी हुए हैं, लेकिन मैं नियत की बात कर रहा हूं कि जाते वक़्त नियत दुरुस्त नहीं होती, यह नियत नहीं होती कि मैं जाकर रसूलुल्लाह सल्ल–ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरत सुन कर उस पर अ़मल पैरा हूंगा।

हर शख़्स सीरते तैयबा से फ़ायदा नहीं उठा सकता

कुरआन करीम यह कहता है कि:

"لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِىْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ"

"तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल की ज़िन्दगी में बेहतरीन नमूना है, और आप की पाक ज़िन्दगी मश्अ़ले राह है, यह एक पैग़ामे हिदायत है, और यह एक उसवा–ए–हसना है, एक मुकम्मल नमूना है, लेकिन हर शख़्स के लिये नमूना नहीं है, बल्कि उस शख़्स के लिये जो अल्लाह तबारक व तआ़ला को राज़ी करना चाहता हो, और उस शख़्स के लिये जो आख़िरत के दिन को संवारना चाहता हो और आख़िरत के दिन पर उसका पूरा ईमान और यक़ीन और भरोसा हो, और वह अल्लाह तबारक व तआ़ला को कस्रत से याद

करता हो, जिस शख़्स में यह औसाफ़ (सिफ़तें) पाये जायेंगे उसके लिये सीरते तैयबा एक पैग़ामे हिदायत है।

लेकिन जिस शख़्स के अन्दर यह औसाफ़ मौजूद नहीं और जो अल्लाह को राज़ी करना नहीं चाहता, और जो आख़िरत के दिन पर भरोसा नहीं रखता, और आख़िरत के दिन को संवारने के लिये यह काम नहीं करता, और वह अल्लाह को कस्रत से याद नहीं करता, उसके लिये इस बात की कोई गारन्टी नहीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरते तैयबा उसके लिये हिदायत का पैग़ाम बन जायेगी, सीरते तैयबा तो अबू जहल के सामने भी थी, और अबू लहब के सामने भी थी, उमैया बिन ख़लफ़ के सामने भी थी, लेकिन वे सीरते तैयबा से फ़ायदा नहीं उठा सके।

बारां कि दर लताफ़ते तबअ़श ख़िलाफ़ नेस्त
दर बाग़ लाला रोयद व दर शोरा बूम ख़स

यानी वह ज़मीन ही बंजर थी, और उस बंजर ज़मीन में हिदायत का बीज नहीं डाला जा सकता था, वह बार आवर नहीं हो सकता था, इसलिये अगर किसी शख़्स के दिल में अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने की फ़िक्र नहीं, और आख़िरत को संवारने की फ़िक्र नहीं, और अल्लाह की याद उसके दिल में नहीं है तो फिर किसी सूरत में नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरते तैयबा से वह शख़्स अपनी ज़िन्दगी में फ़ायदा नहीं उठा सकता।

इसलिये ये सारे मनाज़िर जो हम देख रहे हैं इसमें बहुत सी बार हमारी नियतें दुरुस्त नहीं होतीं, और उसका नतीजा यह है कि हज़ारों तक़रीरें सुन लीं, और हज़ारों महफ़िलों में शिर्कत करली, लेकिन ज़िन्दगी जैसी पहले थी वैसी आज भी है, जिस तरह पहले हमारे दिलों में गुनाहों का शौक़ और गुनाहों की तरफ़ रग़बत थी वह आज भी मौजूद है, उसके अन्दर कोई फ़र्क़ नहीं आया।

आपकी सुन्नतों का मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है

तीसरी बात यह है कि इन्ही सीरते तैयबा के नाम पर मुन्अ़किद होने वाली महफ़िलों में बिल्कुल महफ़िल के दौराना हम ऐसे काम करते हैं कि जो सरकारे दो आलम मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के इरशादात के क़तई ख़िलाफ़ हैं। सरकारे दो आ़लाम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का नाम लिया जा रहा है, आपकी तालीमात, आपकी सुन्नतों का ज़िक्र किया जा रहा है, लेकिन अ़मलन हम उन तालीमात का, उन सुन्नतों का, उन हिदायात का मज़ाक़ उड़ा रहे हैं जो नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम लेकर आये थे।

सीरत के जल्से और बे–पर्दगी

चुनांचे हमारे मुआ़शरे मे अब ऐसी महफ़िलें कस्रत से होने लगी हैं जिनमें मख़्लूत (मिला जुला) इज्तिमा है और औ़रतें और मर्द साथ बैठे हुए हैं, और सीरते तैयबा का बयान हो रहा है, नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने औ़रतों को फ़रमाया कि आगर तुम्हें नमाज़ भी पढ़नी हो तो मस्जिद के बजाये घर में पढ़ो, और घर में आंगन के बजाये कमरे में पढ़ो, और कमरे में बेहतर यह है कि कोठरी में पढ़ो, औ़रत के बारे में आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह हुक्म दे रहे हैं, लेकिन उन्ही सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़िक्र हो रहा है, जिसमें औ़रतें और मर्द मख़्लूत इज्तिमाआ़त में शरीक हैं, और किसी अल्लाह के बन्दे को यह ख़्याल नहीं आता कि सीरते तैयबा के साथ क्या मज़ाक़ हो रहा है, पूरी आराइश और ज़ेबाइश के साथ सज धज कर बेपर्दा होकर ख़्वातीन शरीक हो रही हैं, और मर्द भी साथ मौजूद हैं।

सीरत के जल्से में मौसीक़ी

नबी–ए–करीम सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व

सल्लम ने इरशाद फ़रमाया था कि मुझे जिस काम के लिये भेजा गया है, उसमें से एक अहम काम यह है कि मैं बाजों बांसुरियों को और साज़ व सुरूर को और मौसीक़ी के यन्त्रों को इस दुनिया से मिटा दूं, लेकिन आज उन्ही सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के नाम पर महफ़िल मुन्अक़िद हो रही है, जल्सा हो रहा है और उसमें साज़ व सुरूर के साथ नअ़्त पढ़ी जा रही है, और उसमें क़व्वाली शरीफ़ हो रही है, क़व्वाली के साथ लफ़्ज़ "शरीफ़" भी लग गया है, और उसमें पूरे आब व ताब के साथ हारमूनियम बज रहा है, साज़ व सुरूर हो रहा है, आम गानों में और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नअ़्त में कोई फ़र्क़ नहीं रखा जा रहा है, नबी-ए-क़रीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ इस से बड़ा मज़ाक़ और क्या हो सकता है।

इसके अलावा रेडियो और टेली वीज़न पर औरतें और मर्द मिल कर नअ़्तें पढ़ रहे हैं, टेली वीज़न देखने वालों ने बताया कि औरतें पूरी आराइश और ज़ेबाइश के साथ टेली वीज़न पर आ रही हैं, यह क्या मज़ाक़ है जो आप की सीरते तैयबा और आप की तालीमात के साथ हो रहा है, औरत जिसके बारे में कुरआन करीम ने फ़रमाया कि:

"وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ" (سورة الاحزاب:۳۳)

यानी ज़माना-ए-जाहिलिय्यत की तरह तुम बनाव सिंघार करके मर्दों के सामने मत आओ, आज वही औरत पूरे मैक-अप और बनाव सिंघार के साथ मर्दों के सामने आ रही है, और नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शान में नअ़्त पढ़ रही है, नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नअ़्त और सीरत के साथ इस से बड़ा ज़ुल्म और क्या हो सकता है? अगर आप यह समझते हैं कि इन चीज़ों की वजह से अल्लाह की रहमत आपकी तरफ़ मुतवज्जह होगी तो फिर आपसे ज़्यादा धोखे में कोई और नहीं है, नबी-ए-करीम सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम की सुन्नतों को मिटा कर, आपकी तालीमात की ख़िलाफ़ वर्ज़ी (उल्लंघन) करके, आपकी सीरते तैयबा की मुख़ालफ़त करके और उसका मज़ाक़ उड़ा कर भी अगर आप इसके मुतमन्नी हैं कि अल्लाह की रहमतें आप पर निछावर हों तो इससे बड़ा मुग़ालता और इससे बड़ा धोखा इस रूए ज़मीन पर कोई और नहीं हो सकता। अल्लाह की पनाह......ये तो अल्लाह तआला के अ़ज़ाब और उसके ग़ुस्से को दावत देनी वाली बातें हैं, वे काम जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की ना–फ़रमानी के काम हैं, वे हम ऐ़न सीरते तैयबा करते वक़्त करते हैं।

सीरत के जल्से में नमाज़ें क़ज़ा

पहले बात सिर्फ़ जल्सों की हद तक सीमित थी कि सीरते पका का जल्सा हो रहा है उसमें शरीअ़त की चाहे जितनी ख़िलाफ़ वर्ज़ी हो रही है, किसी को परवाह नहीं, लेकिन अब तो बात और आगे बढ़ रही है, चुनांचे देखने और सुनने में आया है कि आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरते तैयबा के जल्से के इन्ति–ज़ामात हो रहे हैं, और उन इन्तिज़ामात में नमाज़ें क़ज़ा हो रही हैं, किसी शख़्स को नमाज़ का होश नहीं, फिर रात के दो दो बजे तक तक़रीरें हो रही हैं, और सुबह फ़जर की नमाज़ जा रही है, जबकि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद तो यह था कि जिस शख़्स की एक असर की नमाज़ फ़ौत हो जाये तो वह शख़्स ऐसा है जैसे उसके तमाम माल और तमाम अहल व अ़याल को कोई शख़्स लूट कर लेगया, इतना अ़ज़ीम नुक़्सान है......लेकिन सीरते तैयबा के जल्से के इन्तिज़ामात में नमाज़ें क़ज़ा हो रही हैं और कोई फ़िक्र नहीं, इसलिये कि हम तो एक मुक़द्दस काम में लगे हुये हैं, और नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नमाज़ की जो ताकीद बयान फ़रमाई थी वह निगाहों से ओझल है।

सीरत के जल्से और ईज़ा-ए-मुस्लिम

और सुनियेः सीरते तैयबा का जल्सा हो रहा है, जिसमें कुल पच्चीस तीस सुनने वाले बैठे हैं, लेकिन लाऊड स्पीकर इतना बड़ा लगाना ज़रूरी है कि उसकी आवाज़ पूरे मौहल्ले में गूंजे, जिसका मतलब यह है कि जब तक जल्सा ख़त्म न हो जाये उस वक़्त तक मौहल्ले का कोई बीमार, कोई ज़ईफ़, कोई बूढ़ा और माज़ूर आदमी सो न सके, हालांकि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का अ़मल तो यह था कि आप तहज्जुद की नमाज़ के लिये बेदार हो रहे हैं, लेकिन किस तरह बेदार हो रहे हैं? हज़रते आ़यश सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अ़न्हा बयान फ़र्माती हैं कि "फ़क़ा-म रुवैदन" आप धीरे से उठे, कहीं ऐसा न हो कि आ़यशा (रज़ियल्लाहु अ़न्हा) की आंख खुल जाये, "फ़-तहल बा-ब रुवैदन" आहिस्ता से दरवाज़ा खोला, कहीं ऐसा न हो कि आ़यशा (रज़ियल्लाहु अ़न्हा) की आंख खुल जाये, और नमाज़ जैसे फ़रीज़े के अन्दर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का यह अ़मल था कि हदीस में नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अगर मैं नमाज़ में किसी बच्चे के रोने की आवाज़ सुनता हूं तो नमाज़ को मुख़्तसर कर देता हूं, कहीं ऐसा न हो कि उस बच्चे की आवाज़ सुन कर उसकी मां किसी मशक़्क़त में मुब्तला हो जाये, लेकिन यहां बिला ज़रूरत, बग़ैर किसी वजह के, सिर्फ़ 25,30 सुनने वालों को सुनाने के लिये इतना बड़ा लाऊड स्पीकर नसब है कि कोई ज़ईफ़, बीमार आदमी अपने घर में सो नहीं सकता, और इन्तिज़ाम करने वाले इससे बे ख़बर हैं कि कितने बड़े कबीरा गुनाह का काम हो रहा है, इसलिये कि ईज़ा-ए-मुस्लिम (मुसलमान को तक्लीफ़ देना) कबीरा गुनाह है, इसका किसी को एहसास नहीं।

(निसाई शरीफ़)

दूसरों की नक़्क़ाली में जुलूस

हमारा यह सारा तरीक़ा इस बात पर दलालत कर रहा है कि हक़ीक़त में नियत दुरुस्त नहीं है, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात को अपनाने और उस पर अ़मल करने की नियत नहीं है बल्कि मक़ासिद कुछ और हैं, और जैसा कि मैंने अ़र्ज़ किया, पहले सिर्फ़ जल्सों की हद तक बात थी, अब तो जल्सों से आगे बढ़ कर जुलूस निकलना शुरू हो गये, और उसके लिये इस्तिदलाल यह किया जाता है कि फ़लां फ़िर्क़ा फ़लां महीने में अपने इमाम की याद में जुलूस निकालता है तो फिर हम अपने नबी के नाम पर रबीउल अव्वल में जुलूस क्यों न निकालें, गोया कि अब उनकी नक़ल उतारी जा रही है कि जब मुहर्रम का जुलूस निकलता है तो रबीउल अव्वल का भी निकलना चाहिये, बज़ाते ख़ुद यह समझ रहे हैं कि हम नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के अहकाम के मुताबिक़ अ़मल कर रहे हैं, और आपकी अज़्मत और मुहब्बत का हक़ अदा कर रहे हैं।

लेकिन इस पर ज़रा ग़ौर करें कि अगर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ख़ुद उस जुलूस को देख लें जो आपके नाम पर निकाला जा रहा है तो क्या आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उसको गवारा और पसन्द फ़रमायेंगे? नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने तो हमेशा इस उम्मत को इन रस्मी मुज़ाहरों से बचने की तलक़ीन फ़रमाई, चुनांचे आप सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ज़ाहरी और रस्मी चीज़ों की तरफ़ जाने के बजाये मेरी तालीमात की रूह को देखो, और मेरी तालीमात को अपनी ज़िन्दगी में अपनाने की कोशिश करो, सहाबा–ए–किराम रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की पूरी हयाते तैयाबा में कोई शख़्स एक नज़ीर या एक मिसाल इस बात पर पेश कर सकता है कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरत के नाम पर रबीउल अव्वल

में या किसी और महीने में कोई जुलूस निकाला गया हो? बल्कि पूरे तेरह सौ साल की तारीख़ में कोई एक मिसाल कम से कम मुझे तो नहीं मिली कि किसी ने आपके नाम पर जुलूस निकाला हो। हां! शिया हज़रात मुहर्रम में अपने इमाम के नाम पर जुलूस निकाला करते थे, हमने सोचा कि उनकी नक़्क़ाली में हम भी जुलूस निकालेंगे, हालांकि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का इरशाद है:

"من تشبه بقوم فهو منهم" (ابواؤد شريف)

"जो शख़्स किसी क़ौम के साथ मुशाबहत इख़्तियार करता है वह उनमें से हो जाता है" और सिर्फ़ जुलूस निकालने पर बस नहीं की, बल्कि उस से आग बढ़ कर यह हो रहा है कि काबे शरीफ़ की शबीहें बनाई जा रही हैं, रौज़ा-ए-अक़्दस की शबीहें बनाई जा रही हैं, गुंबदे ख़िज़रा की शबीहें बनाई जा रही हैं, पूरा "लालू खेत" इन चीज़ों से भरा हुआ है, और दुनिया भर की औरतें, बच्चे, बूढ़े इसको बरकत वाला समझ कर बर्कत हासिल करने के लिये उसको हाथ लगाने की कोशिश कर रहे हैं, वहां जाकर दुआयें मांगी जा रही हैं, मन्नतें मांगी जा रही हैं, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरते तैयबा के नाम पर यह क्या हो रहा है? नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम शिर्क को, बिद्अ़तों को, और जाहिलिय्यत को मिटाने के लिये दुनिया में तश्रीफ़ लाये, और आज आपने नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ही के नाम ये सारी बिद्अ़तें शुरू कर दीं, रौज़ा-ए-अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को इस गुंबद से कोई मुनासबत नहीं, जो आपने अपने हाथों बना कर खड़ा कर दिया है, लेकिन इसका नतीजा यह है कि उसको मुक़द्दस समझ कर बरकत हासिल करने के लिये कोई उसको चूम रहा है, कोई उसको हाथ लगा रहा है।

हज़रत उमर और हज्रे अस्वद

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हु तो हज्रे अस्वद को चूमते वक़्त फ़रमाते हैं कि ऐ हज्रे अस्वद! मैं जानता हूं तू एक पत्थर के सिवा कुछ नहीं है, ख़ुदा की क़सम! अगर मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ल-ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को मैंने तुझे चूमता हुआ न देखा होता तो मैं तुझे कभी न चूमता, लेकिन मैंने नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को चूमते हुए देखा है, और उनकी यह सुन्नत है इस वास्ते मैं तुझे चूमता हूं। (सही बुख़ारी शरीफ़)

वहां तो हज्रे अस्वद को यह कहा जा रहा है, और यहां अपने हाथ से एक गुंबद बना कर खड़ा कर दिया, अपने हाथ से एक काबा बना कर खड़ा कर दिया, और उसको मुतबर्रक समझा जा रहा है और उसको चूमा जा रहा है, यह तो नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जिस चीज़ को मिटाने के लिये तशरीफ़ लाये थे उसी को ज़िन्दा किया जा रहा है। चिराग़ां हो रहा है, रिकार्डिंग हो रही है, गाने बजाने हो रहे हैं, तफ़रीह बाज़ी हो रही है, नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के नाम पर मेला मुन्अ़क़िद किया हुआ है, यह दीन को खेलकूद बनाने का एक बहाना है, जो शैतान ने हमें सिखा दिया है ख़ुदा के लिये हम अपनी जानों पर रहम करें और सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरते तैयबा की अ़ज़्मत और मुहब्बत का हक़ अदा करें और उसकी अ़ज़्मत और मुहब्बत का हक़ यह है कि अपनी ज़िन्दगी को उनके रास्ते पर ढालने की कोशिश करें।

ख़ुदा के लिये इस तरीक़े को बदलें

सीरते तैयाबा के जल्से में कोई आदमी इस नियत से नहीं आता कि हम इस महफ़िल में इस बात का अ़हद करेंगे कि अगर हम नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात के ख़िलाफ़ पहले पचास काम किया करते थे तो अब कम से कम

उसमें से दस छोड़ देंगे, किसी ने इस तरह अ़हद किया? किसी ने इस तरह ईद मीलादुन्नबी मनाई? कोई एक शख़्स भी इस काम के लिये तैयार नहीं, लेकिन जुलूस निकालने के लिये, मेले सजाने के लिये, मेहराबें खड़ी करने के लिये, चिराग़ां करने के लिये हर वक़्त तैयार हैं। इन कामों पर जितना चाहो रुपया ख़र्च करवा लो, और ज़ितना चाहो, वक़्त लगवा लो, इसलिये कि इन कामों में नफ़्स को लुत्फ़ मिलता है, लज़्ज़त आती है और नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सीरते तैयबा का जो असल रास्ता है उसमें नफ़्स व शैतान को लज़्ज़त नहीं मिलती। ख़ुदा के लिये हम अपने इस तर्ज़े अ़मल (तरीक़े) को ख़त्म करें और नबी–ए–करीम सल्ल–ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की अ़ज़्मत व मुहब्बत का हक़ पहचानें, अल्लाह तआ़ला हम सबको सुन्नतों पर अ़मल पैरा होने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन

وآخردعوانا ان الحمد لله رب العالمين

ग़रीबों का अपमान न कीजिए

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَاوَسَنَدَنَاوَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْماً كَثِيْرًا كَثِيْرًا اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ،بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

"وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ". (سورة الكهف:٢٨)

آمنت بالله صدق الله مولانا العظيم وصدق رسوله النبى الكريم ونحن علىٰ ذالك من الشاهدين والشاكرين۔ والحمد لله رب العالمين۔

यह अ़ल्लामा नववी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने एक दूसरा बाब क़ायम फ़रमायाः

"باب فضل ضعفة المسلمين والفقراء والخاملين"

यानी कमज़ोर मुसलमानों की फ़ज़ीलत के बयान में, यानी ऐसे मुसलमान जो माली एतिबार से कमज़ोर, मन्सब और ओहदे के एतिबार से कमज़ोर, जिस्मानी एतिबार से कमज़ोर हैं, उनके फ़ज़ा–इल के बयान में यह बाब क़ायम फ़रमाया है।

वे लोग कमज़ोर नहीं

इस बाब के क़ायम करने का मक़सद हक़ीक़त में इस बात की तरफ़ लोगों को मुतवज्जह करना है कि बाज़ लोग जिनको अल्लाह तआ़ला दुनियावी एतिबार से कोई मक़ाम अ़ता फ़रमा देते हैं। जैसे अल्लाह तआ़ला ने पैसे ज़्यादा दे दिये, या बड़ा ओहदा दे दिया, या शोहरत देदी, ये लोग आ़म तौर पर कमज़ोर लोगों को हक़ीर (ज़लील और बे क़द्र) समझने लगते हैं, और उनके साथ अपमान भरी बातें करते हैं, उनको मुतनब्बह करने के लिये यह बताया जा

रहा है कि एक आदमी बज़ाहिर कमज़ोर नज़र आ रहा है, चाहे वह माली एतिबार से कमज़ोर हो, या जिस्मानी एतिबार से कमज़ोर हो, उसके बारे में यह ख़्याल मत करो कि जह हक़ीर (ज़लील और बे क़द्र) है, क्या पता अल्लाह तबारक व तआ़ला के यहां यह शख़्स तुमसे कहीं ज़्यादा आगे निकल जाये, चुनांचे अ़ल्लामा नववी रह्म–तुल्लाहि अ़लैहि ने इस बाब के शुरू में पहले क़ुरआन करीम की आयत नक़ल की है, बारी तआ़ला का इर्शाद है:

"وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنَاكَ عَنْهُمْ".

इस आयत में हुज़ूर नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को ख़िताब किया जा रहा है कि अपने आपको उन लोगों के साथ रोके रखें जो सुबह व शाम अपने परवर्दिगार की इबादत महज़ उसकी रिज़ा हासिल करने के लिये करते हैं, और कहीं ऐसा न हो कि आपकी आंखें उनसे तजावुज़ करके दुनियावी ज़िन्दगी की रोनक़ की तरफ़ बढ़ने लगें, यानी आप कहीं यह न सोचें कि ये तो ग़रीब, फ़क़ीर और मामूली क़िस्म के लोग हैं, और मामूली हैसियत के आदमी हैं, इनकी तरफ़ देखने की क्या ज़रूरत है? और आप मालदारों की तरफ़ देखना शुरू कर दें।

अल्लाह के महबूब कौन?

आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ अल्लाह तआ़ला का जो राबता और तअ़ल्लुक़ है कौन मुसलमान उससे ना वाक़िफ़ होगा, अल्लाह तआ़ला को सारी कायनात में सबसे ज़्यादा महबूब हुज़ूरे अक़्दस सल्ल० हैं, आपसे ज़्यादा महबूब इस कायनात में कोई हो नहीं सकता, ऐसे महबूब हैं कि सारा क़ुरआन करीम आपकी ख़ूबी व सना में आपकी तारीफ़ में आपके औसाफ़ के बयान में भरा हुआ है, फ़रमाया कि:

"اِنَّا اَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا، وَدَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَسِرَاجًا

مُنِيْرًا" (سورة الاحزاب:٤٥،٤٦)

जब अल्लाह पाक अपने महबूब सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तारीफ़ करने पर आते हैं तो अल्फ़ाज़ के ढेर लगा देते हैं।

महबूबाना तंबीह

लेकिन सारे कुरआन करीम में दो या तीन जगहें ऐसी हैं जहां अल्लाह तआ़ला ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को थोड़ी सी महबूबाना तंबीह करते हुए फ़रमाया कि आपका यह अ़मल हमें पसन्द नहीं आया, उनमें से एक "सूरः अ़-ब-स" में है, जिस का वाक़िआ़ यह हुआ कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास मुश्रिकीन के कुछ सरदार आये हुये थे, आपने यह महसूस किया कि चूंकि ये बा असर और सरदार लोग हैं, अगर उनकी इस्लाह हो जाये तो उनके ज़रिये पूरी क़ौम की इस्लाह का रास्ता खुल सकता है, इसलिये आपके दिल में उनको तबलीग़ करने और दावते इस्लाम देने की ज़्यादा अहमियत पैदा हो गयी, इसलिये आप उनकी तरफ़ ज़्यादा मुतवज्जह हो गये, उसी दौरान हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम रज़ियल्लाहु अ़न्हु जो नाबीना (अंधे) सहाबी थे, जिन्हें हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने मस्जिदे नबवी में मुअज़्ज़िन भी मुक़र्रर फ़रमाया था, वह हुज़ूर की ख़िदमत में उस वक़्त आ गये, और हुज़ूर से कोई मस्अला पूछने लगे, आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने महसूस किया कि यह तो अपने ही आदमी हैं, रोज़ाना मुलाक़ात होती है, अगर इनको इस वक़्त मस्अला न बताया तो बाद में बता देंगे इसलिये आपने उनसे फ़रमाया कि तुम ज़रा सा ठहर जाओ, और मुश्रिकीन के जो सरदार थे, उनके साथ गुफ़्तगू में मश्ग़ूल रहे, ताकि उनको इस्लाम की तौफ़ीक़ हो जाये, इसलिये कि अगर ये मुसलमान हो जायेंगे तो पूरी क़ौम के मुसलमान होने का रास्ता खुल जायेगा, बस इतना वाक़िआ़ पेश आया, लेकिन अल्लाह जल्ल जलालुहू ने इस पर

तंबीह फ़रमाई, और यह आयत नाज़िल हुई।

"عَبَسَ وَتَوَلّٰی، اَنْ جَاءَهُ الْاَعْمٰی"

इन आयात में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को गायब के सीगे से ख़िताब फ़रमाया कि: उन्हों ने तेवरी चढ़ाई और मुंह मोड़ा, इसलिये कि उनके पास एक नाबीना शख़्स आ गया (गोया कि यह अ़मल अल्लाह तआ़ला को पसन्द नहीं आया)

"وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰی، اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰی"

तुम्हें क्या पता शायद वह नाबीना शख़्स संवर जाता, और नसीहत हासिल कर लेता, तो आपकी नसीहत उसको फ़ायदा पहुंचा देती।

"اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰی، فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰی"

जो शख़्स बे परवाई करता है (और तलब लेकर आपके पास नहीं आये, बल्कि दीने हक़ की तरफ़ से ला परवाई का इज़्हार करते हैं) आप उनकी फ़िक्र में पड़ते हैं।

"وَمَا عَلَيْكَ اَنْ لَّا يَزَّكّٰی"

हालांकि (याद रखो) अगर वे ठीक न हों तो आप पर कोई वबाल नहीं (जब उनके अन्दर ख़ुद तलब नहीं, बल्कि उनके अन्दर इस्तिग़ना (ला परवाई) है तो फिर आप पर कोई गिरफ़्त नहीं, और आपसे कोई जवाब तलबी नहीं होगी)

"اَمَّا مَنْ جَاءَكَ يَسْعٰی، وَهُوَ يَخْشٰی، فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰی"

और जो शख़्स दौड़ कर आपके पास आया है और दिल में अल्लाह का ख़ौफ़ लिये हुये है, तो आप उससे मुंह मोड़ते हैं।

(सूरः अ़-ब-स)

तालिब मुक़द्दम है

यह हुज़ूर नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को एक महबूबाना तंबीह फ़रमायी गयी, ज़ाहिर है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल-ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का हरगिज़ यह मन्शा नहीं था कि यह

कमज़ोर आदमी है, और वे ताक़तवर हैं, इसलिये उनसे मुंह मोड़ें, और ताक़तवर की तरफ़ मुतवज्जह हो जायें, बल्कि आपके ज़ेहन में यह मस्लिहत थी कि यह तो अपना आदमी है, इनसे तो बाद में भी बात हो सकती है, और ये लोग पता नहीं फिर दोबारा आयेंगे या न आयें, इसलिये इनको हक़ का कलिमा पहुंचा दिया जाये, लेकिन अल्लाह तआला ने उसको भी गवारा नहीं फ़रमाया, और फ़रमाया कि यह शख़्स जो तलब लेकर आया है वह उस शख़्स पर मुक़द्दम है जो तलब के बग़ैर बैठा है, और इस्तिग़ना (ला परवाई) का इज़हार करता है, उसकी तरफ़ ज़्यादा मुतवज्जह होने की ज़रूरत नहीं, जो तलब लेकर आया है उसकी तरफ़ तवज्जोह करें।

इन आयतों में अगरचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ख़िताब है, लेकिन आपके वास्ते से पूरी उम्मत को यह ताकीद फ़रमाई गयी है कि बज़ाहिर मामूली हैसियत के आदमी को हक़ीक़त में मामूली मत समझो, क्या पता कि अल्लाह तबारक व तआला के यहां उसका क्या दर्जा है, इसलिये उसके साथ इज़्ज़त व इक्राम से पेश आओ।

जन्नती कौन लोग हैं?

अल्लामा नववी रहमतुल्लाहि अलैहि ने इस बाब में पहली हदीस यह नक़ल की है कि:

"عن حارثة بن وهب رضى الله عنه قال: سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول: الا اخبركم باهل الجنة؟ كل ضعيف متضعف لو اقسم على الله لا بره، الا اخبركم باهل النار؟ كل عتل جواظ مستكبر"

(صحيح بخارى)

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा-ए-किराम से ख़िताब करते हुये फ़रमाया कि: क्या मैं तुम्हें न बताऊं कि जन्नती कौन हैं? फिर फ़रमाया कि हर वह शख़्स जो कमज़ोर है और लोग भी उसको कमज़ोर समझते हैं, या तो जिस्मानी

एतिबार से कमज़ोर हो, या हैसियत और रुतबे के एतिबार से कमज़ोर हो, यानी दुनिया वाले उसको कम हैसियत और कम रुतबे वाला समझते हैं, लेकिन वह कमज़ोर शख़्स अल्लाह के यहां इतना महबूब है कि अगर वह अल्लाह के ऊपर कोई क़सम खाले तो अल्लाह तआला उसकी क़सम को पूरा कर देते हैं। यानी अगर वह शख़्स यह क़सम खाले कि फ़लां काम इस तरह होगा तो अल्लाह तआला वह काम उसी तरह फ़रमा देते हैं, इसलिये कि अल्लाह तआला का महबूब है, और अल्लाह तआला उसकी मुहब्बत और क़दर की बिना पर ऐसा ही कर देते हैं।

अल्लाह तआला उनकी क़सम पूरी कर देते हैं

हदीस शरीफ़ में है कि एक मर्तबा दो औरतों में झगड़ा हो गया, और झगड़े में एक औरत ने दूसरी औरत का दांत तोड़ दिया, और इस्लामी क़ानून यह है कि दांत के बदले दांत, जब यह सज़ा सुनाई गयी तो वह औरत जिसका क़िसास (बदला) जिसमें दांत तोड़ने का फ़ैसला हुआ था, उसके सर परस्त ने खड़े होकर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने कह दिया:

"والذی بعثك بالحق لا تكسر سنها"

या रसूलल्लाह! मैं क़सम खाता हुं कि उसका दांत नहीं टूटेगा, उसका मक़्सद......ख़ुदा अपनी पनाह में रखे......हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के फ़ैसले पर एतिराज़ करना नहीं था, और न दुश्मनी थी, बल्कि अल्लाह तआला पर भरोसा करके उसने कहा कि हालात ऐसे पैदा हो जायेंगे कि इन्शा अल्लाह उसका दांत नहीं टूटेगा चूंकि उसका जज़्बा मुख़लिफ़ाना नहीं था और न आपके फ़ैसले पर एतिराज़ मक़्सूद था, इसलिये आपने उसकी बात का बुरा नहीं माना।

जहां इस्लाम में यह क़ायदा है कि दांत के बदले दांत, आंख के बदले आंख, वहां इस्लाम ने यह भी रखा है कि अगर वारिस

माफ़ कर दें, या हक़ वाला माफ़ कर दे तो फिर क़िसास ख़त्म हो जाता है, और फिर बदला लेने की ज़रूरत नहीं रहती, अल्लाह का करना यह हुआ कि जिस औरत का दांत टूटा था उसके दिल में यह बात आ गयी और उसने कहा कि मैं माफ़ करती हूं, और उसका दांत तुड़वाना नहीं चाहती, चुनांचे उसके माफ़ करने से क़िसास ख़त्म हो गया, उस वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि बाज़ लोग अल्लाह के यहां बड़े महबूब होते हैं, और ज़ाहिरी हालत उनकी यह होती है कि उनके बाल बिखरे हुए, देखने में कमज़ोर, और लोगों के दरवाज़े पर जायें तो लोग धक्का देकर निकाल दें, लेकिन अल्लाह तआ़ला के यहां उनकी ऐसी इज़्ज़त होती है कि अल्लाह पर अगर कोई क़सम खालें तो अल्लाह उनकी क़सम को पूरा कर दें, और यह भी ऐसा शख़्स है कि इसने क़सम खाई थी कि उसका दांत नहीं तोड़ा जायेगा तो अल्लाह तआ़ला ने इसकी क़सम पूरी कर दी, और वारिसों ने खुद ही माफ़ कर दिया। (सही बुख़ारी शरीफ़)

इस हदीस शरीफ़ में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इसी तरफ़ इशारा फ़रमा रहे हैं कि ऐसा शख़्स जो देखने में कमज़ोर है, और लोग उसे कमज़ोर समझते हैं, लेकिन अपने तक़्वे के लिहाज़ से, अल्लाह तआ़ला के साथ तअ़ल्लुक़ के लिहाज़ से, अल्लाह तआ़ला की बन्दगी के लिहाज़ से वह अल्लाह तआ़ला को ऐसा महबूब है कि अगर वह अल्लाह तआ़ला पर क़सम खाले तो अल्लाह तआ़ला उसकी क़सम को पूरा कर देते हैं, ऐसे लोग जन्नत वाले हैं।

जहन्नमी कौन लोग हैं?

उसके बाद आपने फ़रमाया कि क्या मैं तुमको जहन्नम वालों के बारे में न बतलाऊं कि जहन्नम वाले कौन लोग हैं? फिर आपने फ़रमाया कि:

"كل عتل جواظ مستكبر"

हर वह शख़्स जो सख़्त मिजाज़ हो, लफ़्ज़ "उतुल्ल" के मायने हैं, सख़्त मिजाज़ और खुर्दरा आदमी जो बात करे तो लठ मारे, और बात करते वक़्त नरमी से बात न करे, सख़्ती से बात करे, ग़ुस्से से बात करे, और दूसरों को हक़ीर (ज़लील और बे क़द्र) समझे, ऐसे शख़्स को "उतुल्ल" कहा जाता है, दूसरा लफ़्ज़ फ़रमाया "जव्वाज़" उसके मायने हैं "नक चढ़ा" जिसकी पेशानी पर हर वक़्त बल पड़े रहते हों, और मामूली क़िस्म के आदमी से बात करने को तैयार नहीं और कमज़ोर, कम हैसियत और कम रुतबा आदमी से बात करने में अपनी तौहीन समझता हो, और हर वक़्त अकड़ता हो, शैख़ी बाज़ हो। तीसरा लफ़्ज़ फ़रमाया "मुस्तकबिर" जो तकब्बुर करने वाला हो, और अपने आपको बड़ा समझने वाला हो, और दूसरों को छोटा समझने वाला हो, इन सिफ़ात वालों के बारे में फ़रमाया कि ये जहन्न्म वाले हैं, इसलिये कि ये लोग उतुल्ल, जव्वाज़ और मुस्तकबिर हैं, और अपने आपको बड़ा समझने वाले हैं।

ये बड़ी फ़ज़ीतल वाले हैं

इस हदीस से इस तरफ़ इशारा फ़रमा दिया कि ग़रीब और मिस्कीन लोगों को कम हैसियत और कम रुतबा समझ कर उनकी हक़ारत दिल में मत लाओ, इसलिये कि अल्लाह तआला के यहां उनकी बड़ी फ़ज़ीलत है, हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के साथ ईमान लाने वाले सहाबा–ए–किराम में हर तरह के लोग थे, बल्कि ज़्यादा तायदाद ऐसे हज़रात की थी जो माली एतिबार से बड़ी हैसियत नहीं रखते थे, और हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की मज्लिस में सब मिल कर बैठा करते थे, एक तरफ़ हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ रज़ियल्लाहु अ़न्हु और उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अ़न्हु बैठे हैं, जो बड़े मालदार और दौलत मन्द थे,

और दूसरी तरफ़ हज़रत बिलाल हबशी, सलमान फ़ारसी और सुहैब रूमी रज़ियल्लाहु अन्हुम भी बैठे हैं, जो कभी दो दो तीन तीन वक़्त के फ़ाक़े से होते थे।

ये फ़ाक़ा मस्त लोग

चुनांचे एक दिन कुफ़्फ़ारे मक्का ने हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि हम आपके पास आने को तैयार हैं, और आपकी बात सुनने को तैयार हैं, लेकिन मुश्किल यह है कि आपके पास हर वक़्त मामूली क़िस्म के फ़ाक़ा मस्त लोग बैठे रहते हैं, और उनके साथ बैठना हमारी शान के ख़िलाफ़ है, इससे हमारी शान में फ़र्क़ आता है, इसलिये आप उनकी मज्लिस अलग कर दें और हमारे लिये अलग मज्लिस मुन्अक़िद करें, उस वक़्त हम आप के पास आकर आपकी बातें सुनने के लिये तैयार हैं, बज़ाहिर इसमें कोई ख़राबी नहीं थी कि उनके लिये अलग वक़्त मुक़र्रर कर दिया जाता, ताकि उस वक़्त में आकर वे आपकी बातें सुन लेते, और हो सकता है कि दीन की बातें सुन कर उनकी इस्लाह हो जाये। हम जैसा कोई होता तो उनकी बात मान भी लेता, लेकिन बात उसूल की थी, इसलिये फ़ौरन कुरआन करीम की यह आयत नाज़िल हुई:

"وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ"

(سورة الانعام:٢٥)

"और उन लोगों को मत दूर कीजिये जो अपने पर्वरदिगार को सुबह व शाम उसकी रिज़ा का क़स्द करते हुए पुकारते हैं।

चुनांचे आपने ऐलान फ़रमाया कि हक़ की तलब लेकर आना चाहते हो तो उन लोगों के साथ बैठना होगा, और अगर नहीं बैठना चाहते तो अल्लाह तआला तुमसे बे-नियाज़ है, और अल्लाह का रसूल तुम से बे-नियाज़ है, लेकिन तुम्हारे लिये अलग मज्लिस मुन्अक़िद नहीं की जायेगी। (सही मुस्लिम शरीफ़)

अंबिया के पैरोकार

दूसरे अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम के साथ यही मामला पेश आया कि उस वक़्त के कुफ़्फ़ार ने भी उनसे यही कहा कि:

"مَانَرَاكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِىَ الرَّأْىِ" (سورة هود:٢٧)

(हम देखते हैं कि आपकी इत्तिबा उन्हीं लोगों ने की है, जो हममें बिल्कुल रज़ील क़िस्म के लोग हैं, वह भी महज़ सरसरी राये से) मतलब यह है कि हम आपके पीछे किस तरह आ सकते हैं, इसलिये कि हम तो बड़े अ़क़्ल–मन्द और बड़ी शान वाले लोग हैं, अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि ये लोग जिनको तुम रज़ील (ज़लील और बे क़द्र) कह रहे हो, कमज़ोर, ग़रीब और फ़क़ीर समझ रहे हो, अल्लाह तबारक व तआ़ला के यहां ये लोग बेड़े रुतबे वाले हैं, इसलिये इनको हक़ारत की निगाह से मत देखो, यहां उसूल का मामला है, यह नहीं हो सकता कि तुम्हारी इमारत और तुम्हारी सरदारी और दौलत मन्दी के बल बूते पर तुम्हें फ़ौक़ियत (तर्जीह) देदी जाये और यह वह उसूल है जिस पर अल्लाह और अल्लाह के रसूल ने कभी समझौता नहीं किया, वे हमारे बन्दे देखने में चाहे कितने ही कमज़ोर हों और कितने ही बुरे लगते हों लेकिन अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक उनका बहुत ऊंचा मक़ाम है।

हज़रत ज़ाहिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के पास कभी कभी गांव से एक साहिब आया करते थे, और उनका नाम ज़ाहिर था, और बिल्कुल काले रंग के आदमी और देहाती थे, और रुपये पैसे के एतिबार से कम हैसियत थे, और लोगों के दिलों में उनकी कोई हैसियत और कोई वक़्अ़त नहीं थी, लेकिन आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम उनके साथ बड़ी मुहब्बत फ़रमाते थे, एक मर्तबा आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम बाज़ार से गुज़र रहे थे तो देखा कि ज़ाहिर बाज़ार में खड़े हैं, अब ज़ाहिर है कि बाज़ार में

एक देहाती, हब्शी, कम हैसियत, कम रुतबे वाला शख़्स खड़ा हो तो उसकी तरफ़ कौन ध्यान करेगा, और लिबास भी फटा पुराना उसकी तरफ़ कोई तवज्जोह भी न करेगा लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब उस बाज़ार से गुज़रे तो सारे बाज़ार वालों को छोड़ कर हज़रत ज़ाहिर के पास पीछे से तशरीफ़ ले गये, और पीछे से बांहों में भर कर उनकी आंखें बन्द कर लीं, जैसे कि एक दोस्त दूसरे दोस्त की मज़ाक़ में पीछे से आंखें बन्द कर लेता है, जब आपने आंखें बन्द कर लीं तो हज़रत ज़ाहिर अपने आपको छुड़ाने लगे कि मालूम नहीं किसने आकर पकड़ लिया, और फिर आपने इस तरह आवाज़ लगाई जिस तरह सामान बेचने वाला आवाज़ लगाता है कि:

"من يشترى العبد؟"

"ग़ुलाम कौन ख़रीदेगा?"

अब तक तो हज़रत ज़ाहिर रज़ियल्लाहु अ़न्हु को मालूम नहीं था कि मुझे किसने पकड़ लिया है, इसलिये छुड़ाने की कोशिश कर रहे थे, लेकिन जब ये अल्फ़ाज़ सुने तो फ़ौरन पहचान गये कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम हैं, और अपने आपको छुड़ाने के बजाये अपनी कमर को हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के जिस्मे मुबारक से मिलाने लगे, और एक दम उनकी ज़बान पर यह जुम्ला आया कि:

या रसूलल्लाह! अगर आप मुझे ग़ुलाम बनाकर बेचेंगे तो मेरी क़ीमत बहुत कम लगेगी, इसलिये कि मेरी क़ीमत लगाने वाला कोई बड़ी क़ीमत नहीं लगायेगा, इसलिये कि मेरी हैसियत तो मामूली है, सुब्हानल्लाह! नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जवाब में क्या अ़जीब जुम्ला इरशाद फ़रमाया:

"لكن عند الله لست بكاسد"

ऐ ज़ाहिर, लोग तुम्हारी क़ीमत कुछ लगायें या न लगायें, लेकिन अल्लाह के नज़्दीक तुम्हारी क़ीमत कम नहीं, बल्कि बहुत

ज़्यादा है। अब देखिये कि सारे बाज़ार में बड़े बड़े ताजिर बैठे तिजारत कर रहे होंगे, और वे रुपये पैसे वाले होंगे, लेकिन नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहे व सल्लम सारे बाज़ार वालों को छोड़ कर उनका दिल रखने और बशारत सुनाने के लिये उनके पास तशरीफ़ ले गये, और उनके साथ इस तरह पेशा आये जिस तरह बे तकल्लुफ़ दोस्त के साथ इन्सान पेश आता है। (मुस्नदे अहमद)

और सारी उमर हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम यह दुआ़ फ़र्माते रहे कि:

"اللهم احينی مسكينًا وامتنی مسكينًا واحشرنی فی زمرة المساكين"

(ترمذی شريف)

ऐ अल्लाह! मुझे मिस्कीन बना कर ज़िन्दा रखिये, मिस्कीनी की हालत में मुझे मौत दीजिये, और मिस्कीनों के साथ मेरा हश्र फ़रमाइये।

नौकर आपकी नज़र में

आज क़दरें बदल गयीं तसव्वुरात बदल गये, अब दुनिया के अन्दर जो वक़्अ़त वाला है, ऊंचे मक़ाम और ओहदे वाला है, रुपये पैसे वाला है तो उसकी इज़्ज़त भी है, उसका इक्राम भी है, उसकी तरफ़ तवज्जोह भी है और जो शख़्स दुनियावी एतिबार से कमज़ोर है उसकी इज़्ज़त दिल में नहीं, उसकी तरफ़ तवज्जोह नहीं, उसके साथ हक़ारत का मामला किया जाता है, याद रखिये इसको दीन से कोई तअ़ल्लुक़ नहीं। कभी कभी हम ज़बान से तो कह देते हैं कि:

"اِنَّ اَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ اَتْقَاكُمْ" (سورة الحجرات:١٣)

जो शख़्स जितना ज़्यादा मुत्तक़ी है, उतना ही वह अल्लाह के नज़्दीक मुकर्रम और इज़्ज़त वाला है, लेकिन अ़मलन हमारा उनके साथ बर्ताव कैसा है। तुम्हारे घर में जो नौकर काम कर रहे हैं, या तुम्हारे पास जो फ़क़ीर लोग आते हैं, उनके साथ किस तरह बात करते हो? उनका दिल ठंडा करते हो? या उनका अपमान करते

हो? क्या इन हदीसों पर अ़मल करते हो? (अल्लाह तआ़ला महफ़ूज़ रखे) उनके साथ हक़ारत भरा मामला करना बड़ी ख़तरनाक बात है, अल्लाह तआ़ला हम सबको इस से महफ़ूज़ रखे, आमीन।

"عن ابی سعید الخدری رضی اللّٰه عنه عن النبی صلی اللّٰه علیه وسلم قال: احتجت الجنة والنار، فقالت النار: فی الجبارون والمتکبرون، قالت الجنة: فی ضعفاء الناس ومساکینهم، فقضی اللّٰه بینهما انك الجنة رحمتی ارحم بك من اشاء، وانك النار اعذب بك من اشاء ولکلیکما علی ملئوها" (صحیح مسلم شریف)

जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान मुनाज़रा

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमायाः जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान आपस में मुनाज़रा और बहस हो गयी कि दोनों में से कौन बेहतर है, दोज़ख़ ने कहा कि मेरी शान ऊंची है, इसलिये कि मेरे अन्दर बड़े बड़े जब्बार और मुतकब्बिर लोग आकर आबाद होंगे, यानी जितने जाबिर और मुतकब्बिर लोग हैं, बड़े ओहदे वाले, बहुत ज़्यादा माल व दौलत वाले, अपने आप को बड़ा समझने वाले, बड़ा कहने वाले, वे सब मेरे अन्दर आबाद हो गये, और इस बात पर उसने फ़ख़्र किया। उसके मुक़ाबले में जन्नत ने कहा कि मेरे अन्दर कमज़ोर और मिस्कीन क़िस्म के लोग आबाद होंगे, और जन्नत ने इस बात पर फ़ख़्र किया, फिर उन दोनों के दरमियान अल्लाह तआ़ला ने फ़ैसला फ़रमाया और जन्नत से ख़िताब करते हुये फ़रमाया कि तू जन्नत है और मेरी रहमत का निशान और अ़लामत और उसके ज़ाहिर होने की जगह है, तेरे ज़रिये से मैं जिस पर चाहूंगा, अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा दूंगा, और दोज़ख़ से ख़िताब करके फ़रमाया कि तू दोज़ख़ है जो मेरे अ़ज़ाब का निशान और अ़लामत और उसके ज़ाहिर होने की जगह है, और तेरे ज़रिये से मैं जिसको चाहूंगा, अ़ज़ाब दूंगा, और दोनों

से में यह वादा करता हूं कि मैं तुम दोनों को भरूंगा। जन्नत को ऐसे लोगों से भरूंगा, जिनके ऊपर मेरी रहमत नाज़िल हुयी, और दोज़ख़ को ऐसे लोगों से भरूंगा जिनके ऊपर मेरा अ़ज़ाब नाज़िल होगा, अल्लाह तआ़ला हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाये, आमीन।

जन्नत और दोज़ख़ कैसे बोलेंगी?

नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान यह एक बहस और मुनाज़रा बयान फ़रमाया, यह भी हो सकता है कि उसके हक़ीक़ी मायने मुराद हों कि जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान वाक़ई यह गुफ़्तगू हुई हो, क्योंकि जन्नत और दोज़ख़ अल्लाह तआ़ला की मख़्लूक़ है, और अल्लाह तआ़ला की कुदरत में है कि उन दोनों को ज़बान अ़ता फ़रमा दें, उनको बोलने की सलाहियत देदें। लोग हैरान होते हैं कि ऐसी चीज़ कैसे बोल देगी जिसके पास ज़बान नहीं है, जन्नत तो एक इलाक़े, ज़मीन और बाग़ात का नाम है, और दोज़ख़ आग का नाम है। वे कैसे बोलेंगी? तो यह देखिये कि इन्सान कैसे बोलता है? इन्सान के पास बोलने की कुदरत कहां से आ गयी है? जब अल्लाह तआ़ला ने यह ताक़त अ़ता फ़रमाई, तब इन्सान बोलने लगा, अगर अल्लाह तआ़ला न देते तो इन्सान के पास बोलने की ताक़त कहां से आती, अगर यह ताक़त अल्लाह तआ़ला किसी पत्थर को देदे तो वह बोल पड़ेगा, अगर किसी पेड़ को देदे तो वह बोल पड़ेगा, किसी ज़मीन को देदे तो वह बोल पड़ेगी।

क़ियामत के दिन जिस्म के हिस्से किस तरह बोलेंगे?

हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि कहीं सफ़र में तशरीफ़ लेजा रहे थे, रास्ते में नई तालीम के दिल–दादा एक साहिब से मुलाक़ात हुयी, उन्हों ने किसी हदीस या आयत पर यह शुबह् पेश किया कि हज़रत! कुरआन शरीफ़ में आता है कि क़ियामत में इन्सान के आज़ा (जिस्म

के हिस्स) बोलेंगे, कुरआन में है कि ये आज़ा गवाही देंगे, हाथ गवाही देगा कि मुझसे यह गुनाह किया गया था, टांग बोल पड़ेगी कि मेरे ज़रिये से यह गुनाह किया गया था, उन साहिब ने कहा हज़रत! यह अ़जीब बात है कि हाथ बोल पड़ेगा, टांग बोल पड़ेगी, यह कैसे बोल पड़ेगी? हज़रत ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की कुदरत है, अल्लाह तआ़ला जिसको चाहे, गोयाई देदें, बोलने की ताक़त देदें, उन साहिब ने कहा कि ऐसा कभी हुआ भी है? हज़रत ने फ़रमाया कि तुम दलील पूछ रहे थे या नज़ीर पूछ रहे थे, यह एक मन्तिक़ की इस्तिलाह है, दलील तो इतनी भी काफ़ी है कि अल्लाह तआ़ला क़ादिरे मुत्लक़ है, जिसको चाहे बोलने की ताक़त अ़ता फ़रमा दें, और हर चीज़ की नज़ीर होना ज़रूरी नहीं है कि उसकी कोई न कोई मिसाल भी हो। वह साहिब कहने लगे वैसे इत्मीनान के लिये कोई नज़ीर बता दें, हज़रत ने फ़रमाया कि अच्छा बताओ ज़बान कैसे बोलती है? चूंकि उसने पूछा था कि हाथ बग़ैर ज़बान के कैसे बोलेगा? हज़रत ने फ़रमाया कि ज़बान बग़ैर ज़बान के कैसे बोलती है? यह भी तो एक गोशत का लोथड़ा ही है, इसके अन्दर बोलने की ताक़त कहां से आ गई? बस अल्लाह तआ़ला ने अ़ता फ़रमा दी, तो जो अल्लाह तआ़ला गोशत के इस लोथड़े को ज़बान अ़ता फ़रमा सकता है वह हाथ को भी अ़ता फ़रमा सकता है, इसलिये इसमें तअ़ज्जुब की क्या बात है?

बहर हाल! नबी–ए–करीम सरवरे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने जन्नत और दोज़ख़ के दरमियान जो यह मुकालमा बयान फ़रमाया, उसके बिल्कुल ठीक ठीक हक़ीक़ी मायने भी मुराद हो सकते हैं कि जन्नत और दोज़ख़ को अल्लाह तआ़ला बोलने की ताक़त दे दें, और उनके दरमियान मुकालमा हो, तो यह कोई मुश्किल बात नहीं, और यह भी हो सकता है कि यह एक तम्सील (मिसाल के तौर पर) हो।

जहन्नम तकब्बुर करने वालों से भर जायेगी

बहर हाल! जहन्नम जब्बार और मुतकब्बिरीन से भरी होगी, जो लोगों पर अपनी बड़ाई जताते हैं, और तकब्बूर का मामला करते हैं, और लोगों को हक़ारत की निगाह से देखते हैं, लोगों के साथ बड़ाई जताते और शैख़ियां बघारते हैं ऐसे लोगों से जहन्नम भरी होगी।

जन्नत ज़ईफ़ों और मिस्कीनों से भरी होगी

और जन्नत ज़ईफ़ों और मिस्कीनों से भरी होगी, जो बज़ाहिर देखने में कमज़ोर मालूम हों, जो तवाज़ो वाले और मिस्कीन तबीयत वाले हों, जो दूसरों के साथ नरमी के साथ पेश आयें, तवाज़ो के साथ पेश आयें, अपने आपको कम्तर समझें, ऐसे लोगों से भरी होगी।

तकब्बुर अल्लाह को ना पसन्द है

जहन्नम अल्लाह तआ़ला ने मुतकब्बिरीन से भर दी है, इस वास्ते कि मुतकब्बिर वह शख़्स है जो दूसरों पर अपनी बड़ाई जताये, अपने आपको बड़ा समझे, और दूसरों को छोटा समझे, अपने को अ़ज़ीम समझे, दूसरों को हक़ीर समझे, और अल्लाह तआ़ला को यह तकब्बुर और बड़ाई एक लम्हे के लिये भी पसन्द नहीं, एक रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि:

"الكبرياء ردائى فمن نازعنى فيه قذ فته فى النار" (ابوداؤدشریف)

बड़ाई तो हक़ीक़त में मेरी चादर है, मेरी सिफ़त है, अल्लाहु अक्बर, अल्लाह बड़ा है, जो शख़्स मुझसे इस चादर में झगड़ा करेगा, मैं उसको आग में डाल दूंगा। हक़ीक़त में यह तकब्बुर जहन्नम की तरफ़ ले जाने वाला अ़मल है अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से इस गुनाह से बचाये, आमीन। और यह इतना शदीद गुनाह है कि यह तमाम बुराइयों की जड़ है, गुनाहों की जड़ है, इस एक तकब्बुर से न जाने कितने गुनाह निकलते हैं, एक मर्तबा

जब इन्सान के दिल में तकुब्बर आ गया, और अपनी बड़ाई का ख़्याल आ गया तो उसके बाद वह इंसान को तरह तरह के गुनाहों में मुब्तला कर देता है।

मुतकब्बिर की मिसाल

अ़र्बी ज़बान की एक बड़ी अ़जीब और हकीमाना कहावत है, जिसका तर्जुमा यह है कि मुतकब्बिर की मिसाल उस शख़्स की है जो पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो, और वह बुलन्द होने की वजह से दूसरों को छोटा समझता है, और दूसरे उसको छोटा समझते हैं, तो मुतकब्बिर जब कभी दूसरे पर निगाह डालेगा तो उसके दिल में दूसरों की हक़ारत आयेगी, और किसी भी मोमिन के ऊपर, मोमिन तो क्या काफ़िर के ऊपर भी हक़ारत की निगाह डालना गुनाहे कबीरा है, अल्लाह तआ़ला हमारी हिफ़ाज़त फ़रमाये, आमीन। अब जो शख़्स मुतकब्बिर होगा वह दूसरों को हक़ारत की निगाह से देखेगा, और जितने इन्सानों को हक़ारत की निगाह से देखेगा, उतने ही गुनाहे कबीरा उसके आ़माल नामे में बढ़ते चले जायेंगे।

फिर मुतकब्बिर जब दूसरों से बात करेगा तो ऐसे सख़्त अन्दाज़ में बात करेगा जिस से दूसरे का दिल टूटे, और किसी मुसलमान का दिल तोड़ना भी गुनाह है।

काफ़िर को भी गिरी हुई निगाह से मत देखो

और यह जो मैंने कहा कि किसी काफ़िर को भी हक़ारत की निगाह से मत देखो, यह भी गुनाह है, इसलिये कि क्या पता है कि किसी वक़्त अल्लाह तआ़ला उस काफ़िर को ईमान की तौफ़ीक़ दे दें, और वह तुमसे आगे बढ़ जाये, इसलिये काफ़िर की हक़ारत नहीं होनी चाहिये, लेकिन कुफ़्र की हक़ारत होनी चाहिये, फ़िस्क़ और गुनाह की हक़ारत तो दिल में हो, लेकिन गुनाहगार की ज़ात से हक़ारत नहीं होनी चाहिये। लेकिन यह फ़र्क़ कि किस वक़्त दिल में गुनाह और कुफ़्र की हक़ारत है, और किस वक़्त उस

आदमी की हक़ारत दिल में है जो उस कुफ़्र और गुनाह में मुब्तला है, आदमी को कभी कभी इसका पता नहीं चलता, ये चीज़ें बुज़ुर्गों की सोहबत से हासिल होती हैं।

हकीमुल उम्मत रह्मतुल्लाहि अ़लैहि की तावाज़ो

हम और आप तो किस गिन्ती में हैं, हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि:

"मैं अपने आपको हर मुसलमान से फ़िल्हाल और काफ़िर से फ़िल–मआल वल एहतिमाल कम्तर समझता हूं" यानी अपने आप को हर मुसलमान से इस वक़्त और किसी काफ़िर को इस एहतिमाल (शक व गुमान) से कि शायद यह किसी वक़्त मुसलमान हो जाये, और मुझसे आगे बढ़ जाये, अन्जाम के एतिबार से अपने आपको कम्तर समझता हूं।

"तकब्बुर" और "ईमान" जमा नहीं हो सकते

और तकब्बुर ईमान के साथ जमा नहीं हो सकता, जब इन्सान के दिल में तकब्बुर आ जाता है, अल्लाह तआ़ला महफ़ूज़ रखे, आमीन। तो कभी कभी ईमान के लाले पड़ जाते हैं, आख़िर यह तकब्बुर ही तो था जो शैतान और इब्लीस को ले डूबा, उस से कहा गया कि सज्दा कर, बस दिमाग़ में यह तकब्बुर आ गया कि मैं तो आग से बाना हुआ हूं और यह मिट्टी से बना हुआ है, दिल में उसकी हक़ारत आ गई, और बड़ाई आ गई, सारी उमर के लिये रांदा–ए–दरगाह और मत्रूक और मर्दूद हो गया, यह तकब्बुर इतनी ख़तरनाक चीज़ है।

"तकब्बुर" एक छुपा हुआ मर्ज़ है

इसिलये हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जो हम और आप पर कहीं ज़्यादा मेहरबान हैं, वह इस हदीस के ज़रिये यह सबक़ दे रहे हैं कि देखो, तकब्बुर क़रीब फटकने न पाये, यह

ऐसी बीमारी है कि कभी कभी बीमार को भी पता नहीं होता कि मैं इस बीमारी में मुब्तला हूं, बहुत सी बार वह यह समझता है कि मैं बिल्कुल ठीक ठाक हूं, लेकिन हक़ीक़त में उसके अन्दर तकब्बुर होता है इसका पता चलाना भी आसान नहीं, इसी लिये यह मश्विरा दिया जाता है कि किसी अल्लाह वाले से, किसी शैख़े कामिल से तअ़ल्लुक़ क़ायम करो।

पीरी मुरीदी का मक़्सद

यह पीरी मुरीदी का जो रिवाज है कि किसी शैख़ के हाथ पर बैअ़त हो गये, लोग यह समझते हैं कि हाथ पर हाथ रख दिया तो बर्कत होगी, और वह कुछ वज़ीफ़े बता देंगे तो वज़ीफ़ा पढ़ लेंगे, वग़ैरह, ख़ूब याद रखिये, कि यह उसका असल मक़्सद नहीं है। किसी शैख़ के पास जाने या किसी मुस्लेह के पास जाने का असल मक़्सद यह है कि ये जो दिल की बीमारियां हैं, जिनमें सबसे ऊपर यह तकब्बुर की बीमारी है, इनका इलाज करायें, जैसे बीमार को पता नहीं होता कि मैं किस बीमारी में मुब्ताल हूं, और फिर डॉकटर उसका इलाज तज्वीज़ करता है, इसी तरह शैख़ रूहानी बीमारियों का इलाज करता है, इसी तश्ख़ीस के लिये शैख़ से रुजू किया जाता है, हाथ में हाथ दे देना इलाज करने वाले से राबता क़ायम करने की एक सूरत है।

रूहानी इलाज

आज कल एक मुसीबत यह आ गयी है कि तावीज़ गन्डों का नाम "रूहानी इलाज" रख दिया है, तावीज़ लिखवा लिये, गन्डे लिखवा लिये, दम दुरूद करा लिया, बस इसका नाम "रूहानी इलाज" रख लिया, ख़ूब समझ लीजिये, यह रूहानी इलाज नहीं, बल्कि रूहानी इलाज यह है कि अपने दिल की जो बीमारियां हैं, जैसे तकब्बुर, हसद, बुग्ज़, अ़दावत वग़ैरह जो इन्सान के दिल में पैदा होती हैं, उनके इलाज के लिये किसी शैख़ की तरफ़ रुजू

किया जाये, और शैख़ फिर पता लगाता है कि इसके दिल में तकब्बुर तो नहीं है, अगर है तो उसका आसान इलाज उस शख़्स के लिये क्या है? फिर वह अपने तजुर्बे से हाल के मुनासिब इलाज तज्वीज़ करता है, उसकी बताई हुयी तज्वीज़ पर अ़मल करना यह बैअ़त की हक़ीक़त है।

हज़रत थानवी रह० का तरीक़ा–ए–इलाज

हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के यहां सबसे ज़्यादा ज़ोर इस बात पर था कि इन बीमारियों में मुब्तला लोग आते और आप उनका इलाज फ़र्माते, उनका इलाज भी कोई दवा पिला कर नहीं होता था, वज़ीफ़े पढ़वा कर नहीं होता था, बल्कि अ़मल से होता था, बहुत से लोगों का इलाज इस तरह किया गया कि एक तकब्बुर में मुब्तला शख़्स आया, बस उसके लिये यह इलाज तज्वीज़ किया कि जो लोग मस्जिद में नमाज़ पढ़ने के लिये आयें, तुम उनके जूते सीधे किया करो, बस इस काम पर लगा दिया, न कोई वज़ीफ़ा, न कोई तसबीह, न कोई विर्द, उसको देख कर पहचान लिया कि इसके अन्दर तकब्बुर की बीमारी है, और इसका यह इलाज इसके लिये मुनासिब होगा।

तकब्बुर का रास्ता जहन्नम की तरफ़

अल्लाह तआ़ला इस बीमारी से हमें बचाये, ग़र्ज़ यह बीमारी इन्सान के दिल के अन्दर इस तरह दाख़िल होती है कि बहुत सी बार उसको पता भी नहीं होता, वह तो समझ रहा है कि मैं ठीक ठाक हूं, लेकिन हक़ीक़त में वह तकब्बुर की बीमारी में मुब्तला होता है, और फिर उसका सीधा रास्ता जहन्नम की तरफ़ जा रहा है, और ईमाने हक़ीक़ी तकब्बुर के साथ जमा नहीं हो सकता, इस वास्ते इसके इलाज की फ़िक्र की ज़रूरत है, और इस हदीस में नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस की तंबीह

फ़रमाई है।

जन्नत में ज़ईफ़ों और मिस्कीनों की कस्रत

इस हदीस के दूसरे हिस्से में हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया किः जन्नत ज़ईफ़ों और मिस्कीनों से भरी हुयी है, यानी जिनको तुम दुनिया के अन्दर बे हक़ीक़त समझते हो, ग़रीब, ग़ुरबा, फ़क़ीर फ़ुक़रा, मामूली हैसियत वाले, मामूली कपड़े पनने वाले, ऐसे लोग जिनकी तरफ़ लोग तवज्जोह भी नहीं करते, ऐसे लोग अक्सर व बेशतर अल्लाह तआ़ला से क़रीब होते हैं, उनके दिलों में अल्लाह की अ़ज़्मत और मुहब्बत होती है, अल्लाह की रहमतें उन पर नाज़िल होती हैं, और जन्नत के अन्दर अक्सर लोग ऐसे होंगे।

अंबिया के पैरोकार अक्सर ग़रीब होते हैं

कुरआन करीम के अन्दर अंबीया अ़लैहिमुस्सलाम के वाक़िआत देख लीजिये कि दुनिया में जितने अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम तशरीफ़ लाये, उनकी सबकी इत्तिबा करने वाले और उनके पीछे चलने वाले, ये ग़रीब ग़ुरबा और कमज़ोर मिस्कीन क़िस्म के लोग थे, और यही वजह है कि तमाम मुश्रिकीन यह एतिराज़ करते थे कि हम उनके साथ कैसे बैठें? इनमें कोई तो मछेरा है, कोई बढ़ई है, कोई दूसरा मामूली पेशे वाला है, यह सब आपके पास आकर बैठते हैं, और हम तो बड़े सरदार हैं, हम इनके साथ कैसे बैठें? लेकिन अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उन्हीं के ऊपर फ़ज़्ल फ़रमाया, और उनको वह मक़ाम बख़्शा कि दूसरे उस मक़ाम को तरस्ते रहे। तो ज़ाहिरी एतिबार से जो लोग कमज़ोर नज़र आते हैं उनको कभी यह न समझो कि मआ़ज़ल्लाह (अल्लाह अपनी पनाह में रखे) ये हक़ीर हैं, उनकी तहक़ीर कभी दिल में न लाओ, और उनके साथ मामला और बर्ताव ऐसा न करो।

ज़ईफ़ और मिस्कीन कौन हैं?

इस हदीस में दूसरी बात जो ख़ास तौर पर अ़र्ज़ करने की है, वह यह है कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दो लफ़्ज़ इस्तेमाल फ़रमाये, एक "ज़ुअ़फ़ा" और दूसरे "मसाकीन" ज़ुअ़फ़ा के मायने यह हैं कि जिस्मानी एतिबार से कमज़ोर, माली एतिबार से कमज़ोर, रुतबे के एतिबार से कमज़ोर, मन्सब के एतिबार से कमज़ोर। और लफ़्ज़ "मसाकीन" जमा है "मिस्कीन" की, और "मिस्कीन" के दो मायने आते हैं, एक तो मिस्कीन उस शख़्स को कहते हैं जिसके पास पैसे ने हों, और जो मुफ़्लिस हो, दूसरे मिस्कीन उस शख़्स को कहते हैं जिसके पास पैसे हों या न हों लेकिन उसके मिज़ाज में मिस्कीनी हो, उसकी तबीयत में मिस्कीनी हो, चाहे उसके पास पैसे हों, और वह मालदार भी हो, लेकिन तबीयत में तकब्बुर पास से नहीं गुज़रा, वह मिस्कीनों के साथ उठता बैठता है, मिस्कीनों को अपने क़रीब रखता है, उसकी तबीयत में आ़जज़ी है, तकब्बुर की बात कभी नहीं करता, ऐसा शख़्स मिस्कीन की जमाअ़त में दाख़िल है।

मिस्कीनी और मालदारी जमा हो सकते हैं

इसलिये यह शुबह न होना चाहिये कि साहिब! अगर किसी के पास माल है और वह ख़ुशहाल है तो वह ज़रूर जहन्नम में जायेगा, अल्लाह तआ़ला बचाये, ऐसा नहीं है, बल्कि मुराद यह है कि अगर अल्लाह तआ़ला ने उसको माल दिया है, दौलत अ़ता फ़रमाई है, यह अल्लाह तबारक व तआ़ला की नेमत है, लेकिन अगर तबीयत में मिस्कीनी और आ़जज़ी है, तकब्बुर नहीं है, और दूसरों के साथ बर्ताव अच्छा है, अल्लाह तआ़ला के हुक़ूक़ और अल्लाह तआ़ला के बन्दों के हुक़ूक़ पूरी तरह अदा करता है तो वह भी इन्शा अल्लाह मिस्कीन की जमाअ़त में दाख़िल है।

फ़क्र और मिस्कीनी अलग अलग चीज़ें हैं

और एक हदीस में नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ फ़रमाई है कि:

"اللهم احینی مسکینًا وامتنی مسکینًا واحشرنی فی زمرة المساکین۔

(ترمذی شریف)

ऐ अल्लाह! मुझे मिस्कीनी की हालत में ज़िन्दा रखियो, और मिस्कीनी की हालत में मुझे मौत दीजिये, और मिस्कीनों के साथ मेरा हश्र फ़रमाइये, और दूसरी हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने यह दुआ फ़रमाई है कि:

"اللهم انی اعوذبك من الفقر" (ابوداؤد شریف)

ऐ अल्लाह! मैं फ़क्र से, मुफ़्लिसी से और दूसरों की एहतियाज से आपकी पनाह मांगता हूं, आपने फ़क्र से तो पनाह मांगी और मिस्कीनी की दुआ फ़रमाई, इससे मालूम हुआ कि मिस्कीनी कोई और चीज़ है, यह फ़क्र व फ़का मुराद नहीं है, बल्कि मिस्कीनी से मुराद तबीयत की मिस्कीनी, मिज़ाज की मिस्कीनी, तवाज़ो ख़ाक-सारी और मिस्कीनों के साथ अच्छा मामला वग़ैरह है, अगर यह ख़ाकसारी दिलों में पैदा हो जाये तो अल्लाह तआ़ला की रहमत से इस बशारत में दाख़िल हो सकते हैं, जो इस हदीस में बयान की गयी है।

जन्नत और जहन्नम के दरमियान अल्लाह तआ़ला का फ़ैसला

फिर हदीस के आख़िर में अल्लाह तआ़ला ने दोनों के बीच इस तरह फ़ैसला फ़रमा दिया कि जन्नत से तो यह कह दिया कि तुम तो मेरी रहमत का निशान हो, इसलिये जिस पर रहमत करनी होगी, तुम्हारे ज़रिये रहमत करूंगा, और जहन्नम से फ़रमा दिया कि तुम मरे अ़ज़ाब का निशान हो, जिसको अ़ज़ाब देना होगा, तुम्हारे ज़रिये दूंगा, और दोनों को भरके रहूंगा, जन्नत को भी

इन्सानों से भरूंगा और जहन्नम को भी भरूंगा, इस वास्ते कि दुनिया में दोनों क़िस्म के इन्सान पाये जायेंगे, वे भी जो जन्नत के हक़्दार हैं, जन्नत के आमाल करने वाले हैं, और वे भी जो जहन्नम के आमाल करने वाले हैं। बस! अल्लाह तआला अपनी रहमत से हमें उन लोगों में शामिल फ़रमा दे जिनको अल्लाह तआला ने जन्नत के लिये पैदा फ़रमाया है, आमीन सुम्म आमीन।

एक बुज़ुर्ग ज़िन्दगी भर नहीं हंसे

एक बुज़ुर्ग थे, उनके बारे में यह बात मशहूर है कि सारी ज़िन्दगी में सारी उमर में कभी नहीं हंसे, उनके मुंह पर कभी तबस्सुम भी नहीं देखा गया, हर वक़्त फ़िक्र–मन्द रहते थे, किसी शख़्स ने उनसे पूछा कि हज़रत! हमने आपको कभी हंसते हुए नहीं देखा, न आपके चेहरे पर कभी मुस्कुराहट नज़र आई, आप हमेशा फ़िक्र–मन्द नज़र आते हैं, इसकी क्या वजह है? तो उन्हों ने जवाब में फ़रमाया कि भाई! बात असल में यह है कि मैंने हदीस शरीफ़ में पढ़ा है कि कुछ मख़्लूक़ तो ऐसी है जो अल्लाह तआला ने जन्न्त के लिये पैदा फ़रमायी है, और कुछ मख़्लूक़ ऐसी है जो जहन्नम के लिये पैदा फ़रमायी है, मुझे यह मालूम नहीं कि मैं कौनसी जमाअ़त में दाख़िल हूं, जब तक मुझे यह पता न चल जाये कि मैं जन्नत वाली जमाअ़त में दाख़िल हूं, उस वक़्त तक हंसी कैसे आये? बस इसी फ़िक्र के अन्दर हर वक़्त मुब्तला रहता हूं।

मोमिन की आंखें कैसे सो सकती हैं

कसी बुज़ुर्ग का शेर है कि:

وكيف تنام العين وهى قريرة
ولم تدرفى اى المحلين تنزل

कि मोमिन की आंख इत्मीनान और चैन से कैसे सो सकती है, जब तक कि उसको यह पता न चले कि दोनों माक़ामात में से किस मक़ाम पर उसका ठिकाना होगा।

रूह क़ब्ज़ होते ही मुस्कुराहट आ गयी

इसलिये सारी उमर उन बुज़ुर्ग को हंसी नहीं आयी, देखने वालों का कहना है कि जिस वक़्त इन्तिक़ाल हुआ तो रूह क़ब्ज़ होते ही चेहरे पर मुस्कुराहट आ गयी कि आज पता चल गया कि किस जमाअ़त में अल्लाह तआ़ला ने मुझे पैदा फ़रमाया है।

ग़फ़लत की ज़िन्दगी बुरी है

अल्लाह तबारक व तआ़ला जिन लोगों को यह फ़िक्र अ़ता फ़रमाते हैं कि हम अल्लाह तआ़ला के मक़ामे रिज़ा में हैं या (अल्लाह बचाये) मक़ामे ग़ज़ब में हैं, उसको हंसी कैसे आ सकती है, लेकिन यह भी अल्लाह तआ़ला का हम और आप पर करम है कि अल्लाह तआ़ला यह कैफ़ियत तारी नहीं होने देते, अगर सारे इन्सानों पर यही कैफ़ियत तारी हो जाये तो दुनिया का कारोबार ठप्प हो जाये, दुनिया का कारोबार न चल सके, इस वास्ते यह कैफ़ियत तारी नहीं होने देते, लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जगह जगह हदीसों में मुतनब्बह फ़रमाते रहते हैं कि इसका यह मतलब नहीं कि ग़फ़लत में मुब्तला हो जाओ, और सारी उमर यह ख़्याल न आये कि कहां जा रहे हो, जन्नत की तरफ़ जा रहे हो या जहन्नम की तरफ़ जा रहे हो, बल्कि आंखें खोल कर देख लो कि जिस रास्ते पर तुम जा रहे हो वह जन्नत की तरफ़ जाने वाला है या जहन्नम की तरफ़ जाने वाला है, और अपने आमाल पर नज़र रखो कि हम कौन से आमाल कर रहे हैं, अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से अपने फ़ज़्ल व करम से हम सबको उस मख़्लूक़ में शामिल फ़रमा दे जो उसने जन्नत के लिये पैदा फ़रमाई है, आमीन।

ज़ाहिरी सेहत व क़ुव्वत और हुस्न व जमाल पर मत इतराओ

अगली हदीस है कि:

"عن ابی ھریرۃ رضی اللہ تعالیٰ عنہ، عن رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم قال: انہ لیأتی الرجل العظیم السمین یوم القیامۃ، لایزن عند اللہ جناح بعوضۃ" (بخاری شریف)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि क़ियामत के दिन एक ऐसा शख़्स लाया जायेगा जो जिस्मानी एतिबार से बड़ा मोटा ताज़ा होगा और बड़े मर्तबे वाला होगा, लेकिन अल्लाह के नज़्दीक उसका वज़न एक मच्छर के पर के बराबर नहीं होगा, यह सारी दुनियावी अज़्मत और यह जिस्मानी सेहत और जिस्मानी हुस्न यह सब धरा रह गया, क्यों? इसलिये कि उस शख़्स ने बावजूद सेहत व ताक़त के अल्लाह जल्ल जलालुहू को राज़ी करने वाले काम नहीं किये, इसलिये अल्लाह के नज़्दीक एक मच्छर के पर के बराबर भी उस की हैसियत नहीं।

इस हदीस का मक़्सूद भी यही है कि अपने ज़ाहिरी हुस्न व जमाल पर, अपनी सेहत पर, अपनी कुव्वत पर, अपने मर्तबे पर, अपने माल व दौलत पर कभी न इतराओ, हो सकता है कि यह माल व दौलत, यह मर्तबा, यह सेहत व कुव्वत अल्लाह तआला के नज़्दीक मच्छर के पर से भी ज़्यादा बे हक़ीक़त हो, असल चीज़ देखने की यह है कि आमाल कैसे हैं, और अल्लाह तआला के रास्ते पर चल रहे हो या नहीं।

मस्जिदे नबवी में झाड़ू देने वाली ख़ातून

"وعنہ رضی اللہ عنہ ان امرأۃ سوداء کانت تقم المسجد اوشابًا ففقدھا او فقدہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فسأل عنھا اوعنہ، فقالوا: مات، قال: افلا کنتم آذنتمونی بہ، فانھم صغروا امرھا اوامرہ، فقال: دلونی علی قبرہ، فدلوہ فصلی علیہ، ثم قال: ان ھذہ القبور مملوءۃ ظلمۃ علی اھلھا وان ینور لھم بصلاتی علیھم". (بخاری شریف)

इस हदीस में हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० एक वाक़िआ बयान

फ़रमा रहे हैं, फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के ज़माने में एक ख़ातून थीं, जो कभी कभी मस्जिदे नबवी में आकर झाड़ू दिया करती थीं, और वह ख़ातून सियाह फ़ाम (हबशी) थीं, लेकिन वह चन्द रोज़ तक आपको नज़र नहीं आयीं, और मस्जिदे नबवी की झाड़ू और सफ़ाई के लिये न आयीं, तो नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस ख़ातून के बारे में साहाबा–ए–किराम से पूछा कि काफ़ी दिन से वह ख़ातून नज़र नहीं आ रही हैं, और मस्जिद की झाड़ू लगाने नहीं आ रही हैं, आप इससे अन्दाज़ा लगाइये कि आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को एक एक फ़र्द के साथ किस दर्जे का तअ़ल्लुक़ था, वह ख़ातून आतीं और झाड़ू लगा कर चली जातीं, लेकिन सरकारे दो आ़लम सल्ल० के हाफ़ज़े और याद दाश्त में वह महफ़ूज़ थीं, इसलिये सहाबा–ए–किराम से आपने पूछा कि क्यों नहीं आयीं, क्या बात है? सहाबा–ए–किराम ने अ़र्ज़ किया! या रसूलल्लाह! उनका तो इन्तिक़ाल हो गया, आं हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उनके इन्तिक़ाल के बारे में आपने मुझे बताया तक नहीं, तो सहाबा–ए– किराम ने ज़बान से कुछ न कहा, लेकिन अन्दाज़ ऐसा इख़्तियार फ़रमाया जिस से यह बताना मक़्सूद हो कि हुज़ूर! वह तो एक मामूली क़िस्म की ख़ातून थीं, अगर इन्तिक़ाल हो गया तो इतनी बड़ी अहम बात नहीं थी कि आप जैसी हस्ती को उसके बारे में बताया जाता, तो सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुझे बताओ उसकी क़ब्र कहां है? किस जगह उनको दफ़नाया गया है? आप सहाबा–ए–किराम को साथ लेकर उसकी क़ब्र पर तशरीफ़ ले गये, और जाकर उनकी क़ब्र पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी।

क़ब्र पर नमाज़े जनाज़ा का हुक्म

आ़म तौर से नमाज़े जनाज़ा का हुक्म यह है कि अगर किसी

की नमाज़े जनाज़ा पढ़ ली गयी हो तो उसके बाद क़ब्र पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ना जायज़ नहीं, और अगर किसी को नमाज़े जनाज़ा पढ़े बग़ैर दफ़न कर दिया गया तो तब भी शरई हुक्म यह है कि जब तक मैयत के फूलने फटने का एहतिमाल न हो उस वक़्त तक उसकी क़ब्र पर नमाज़े जनाज़ा पढ़ सकते हैं, अगर अन्देशा हो कि इतने दिन गुज़रने की वजह से लाश फूल फट गयी होगी तो उसके बाद क़ब्र पर नामाज़े जनाज़ा नहीं पढ़ी जायेगी।

क़ब्रें अन्धेरों से भरी होती हैं

लेकिन सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने उस ख़ातून की ख़ुसूसियत के तौर पर, उसके इम्तियाज़ के तौर पर और सहाबा- ए-किराम को जताने के लिये आप उसकी क़ब्र पर तशरीफ़ ले गये और नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और नमाज़े जनाज़ा पढ़ने के बाद फ़र्माया कि ये क़ब्रें ज़ुल्मतों और अन्धेरों से भरी हुई होती हैं, और अल्लाह तआ़ला मेरी नमाज़ की बरकत से इन क़ब्रों में नूर पैदा फ़रमा देते हैं।

किसी को हक़ीर मत समझो

यह अ़मल आपने इस बात पर तंबीह करने के लिये फ़रमाया कि किसी भी शख़्स को चाहे वह मर्द हो या औ़रत, वह अगर दुनियावी एतिबार से मामूली रुतबे का है, उसको यह न समझो कि यह हक़ीक़त में भी मामूली रुतबे का है उसको अहमियत देने की क्या ज़रूरत है? इसलिये कि पता नहीं कि वह अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक क्या मक़ाम रखता हो, अल्लाह तआ़ला के नज़्दीक उसका क्या मर्तबा हो।

हर बीशा गुमां मबर कि ख़ालीस्त
शायद कि पलंग ख़ुफ़्ता बाशद।

(हर झाड़ी को ख़ाली मत समझो, हो सकता है कि चीता सोया हुआ हो।)

इसलिये किसी भी इन्सान को मामूली हैअत में देख कर यह न समझो कि यह एक बे हक़ीक़त इन्सान है, क्या पता कि वह अल्लाह तबारक व तआला के यहां कितना मक़्बूल है।

ये बिखरे बाल वाले

"وعنـه قـال: قـال رسول الله صلى الله عـليـه وسـلم: رب اشعث مدفوع بالا بواب لو اقسم على الله لابره. (صحيح مسلم شريف)

सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि बहुत से ऐसे लोग जो परागन्दा बाल वाले हैं, उनके बालों में कंघी नहीं की गयी है, और ग़ुबार भरे जिस्म और चेहरे वाले, मेहनत और मज़दूरी करके कमाते हैं, जिसकी वजह से उनके जिस्म पर और चेहरे पर गर्द की तह जमी हुयी है और ये लोग किसी के दरवाज़े पर जायें तो लोग उनको धक्का देकर निकाल दें, ये लोग दुनियावी एतिबार से तो बे हक़ीक़त हैं, लेकिन अल्लाह तबारक व तआला के यहां उनकी यह क़दर व क़ीमत होती है कि अगर अल्लाह जल्ल जलालुहू पर कोई क़सम खालें तो अल्लाह तआला उनकी क़सम पूरी करदें, यानी अगर ये लोग क़सम खाकर कह दें कि फ़लां काम होगा, तो अल्लाह तबारक व तआला वही काम कर देते हैं, और अगर ये लोग कह दें कि यह काम नहीं होगा तो अल्लाह तआला वह काम रोक देते हैं।

ग़रीबों के साथ हमारा सुलूक

इन तमाम हदीसों से यह बात ज़ाहिर होती है कि ज़ाहिरी एतिबार से किसी इन्सान को देख कर उसको मामूली और बे हक़ीक़त न समझो, ज़बान से तो हम यह कहते हैं कि सब मुस–लमान भाई भाई हैं, और अल्लाह के नज़्दीक अमीर ग़रीब बराबर हैं, और अल्लाह तआला के यहां ग़रीब की बड़ी क़ीमत है, लेकिन सवाल यह है कि जब हम उनके साथ बर्ताव करते हैं, और उनके साथ सुलूक करते हैं तो, क्या उस वक़्त वाक़ई ये बातें हमारे ज़ेहन

में रहती हैं? अपने नौकरों के साथ, अपने ख़ादिमों के साथ, अपने मा-तहतों के साथ, और दुनिया में जो ग़रीब ग़ुरबा नज़र आते हैं उनके साथ मामला करते वक़्त यह हक़ीक़त हमारे ज़ेहन में रहती है या नहीं? होता यह है कि ज़बान से तो मैं तक़रीर कर लूंगा, और आप तक़रीर सुन लेंगे, लेकिन जब करने का मामल आता है तो उस वक़्त सब भूल जायेंगे।

हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि का अपने ख़ादिम के साथ बर्ताव

जिन लोगों को अल्लाह तआ़ला इन हक़ायक़ को मद्दे नज़र रखने की तौफ़ीक़ देते हैं, उनका क़िस्सा सुन लीजिये। हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि के एक ख़ादिम थे भाई नियाज़, ख़ानक़ाह में आने जाने वाले तमाम हज़रात उन्हें "भाई नियाज़" कह कर पुकारते थे, हज़रत थानवी रह्मतु-ल्लाहि अ़लैहि के ख़ास मुंह चढ़े ख़ादिम थे, और चूंकि हज़रत रह्मतुल्लाहि अ़लैहि की ख़िदमत करते थे और हज़रते वाला की सोहबत भी हासिल थी, तो ऐसे लोगों में कभी नाज़ भी पैदा हो जाता है, थे तो "नियाज़" लेकिन थोड़ा सा नाज़ भी पैदा हो गया था, इसलिये ख़ानक़ाह में आने जाने वालों से कभी मचीटे हो जाया करते थे, एक मर्तबा किसी साहिब ने हज़रते वाला से भाई नियाज़ की शिकायत की, हज़रत! यह लोगों के साथ लड़ते झगड़ते हैं, और मुझे भी इन्हों ने बुरा भला कहा है, चूंकि हज़रते वाला को पहले भी उनकी कई शिकायतें पहुंच चुकी थीं, इसलिये हज़रते वाला को बहुत तक्लीफ़ हुई कि यह दूसरों के साथ ऐसा मामला करते हैं, हज़रते वाला ने उनको बुलाया और डांट कर फ़रमाया कि मियां नियाज़! यह तुम क्या हर आदमी से लड़ते झगड़ते फिरते हो, उन्हों ने सुन कर छूटते ही जवाब में कहा कि हज़रत! झूठ न बोलो, अल्लाह से डरो, अब यह अल्फ़ाज़ एक नौकर अपने आक़ा

से कह रहा है, आक़ा भी कौन से, हकीमुल उम्मत हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि......हक़ीक़त में उनका मक़्सद भी यह न था कि हज़रत! आप झूठ न बोलें, बल्कि उनका मक़्सद यह था कि जिन लोगों ने आप तक शिकायत पहुंचाई है, उन्हों ने झूठी शिकायत पहुंचाई है, उनको चाहिये कि झूठ न बोलें, अल्लाह से डरें। लेकिन जज़्बात में बे इख़्तियार लफ़्ज़ ज़बान से यह निकला कि हज़रत! झूठ न बोलो, अल्लाह से डरो। अब देखिये कि अगर एक आक़ा अपने नौकर को डांट रहा हो और नौकर यह कह दे कि झूठ न बोलो तो और ज़्यादा ग़ुस्सा आयेगा और ज़्यादा इश्तिआ़ल पैदा होगा, लेकिन यह हज़रत हकीमुल उम्मत रह्मतुल्लाहि अ़लैहि थे, उधर उन्हों ने कहा कि झूठ न बोलो, अल्लाह से डरो, इधर हज़रते वाला ने फ़ौरन गर्दन झुका ली और फ़रमाया अस्तग़्फ़िरुल्लाह, अस्तग़्फ़िरुल्लाह, अस्तग़्फ़िरुल्लाह,

अल्लाह की हदों के आगे रुक जाने वाले

और फिर बाद में फ़रमाया कि मुझसे ग़लती हो गयी, वह यह कि मैंने एक तरफ़ की बात सुन कर उनको डांटना शुरू कर दिया, और शरीअ़त का हुक्म यह है कि किसी एक की बात सुन कर फ़ौरन फ़ैसला न करें, जब तक दूसरी तरफ़ की बात भी न सुन लें, पहले मुझे उनसे पूछना चाहिये था कि क्या क़िस्सा हुआ? वह अपना मौक़फ़ पहले बयान कर देते, फिर उसके बाद कोई फ़ैसला करते, लेकिन मैंने पहले ही डांटना शुरू कर दिया, तो ग़लती मुझसे हुयी, और जब उसने कहा कि अल्लाह से डरो तो मैंने अल्लाह की तरफ़ रुजू किया तो मालूम हुआ कि हक़ीक़त में मुझसे ग़लती हुयी, और मैंने अस्तग़्फ़िरुल्लाह, अस्तग़्फ़िरुल्लाह, पढ़ा।

ये वे लोग हैं जिनके बारे में कहा गया कि:

"كان وقافا عند حدود الله"

अल्लाह की हदों के आगे रुक जाने वाले, भाई नौकरों के साथ और ख़ादिमों के साथ, अपने मा–तहतों के साथ भी अच्छा

सुलूक और अच्छा बर्ताव करना चाहिये, उनके साथ किसी वक़्त तहक़ीर का मामला न करें, अल्लाह तआला हम सबको इससे महफ़ूज़ फ़रमायें, आमीन।

जन्नत और दोज़ख़ में जाने वाले

"وعن اسامة رضى الله عنه، عن النبى صلى الله عليه وسلم قال: قمت على باب الجنة، فاذا عامة من دخلها المساكين واصحاب الجد محبوسون غراصحاب النا رقد امربهم الى النار، وقمت على باب النار، فاذا عامة من دخلها النساء" (صحيح بخارى شريف)

हज़रत उसामा रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बड़े चहीते सहाबी हैं, और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुतबन्ना (मुंह बोले बेटे) हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु के बेटे हैं, गोया कि यह मुंह बोले पोते हैं, वह रिवायत करते हैं कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि मैं जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा हुआ, यह शायद मेराज का वाक़िआ होगा, क्योंकि मेराज के वक़्त हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जन्नत और दोज़ख़ दोनों की सैर कराई गयी, या और किसी मौक़े पर आलमे रूयत या आलमे कश्फ़ में ऐसा हुआ होगा, अल्लाह तआला ही बेहतर जानता है, मैंने देखा कि अक्सर लोग जो मुझे जन्नत में नज़र आये, वे मिस्कीन क़िस्म के लोग थे, और मैंने देखा कि दुनिया में जिनको ख़ुश क़िस्मत शुमार किया जाता था, कि बड़े ख़ुश्हाल हैं, बड़े साहिबे मन्सब हैं, और दौलत मन्द हैं, जिनको लोग दुनिया में बड़ी क़िस्मत वाले समझते हैं, वे सब जन्नत के दरवाज़े पर रुके खड़े हैं, जैसा कि उनको किसी ने रोक रखा है कि दाख़िल नहीं हो सकते, इसके दो मायने हो सकते हैं, एक यह कि वे इसलिये रुके खड़े थे कि वे जन्नत में दाख़िल होने के लायक़ तो थे, लकिन हिसाब व किताब इतना लम्बा चौड़ा था कि जब तक उस हिसाब व

किताब को साफ़ न करें, उस वक़्त तक जन्नत में दाख़िले की इजाज़त नहीं, इसलिये वे दरवाज़े पर खड़े हैं, और उनमें जो जहन्नम वाले थे उनके बारे में हुक्म हो गया था कि इनको जहन्नम में ले जाया जाये और जहन्नम के दरवाज़े पर मैंने खड़े होकर देखा तो अक्सर उसमें दाख़िल होने वाली औ़रतें हैं, औ़रतों की तायदाद जहन्नम के अन्दर ज़्यादा नज़र आई।

मसाकीन जन्नत में होंगे

इस हदीस में दो हिस्से बयान फ़रमाये, एक यह कि जन्नत में अक्सर व बेशतर (ज़्यादा तर) दाख़िल होने वाले लोग मसाकीन नज़र आये, इसकी तफ़्सील पीछे भी आ चुकी है, और यह भी अ़र्ज़ कर चुका हूं कि यह ज़रूरी नहीं कि मसाकीन से मुफ़्लिस और फ़क़ीर मुराद हों, बल्कि वे लोग जो तबीयत के एतिबार से मिस्कीन हैं, वे भी इन्शा अल्लाह, अल्लाह की रहमत से मिस्कीन के अन्दर दाख़िल हैं।

औ़रतें दोज़ख़ में ज़्यादा क्यों होंगी

दूसरा हिस्सा यह है कि जहन्नम में जो अक्सर आबादी नज़र आई वह औ़रतों की नज़र आई, एक दूसरी हदीस में भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने औ़रतों से ख़िताब करके फ़रमायाः

"انی أریتکن اکثر اهل النار" (مسند احمد)

मुझे दिखाया गया कि जहन्नम के अक्सर रहने वाले तुम हो, जिससे यह बात मालूम होती है कि जहन्नम में औ़रतों की तायदाद मर्दों से ज़्यादा होगी, इसका यह मतलब नहीं है कि औ़रत औ़रत होने की हैसियत से जहन्नम की ज़्यादा मुस्तहिक़ है, बल्कि दूसरी हदीस में सरकारे दो आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसकी वजह बयान फ़रमाई वह यह कि एक मर्तबा हुज़ूरे अक़्दस सल्ल-ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने औ़रतों से ख़िताब करते हुए फ़रमाया कि जहन्नम की आबादी में अक्सर हिस्सा औ़रतों का है, तो औ़रतों

ने अर्ज़ किया कि: या रसूलल्लाह! इसकी क्या वजह है कि जहन्नम में औरतों की तायदाद ज़्यादा होगी? आपने इस की दो वजहें बुनियादी तौर पर बयान फ़रमायीं, वे ये कि:

"تکثرن اللعن وتکفرن العشیر"

दो ख़राबियां औरतों के अन्दर ऐसी हैं जो जहन्नम की तरफ़ ले जाने वाली हैं, जो औरत उनसे बच जायेगी वह इन्शा अल्लाह जहन्नम से भी बच जायेगी, पहली वजह बयान फ़रमाई कि:

"تکثرن اللعن"

कि लान तान बहुत करती हो, यानी एक दूसरी को लानत देने का रिवाज तुम्हारे अन्दर बहुत ज़्यादा है, मामूली मामूली बात पर किसी को बद-दुआ देदी किसी को कोसना दे दिया किसी को बुरा भला कह दिया, और ताना देना भी बहुत है, ताना इस बात को कहते हैं कि ऐसा जुम्ला बोल दिया जिससे दूसरे के जिस्म में आग लग गयी उसका दिल टूट गया उसके नतीजे में दूसरे को परेशान कर दिया और यह मुशाहदा है कि इस में औरतें बहुत ज़्यादा मुब्तला होती हैं।

शौहर की ना शुक्री

दूसरी वजह यह बयान फ़रमाई कि:

"تکفرن العشیر"

यानी तुम शौहर की ना शुक्री बहुत करती हो, यानी अगर कोई बेचारा शरीफ़ सीधा शौहर वह जान माल और मेहनत ख़र्च करके तुम्हें राज़ी करने की फ़िक्र कर रहा है, लेकिन तुम्हारी ज़बान पर शुक्र का कलिमा मुश्किल से ही आता है, बल्कि ना शुक्री के कलिमात ज़बान से निकालती हो, ये दो सबब हैं, जिनकी वजह से तुम जहन्नम में ज़्यादा जाओगी, अल्लाह तआला महफ़ूज़ रखे, आमीन।

ना शुक्री कुफ़्र है

ना शुक्री यों तो हर हालत में बुरी है, और अल्लाह तआला को इन्तिहाई ना पसन्द है, और उसकी ना पसन्दीदगी का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि अर्बी ज़बान और शरीअत की इस्तिलाह में "ना शुक्री" का नाम "कुफ़्र" है इसलिये "कुफ़्र" जिससे "काफ़िर" बना है, उसके असल मायने हैं, "ना शुक्री" और काफ़िर को काफ़िर इस लिये कहते हैं कि वह अल्लाह तआला का ना शुक्रा होता है, अल्लाह तआला ने उसको नेमतों से नवाज़ा, उसको पैदा किया उसकी परवरिश की, उस पर नेमतों की बारिश फ़रमाई और वह ना शुक्री करके अल्लाह के साथ दूसरे को शरीक ठहरा देता है, या ऐसी एहसान करने वाली ज़ात के वजूद का इन्कार करता है, इसलिये यह इतनी ख़तरनाक चीज़ है।

शौहर के आगे सज्दा

एक हदीस में नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि अगर मैं दुनिया में अल्लाह के अलावा किसी को सज्दा करने का हुक्म देता तो औरत को हुक्म देता कि वह अपने शौहर के आगे सज्दा करे, लेकिन सज्दा चूंकि किसी और के लिये हलाल नहीं इसलिये यह हुक्म नहीं देता, बतलाना यह मक़्सूद है कि यह औरत के फ़राइज़ में दाख़िल है कि वह शौहर की इताअत करे और उसकी ना शुक्री न करे, और जब वह उसकी ना शुक्री करेगी तो वह हक़ीक़त में अल्लाह की ना शुक्री होगी। इस वजह से अल्लाह तआला को शौहर की ना शुक्री इतनी ना पसन्द है कि ख़्वातीन को बतला दिया कि उसकी वजह से तुम जहन्नम में जाऊगी यह बड़ी ख़तरनाक बात है। (अबू दाऊद शरीफ़)

जहन्नम से बचने के दो गुर

अल्लाह तआला ने शौहर के ज़िम्मे बीवी के हुक़ूक़ रखे हैं और बीवी के ज़िम्मे शैहर के हुक़ूक़ रखे हैं, ख़ास तौर से हमारी बहनों

के लिये बड़ी याद रखने की बात है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बा–क़ायदा एहतिमाम करके औ़रतों के मजमे से ख़िताब करते हुये यह फ़रमाया कि तुम्हारे ज़्यादा जहन्नम में जाने का सबब ये दो बातें हैं। ज़ाहिर है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्ल–ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से ज़्यादा कौन अल्लाह तआ़ला के दीन का जानने वाला होगा और अपनी उम्मत के अफ़राद के हाल से वाक़िफ़ होगा? आपसे ज़्यादा कोई मर्ज़ को पहचानने वाला नहीं हो सकता, और मर्ज़ की तश्ख़ीस करने वाला और इलाज बताने वाला नहीं हो सकता, तो औ़रतों को जहन्नम से बचाने के लिये आपने दो गुर बता दिये, एक यह कि लान तान न करो और दूसरे शौहर की ना शुक्री न करो।

उस औ़रत पर फ़रिश्ते लानत करते हैं

हदीस शरीफ़ में यहां तक फ़रमाया कि अगर शैहर औ़रत को बिस्तर पर बुलाये और वह न जाये या फ़रमाया कि अगर औ़रत एक रात इस तरह गुज़ारे कि उसका शौहर उससे ख़फ़ा हो और उसके हुक़ूक़ उस औ़रत ने अदा न किये हों, तो सारी रात फ़रिश्ते उस औ़रत पर लानत करते रहते हैं इतनी ख़तरनाक डांट हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने बयान फ़रमाई।

ज़बान पर क़ाबू रखें

इस वक़्त यह बतलाना मक़्सूद है कि यह जो फ़रमाया जा रहा है कि औ़रतों की तायदाद जहन्नम में मर्दों के मुक़ाबले में ज़्यादा होगी, आज कल औ़रतों के हुक़ूक़ का बड़ा चर्चा है और यह प्रोपैगन्डा किया जा रहा है कि औ़रत को बहुत निचला मक़ाम दिया गया है, यहां तक कि जहन्नम में भी औ़रतें ज़्यादा भर दी गयीं लेकिन ख़ूब समझ लीजिये कि औ़रतें जहन्नम में इसलिये नहीं भरी गयीं कि वे औ़रतें हैं बल्कि इसलिये भर दी गयीं कि उनके अन्दर बद–आमालियों की कस्रत होती है, ख़ास तौर पर ज़बान उनको

जहन्नम में ले जाने वाली है। हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे पाक सल्ल-ल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इन्सान को जहन्नम में औंधा गिराने वाली चीज़ उसकी ज़बान है, और आ़म तौर पर यह ज़बान क़ाबू में नहीं होती, तो इससे बे शुमार गुनाह सर्ज़द हो जाते हैं तजुर्बा करके देख लीजिये कि मर्द की ज़बान फिर भी कुछ क़ाबू में होती है, और औ़रतें ज़बान को क़ाबू में रखने का आ़म तौर पर एहतिमाम नहीं करतीं, उसके नतीजे में यह फ़साद पैदा होता है, ख़ुदा के लिये अपनी ज़बानों को एहतियात से इस्तेमाल करने की कोशिश करें कि ज़बान से कोई ऐसी बात न निकालें जिससे दूसरे का दिल टूटे, और ख़ास तौर पर शौहर जिस का दिल रखना अल्लाह तआ़ला ने बीवी के फ़राइज़ में शामिल फ़र्माया है। इसलिये यह जो कहा गया है कि जहन्नम में औ़रतों की तायदाद ज़्यादा होगी इस से यह न समझा जाये कि ज़बरदस्ती जहन्नम में औ़रतों की तायदाद बढ़ा दी गयी है, बल्कि वह तो हक़ीक़त में इन आमाल का नतीजा है, अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से उनको इन आमाल से बचायें, और अगर ख़ुद एहतिमाम से बचने की कोशिश करें तो इन्शा अल्लाह ज़रूर बच जाएंगी, आपको मालूम है कि जन्नत की औ़रतों की सरदार भी अल्लाह तआ़ला ने एक औ़रत को बनाया है, वह हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अ़न्हा हैं और अल्लाह तआ़ला ने औ़रतों को जन्नत का हक़दार भी क़रार दिया, लेकिन सारा मदार इन आमाल पर है।

बन्दों के हुक़ूक़ की अहमियत

दूसरी एक बात और समझ लें जो इसी हदीस से निकलती है वह यह है कि हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने औ़रतों के ज़्यादा जहन्नम में जाने का सबब यह नहीं बयान फ़रमाया कि वे इबादत कम करती हैं, यह नहीं फ़रमाया कि नफ़्लें कम पढ़ती हैं, यह नहीं फ़रमाया कि तिलावत कम करती हैं, वज़ीफ़े कम

करती हैं, बल्कि सबब के अन्दर जो दो बातें बतायीं लानत और शौहर की ना शुक्री इन दोनों का तअ़ल्लुक़ बन्दों के हुक़ूक़ से है, इससे नफ़्ली इबादतों के मुक़ाबले में बन्दों के हुक़ूक़ की अहमियत मालूम हुई, अल्लाह तआ़ला अपनी रहमत से हमें इसकी सही समझ अ़ता फ़रमाये, और अपनी रहमत से इन तमाम हुक़ूक़ को अदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

وصلى الله تعالىٰ علىٰ خير خلقه محمد وآله واصحابه اجمعين، آمين.
برحمتك يا ارحم الراحمين.

नफ़्स की कश–मकश

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْماً كَثِيْرًا كَثِيْرًا اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا، وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ.

(سورة العنكبوت: ٦٩)

آمنت بالله صدق الله مولانا العظيم وصدق رسوله النبى الكريم ونحن علىٰ ذالك من الشاهدين والشاكرين. والحمد لله رب العالمين.

"मुजाहदे" का मतलब

अ़ल्लामा नववी रहमतुल्लाहि अ़लैहि ने आगे एक नया बाब क़ायम फ़रमाया है "बाब फ़िल मुजाहदः" "मुजाहदा" के लफ़्ज़ी मायने हैं, "कोशिश करना, मेहनत करना" "जिहाद" भी इसी से निकला है। इसलिये कि अ़र्बी ज़बान में "जिहाद" के मायने लड़ने के नहीं हैं, बल्कि मेहनत और कोशिश करने के हैं, और लफ़्ज़ "मुजाहदा" के मायने भी यही हैं, यानी "कोशिश करना" और क़ुरआन व सुन्नत और सूफ़िया की इस्तिलाह में "मुजाहदा" इसको कहा जाता है कि इन्सान इस बात की कोशिश करे कि उसके आमाल दुरुस्त हो जायें, और गुनाहों से बच जाये, और अपने नफ़्स को ग़लत रुख़ पर जाने बचाये, इसका नाम "मुजाहदा" है, हदीस में नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

المجاهد من جاهد نفسه (ترمذى شريف)

फ़रमाया कि असली "मुजाहिद" वह है जो अपने नफ़्स से जिहाद करे, लड़ाई के मैदान में दुश्मन से लड़ना भी "जिहाद" है,

लेकिन असली मुजाहिद वह है जो अपने नफ़्स से इस तरह जिहाद करे कि नफ़्स की ख़्वाहिशात, नफ़्स की आरज़ुएं, नफ़्स के तक़ाज़े एक तरफ़ बुला रहे हैं और इन्सान नफ़्स के उन तक़ाज़ों और आरज़ुओं को पामाल करके दूसरा रास्ता इख़्तियार कर लेता है तो इसका नाम "मुजाहदा" है, इसलिये जो शख़्स भी अपनी इस्लाह की तरफ़ क़दम बढ़ाना चाहे और अल्लाह जल्ल शानुहू की तरफ़ क़दम बढ़ाना चाहे तो उसको "मुजाहदा" करना ही पड़ता है, यानी अपने नफ़्स की मुख़ालिफ़त करना और नफ़्सानी ख़्वाहिशात के ख़िलाफ़ ज़बरदस्ती करके कोशिश करके कड़वा घूंट पीकर अ़मल करना और किसी तरह अपने नफ़्स की ख़्वाहिशों को दबा कर और कुचल कर उसकी ख़िलाफ़ वर्ज़ी करना इसका नाम "मुजाहदा" है।

इन्सान का नफ़्स लज़्ज़तों का आ़दी है

हमारा और आपका नफ़्स यानी वह कुव्वत जो इन्सान को किसी काम के करने की तरफ़ उभारती है, वह नफ़्स दुनियावी लज़्ज़तों का आ़दी बना हुआ है, इसलिये जिस काम में उसको ज़ाहिरी लज़्ज़त और मज़ा आता है, उसकी तरफ़ यह दौड़ता है, यह उसकी फ़ित्रत और ख़स्लत है कि ऐसे कामों की तरफ़ इन्सान को माइल करे, यह इन्सान से कहता है कि यह काम करलो तो मज़ा आ जायेगा, यह काम करलो तो लज़्ज़त हासिल हो जायेगी, इसलिये यह नफ़्स इन्सान के दिल में ख़्वाहिशों के तक़ाज़े पैदा करता रहता है, अब अगर इन्सान अपने नफ़्स को बे लगाम और बे मुहार छोड़ दे, और जो भी मज़े के हासिल करने का तक़ाज़ा पैदा हो, उस पर अ़मल करता जाये, और नफ़्स की हर बात मानता जाये, तो उसके नतीजे में फिर वह इन्सान इन्सान नहीं रहता, बलिक वह जानवर बन जाता है।

नफ़्सानी ख़्वाहिशों में सुकून नहीं

नफ़्सानी ख़्वाहिशों का उसूल यह है कि अगर उनकी पैरवी

करते जाओगे, और उनके पीछे चलते जाओगे, और उसकी बातें मानते जाओगे, तो फिर किसी हद पर जाकर क़रार नहीं आयेगा। इन्सान का नफ़्स कभी यह नहीं कहेगा कि अब सारी ख़्वाहिशें पूरी हो गयीं, अब मुझे कुछ नहीं चाहिये, यह कभी ज़िन्दगी भर नहीं होगा, इसलिये कि किसी इन्सान की सारी ख़्वाहिशें इस ज़िन्दगी में पूरी नहीं हो सकतीं, और इसके ज़रिये कभी क़रार और सुकून नसीब नहीं होगा। यह क़ायदा कि अगर कोई शख़्स यह चाहे कि मैं नफ़्स के हर तक़ाज़े पर अ़मल करता जाऊं, और हर ख़्वाहिश पूरी करता जाऊं, तो कभी उस शख़्स को क़रार नहीं आयेगा, क्यों? इसलिये कि इस नफ़्स की ख़ासियत यह है कि एक लुत्फ़ उठाने के बाद और एक मर्तबा लज़्ज़त हासिल करने के बाद यह फ़ौरन दूसरी लज़्ज़त की तरफ़ बढ़ता है, इसलिये अगर तुम चाहते हो कि नफ़्सानी ख़्वाहिशों के पीछे चल चल कर सुकून हासिल कर लें, तो सारी उमर कभी सुकून नहीं मिलेगा, तजुर्बा करके देख लो,

लुत्फ़ और लज़्ज़त की कोई हद नहीं है

आज जिनको तरक़्क़ी याफ़्ता क़ौमें कहा जाता है उन्हों ने यही कहा है कि इन्सान की पराईवेट ज़िन्दगी में कोई दख़ल अन्दाज़ी न करो, जिसकी मर्ज़ी में जो कुछ आ रहा है, वह उसको करने दो, और जिस शख़्स को जिस काम में मज़ा आ रहा है, वह उसे करने दो, न उसका हाथ रोको, और न उस पर कोई पाबन्दी लगाओ, और उसके रास्ते में कोई रुकावट खड़ी न करो, चुनांचे आप देख लें कि आज इन्सान को लुत्फ़ हासिल करने और मज़ा हासिल करने में कोई रुकावट नहीं, न क़ानून की रुकावट, न मज़्हब की रुकावट, न अख़्लाक़ की रुकावट, न मुआ़शरे की रुकावट, कोई पाबन्दी नहीं है, और हर शख़्स वह काम कर रहा है जो उसकी मर्ज़ी में आ रहा है और अगर उस शख़्स से कोई पूछे कि तुम्हारा मक़्सद हासिल हो गया? तुम जितना लुत्फ़ इस दुनिया से हासिल

करना चाहते थे, क्या लुत्फ़ की वह आख़री मन्ज़िल और मज़े का वह आख़री दर्जा तुम्हें हासिल हो गया, जिसके बाद तुम्हें और कुछ नहीं चाहिये? कोई शख़्स भी इस सवाल का "हां" में जवाब नहीं देगा, बल्कि हर शख़्स यही कहेगा कि मुझे और मिल जाये, मुझे और मिल जाये, अगे बढ़ता चला जाऊं, इसलिये कि एक ख़्वाहिश दूसरी ख़्वाहिश को उभारती रहती है।

खुले-आम ज़िनाकारी

मग़्रिबी मुआशरे में एक मर्द और एक औरत अपस में एक दूसरे से जिन्सी लज़्ज़त हासिल करना चाहें तो एक सिरे से दूसरे सिरे तक चले जाओ, कोई रुकावट नहीं, कोई हाथ पकड़ने वाला नहीं, हद यह है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो इरशाद फ़रमाया था, वह आंखों ने देख लिया, आपने फ़रमाया था कि एक ज़माना आयेगा कि ज़िना इस क़दर आम हो जायेगा कि दुनिया में सबसे नेक शख़्स वह होगा कि दो आदमी एक सड़क के चौराहे पर बदकारी कर रहे होंगे, वह शख़्स आकर उनसे कहेगा कि इस पेड़ की ओट में करलो, वह उनको उस काम से मना नहीं करेगा कि यह काम बुरा है, बल्कि वह यह कहेगा कि यहां सबके सामने करने के बजाये इस पेड़ की ओट में जाकर करलो, वह कहने वाला शख़्स सबसे नेक आदमी होगा, आज वह ज़माना तक़रीबन आ चुका है, आज खुल्लम खुल्ला बग़ैर किसी रुकावट और पर्दे के यह काम हो रहा है।

अमरीका में "बलात्कार" की कस्‍रत क्यों?

इसलिये अगर कोई शख़्स आपने जिन्सी जज़्बात को सुकून देने के लिये हराम तरीक़ा इख़्तियार करना चाहे, तो उसके लिये दरवाज़े खुले हुए हैं, लेकिन इसके बावजूद "बलात्कार" के वाक़िए जितने अमरीका में होते हैं दुनिया में और कहीं नहीं होते, हालांकि रज़ामन्दी के साथ यह काम करने के लिये कोई रुकावट नहीं, जो

आदमी जिस तरह चाहे, अपने जज़्बात को तस्कीन दे सकता है, वजह इसकी यह है कि रज़ामन्दी के साथ ज़िना करके देख लिया, उसमें जो मज़ा था, वह हासिल कर लिया, लेकिन उसके बाद उस में भी क़रार न आया तो अब बा–क़ायदा यह जज़्बा पैदा हुआ कि यह काम ज़बरदस्ती करो, ताकि ज़बरदस्ती करने का जो मज़ा है वह भी हासिल हो जाये, इसलिये यह इन्सानी ख़्वाहिशें किसी मर्हले पर जाकर रुकती नहीं हैं, बल्कि और आगे बढ़ती चली जाती हैं, और यह हवस कभी ख़त्म होने वाली नहीं।

यह प्यास बुझने वाली नहीं

आपने एक बीमारी का नाम सुना होगा जिसको "जूउल बक़र" कहते हैं, इस बीमारी की यह ख़ासियत है कि इन्सान को भूख लगती रहती है; जो दिल चाहे खाले, जितना चाहे खाले, मगर भूख नहीं मिटती, इसी तरह एक और बीमारी है, जिसको "इस्तिसक़ा" कहा जाता है, इस बीमारी में इन्सान को प्यास लगी रहती है, घड़े के घड़े पी जाये, कुएं भी ख़त्म कर जाये, मगर प्यास नहीं बुझती, यही हाल इन्सान की ख़्वाहिशों का है, अगर उनको क़ाबू में न किया जाये, और उन पर कन्ट्रोल न किया जाये, और जब तक उनको शरीअ़त और अख़्लाक़ के बन्धन में न बांधा जाये, उस वक़्त तक उसको "इस्तिसक़ा" की बीमारी की तरह लुत्फ़ व लज़्ज़त के किसी भी मर्हले पर जाकर क़रार नसीब नहीं होता, बल्कि लज़्ज़त की वह हवस बढ़ती ही चली जाती है।

थोड़ी सी मशक़्क़त बर्दाश्त कर लो

इसी लिये अल्लाह तबारक व तआ़ला और उस के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि नफ़्सानी ख़्वाहिशों के पीछे मत चलो, उनका इत्तिबा मत करो, इसलिये कि ये तुम्हें हलाकत के गढ़े में लेजा कर डाल देंगी, बल्कि इसको ज़रा क़ाबू में रखो, और उसको कन्ट्रोल करके शरीअ़त की बताई हुई हदों के

अन्दर रखो, और अगर तुम रखना चाहोगे तो शुरू शुरू में यह नफ़्स तुम्हें ज़रा तंग करेगा, तक्लीफ़ होगी, सदमा होगा, दुख होगा, एक काम को दिल चाह रहा है, मगर उसको रोक रहे हैं, दिल चाह रहा है कि टी०वी० देखें, और उसमें जो ख़राब ख़राब फ़िल्में आ रही हैं, वे देखें, यह नफ़्स का तक़ाज़ा हो रहा है, अब जो आदमी इसका आदी है, उस से कहो कि इसको मत देख, और नफ़्सानी तक़ाज़े पर अमल न कर, अगर वह नहीं देखेगा, और आंख उस से रोकेगा, तो शुरू में उस को दिक़्क़त होगी, और मशक़्क़त होगी, बुरा लगेगा, इसलिये कि वह देखने का आदी है, उसको देखे बग़ैर चैन नहीं आता, लुत्फ़ नहीं आता,

यह नफ़्स कमज़ोर पर शेर है

लेकिन साथ में अल्लाह तआला ने इस नफ़्स की ख़ासियत यह रखी है कि अगर कोई शख़्स इस मशक़्क़त और तक्लीफ़ के बावजूद एक मर्तबा डट जाये कि चाहे मशक़्क़त हो, या तक्लीफ़ हो, चाहे दिल पर आरे चल जायें, तब भी यह काम नहीं करूंगा, जिस दिन यह शख़्स नफ़्स के सामने इस तरह डट गया, बस उस दिन से ये नफ़्सानी ख़्वाहिशें ख़ुद बख़ुद ढीली पड़नी शुरू हो जायेंगी, यह नफ़्स और शैतान कमज़ोर के ऊपर शेर हैं, जो इसके सामने भीगी बिल्ली बना रहे, और इसके तक़ाज़ों पर चलता रहे, उसके ऊपर यह छा जाता है और ग़ालिब आ जाता है, और जो शख़्स एक मर्तबा पुख़्ता इरादा करके इसके सामने डट गया, कि मैं यह काम नहीं करूंगा, चाहे कितना तक़ाज़ा हो, चाहे दिल पर आरे चल जायें, फिर यह नफ़्स ढीला पड़ जाता है, और उसके काम न करने पर पहले दिन जितनी तक्लीफ़ हुई थी, दुसरे दिन उस से कम होगी, और तीसरे दिन उससे कम, और होते होते वह तक्लीफ़ एक दिन बिल्कुल ख़त्म हो जायेगी।

नफ़्स दूध पीते बच्चे की तरह

अ़ल्लामा बूसेरी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि एक बहुत बड़े बुज़ुर्ग गुज़रे हैं जिन का "क़सीदा–ए–बुर्दा" बहुत मश्हूर है जो हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की शान में एक नातीया क़सीदा है, उसमें एक अ़जीब व ग़रीब हकीमाना शेर कहा है:

النفس كالطفل ان تسهله شبّ على
حب الرضاع وان تفطمه ينفطم

यह इन्सान का नफ़्स एक छोटे बच्चे की तरह है, जो मां का दूध पीता है, और वह बच्चा दूध पीने का आ़दी बन गया, अब अगर उससे दूध छुड़ाने की कोशिश करो तो वह बच्चा क्या करेगा? रोएगा, चिल्लाएगा, शोर करेगा, अब अगर मां बाप यह सोचें कि दूध छुड़ाने से बच्चे को बड़ी तक्लीफ़ हो रही है, चलो छोड़ो, इसे दूध पीने दो, दूध पीता रहे, तो अ़ल्लामा बूसेरी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि अगर उस बच्चे को इस दूध पीने की हालत में छोड़ दिया तो नतीजा यह होगा कि वह जवान हो जायेगा, और उससे दूध नहीं छूट पायेगा, इसलिये कि तुम उसकी तक्लीफ़, उसकी फ़रियाद और उसकी चीख़ पुकार से डर गये, जिसका नतीजा यह निकला कि उस से दूध नहीं छुड़ा सके, अब अगर उसके सामने रोटी लाते हैं, तो वह कहता है कि मैं तो नहीं खाऊंगा, मैं तो दूध ही पियूंगा, लेकिन दुनिया में कोई मां बाप ऐसे नहीं होंगे जो यह कहें कि चूंकि बच्चे को दूध छुड़ाने से तक्लीफ़ हो रही है, इसलिये दूध नहीं छुड़ाते, मां बाप जानते हैं कि दूध छुड़ाने से रोएगा, चिल्लाएगा, रात को नींद नहीं आयेगी, ख़ुद भी जागेगा, और हमें भी जगायेगा, लेकिन फिर भी दूध छुड़ाते हैं, इसलिये कि वे जानते हैं कि बच्चे की भलाई इसी में है, अगर आज इसका दूध न छुड़ाया गया तो सारी उमर यह रोटी खाने के लायक़ नहीं होगा।

उसको गुनाहों की चाट लगी हुई है

अ़ल्लामा बूसेरी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि यह इन्सान का नफ़्स भी बच्चे की तरह है, इसके मुंह को गुनाह लगे हुये हैं, गुनाहों का ज़ायक़ा और उनकी चाट लगी हुई है, अगर तुमने इसको ऐसे ही छोड़ दिया कि चलो करने दो, गुनाह छुड़ाने से तक्लीफ़ होगी। नज़र ग़लत जगह पर पड़ती है और उसको हटाने में बड़ी तक्लीफ़ होती है, ज़बान को झूठ बोलने की आ़दत पड़ गई है, अगर झूठ बोलना छोड़ेंगे तो बड़ी तक्लीफ़ होगी, और इस ज़बान को मज्लिसों के अन्दर बैठ कर ग़ीबत करने की आ़दत पड़ गई है, अगर इसको रोकेंगे तो बड़ी दिक़्क़त होगी, नफ़्स इन बातों का आ़दी बन गया है, रिश्वत लेने की आ़दत पड़ गई है, अल्लाह बचाये, सूद खाने की आ़दत पड़ गई, और बहुत से गुनाहों की आ़दत पड़ गई है, और अब इन आ़दतों को छुड़ाने से नफ़्स को तक्लीफ़ हो रही है, अगर नफ़्स की इस तक्लीफ़ से घबरा कर और डर कर बैठ गये, तो इसका नतीजा यह होगा कि सारी उमर न कभी गुनाह छूटेंगे और न क़रार मिलेगा।

सुकून अल्लाह के ज़िक्र में है

याद रखो! अल्लाह तआ़ला की ना फ़रमानी में क़रार और सुकून नहीं है, सारी दुनिया के अस्बाब और वसायल जमा कर लिये, लेकिन उसके बावजूद सुकून नसीब नहीं, चैन नहीं मिलता, मैंने आपको अभी मग़रिबी मुआ़शरे की मिसाल दी थी कि वहां पैसे की रेल पेल, तालीम का मेयार बुलन्द, लज़्ज़त हासिल करने के सारे दरवाज़े चौपट खुले हुये कि जिस तरह चाहो लज़्ज़त हासिल कर लो, लेकिन इसके बावजूद यह हाल है कि नींद की गोलियां खा खाकर उसकी मदद से सो रहे हैं, क्यों! दिल में सुकून व क़रार नहीं, सुकून क्यों नहीं मिला? इसलिये कि गुनाहों में सुकून कहां तलाश करते फ़िर रहे हो, याद रखो! इन गुनाहों और ना

फ़रमानियों और मुसीबतों में सुकून नहीं, सुकून तो सिर्फ़ एक चीज़ में है, और वह है:

"اَلَا بِذِکْرِ اللّٰہِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ" (سورة الرعد:٢٨)

अल्लाह की याद में इत्मीनान और सुकून है, इस वासते यह समझना धोखा है कि ना फ़रमानियां करते जायेंगे, और सुकून मिलता जायेगा। याद रखो! ज़िन्दगी भर नहीं मिलेगा, इस दुनिया से तड़प तड़प कर जाओग, अगर ना फ़रमानियों को न छोड़ा तो सुकून की मन्ज़िल हासिल न होगी।

सुकून अल्लाह तआ़ला उन्हीं लोगों को देते हैं जिनके दिल में उसकी मुहब्बत हो, जिनके दिल में उसकी याद हो, जिनका दिल उसके ज़िक्र से आबाद हो, उनके सुकून और इत्मीनान को देखो कि ज़ाहिरी तौर पर परेशान हाल भी हैं, फ़क्र है फ़ाक़े भी गुज़र रहे हैं, लेकिन दिल को सुकून और क़रार की नेमत मयस्सर है, इसलिये अगर दुनिया का भी सुकून हासिल करना चाहते हो तो इन ना फ़रमानियों और गुनाहों को तो छोड़ना पड़ेगा, और गुनाहों को छोड़ने के लिये ज़रा सा मुजाहदा करना पड़ेगा, नफ़्स के मुक़ाबले में ज़रा सा डटना पड़ेगा।

अल्लाह का वादा झूठा नहीं हो सकता

और साथ ही अल्लाह तआ़ला ने यह वादा भी फ़र्मा लिया कि:

"وَالَّذِیْنَ جَاهَدُوْا فِیْنَا لَنَهْدِیَنَّهُمْ سُبُلَنَا"

जो लोग हमारे रास्ते में यह मुजाहदा और मेहनत करते हैं कि माहौल का, मुआ़शरे का, नफ़्स का, शैतान का और ख़्वाहिशों का तक़ाज़ा छोड़ कर वे हमारे हुक्म पर चलना चाहते हैं, तो हम क्या करते हैं:

"لَنَهْدِیَنَّهُمْ سُبُلَنَا"

हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि इसका तर्जुमा फ़रमाते हैं कि "हम उनके हाथ पकड़ कर ले चलेंगे" यह नहीं कि दूर से

दिखा दिया कि "यह रास्ता है" बल्कि फ़रमाया! कि हम उसका हाथ पकड़ कर ले जायेंगे, लेकिन ज़रा कोई क़दम तो बढ़ाये, ज़रा कोई इरादा तो करे, ज़रा कोई अपने इस नफ़्स के मुक़ाबले में एक मर्तबा डटे तो सही, फिर अल्लाह तआ़ला की मदद आती है। यह अल्लाह तआ़ला का वादा है, जो कभी झूठा नहीं हो सकता।

इसलिये "मुजाहदा" इसी का नाम है, कि एक मर्तबा आदमी डट कर इरादा करले कि यह काम नहीं करूंगा, दिल पर आरे चल जायेंगे ख़्वाहिशें पामाल हो जायेंगी, दिल व दिमाग़ पर क़ियामत गुज़र जायेगी, लेकिन यह गुनाह का काम नहीं करूंगा, जिस दिन नफ़्स के सामने डट गया, अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं कि उस दिन से हमारा महबूब हो गया, अब हम ख़ुद उसका हाथ पकड़ कर अपने रास्ते पर ले जाएंगे।

अब तो इस दिल को तेरे क़ाबिल बनाना है मुझे

इसलिये इस्लाह के रास्ते में सबसे पहला क़दम "मुजाहदा" है इसका पक्का इरादा करना होगा। हमारे हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि यह शेर पढ़ा करते थे कि:

आरज़ुयें ख़ून हों या हसरतें पामाल हों
अब तो इस दिल को बनाना है तेरे क़ाबिल मुझे

जो आरज़ुयें दिल में पैदा हो रही हैं, वे चाहे बर्बाद हो जायें, चाहे उनका ख़ून हो जाये, अब मैंने तो इरादा कर लिया है कि अब इसको तेरे क़ाबिल बनाना है मुझे, अब इस दिल में अल्लाह जल्ल जलालुहू के अनवार का नुज़ूल होगा, अब इस दिल में अल्लाह की मुहब्बत क़रार पायेगी, अब ये गुनाह नहीं होंगे। फिर देखो कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से कैसी रहमतें नाज़िल होती हैं, और आदमी इस राह पर चल पड़ता है।

याद रखो: कि शुरू शुरू में तो यह काम करने में बड़ी दिक़्क़त होती है कि दिल तो कुछ चाह रहा है, और अल्लाह की

ख़ातिर उस काम को छोड़ रहे हैं, इसमें बड़ी तक्लीफ़ होती है कि मैं नफ़्स को जो कुचल रहा हूं और आरज़ुओं का जो ख़ून कर रहा हूं, यह अपने मालिक और ख़ालिक़ की ख़ातिर कर रहा हूं, और इसमें जो मज़ा और सुरूर है आप अभी उसका तसव्वुर भी नहीं कर सकते।

मां यह तक्लीफ़ क्यों बर्दाश्त करती है?

मां को देखिये कि उसकी क्या हालत होती है कि सख़्त सर्दी का आ़लम है, और कड़–कड़ाते जाड़े की रात है, लिहाफ़ में लेटी हुई है, और बच्च पास पड़ा है, इस हालत में बच्चे ने पेशाब कर दिया, अब नफ़्स का तक़ाज़ा यह है कि यह गरम गरम बिस्तर छोड़ कर कहां जाऊं, यह तो जाड़े का मौसम है, गरम गरम बिस्तर को छोड़ कर जाना तो बड़ा मुश्किल काम है, लेकिन मां यह सोचती है कि अगर मैं न गई तो बच्चा गीला पड़ा रहेगा, इसके कपड़े गीले हैं, इस तरह गीला पड़ा रहेगा तो कहीं इसको बुख़ार न हो जाये, इसकी तबीयत न ख़राब हो जाये, वह बेचारी अपने नफ़्स का तक़ाज़ा छोड़ कर सख़्त कड़ाके के जाड़े में बाहर जाकर ठन्डे पानी से उसके कपड़े धो रही है, और उसके कपड़े बदल रही है, यह कोई मामूली मशक़्क़त है? कोई मामूली तक्लीफ़ है? लेकिन मां यह तक्लीफ़ बर्दाश्त कर रही है, क्यों? इसलिये कि बच्चे की फ़लाह और उसकी सेहत मां के सामने है, इसलिये वह सख़्त जाड़े में अपने नफ़्स के तक़ाज़े को पामाल करके ये सारे काम कर रही है।

मुहब्बत तक्लीफ़ को ख़त्म कर देती है

एक औ़रत का कोई बच्चा नहीं है, कोई औ़लाद नहीं, वह कहती है भाईः किसी तरह मेरा इलाज कराओ, ताकि बच्चा हो जाये, औलाद हो जाये, और उसके लिये दुआ़यें कराती फिरती है कि दुआ़ करो अल्लाह मियां से कि मुझे औलाद देदे, और इसके लिये तावीज़, गन्डे और ख़ुदा जाने क्या क्या कराती फिर रही है,

एक दूसरी औरत उससे कहती है कि अरे! तू किस चक्कर में पड़ी है? बच्चा पैदा होगा तो तुझे बहुत मशक़्क़तें उठानी पड़ेंगी, जाड़े की रातों में उठ कर ठन्डे पानी से कपड़े धोने होंगे, तो वह औरत जवाब देती है कि मेरे एक बच्चे पर हज़ार जाड़ों की रातें क़ुरबान हैं, इसलिये कि बच्चे की क़दर व क़ीमत और उसके दौलत होने का एहसास उसके दिल में है, इस वास्ते उस मां के लिये सारी तक्लीफ़ें राहत बन गयीं, वह मां जो अल्लाह से दुआ मांग रही है कि या अल्लाह! मुझे औलाद देदे, इसके मायने यह हैं कि औलाद की जितनी ज़िम्मेदारियां हैं, जितनी तक्लीफ़ें हैं, वे देदे, लेकिन वे तक्लीफ़ें उसकी नज़र में तक्लीफ़ें ही नहीं, बल्कि राहत ही राहत हैं अब जो मां जाड़े की रात में उठ कर कपड़े धो रही है उसको तबई तौर पर तक्लीफ़ तो ज़रूर हो रही है, लेकिन अक़्ली तौर पर उसे इत्मीनान है कि मैं ये काम अपने बच्चे की भलाई की ख़ातिर कर रही हूं, जब यह इत्मीनान होता है तो उस वक़्त उसे अपनी आरज़ुओं को कुचलने में भी लुत्फ़ आने लगता है।

इसी बात को मौलाना रूमी रहमतुल्लाहि अलैहि इस तरह फ़रमाते हैं:

"अज़ मुहब्बत तल्ख़–हा शीरीं शवद"

कि जब मुहब्बत पैदा हो जाती है कड़वी से कड़वी चीज़ें भी मीठी मालूम होने लगती हैं, जिन कामों में तक्लीफ़ हो रही थी, मुहब्बत की ख़ातिर उनमें भी मज़ा आने लगता है, लुत्फ़ आने लगता है कि मैं यह काम मुहब्बत की वजह से कर रहा हूं, मुहब्बत की ख़ातिर कर रहा हूं।

मौला की मुहब्बत लैला से कम न हो

मौलाना रूमी रहमतुल्लाहि अलैहि ने मसनवी में मुहब्बत की बड़ी अजीब हिकायतें लिखी हैं। लैला मजनूं का क़िस्सा लिखा है कि मजनूं लैला की ख़ातिर किस तरह दीवाना बना, और क्या क्या

मशक़्क़तें उठायीं, दूध की नहर निकालने के इरादे से चल खड़ा हुआ, और काम भी शुरू कर दिया, ये सारी मशक़्क़तें उठा रहा है, कोई उससे कहे कि तू यह जो काम कर रहा है यह बड़ी मशक़्क़त का काम है, इसे छोड़ दे, तो वह कहता है कि हज़ार मशक़्क़तें क़ुरबान, जिसकी ख़ातिर यह काम कर रहा हूं, उसकी मुहब्बत में कर रहा हूं, मुझे तो इसी नहर खोदने में मज़ा आ रहा है, इसलिये कि मैं अपनी महबूबा की ख़ातिर कर रहा हूं, मौलाना रूमी रह्म–तुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं:

इश्क़े मौला के कम अज़ लैला बुवद
गोये गश्तन बहरे ऊ औला बुवद

मौला का इश्क़े हक़ीक़ी कब लैला के इश्क़ से कम हो सकता है, मौला के लिये गेंद बन जाना ज़्यादा औला है, इसलिये जब आदमी मुहब्बत की ख़ातिर ये तक्लीफ़ें उठाता है तो फिर बड़ा लुत्फ़ आने लगता है।

तन्ख़्वाह से मुहब्बत है

एक आदमी नौकरी करता है, जिसके लिये सुबह को सवेरे उठना पड़ता है, अच्छी ख़ासी सर्दी में बिस्तर पर लेटा हुआ है, और जाने का वक़्त आ गया तो बिस्तर छोड़ कर जा रहा है, नफ़्स का तक़ाज़ा तो यह था कि गर्म गर्म बिस्तर में पड़ा रहता, लेकिन घर छोड़ कर, बीवी बच्चों को छोड़ कर जा रहा है, और सारा दिन मेहनत की चक्की पीसने के बाद रात को किसी वक़्त घर वापस आता है, और बेशुमार लोगा ऐसे भी हैं जो सुबह अपने बच्चों को सोता हुआ छोड़ कर जाते हैं और रात को वापस आकर सोता हुआ पाते हैं, ग़र्ज़ वह शख़्स ये सब तक्लीफ़ें बर्दाशत कर रहा है, अब अगर कोई शख़्स उस से कहे कि अरे भाई! तुम नौकरी में बहुत तक्लीफ़ उठा रहे हो, चलो मैं तुम्हारी नौकरी छुड़ा देता हूं, वह जवाब देगा: नहीं भाई, बड़ी मुश्किल से यह नौकरी लगी है, इसको

मत छुड़वाना, उसको सुबह सवेरे उठ कर जाने में ही मज़ा आ रहा है, और औलाद को, बीवी को छोड़ कर जाने में भी मज़ा आ रहा है, क्यों? इसलिये कि उसको उस तन्ख़्वाह से मुहब्बत हो गयी है जो महीने के आख़िर में मिलने वाली है, उस मुहब्बत के नतीजे में ये सारी तक्लीफ़ें शीरीं (मज़ेदार) बन गयीं, अब अगर किसी वक़्त नौकरी छूट गयी तो रोता फिर रहा है कि हाये वे दिन कहां गये, जब सुबह सवेरे उठ कर जाया करता था, और लोगों से सिफ़ारिशें कराता फिर रहा है, कि मुझे नौकरी पर दोबारा बहाल कर दिया जाये, अगर मुहब्बत किसी चीज़ से हो जाये तो उस रास्ते की सारी तक्लीफ़ें आसान और मज़ेदार हो जाती हैं, उसी में लुत्फ़ आने लगता है।

इसी तरह गुनाहों को छोड़ने में तक्लीफ़ ज़रूर है, शुरू में मशक़्क़त होगी, लेकिन जब एक मर्तबा डट गये, और उस के मुताबिक़ अमल शुरू कर दिया तो अल्लाह तआला की तरफ़ से मदद भी होगी, और फिर इन्शा अल्लाह तआला इस तक्लीफ़ में मज़ा आने लगेगा, अल्लाह तआला की इताअत में मज़ा आने लगेगा।

इबादत की लज़्ज़त से वाक़िफ़ कर दो

हमारे हज़रत डॉक्टर अब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अलैहि ने एक मर्तबा बड़ी अजीब व ग़रीब बात इरशाद फ़रमाई, फ़रमाया कि इन्सान के इस नफ़्स को लज़्ज़त और मज़ा चाहिये, इसकी ख़ुराक लज़्ज़त और मज़ा है, लेकिन लज़्ज़त की कोई ख़ास शक्ल इसको मतलूब नहीं कि फ़लां क़िस्म का मज़ा चाहिये, और फ़लां क़िस्म का नहीं चाहिये, बस इसको तो मज़ा चाहिये, अब तुमने इसको ख़राब क़िस्म के मज़े का आदी बना दिया है, ख़राब क़िस्म की लज़्ज़तों का आदी बना दिया है, एक मर्तबा इसको अल्लाह तआला की इताअत और इबादत की लज़्ज़त से आशना (वाक़िफ़)

कर दो, और अल्लाह तआ़ला के हुक्म के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने की लज़्ज़त से आशना कर दो फिर यह नफ़्स उसी में लज़्ज़त और मज़ा लेने लगेगा।

मुझे तो दिन रात बे-ख़ुदी चाहिये

ग़ालिब का एक शेर मुश्हूर है, ख़ुदा जाने लोग इसका क्या मतलब लेते होंगे, लेकिन हमारे हज़रत रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने इसका बड़ा अच्छा मतलब निकाला है, वह शेर है:

मै से ग़र्ज़े नशात है किस रू सियाह को
एक गोना बे-ख़ुदी मुझे दिन रात चाहिये

शराब से मुझको कोई ताल्लुक़ नहीं, मुझे तो दिन रात लज़्ज़त की बे-ख़ुदी चाहिये, तुमने मुझे शराब का आ़दी बना दिया तो मुझे शराब में बे-ख़ुदी हासिल हो गयी, शराब में लज़्ज़त आने लगी, अगर तुम मुझे अल्लाह तआ़ला की याद और उसके ज़िक्र और उसकी इताअ़त का आ़दी बना देते तो यह बे-ख़ुदी मुझे अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र में हासिल हो जाती, मैं तो उसी में ख़ुश हो जाता, लेकिन यह तुम्हारी ग़लती है कि तुमने मुझे इन चीज़ों के बजाये शराब का आ़दी बना दिया।

नफ़्स को कुचलने में मज़ा आयेगा

इसी तरह यह मुजाहदा शुरू में तो बड़ा मुश्किल लगता है कि बड़ा कठिन सबक़ दिया जा रहा है, कि अपने नफ़्स की मुख़ालिफ़त करो, अपने नफ़्स की ख़ाहिशात की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करो, नफ़्स तो चाह रहा है कि ग़ीबत करूं, मज्लिस में ग़ीबत करने का मौज़ू चढ़ गया, अब जी चाह रहा है कि उसमें बढ़ चढ़ कर हिस्सा लूं, अब उस वक़्त इसको लगाम देना कि नहीं, यह काम मत करो, यह बड़ा मुश्किल काम लगता है, लेकिन याद रखिये कि दूर दूर से यह मुश्किल नज़र आता है, जब आदमी ने यह पुख़्ता इरादा कर लिया कि यह काम नहीं करूंगा, तो उसके बाद अल्लाह की रहमत से

और फ़ज़्ल व करम से मदद भी होगी, और फिर तुमने इस लज़्ज़त और ख़्वाहिश को जो कुचला है, उस कुचलने में जो मज़ा आयेगा, इन्शा अल्लाह सुम्म इन्शा अल्लाह उसकी मिठास उस ग़ीबत की लज़्ज़त से कहीं ज़्यादा होगी।

ईमान की मिठास हासिल कर लो

हदीस में आता है कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि: एक शख़्स के दिल में तक़ाज़ा पैदा हुआ कि निगाह ग़लत जगह पर डालूं। और कौन शख़्स है जिसके दिल में यह तक़ाज़ा नहीं होता। अब दिल बड़ा कस्मसा रहा है कि उसको देख ही लूं, आपने अल्लाह तआ़ला के डर और ख़ौफ़ के ख़्याल से नज़र बचा ली, और निगाह नहीं डाली, बड़ी तक्लीफ़ हुयी, दिल पर आरे चल गये, लेकिन उसी तक्लीफ़ के बदले में अल्लाह तआ़ला ईमान की ऐसी हलावत (मिठास) अ़ता फ़रमायेंगे कि उसके आगे देखने की लज़्ज़त कुछ नहीं है, यह नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का वादा है, और हदीस में मौजूद है।

(मुसनद अहमद)

यह वादा सिर्फ़ निगाह के गुनाह के साथ मख़्सूस नहीं, बल्कि हर गुनाह छोड़ने पर यह वादा है, जैसे ग़ीबत में बड़ा मज़ा आ रहा है, लेकिन एक मर्तबा आपने अल्लाह जल्ल जलालुहू के ख़्याल से ग़ीबत छोड़ दी, और ग़ीबत करते करते रुक गये, अल्लाह के डर के ख़्याल से ग़ीबत की बात ज़बान पर आते आते रुक गयी, फिर देखो कैसी लज़्ज़त हासिल होती है, और जब इन्सान गुनाहों की लज़्ज़तों के मुक़ाबले में उस लज़्ज़त का आ़दी होता चला जाता है, तो फिर अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत और उसके साथ तअ़ल्लुक़ पैदा हो जाता है।

तसव्वुफ़ का हासिल

हज़रत हकीमुल उम्मत रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने क्या अच्छी बात

इरशाद फ़रमाई, याद रखने के लायक़ है, फ़रमायाः "वह ज़रा सी बात जो हासिल है तसव्वुफ़ का, यह है कि जब दिल में किसी इताअ़त के करने में सुस्ती पैदा हो, जैसे नमाज़ का वक़्त हो गया, लेकिन नमाज़ को जाने में सुस्ती हो रही है, इस सुस्ती का मुक़ाबला करके उस नेकी को करे, और जब गुनाह से बचने में दिल सुस्ती करे तो उस सुस्ती का मुक़ाबला करके उस गुनाह से बचे" फिर फ़रमाया किः "बस! इसी से अल्लाह के साथ तअ़ल्लुक़ पैदा होता है, इसी से अल्लाह के साथ तअ़ल्लुक़ में तरक़्क़ी होती है, और जिस शख़्स को यह बात हासिल हो जाये, उसको फिर किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं" इसलिये नफ़सानी ख़्वाहिशों पर आरे चला चला कर और हथोड़े मार मार कर जब उसको कुचल दिया, तो अब वह नफ़्स कुचलने के नतीजे में अल्लाह जल्ल जलालुहू की तजल्ली का मक़ाम बन गया।

दिल तो है ही टूटने के लिये

हमारे वालिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि एक मिसाल दिया करते थे कि अब तो वह ज़माना चला गया, पहले ज़माने में यूनानी हकीम हुआ करते थे, वे कुश्ता बनाया करते थे, सोने का कुश्ता, चांदी का कुश्ता, संखिया का कुश्ता, और न जाने क्या क्या कुश्ते तैयार करते थे, और कुश्ते बनाने के लिये वे सोने को जलाते थे, इतना जलाते थे कि वह सोना राख बन जाता था, और कहते थे कि सोने को जितना ज़्यादा जलाया जायेगा, उतना ही उसकी ताक़त में इज़ाफ़ा होगा, जला जला कर जब कुश्ता तैयार किया तो वह कुश्ता-ए-तिला तैयार हो गया, कोई उसको ज़रा सा खाले तो पता नहीं कहां की कुव्वत आ जायेगी, तो जब सोने को जला जला कर, मिटा मिटा कर, पामाल कर कर के राख बना दिया तो अब यह कुश्ता तैयार हो गया, हमारे हज़रत वालिद साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाया करते थे

कि इन नफ़्स की ख़्वाहिशों को जब कुचलोगे, और कुचल कुचल कर पीस पीस कर राख बनाकर फ़ना कर दोगे, तब यह कुश्ता बन जायेगा, इसमें अल्लाह जल्ल जलालुहू के साथ तअ़ल्लुक़ की कुव्वत आ जायेगी, और अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत आ जायेगी, अब दिल अल्लाह तआ़ला की तजल्ली का मक़ाम बन जायेगा, इस दिल को जितना तोड़ोगे, उतना ही यह अल्लाह तआ़ला की निगाह में महबूब बनेगाः

तू बचा बचा के न रख इसे, कि यह आईना है वह आईना
जो शिकस्ता हो तो अ़ज़ीज़ तर है निगाहे आईना साज़ में

तुम इस पर जितनी चोटें लगाओगे, उतना ही यह बनाने वाले की निगाह में महबूब होगा, बनाने वाले ने इसको इसी लिये बनाया है कि इसे तोड़ा जाये, उसकी ख़ातिर इसकी ख़्वाहिशात को कुचला जाये, और जब वह कुचल जाता है तो क्या से क्या बन जाता है, हमारे हज़रत डॉक्टर साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि क्या अच्छा शेर पढ़ा करते थे किः

यह कह के कासा साज़ ने प्याला पटक दिया
अब और कुछ बनायेंगे इसको बिगाड़ के

और कुछ बनायेंगे, यानी जो वह चाहेंगे वह बनायेंगे। इसलिये यह न समझो कि नफ़्स की ख़्वाहिशों को कुचलने से जो चोटें लग रही हैं, और जो तक्लीफ़ हो रही है वे बेकार जा रही हैं, बल्कि उसके बाद जब यह दिल अल्लाह तआ़ला की मुहब्बत का महल बनेगा, और अल्लाह तआ़ला के ज़िक्र और उसकी याद का मक़ाम बनेगा, उस वक़्त इसको जो मिठास नसीब होगी, ख़ुदा की क़सम उसके मुक़ाबले में गुनाहों की ये सारी लज़्ज़तें ख़ाक दर ख़ाक हैं, इनकी कोई हक़ीक़त नहीं, अल्लाह तआ़ला यह दौलत हम सबको नसीब फ़र्मायें। बस! शुरू में थोड़ी सी मेहनत और मशक़्क़त उठानी पड़ेगी और इसी का नाम मुजाहदा है, नबी करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इसी बात को हदीस शरीफ़ में इस तरह बयान

फरमाया किः

"المجاهد من جاهد نفسه"

मुजाहिद हक़ीक़त में वह है जो अपने नफ़्स से जिहाद करे, अपने नफ़्स की ख़्वाहिशों को अल्लाह की ख़ातिर कुचले, अल्लाह तआ़ला हम सबको इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, अपने नफ़्स की ख़्वाहिशों के हाथों में खिलौने बनने से बचाये, और नफ़्स की इन ख़्वाहिशों को क़ाबू में रखने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़र्माए, आमीन।

وآخردعوانا ان الحمد لله رب العالمين

मुजाहदे की ज़रूरत

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَنَشْهَدُ اَنَّ سَيِّدَنَا وَسَنَدَنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَ اَصْحَابِهٖ وَبَارَكَ وَسَلَّمَ تَسْلِيْماً كَثِيْرًا كَثِيْرًا اَمَّا بَعْدُ:

فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ، بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا، وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ.

(سورة العنكبوت:٦٩)

آمنت بالله صدق الله مولانا العظيم، وصدق رسوله النبى الكريم، ونحن على ذلك من الشاهدين والشاكرين، والحمد لله رب العالمين.

पिछले जुमा को "मुजाहदे" से मुताल्लिक़ जो गुज़ारिशात की थीं, उनका ख़ुलासा यह था कि "मुजाहदे" के मायने यह हैं कि नफ़सानी ख़्वाहिशों का मुक़ाबला करके अल्लाह जल्ल जलालुहू के हुक्म के मुताबिक़ चलने की फ़िक्र करना, यह मुजाहदा है, आज इसकी कुछ और तफ़सील अर्ज़ करनी है, ताकि यह बात अच्छी तरह ज़ेहन में बैठ जाये, कि मुजाहदा क्यों करना पड़ता है? इसकी क्या ज़रूरत है? इसकी हक़ीक़त क्या है?।

दुनियावी कामों में "मुजाहदा"

दीन का काम "मुजाहदे" के बग़ैर नहीं चलता, बल्कि दुनिया के काम भी मुजाहदे के बग़ैर नहीं हो सकते, अगर कोई शख़्स रोज़ी हासिल करना चाहता है तो उसके लिये उसको भाग दौड़ करना पड़ती है, उसके लिये अपने नफ़्स के तक़ाज़ों को कुचलना पड़ता है, इसलिये कि नफ़्स का तक़ाज़ा तो यह है कि आराम से घर में पड़ा सोता रहे, लेकिन वह यह सोचता है कि अगर मैं सोता रह गया तो रोज़ी कैसे कमाऊंगा।

बचपन से "मुजाहदे" की आदत

बचपन ही से बच्चे को मुजाहदे की आदत डालनी पड़ती है, बच्चे को जब शुरू शुरू में पढ़ने के लिये भेजा जाता है तो उसकी तबीयत के ख़िलाफ़ होता है, पढ़ने के लिये जाने को उसका दिल नहीं चाहता, लेकिन उसको उसकी तबीयत के ख़िलाफ़ पढ़ने पर आमादा किया जाता है, यह "मुजाहदा" है। इसलिये तालीम हासिल करने के लिये, रोज़ी कमाने के लिये, बल्कि दुनिया के तमाम मक़्सदें के लिये इंसान को अपनी तबीयत के ख़िलाफ़ करना पड़ता है, अगर इन्सान यह सोचे कि मैं अपनी तबीयत के ख़िलाफ़ कोई काम नहीं करूंगा, ऐसा शख़्स न दुनिया का कोई मक़्सद हासिल कर सकता है और न दीन का मक़्सद हासिल कर सकता है।

जन्नत में मुजाहदा न होगा

अल्लाह तबारक व तआ़ला ने इस कायनात में तीन आ़लम पैदा फ़रमाये हैं, एक आ़लम वह है जिसमें आपकी हर ख़्वाहिश पूरी होगी, उसमें ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ करने की कोई ज़रूरत नहीं। जो दिल चाहेगा वह होगा, उसमें इंसान नफ़्स की ख़्वाहिश के मुताबिक़ करने के लिये आज़ाद होगा, उसके मौक़े मयस्सर होंगे, वह आ़लम "जन्नत" है। जिसके बारे में कुरआन करीम ने फ़रमाया कि:

"وَلَكُمْ فِيهَا مَاتَشْتَهِي أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ" (سورة حٰمٓ سجدة:٣١)

यानी जो तुम्हारा दिल चाहेगा, वह मिलेगा, और जो मांगोगे वह मिलेगा, बाज़ रिवायतों में यह तफ़्सील आई है कि जैसे बैठे बैठे यह दिल चाहा कि अनार का जूस पीलो, अब सूरते हाल यह है कि क़रीब में न तो अनार है, और न अनार का पेड़ है, और न जूस निकालने वाला है, लेकिन यह होगा कि जिस वक़्त तुम्हारे दिल में उसके पीने का ख़्याल आया उसी वक़्त अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत से अनार का जूस निकल कर तुम्हारे पास पहुंच जायेगा, अल्लाह तबारक व तआ़ला अपने बन्दों को यह क़ुदरत अ़ता फ़रमा

देंगे कि जिस चीज़ को दिल चाहेगा, वह मिलेगा, वहां पर तुम्हें किसी ख़्वाहिश को कुचलने की ज़रूरत नहीं होगी, किसी तक़ाज़े को दबाने की ज़रूरत नहीं होगी, किसी ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ करने की ज़रूरत नहीं होगी, किसी मुजाहदे की ज़रूरत नहीं होगी, यह आ़लमे जन्नत है, अल्लाह तआ़ला हम सबको अपनी रहमत से वह आ़लम अ़ता फ़रमा दे, आमीन।

आ़लमे जहन्नम

दूसरा आ़लम इसके बिल्कुल उलट है, वहां हर काम तबीयत के ख़िलाफ़ होगा, हर काम दुख देने वाला होगा, हर काम ग़म में मुब्तला करने वाला, हर काम में तक्लीफ़ और मुसीबत होगी, कोई आराम, कोई राहत और कोई ख़ुशी नहीं होगी, वह आ़लमे दोज़ख़ है, अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को उससे महफ़ूज़ रखे, आमीन।

यह आ़लमे दुनिया है

तीसरा आ़लम वह है जिसमें तबीयत के मुताबिक़ भी काम होते हैं और तबीयत के ख़िलाफ़ भी काम होते हैं। ख़ुशी भी हासिल होती है, ग़म भी आता है, तक्लीफ़ भी पहुंचती है, राहत भी मिलती है, इस आ़लम में किसी की कोई तक्लीफ़ ख़ालिस नहीं, कोई राहत ख़ालिस नहीं, हर राहत में तक्लीफ़ का कोई कांटा लगा हुआ है, और हर तक्लीफ़ में राहत का पहलू भी है, यह आ़लमे दुनिया है, इस दुनिया में आप बड़े से बड़े सरमायेदार, बड़े से बड़े दौलत मन्द, बड़े से बड़े वसायल वाले से पूछ लीजिये कि तुम्हें कभी कोई तक्लीफ़ पहुंची है या नहीं या तुम सारी उमर आराम और इत्मीनान से रहे? कोई एक फ़र्द भी ऐसा नहीं मिलेगा जो यह कह दे कि मुझे कोई तक्लीफ़ नहीं पहुंची, और कोई काम मेरी तबीयत के ख़िलाफ़ नहीं हुआ, इसलिये कि यह आ़लमे दुनिया है, जन्नत नहीं है, यहां राहत भी पहुंचेगी, तक्लीफ़ भी पहुंचेगी, यह दुनिया तो इसी काम के लिये बनाई गई है, कोई शख़्स यह चाहे कि मुझे राहत ही

राहत मिले, कभी तक्लीफ़ न हो, तो ऐसा कभी ज़िन्दगी भर नहीं हो सकता, एक शायर ने कहा है कि:

कैदे हयात बन्द व ग़म असल में दोनों एक हैं
मौत से पहले आदमी ग़म से नजात पाये क्यों

इसलिये यह दुनिया अल्लाह तबारक व तआला ने इसी काम के लिये बनाई है कि इसमें तुम्हारे दिल को राहतें भी मिलेंगी, और इसको तोड़ने वाले अस्बाब और हालात भी पैदा होंगे, इसलिये जीते जी मर्ते दम तक ग़म से नजात मुम्किन नहीं, और तो और अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम जो इस कायनात में अल्लाह तआ़ला को सबसे ज़्यादा महबूब होते हैं, उनको भी तक्लीफ़ें पेश आयीं, बल्कि कभी कभी आ़म लोगों से ज़्यादा पेश आयीं, उन को भी तबीयत के ख़िलाफ़ वाकिआ़त पेश आये, इस दुनिया के अन्दर कोई इन्सान भी इससे बच नहीं सकता, अगर इन्सान काफ़िर बन कर रहे तब भी तबीयत के ख़िलाफ़ होगा, अगर मोमिन बन कर रहे तब भी तबीयत के ख़िलाफ़ होगा, ख़ुदा का इन्कार करे, तब भी तबीयत के ख़िलाफ़ होगा।

यह काम अल्लाह की रिज़ा के लिये कर लो

इसलिये जब इस दुनिया में तबीयत के ख़िलाफ़ बातें पेश आनी ही हैं, तो फिर तबीयत के ख़िलाफ़ काम करने के दो तरीक़े हैं, एक तरीक़ा तो यह है कि तबीयत के ख़िलाफ़ काम भी करो, सदमे भी उठाओ, तक्लीफ़ें भी बर्दाशत करो, लेकिन उन तक्लीफ़ों के बदले में कोई नतीजा न निकले, उस ग़म से आख़िरत में कोई फ़ायदा न हो, अल्लाह तआ़ला उस से राज़ी न हो।

दूसरा तरीक़ा यह है कि इन्सान अपनी तबीयत के ख़िलाफ़ काम करे, नफ़्स के तक़ाज़े को कुचले, ताकि आख़िरत संवर जाये, और अल्लाह तआ़ला उससे राज़ी हो जाये, चुनांचे अंबिया अ़लैहि–मुस्सलाम की दावत यह है कि इस दुनिया में तबीयत के ख़िलाफ़

तो होना ही है, तुम्हारा दिल चाहे या न चाहे, लेकिन एक मर्तबा यह अहद कर लो कि तबीयत के ख़िलाफ़ वह काम करेंगे जिस से अल्लाह तआला राज़ी होगा।

जैसे नमाज़ का वक़्त हो गया, मस्जिद से पुकार आ रही है, लेकिन जाने को दिल नहीं चाह रहा है और सुस्ती हो रही है, तो एक रास्ता यह है कि दिल के चाहने पर अमल कर लिया, और बिस्तर पर लेटे रहे, और इतने में दरवाज़े पर दस्तक हुई, मालूम हुआ कि दरवाज़े पर एक ऐसा आदमी आ गया है, जिसके लिये निकलना ज़रूरी है, चुनांचे उसकी ख़ातिर बिस्तर छोड़ा और बाहर निकल गये, नतीजा यह निकला कि तबीयत के ख़िलाफ़ भी हुआ, ख़्वाहिश के ख़िलाफ़ भी हुआ, और आराम भी नहीं मिला, तक्लीफ़ जूं की तूं रही, इसलिये आदमी यह सोचे कि तक्लीफ़ से बचना तो मेरे क़ब्ज़े और क़ुदरत में नहीं है, इसलिये क्यों न मैं अल्लाह को राज़ी करने के लिये तक्लीफ़ बर्दाशत कर लूं, यह सोच कर उस वक़्त उठ कर नमाज़ के लिये चला जाये।

अगर इस वक़्त बादशाह का पैग़ाम आ जाये

हमारे हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि हमारे लिये बड़ी काम की बातें फ़रमाया करते थे, चुनांचे फ़रमाते कि भाई! अगर तुम्हें नमाज़ के लिये जाने में सुस्ती हो रही हो, या किसी दीन के काम में सुस्ती हो रही हो, जैसे फ़जर की नमाज़ के लिये या तहज्जुद की नमाज़ के लिये सुस्ती हो रही है, आंख तो खुल गयी, मगर नींद का ग़ल्बा है, बिस्तर छोड़ने को दिल नहीं चाह रहा है, तो उस वक़्त यह सोचो कि उस नींद के ग़ल्बे के आ़लम में अगर तुम्हारे पास यह पैग़ाम आ जाये कि बादशाह तुम्हें बड़ा एज़ाज़ देना चाहते हैं, और वह एज़ाज़ इसी वक़्त तुम्हें मिलेगा, तो यह बताओ कि उस वक़्त वह नींद और वह सुस्ती बाक़ी रहेगी? ज़ाहिर है कि वह नींद और सुस्ती सब ग़ायब हो

जायेगी, क्यों? इसलिये कि तुम्हारे दिल में उस एज़ाज़ की क़दर व मन्ज़िलत है, जिसकी वजह से तुम तबीयत के ख़िलाफ़ करने पर आमादा हो जाओगे, और यह सोचोगे कि कहां की गफ़्लत, कहां की नींद, इस एज़ाज़ को हासिल करने के लिये दौड़ जाओ, अगर यह मौक़ा निकल गया तो फिर हाथ आने वाला नहीं, चुनांचे इस काम के लिये नींद और आराम छोड़ कर फ़ौरन निकल खड़े होगे, इसलिये जब तुम एक दुनिया के बादशाह से एज़ाज़ हासिल करने के लिये नींद छोड़ सकते हो, अपनी राहत छोड़ सकते हो, तो फिर अल्लाह जल्ल जलालुहू और हाकिमों के हाकिम को राज़ी करने के लिये राहत और नींद नहीं छोड़ सकते? जब किसी न किसी वजह से राहत और नींद छोड़नी है तो फिर क्यों न अल्लाह को राज़ी करने के लिये राहत व आराम छोड़ा जाये?।

अल्लाह तआ़ला उनके साथ होगा

हज़राते आंबिया अ़लैहिमुस्सलाम का यही पैग़ाम है कि अपने नफ़्स को तबीयत के ख़िलाफ़ ऐसे काम करने की आ़दत डालो जो अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने वाले हों, इसी का नाम "मुजाहदा" है, जो सदमे और जो तक्लीफ़ें ग़ैर इख़्तियारी तौर पर पहुंच रही हैं, बज़ाहिर उनसे कोई फ़ायदा हासिल नहीं हो रहा है, लेकिन अल्लाह तआ़ला का वादा है कि जो लोग हमारी ख़ातिर यह "मुजाहदा" करेंगे, हमारी ख़ातिर नफ़्स के ख़िलाफ़ काम करेंगे तो हम ज़रूर उनका हाथ पकड़ कर अपने रास्ते पर ले चलेंगे।

"وَالَّذِينَ جَاهَدُوا فِينَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَإِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِينَ"

और वे रास्ते पर तन्हा नहीं होंगे, बल्कि जो शख़्स इस रास्ते पर चल रहा है, वह मुहसिनीन में से है, और अल्लाह तबारक व तआ़ला मुहसिनीन का साथी बन जाता है।

वह काम आसान हो जायेगा

अल्लाह तबारक व तआ़ला कैसे उनका साथी बन जाता है?

इस तरह कि शुरू में नफ़्स की मुख़ालिफ़त में बड़ी दुश्वारी मालूम हो रही थी, तबीयत के ख़िलाफ़ करना बड़ा मुश्किल मालूम हो रहा था, लेकिन अल्लाह तआ़ला के भरोसे पर अल्लाह तआ़ला को राज़ी करने के लिये चल खड़े हुए, तो फिर वही रास्ता उसके लिये आसान हो जाता है, अल्लाह तआ़ला उसके लिये आसन कर देते हैं। एक शख़्स को नमाज़ की आ़दत नहीं है, नामज़ पढ़ना भारी मालूम होता है, पांच वक़्त की नमाज़ पढ़ना मुश्किल लगता है, लेकिन उसने नफ़्स के इस तक़ाज़े के बावजूद नमाज़ पढ़नी शुरू कर दी, यहां तक कि नमाज़ का आ़दी बन गया, अब आ़दी बनने के बाद उसी शख़्स की यह हालत हो जाती है कि नमाज़ पढ़ने में कोई मशक़्क़त ही नहीं, बल्कि उससे कोई अगर यह कहे कि हज़ार रुपये लेलो, और आज की नमाज़ छोड़ दो, बताइये क्या वह शख़्स नमाज़ छोड़ने पर राज़ी होगा? हरगिज़ नहीं। जो शख़्स एक मर्तबा नमाज़ का आ़दी बन गया, वह कभी हज़ारों रुपये लेकर भी एक नमाज़ छोड़ने पर राज़ी नहीं होगा, इसलिये कि जिस काम को पहले वह मुश्किल समझ रहा था, थोड़े से अरसे में अल्लाह तबारक व तआ़ला ने उसको आसान कर दिया।

आगे क़दम तो बढ़ाओ

यही हाल पूरे दीन का है, अगर इन्सान बैठ कर सोचता रहे तो उसको मुश्किल नज़र आयेगा, लेकिन जब दीन के रास्ते पर चलना शुरू कर दे तो अल्लाह तबारक व तआ़ला उसे आसान फ़रमा देते हैं। हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि इसकी एक मिसाल दिया करते थे कि एक लम्बी सड़क सीधी जा रही हो, और उसके दोनों तरफ़ पेड़ों की क़तारें हों, दायीं तरफ़ भी और बायीं तरफ़ भी, अब अगर कोई शख़्स उस सड़क पर खड़ा होकर देखे तो उसको यह नज़र आयेगा कि पेड़ों की दोनों क़तारें आपस में आगे चल कर मिल गयी हैं, और आगे रास्ता बन्द है, अगर कोई

अहमक़ शख़्स यह कहे कि चूंकि आगे चल कर पेड़ों की क़तारें आपस में मिल गयी हैं, इसलिये इस सड़क पर चलना बेकार है, तो यह शख़्स कभी रास्ता तय नहीं कर सकेगा, और कभी मन्ज़िल तक नहीं पहुंच सकेगा, वही शख़्स मन्ज़िल तक पहुंच सकेगा जो रास्ते को बन्द देखने के बावजूद आगे क़दम बढ़ायेगा। इसलिये कि जब वह आगे क़दम बढ़ायेगा तो उसे नज़र आयेगा कि हक़ीक़त में रास्ता बन्द नहीं था, बल्कि आंखें धोखा दे रही थीं, जूं जूं वह आगे बढ़ता चला जायेगा, रास्ते खुलते चले जायेंगे, इसलिये दीन के रास्ते पर चलने वालों से अल्लाह तआला फ़रमा रहे हैं कि दूर दूर से मुश्किल समझ कर मत बैठ जाओ, अल्लाह के भरोसे पर आगे क़दम बढ़ाना शुरू कर दो, जब आगे क़दम बढ़ाओगे तो अल्लाह तआला तुम्हारे लिये रास्ता आसान फ़रमा देंगे, लेकिन हिम्मत से काम करने की ज़रूरत हमेशा रहेगी, और तबीयत के ख़िलाफ़ काम करने का इरादा करना पड़ेगा और इसी का नाम "मुजाहदा" है।

जायज़ कामों से रुकना भी मुजाहदा है

असल मुजाहदा तो यह है कि इन्सान जो ना जायज़ और शरीअ़त के ख़िलाफ़ काम कर रहा है, उनसे अपने आपको बचाये, और अपने नफ़्स पर ज़बरदस्ती दबाव डाल कर उनसे बाज़ रहे, लेकिन चूंकि हमारा नफ़्स लज़्ज़तों का, ख़्वाहिशों का और राहतों का आ़दी हो चुका है, और इतना ज़्यादा आ़दी बना हुआ है कि अगर अल्लाह के रास्ते की तरफ़ और शरीअ़त की तरफ़ मोड़ना चाहो तो आसानी से नहीं मुड़ता, बल्कि दुश्वारी पैदा होती है, इसलिये इस नफ़्स को फ़रमांबर्दार बनाने के लिये और अल्लाह के बताये हुए अहकाम के ताबे बनाने के लिये उसको कुछ मुबाह और जायज़ कामों से भी रोकना पड़ता है, इसलिये कि जब नफ़्स को जायज़ कामों से रोकेंगे तो फिर उसको लज़्ज़तों को छोड़ने की आ़दत पड़ेगी, और उसके लिये ना जायज़ कामों से बचना भी

आसान हो जायेगा, सूफ़िया–ए–किराम की इस्तिलाह में इसको भी "मुजाहदा" कहा जाता है।

जैसे ख़ूब पेट भर कर खाना कोई गुनाह नहीं लेकिन सूफ़िया–ए–किराम फ़रमाते हैं कि ख़ूब पेट भर कर मत खाओ, इसलिये कि इसका नतीजा यह होगा कि यह नफ़्स ग़ाफ़िल हो जायेगा, और लज़्ज़तों का आ़दी हो जायेगा, इसलिये नफ़्स को आ़दी बनाने के लिये खाने में थोड़ी सी कमी करदो, यह भी "मुजाहदा" है।

जायज़ कामों में मुजाहदा क्यों?

हज़रत मौलाना मुहम्मद याकूब साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि से किसी ने पूछा कि हज़रत! यह क्या बात है कि सूफ़िया–ए–किराम बाज़ जायज़ कामों से भी रोकते हैं और उनको छुड़ा देते हैं? हालांकि अल्लाह तआ़ला ने उनको जायज़ क़रार दिया है? हज़रते वाला ने जवाब में फ़रमाया कि देखो इसकी मिसाल यह है कि यह किताब का पन्ना है, इस पन्ने को मोड़ो, मोड़ दिया, अच्छा इसको सीधा करो, अब पन्ना सीधा नहीं होता, बहुत कोशिश कर ली, लेकिन वह दोबारा मुड़ जाता है, फिर आपने फ़रमाया कि इसको सीधा करने का तरीक़ा यह है कि इस पन्ने को मुख़ालिफ़ सिम्त में मोड़ दो, यह सीधा हो जायेगा, फिर आपने फ़रमाया कि यह नफ़्स का काग़ज़ भी गुनाहों की तरफ़ मुड़ा हुआ है, ना फ़रमानियों की तरफ़ मुड़ा हुआ है, अब अगर इसको सीधा करना चाहोगे तो यह सीधा नहीं होगा, इसको दूसरी तरफ़ मोड़ दो, और थोड़े से मुबाहात (मुबाह उन चीज़ों को कहते हैं जिनके करने में न गुनाह है और न सवाब) भी छुड़ा दो जिसके नतीजे में यह बिल्कुल सीधा हो जायेगा, और रास्ते पर आ जायेगा, यह भी "मुजाहदा" है।

चार मुजाहदे

चुनांचे सूफ़िया–ए–किराम के यहां चार चीज़ों का मुजाहदा कराना मुश्हूर है।

१—तक़्लीले तआ़म, (कम खाना)
२—तक़्लीले कलाम, (कम बोलना)
३—तक़्लीले मनाम, (कम सोना)
४—तक़्लीलुल इख़्तिलात मअ़ल अनाम,
(लोगों से कम मिलना)

कम खाने की हद

१—तक़्लीले तआ़म÷ कम खाना, पहले ज़माने में सूफ़िया—ए—किराम कम खाने पर बड़े बड़े मुजाहदे कराया करते थे, यहां तक कि फ़ाक़े करने की नौबत आ जाती थी, लेकिन हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने फ़रमाया कि यह ज़माना अब इस क़िस्म के मुजाहदों का नहीं है, अब तो लोग वैसे ही कमज़ोर हैं, अगर खाना कम कर देंगे तो और बीमारियां आ जायेंगी, और उसके नतीजे में कहीं ऐसा न हो कि पहले जो इबादत करता था, उससे भी महरूम हो जाये। इसलिये फ़र्माया कि आज के दौर में इन्सान एक बात की पाबन्दी करले तो फिर कम खाने का मक़्सद हासिल हो जायेगा, वह यह कि जब खाना खाने बैठो तो खाना खाते वक़्त एक मर्हला ऐसा आता है कि उस वक़्त दिल में यह ख़्याल और अन्देशा पैदा होता है कि अब और खाऊं या न खाऊं? बस जिस वक़्त यह शक का मर्हला आये, उस वक़्त खाना छोड़ दो, इससे तक़्लीले तआ़म का मन्शा पूरा हो जायेगा।

और जो यह अंदेशा पैदा होता है कि और खाऊं या न खाऊं? यह अक़्ल और तबीयत के दरमियान लड़ाई होती है, क्योंकि खाने में मज़ा आ रहा है, तो अब नफ़्स यह तक़ाज़ा कर रहा है कि और खाना खाकर मज़ा लेले, और अ़क़्ल का तक़ाज़ा यह होता है कि अब और खाना मत खाओ, अब और खाओगे तो कहीं बीमार न पड़ जाओ, नफ़्स और अ़क़्ल के बीच यह लड़ाई होती है, और इस

लड़ाई का नाम तरद्दुद (शक, अन्देशा) है, इसलिये ऐसे मौक़े पर नफ़्स के तक़ाज़े को छोड़ दो, और अ़क़्ल के तक़ाज़े पर अ़मल कर लो।

वज़न भी कम और अल्लाह भी राज़ी

यह मज़्मून मैंने हज़रत वालिद माजिद मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि से और हज़रत डॉक्टर अ़ब्दुल हई साहिब रह्मतुल्लाहि अ़लैहि से कई बार सुना, और मवाइज़ में भी पढ़ा, लेकिन बाद में एक माहिर डॉक्टर का मज़्मून नज़र से गुज़रा, जिसमें लिखा था कि:

"आज कल लोग अपने बदन का वज़न कम करने के लिये तरह तरह के नुस्ख़े इस्तेमाल करते हैं, किसी ने रोटी छोड़ दी, किसी ने दोपहर का खाना छोड़ दिया, आज कल की इस्तिलाह में इसको "डाईटिंग" कहते हैं, यूरप में इसका बहुत रिवाज है, ये चीज़ें वहां वबा की तरह फैली हुई हैं, इसका मक़्सद यह होता है कि जिस्म का वज़न कम हो जाये, और ख़ास तौर पर औरतों में इसका इतना रिवाज है कि गोलियां खा खा कर वज़न कम करने की कोशिश करती हैं, और कभी कभी उसमें मर भी जाती हैं।"

उसके बाद वह डॉक्टर लिखता है कि:

"मेरे नज़्दीक वज़न कम करने का सबसे बेहतरीन तरीक़ा यह है कि आदमी न तो किसी वक़्त का खाना छोड़े, न रोटी कम करे, बल्कि सारी उमर इसका मामूल बनाले कि जितनी भूख है उस से थोड़ा सा कम खा कर खाना बन्द कर दे"।

उसके बाद डॉक्टर ने बिल्कुल यही बात लिखी है कि जिस वक़्त खाना खाते हुये यह तरद्दुद हो जाये कि खाना खाऊं या न खाऊं, उस वक़्त खाना छोड़ दे। जो शख़्स इस पर अ़मल करेगा, उसको कभी बदन के बढ़ने की और मेदे के ख़राब होने की शिकायत नहीं होगी, और उसको "डाईटिंग" करने की ज़रूरत पेश

नहीं आयेगी।

यही बात हज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली साहिब थानवी रह्म-तुल्लाहि अ़लैहि कई साल पहले लिख गये थे, अब चाहो तो वज़न कम करने की ख़ातिर इस पर अ़मल कर लो, चाहो तो अल्लाह को राज़ी करने की ख़ातिर इस मश्विरे पर अ़मल कर लो, लेकिन अगर नफ़्स के इलाज के तौर पर अल्लाह को राज़ी करने के लिये यह अ़मल करोगे तो इस काम में अज्र व सवाब भी मिलेगा, और वज़न भी कम हो जायेगा, और सिर्फ़ वज़न कम करने की ख़ातिर करोगे तो शायद वज़न तो कम हो जायेगा, लकिन अज्र व सवाब नहीं मिलेगा।

नफ़्स को लज़्ज़त से दूर रखा जाये

हज़रत थानवी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने तो हमारे लिये यह अ़मल कितना आसान कर दिया, वर्ना पहले ज़माने में तो सूफ़िया-ए-किराम ख़ुदा जाने क्या क्या रियाज़तें कराया करते थे, सूफ़िया-ए-किराम के यहां लंगर हुआ करते थे, उस लंगर के अन्दर शोरबा बनता था, ख़ानक़ाह में जो मुरीद हुआ करते थे, उनको यह हुक्म होता था कि जिसके पास एक प्याला शोरबे का आये तो वह उस शोरबे में एक प्याला पानी मिलाये और फिर खाये, ताकि नफ़्स को लज़्ज़त लेने की क़ैद से आज़ाद कराया जाये, इसके अ़लावा उनसे फ़ाक़े भी करवाते थे, लेकिन वह ज़माना और था और आज कल का ज़माना और है। जैसे तिब (हिक्मत) के अन्दर ज़माने के बदलने से इलाज के तरीक़े बदल जाते हैं, इसी तरह हकीमुल उम्मत रह्मतुल्लाहि अ़लैहि ने हमारे ज़माने के लिहाज़ से, हमारे मिज़ाजों का लिहाज़ रखते हुए नुस्ख़े तज्वीज़ कर दिये, तक़्लीले तआ़म का यह नुस्ख़ा हमारे लिये तज्वीज़ कर गये, जिससे तक़्लीले तआ़म का मन्शा हासिल हो जायेगा।

पेट भरे की मस्तियां

पूरा पेट भर कर इस तरह खाना कि उसका कोई हिस्सा ख़ाली न रहे, अगरचे फ़िक़्ही एतिबार से ना जायज़ नहीं, हराम नहीं, लेकिन यह इन्सान के लिये जिस्मानी और रूहानी दोनों क़िस्म की बीमारियों का सबब और ज़रिया है, इसलिये कि जितने गुनाह और ना फ़रमानियां हैं, वे सब भरे हुए पेट पर सूझती हैं, अगर आदमी का पेट भरा न हो तो ये गुनाह और ना फ़रमानियां नहीं सूझतीं, इसलिये हुक्म यह है कि "शिबअ्" यानी पेट भरे होने से अपने आपको बचाना चाहिये, इसी का नाम "तक़्लीले तआ़म" का मुजाहदा है।

कम बोलना "एक मुजाहदा" है

२–"तक़्लीले कलाम"÷ कम बात करना, यानी सुबह से शाम तक यह हमारी ज़बान कैंची की तरह चल रही है, और उस पर कोई रोक टोक नहीं है, जो मुंह में आ रहा है, इन्सान बोल रहा है, यह सूरते हाल ग़लत है, इसलिये जब तक इन्सान इस ज़बान को लगाम नहीं देगा, और इसको क़ाबू नहीं करेगा, उस वक़्त तक यह गुनाह करती रहेगी, याद रखिये, हदीस शरीफ़ में है कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि इन्सान को औंधे मुंह जहन्नम में डालने वाली चीज़ उसकी ज़बान है, इसलिये कि जब ज़बान को आज़ाद छोड़ रखा है, उस पर रोक टोक नहीं है तो फिर वह ज़बान झूठ में मुब्तला होगी, ग़ीबत में मुब्तला होगी, दिल दुखाने में मुब्तला होगी, इन गुनाहों के सबब वह जहन्नम में जायेगा।

ज़बान के गुनाहों से बच जायेगा

इसलिये इन्सान को "तक़्लीले कलाम" (यानी कम बोलने) का मुजाहदा कराना पड़ता है, कि बात कम करे, ज़बान से फ़ुज़ूल बात न निकाले, ज़रूरत के मुताबिक़ बात करे, और बोलने से पहले यह

सोचे कि यह बात करना मेरे लिये मुनासिब है या नहीं? कहीं गुनाह की बात तो नहीं, और बिला वजह ज़बान चलाने से बचे, और फिर धीरे धीरे इन्सान कम बोलने का आ़दी हो जाता है, फिर यह होता है कि बोलने को दिल चाह रहा है, लेकिन उसने अपनी ख़्वाहिश को दबा दिया तो उसके नतीजे में ज़बान पर क़ाबू पैदा हो जाता है, और फिर वह झूठ, ग़ीबत और इस तरह के दूसरे गुनाहों में मुब्तला नहीं होता।

जायज़ तफ़रीह की इजाज़त है

यह जो फुज़ूल क़िस्म की मज्लिस लगाना होता है, जिसको आज कल की इस्तिलाह में गप–शप कहा जाता है, कोई दोस्त मिल गया तो फ़ौरन उससे कहा कि आओ ज़रा बैठ कर गप–शप करें, यह गप–शप लाज़मी तौर पर गुनाह की तरफ़ ले जाती है, हां! शरीअ़त ने हमें थोड़ी बहुत तफ़रीह की भी इजाज़त दी है, न सिर्फ़ इजाज़त दी है बल्कि नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि:

"روحوا القلوب ساعةً فساعةً" (كنز العمال)

यानी दिलों को थोड़े थोड़े वक़्फ़े (अंतराल) से आराम भी दिया करो, नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीमात पर कुरबान जाइये कि हमारे मिज़ाज, हमारी नफ़्सियात और हमारी ज़रूरियात को उनसे ज़्यादा पहचानने वाला और कौन होगा, वे जानते हैं कि अगर इनसे कहा गया कि अल्लाह के ज़िक्र के अ़लावा कुछ न करो, हर वक़्त अल्लाह के ज़िक्र में मश्ग़ूल रहो तो ये ऐसा नहीं कर सकेंगे, इसलिये कि ये फ़रिश्ते नहीं हैं, ये तो इन्सान हैं इनको थोड़े से आराम की भी ज़रूरत है, थोड़ी सी तफ़रीह की भी ज़रूरत है, इसलिये तफ़रीह के लिये कोई बात करना, मज़ाक़ दिल्लगी के साथ हंस बोल लेना न सिर्फ़ यह कि जायज़ है बल्कि पसन्दीदा है, और नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु

अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत है, लेकिन इस में ज़्यादा मुन्हमिक (मश्गूल) हो जाना कि इसी में कई कई घन्टे बर्बाद हो रहे हैं, क़ीमती औक़ात ज़ाया हो रहे हैं तो ये चीज़ें इन्सान को लाज़मी तौर पर गुनाह की तरफ़ ले जाने वाली हैं, इसलिये फ़रमाया जा रहा है कि तुम बातें कम करने की आ़दत डालो, और यह भी "मुजाहदा" है।

मेहमान से बातें करना सुन्नत है

मेरे वालिद माजिद हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ी साहिब रह्म-तुल्लाहि अ़लैहि के पास एक साहिब आया करते थे, वे बातें बहुत करते थे, जब कभी आते बस इधर उधर की बातें शुरू कर दते, और रुकने का नाम न लेते, हमारे सब बुज़ुर्गों का यह तरीक़ा रहा है कि अगर कोई शख़्स मेहमान बन कर मिलने के लिये आता तो उसका इक्राम करते, उसकी बात सुनते, और जहां तक मुम्किन होता उसकी तसल्ली की कोशिश करते, यह काम एक मस्रूफ़ आदमी के लिये बड़ा मुश्किल है जिन लोगों की ज़िन्दगी मस्रूफ़ि-यात से भरी हो, वे जान सकते हैं कि यह कितना मुश्किल काम है, लेकिन हदीस शरीफ़ में आता है कि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का मामूल यह था कि जब आपसे कोई मिलने के लिये आता, और आपसे बात करना शुरू करता तो आप उसकी तरफ़ से कभी मुंह नहीं मोड़ते थे, जब तक वह ख़ुद ही मुंह न मोड़ ले, उसकी बात सुनते रहते थे, चुनांचे हदीस के अल्फ़ाज़ यह हैं कि:

"حتی یکون هوالمنصرف" (شمائل ترمذی)

"यहां तक कि वह ख़ुद ही न चला जाये" यह काम बड़ा मुश्किल है, इसलिये कि बाज़ लोग लम्बी बात करने के आ़दी होते हैं, उनकी पूरी बात तवज्जोह से सुनना एक मुश्किल काम है, लेकिन हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत की

वजह से हमारे बुज़ुर्गों का यह तरीक़ा रहा है कि आने वाले की बात सुनते, उसकी तशफ़्फ़ी करते।

इस्लाह का एक तरीक़ा

लेकिन अगर कोई शख़्स इस्लाह की गर्ज़ से आता तो उस पर रोक टोक होती थी, बहर हाल! वह साहिब आकर बातें शुरू कर देते, और हज़रत वालिद साहिब मिस्कीनियत से उनकी बातें सुनते रहते, एक दिन उन साहिब ने आकर हज़रत वालिद साहिब से बैअ़त की दरख़्वास्त की, कि हज़रत! मैं आपसे इस्लाही तअ़ल्लुक़ क़ायम करना चाहता हूं, मेरे लिये कोई वज़ीफ़ा, कोई तसबीह बता दीजिये, हज़रत वालिद साहिब ने फ़रमाया कि तुम्हारे लिये कोई तसबीह और वज़ीफ़ा नहीं है, तुम्हारा काम यह है कि ज़बान को क़ाबू में करो, इस पर ताला डालो, तुम जो हर वक़्त बोलते रहते हो ज़बान नहीं रुकती यह ग़लत है, आइन्दा जब आओ तो बिल्कुल ख़ामोश बैठे रहो, ज़बान से कोई लफ़्ज़ न निकालना, अब इस पाबन्दी के नतीजे में उन साहिब पर क़ियामत गुज़र गई, यह ख़ामोश बैठने का मुजाहदा उनके लिये हज़ार मुजाहदों से भारी था, अब यह होता कि बार बार उनके दिल में बोलने का तक़ाज़ा पैदा होता, लेकिन पाबन्दी की वजह से न बोलने पर मजबूर हैं, और इसी इलाज की वजह से अल्लाह तबारक व तआ़ला ने सारा रास्ता तय करा दिया, इसलिये कि हज़रत वालिद साहिब यह समझ गये थे कि इनकी बुनियादी बीमारी यह है, जब यह क़ाबू में आ जायेगी तो सब काम आसान हो जायेगा। चुनांचे कुछ अर्से के बाद अल्लाह तआ़ला ने उनको कहां से कहां पहुंचा दिया, हर एक की बीमारी अलग अलग है, इसलिय हालात को देख कर शैख़ इलाज तज्वीज़ करता है कि इसके लिये कौन सा इलाज मुफ़ीद होगा, बहर हाल यह "तक़्लीले कलाम" का मुजाहदा है।

कम सोना

३—"तक़्लीले मनाम"÷ यानी कम सोना, इसमें भी पहले तो न सोने का मुजाहदा होता था, जैसा कि मश्हूर है कि इमाम अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि अलैहि इशा के वुज़ू से फ़जर की नमाज़ पढ़ा करते थे, लेकिन बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि कम सोने की हद यह है कि आदमी को दिन रात में कम से कम छः घन्टे ज़रूर सोना चाहिए, छः घंटे से कम न करे, वर्ना बीमार हो जायेगा, और हज़रत थानवी रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते थे कि अगर किसी को बे—वक़्त सोने की आदत है तो वह उसको ख़त्म करे, यह भी कम सोने की हद में दाख़िल है, और यह भी मुजाहदा है।

लोगों से तअल्लुक़ात कम रखना

४—"तक़्लीलुल इख़्तिलात मअल अनाम"÷ यानी लोगों से मेल जोल कम करना, और बहुत ज़्यादा मेल जोल से परहेज़ करना, इसलिये कि इन्सान के जितने ज़्यादा तअल्लुक़ात होंगे, उतना ही गुनहों में मुब्तला होने का अन्देशा रहेगा। तर्जुबा करके देख लो, आज कल तो तअल्लुक़ात बढ़ाना बाक़ायदा एक फ़न और हुनर बन गया है, जिसको "पब्लिक रिलेशन" **(Puclic- Relation)** कहा जाता है, जिसका मक़्सद यह है कि लोगों के साथ ताल्लुक़ात ज़्यादा पैदा करो, और अपना रुसूख़ बढ़ाओ, और उन तअल्लुक़ात की बुनियाद पर अपना काम निकालो, लेकिन हमारे बुज़ुर्गों ने इस बात से मना फ़र्माया है कि बिना ज़रूरत तअल्लुक़ात न बढ़ाये जायें, बल्कि तअल्लुक़ात को कम किया जाये।

दिल एक आईना है

इसलिये कि अल्लाह तआला ने इन्सान के दिल को एक आईना बनाया है, जो तस्वीर इन्सान के सामने से गुज़रती है, उसकी प्रछायीं दिल पर जम जाती है, इसलिये जब इन्सान के तअल्लुक़ात ज़्यादा होंगे तो उसमें फिर अच्छे लोग भी आयेंगे, और

बुरे भी आयेंगे, और जब बुरे कामों में मस्रूफ़ लोग मुलाक़ात करेंगे तो उनके कामों का अक्स (प्रछायीं) दिल पर पड़ेगा, और उससे दिल ख़राब होगा, इसलिये फ़र्माया कि दूसरे लोगों से बिना ज़रूरत ज़्यादा न मिलो, दूसरे लोगों से ताल्लुक़ात जितने कम होंगे, उतना ही अल्लाह जल्ल शानुहू से तअ़ल्लुक़ में इज़ाफ़ा होगा, मौलाना रूमी रह्मतुल्लाहि अ़लैहि फ़रमाते हैं कि:

तअ़ल्लुक़ हिजाब अस्त व बे हासिली
चूं पेवन्द–हा बगुसली वासिली

यानी ये तअ़ल्लुक़ात अल्लाह तआ़ला के साथ तअ़ल्लुक़ क़ायम करने में हिजाब और पर्दे बन जाते हैं, दुनिया की जितनी मुहब्बतें बढ़ेंगी कि उससे भी मुहब्बत है, इससे भी मुहब्बत है उतनी ही अल्लाह तबारक व तआ़ला से तअ़ल्लुक़ में कमी आयेगी, लेकिन जो बंदों के हक़ हैं, वे बेशक अदा करने हैं, उनमें कोताही नहीं करनी है, लेकिन बिना वजह तअ़ल्लुक़ात नहीं बढ़ाना चाहिये, इसी का नाम "तक़्लीलुल इख़्तिलात मअ़ल अनाम" है।

बहर हाल ये मुजाहदे इसलिये कराये जाते हैं, ताकि हमारा यह नफ़्स क़ाबू में आ जाये, और ना जायज़ कामों पर उक्साना छोड़ दे, इसलिये ये मुजाहदे हर इन्सान को करने चाहियें और बेहतर यह है कि ये मुजाहदे किसी रहनुमा की निगरानी में करे, ख़ुद अपनी मर्ज़ी और अपने फ़ैसले से न करे, इसलिये कि अगर इन्सान ख़ुद यह फ़ैसला करेगा कि मैं कितना खाऊं, कितना न खाऊं, कितना सोऊं, कितना न सोऊं, कितने लोगों से तअ़ल्लुक़ात रखूं किन से तअ़ल्लुक़ात न रखूं तो इसमें बद परहेज़ी हो सकती है, लेकिन जब किसी रहनुमा की रहनुमाई में ये काम करेगा, तो इन्शा अल्लाह उसके फ़ायदे हासिल होगें, और हर काम हद में रह कर होता रहेगा, अल्लाह तआ़ला हम सबको इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये, आमीन।

وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين